ص ٢٩ مدح ابي بكر
١٥٧ ابيات في الردة زمن خالد
١٩٢ ابيات لابي بكر

892.7108:F151hA V.1

فهمي ـ علي

حسن الصحابة في شرح اشعار الصحابة

NOV-25 64-0480 G

892.7108
F151hA
V.1
~~7 Feb~~ 67

J. Lib.
~~1 OCT 1979~~

A S

( فهرست الجزء الاول من كتاب حسن الصحابه فى شرح اشعار الصحابه )

صحيفه

صفحة الصفحات بعد الفهرست


٢ خطبة الكتاب
٧ مقدمه
٨ الفصل الاول فى تعريف الصحابى
٩ الفصل الثانى فى الطريق الى معرفة كون الشخص صحابيا
١٠ الفصل الثالث فى تعديل الصحابة
١٢ الفصل الرابع فى الشعر وما يتعلق به
١٦ باب قافية الهمزة
١٧ ترجمة حسان بن ثابت وشعره رضى الله عنه
٢٤ شعره ايضا
٢٨ ايضا
٢٩ ترجمة خفاف بن ندبة السلمى وشعره رضى الله عنه
٣١ ترجمه ضرار بن الخطاب الفهرى رضى الله عنه
٣٢ شعره
٣٥ ترجمة عبدالله بن رواحة رضى الله عنه
٣٦ شعره
٣٨ ترجمة عدى بن حاتم الطائى رضى الله عنه
٤٠ شعره
٤٣ ترجمة كعب بن مالك رضى الله عنه
٤٤ شعره
٤٧ باب قافية الباء وترجمة ابى احمد بن جحش الاسدى رضى الله عنه
٤٨ شعره
٥ ترجمة امية بن الاسكر الجندعى رضى الله عنه
٥٣ شعره
٥٦ شعر حسان بن ثابت رضى الله عنه
٦٠ ايضا
٦٢ ايضا
٦٤ ايضا
٦٦ ايضا
٦٩ ايضا
٧١ ايضا
٧ ايضا
٧٦ ايضا
٨١ ايضا
٨٧ ترجمة الحسين بن على رضى الله عنه

صحیفه


۸۹ شعره
۹۱ ایضا
۹۲ ترجمه حمید بن ثورالهلالی رضی‌الله عنه
۹۳ شعره
۹٤ ترجمة الخنساء الشاعرة رضی‌الله عنها
۹٦ شعرها
۹۹ ترجمة راشد بن عبد ربه السلمی وشعره رضی‌الله عنه
۱۰۰ ترجمة سواد بن قارب رضی‌الله عنه
۱۰۲ شعره
۱۰٤ ترجمة عاتکة بنت زید بن عمروبن نفیل العدویة رضی‌الله عنها
۱۰۵ شعرها
۱۰٦ ایضا
۱۰۷ ترجمة العباس بن مرداس‌السلمی رضی‌الله عنه
۱۰۸ شعره
۱۱۲ ترجمة عبدالله بن الاعورالاعشی رضی‌الله عنه
۱۱۳ شعره
۱۱٤ ترجمة عبدالله بن الحرث ابی ظبیان الغامدی وشعره رضی‌الله عنه
۱۱۵ ترجمة عبدالرحمن بن ابی بکر رضی‌الله عنهما
۱۱٦ شعره
۱۱۷ ترجمة علی بن ابی طالب رضی‌الله عنه
۱۲۰ شعره
۱۲۳ ترجمة عمروبن المسیح الطائی الثعلی رضی‌الله عنه
۱۲٤ شعره
۱۲۵ ترجمة فاطمة الزهراء صلی‌الله علی ابیها ورضی عنها
۱۲٦ شعرها
۱۲۸ ایضا
۱۲۹ ترجمة قطن بن حارثة العلیمی وشعره رضی‌الله عنه
۱۳۱ شعر کعب بن مالك رضی‌الله عنه
۱۳۹ ایضا
۱٤٤ ایضا
۱٤۵ ایضا
۱٤۹ ترجمة محیصه بن مسعود الانصاری رضی‌الله عنه
۱۵۰ شعره
۱۵۲ ترجمه مسایة اومسلمة بن هزان وشعره رضی‌الله عنه
۱۵٤ ترجمة مکیف بن زید الخیل رضی‌الله عنهما

صحيفه


١٥٥ شعره
١٥٧ ترجمة ناجية بن جندب الاسلمى وشعره رضى الله عنه
١٥٨ ايضا
١٦٠ ترجمة النعمان بن بشير الانصارى رضى الله عنه
١٦١ شعره
١٦١ ترجمة النمر بن تولب العكلى رضى الله عنه
١٦٢ شعره
١٦٣ ايضا
١٦٥ ايضا
١٦٥ باب قافية التاء وترجمة ابى هريرة رضى الله عنه
١٦٧ شعره
١٦٨ ترجمة جندب بن عمار الطائى وشعره رضى الله عنه
١٧٠ ترجمة خفاف بن نضلة الثقفى وشعره رضى الله عنه
١٧٢ شعر عبدالله بن رواحة رضى الله عنه
١٧٤ ترجمة عروة بن زيد الخيل الطائى رضى الله عنه
١٧٥ شعره
١٨٤ ترجمة عمرو بن معدبكرب الزبيدى رضى الله عنه
١٨٦ شعره
١٨٨ باب قافية الثاء المثلثة وترجمة ابى بكر الصديق رضى الله عنه
١٩٢ شعره
١٩٧ ترجمة طاهر بن ابى هالة رضى الله عنه
١٩٨ شعره
١٩٩ باب قافية الجيم وشعر حسان بن ثابت رضى الله عنه
٢٠٢ شعر كعب بن مالك رضى الله عنه
٢٠٨ ترجمة مازن بن الغضوبة الطائى رضى الله عنه
٢٠٩ شعره
٢١٠ شعر النمر بن تولب العكلى رضى الله عنه
٢١١ باب قافية الحاء المهملة
٢١٢ شعر حسان بن ثابت رضى الله عنه
٢١٤ ترجمة سويد بن الصامت الخزرجى رضى الله عنه
٢١٥ شعره
٢١٦ شعر على بن ابى طالب رضى الله عنه
٢١٦ شعر النمر بن تولب العكلى رضى الله عنه
٢١٧ باب قافية الدال المهملة وشعر ابى احمد بن جحش الاسدى رضى الله عنه
٢١٨ ترجمة ابى الدرداء رضى الله عنه

صحیفه


۲۱۹ شعره
۲۱۹ ترجمة ابان بن سعید الاموی رضی‌الله عنه
۲۲۰ شعره
۲۲۱ ترجمة ابی الهیثم بن التیهان رضی‌الله عنه
۲۲۲ شعره
۲۲۲ ترجمة الاصید بن سلمة السلمی رضی‌الله
۲۲۳ شعره
۲۲٤ شعر الاعشی المازنی رضی‌الله عنه
۲۲۵ ترجمة بجیر بن بجرة الطائی رضی‌الله عنه
۲۲٦ شعره
۲۲٦ ترجمة الحرث بن ابی وجزة الاموی رضی‌الله عنه
۲۲۷ شعره
۲۲۸ شعر حسان بن ثابت رضی‌الله عنه
۲۳۰ ایضا
۲۳٤ ایضا
۲۳۸ ایضا
۲۳۹ ایضا
۲٤۱ ایضا
۲٤٤ ایضا
۲٤۵ ایضا
۲٤۹ ایضا
۲۵٤ ایضا
۲۵۵ ایضا
۲۵٦ ایضا
۲٦۸ ایضا
۲۷۲ ایضا
۲۷٤ ایضا
۲۷۳ شعر الخنساء الشاعرة رضی‌الله عنها
۲۸٤ ترجمة زید الخیل رضی‌الله عنه
۲۸۵ شعره
۲۸٦ شعر سواد بن قارب رضی الله عنه
۲۹۰ ترجمة الشیماء بنت الحرث وشعرها رضی‌الله عنها
۲۹۱ ترجمة الطفیل بن عمرو الدوسی رضی‌الله عنه
۲۹۳ شعره
۲۹٤ شعر عاتکة بنت زید بن عمرو بن نفیل رضی‌الله عنها

صحیفه


۲۹۵ ایضا
۲۹۶ ترجمة عاصم بن ثابت الانصاری رضی‌الله عنه
۲۹۷ شعره
۲۹۸ ترجمه عبدالله بن انیس الجهنی رضی‌الله عنه
۲۹۹ شعره
۳۰۱ ترجمه عبدالله بن جحش الاسدی المجدع رضی الله عنه
۳۰۳ شعره
۳۰۵ ترجمه عبدالله بن خذاقه السهمی رضی‌الله عنه
۳۰۶ شعره
۳۰۸ ترجمه عبدالله بن الحرث السهمی المبرق رضی‌الله عنه
۳۰۹ شعره
۳۱۰ شعر عبدالله بن رواحه رضی‌الله عنه
۳۱۱ شعر عبدالله بن رواحه اوحسان بن ثابت رضی‌الله عنهما
۳۱۲ ترجمه عبدالله بن مالك الارحبی رضی‌الله عنه
۳۱۳ ترجمه عبدالرحمن بن ذی الاجرة الثمالی رضی‌الله عنه
۲۱۴ شعر علی بن ابی طالب رضی‌الله عنه
۳۱۵ ترجمه عمرو بن سالم الخزاعی رضی‌الله عنه
۳۱۶ شعره
۳۱۹ ترجمه عمر بن الخطاب رضی‌الله عنه
۳۲۴ شعره
۳۲۵ ترجمه عمیر بن الحمام الانصاری رضی‌الله عنه
۳۲۶ شعره
۳۲۶ ترجمه قرة بن هبیرة العامری رضی‌الله عنه
۳۲۷ شعره
۳۲۸ ترجمه قیس بن عاصم المنقری رضی‌الله عنه
۳۳۰ شعره
۳۳۳ ایضا
۳۳۵ شعر کعب بن مالك رضی‌الله عنه
۳۴۱ ایضا
۳۴۳ ایضا
۳۵۰ ترجمه لبیدبن ربیعته العامری رضی‌الله‌عنه
۳۵۲ شعره
۳۵۳ ترجمه مالك‌بن عوف‌النصری رضی‌الله‌عنه
۳۵۴ شعره
۳۵۵ ترجمه مالك‌بن نمط‌الهمدانی رضی‌الله‌عنه
۳۵۷ شعره
۳۵۹ شعرالنمر بن‌تولب العکلی رضی‌الله‌عنه
۳۵۹ ایضا
۳۶۰ شعر حمیدبن ثورالهلالی رضی‌الله‌عنه

| صحيفه | سطر | خطأ | صواب |
|---|---|---|---|
| ٢ | ١٠ | ولابكار | والابكار |
| ٢ | ١١ | حتى يفنوا | حتى يفنوا |
| ٣ | ١٢ | العالمين | للعالمين |
| ٣ | ١٧ | وبذالوا | وبذلوا |
| ٤ | ٤ | العماء | العلماء |
| ٤ | ١١ | نقشه | نفسه |
| ٤ | ١٦ | اساليبه | اساليب |
| ٤ | ١٦ | وفنون الاد | وفنون الادب |
| ٤ | ١٦ | قيغنه | فيغنيه |
| ٤ | ١٧ | ويلدهيه | ويلهيه |
| ٤ | ١٧ | عنه | عن |
| ٥ | ١ | حتى القرعى | حتى القرْعى |
| ٥ | ٤ | يلى | بل |
| ٥ | ١٢ | العكرى | العسكرى |
| ٥ | ١٧ | فى تميز الصحابة | فى تميز الصحابة |
| ٥ | ٢٦ | الكثيرا | الكثير |
| ٥ | ٢٦ | ان اجز | ان اجزئ |
| ٦ | ٥ | وانهض البرق | وانهض نهض البرق |
| ٩ | ١٥ | قيعبر | فيعبر |
| ٩ | ٢٠ | بالله | بالله |
| ٩ | ٢١ | حبة | حية |
| ٩ | ٢٤ | شهد | وشهد |
| ١٠ | ١ | جرئى | جرئ |
| ١٠ | ٤ | برجعة عل | برجعة علي |
| ١٠ | ٤ | رمما | ومما |
| ١١ | ١٩ | وعزروره | وعزروه |
| ١٢ | ١٤ | ونسلمه | ونُسلمه |
| ١٤ | ٢٣ | تيم تميم | وتيم تميم |
| ١٤ | ١٤ | تلعته | تلعة |
| ١٤ | ٢٧ | ان | انه |

| صحيفه | سطر | خطأ | صواب |
|---|---|---|---|
| ١٦ | ٣ | معجزانه | معجزاته |
| ١٦ | ١٢ | لايلحتق | لايلتحق |
| ١٧ | ٥ | الخرزج | الخزرج |
| ١٨ | ٢ | وكانث | وكانت |
| ١٨ | ٧ | عدي ابن عامر | عدي بن عامر |
| ١٨ | ٨ | بن التجار | بن النجار |
| ٢١ | ١٧ | فنجكم | فنحكم |
| ٢١ | ٢٧ | الخنسا | الخنساء |
| ٢٧ | ٢٦ | بين | بتن |
| ٢٨ | ٨ | النيبي | النبي |
| ٢٩ | ٥ | فولك | قولك |
| ٣٠ | ٢٠ | لحسان | لخفاف |
| ٣٢ | ٢ | والفصته | والقصة |
| ٣٢ | ٦ | والثقت | والتقت |
| ٣٢ | ١٠ | بخيل | يخيل |
| ٣٢ | ١٣ | يحدون | يجدون |
| ٣٢ | ١٧ | خلقتا | حلقتا |
| ٣٢ | ١٩ | حلفتا | حلقتا |
| ٣٤ | ١ | اللواء | اللواء |
| ٣٤ | ١٠ | البطاع | البطاح |
| ٣٥ | ١٥ | اخيث | اخبث |
| ٣٥ | ١٧ | روحة | رواحة |
| ٣٦ | ١٩ | ويردى | ويروى |
| ٣٨ | ١٣ | عدي ابن ربيعة | عدي بن ربيعة |
| ٣٩ | ٧ | هل انيت | هل اتيت |
| ٣٩ | ٢٠ | عليه‌الصلام | عليه السلام |
| ٤١ | ١٤ | الزبيتة | الزبية |
| ٤٤ | ٩ | ان يخلف | ان يحلف |
| ٤٥ | ٢٠ | للجرة | للهجرة |
| ٤٥ | ٢٠ | الوقعتا | الوقعة |

| صحيفه | سطر | خطأ | صواب |
|---|---|---|---|
| ٤٦ | ١٤ | لباب | الباب |
| ٤٦ | ١٦ | نم | نم |
| ٤٨ | ١ | لما راني | لما راتى |
| ٤٨ | ١٩ | كأتهم | كانهم |
| ٤٨ | ٢٠ | وقال بن جني | وقال ابن جني |
| ٥١ | ٨ | والحيية | والحية |
| ٥١ | ١٣ | وعظة | وعظته |
| ٥٤ | ٢١ | ارعشة | ارعشه |
| ٥٩ | ١١ | اذا أنسبو | اذا نسبوا |
| ٦٠ | ١٢ | يهلجو | يهجو |
| ٦٠ | ١٢ | الزرشي | القرشي |
| ٦٤ | ٥ | بن هشام | ابن هشام |
| ٦٦ | ٤ | لصقالنها | لصقالتها |
| ٦٧ | ١٥ | عهد | عهدا |
| ٦٨ | ١٤ | لانه | لانه |
| ٧٢ | ٦ | ثايت | ثابت |
| ٧٤ | ٣ | وبار | وبار |
| ٧٦ | ١ | الأَحناب | الاحقاب |
| ٧٦ | ١٤ | رسوها | رسومها |
| ٧٦ | ١٧ | وتذكر فى للعهد | وتذكر العهد |
| ٧٧ | ١ | وَأَشَكُ | وَاشْكُ |
| ٧٧ | ٨ | ازا | اذا |
| ٧٧ | ١٦ | فى اليلة | فى الليلة |
| ٧٨ | ١٥ | بافبالهم | باقبالهم |
| ٨٠ | ١ | شيد | شيئا |
| ٨٠ | ١ | ريح لله | ريح الله |
| ٨٠ | ٢٣ | الطقيل | الطفيل |
| ٩٢ | ٨ | لانقع | لاتقع |
| ٩٣ | ١١ | انزنية | الزينة |

| صحيفه | سطر | خطأ | صواب |
|---|---|---|---|
| ٩٤ | ٨ | انب | لقبت |
| ٩٧ | ٢٢ | الزرق | لزرق |
| ١٠٢ | ٨ | تبغى | تبغى |
| ١٠٣ | ١٦ | سبب | سببا |
| ١٠٤ | ٢١ | يعد | بعد |
| ١٠٥ | ٢١ | الابظال | الابطال |
| ١١٠ | ١٨ | نريد | تريد |
| ١١١ | ١٦ | ويونث | ويؤنث |
| ١١٣ | ٢ | بزاع | بنزاع |
| ١١٩ | ٢٢ | اللبراز | للبراز |
| ١٢١ | ٨ | يحذف | بحذف |
| ١٢٢ | ١٦ | مخدوق | محذوف |
| ١٢٥ | ٨ | الهاشميته | الهاشمية |
| ١٢٦ | ٨ | نوفي | توفى |
| ١٣٠ | ٥ | كتناب | كتاب |
| ١٣٤ | ١٤ | عيس | عبس |
| ١٣٧ | ١١ | عليه وسلم | صلى الله عليه وسلم |
| ١٤١ | ١١ | الفهر | القهر |
| ١٤٢ | ١١ | ففتل | فقتل |
| ١٤٣ | ٣ | يتعانلون | يتقاتلون |
| ١٤٩ | ١٣ | ويتقربون | ويتقربون |
| ١٥٢ | ٥ | خضرت | حضر |
| ١٥٣ | ١٠ | الفدر | القدر |
| ١٦٤ | ٢١ | بن | اين |
| ١٦٨ | ١٥ | لائم عمرو | لائم بن عمرو |
| ١٦٨ | ٢٢ | بخندب | بجندب |
| ١٧١ | ٧ | فى ءلمواتات | فى المؤاتات |
| ١٧٤ | ٦ | اناه | اناه |
| ١٧٩ | ٢٠ | موففه | موقفه |

| صحيفه | سطر | خطأ | صواب |
|---|---|---|---|
| ١٨٧ | ١٥ | وجوه | وجوه |
| ١٨٧ | ١٨ | عمران بن حلوان | حلوان ين عمران |
| ١٩٢ | ٤ | اقامة | اقامه |
| ١٩٧ | ٢٥ | محاليف | مخاليف |
| ٢١٢ | ٥ | مارنَ | مارنُ |
| ٢١٣ | ١٣ | انبكى | اتبكى |
| ٢٢٤ | ٢ | المنحير | المتحير |
| ٢٣٠ | ٨ | تحفف | تخفف |
| ٢٣٦ | ٢٠ | العرس | العروس |
| ٢٣٨ | ١٤ | تتبخر | تتبختر |
| ٢٤٦ | ١٠ | عنه | عنهم |
| ٢٧١ | ٨ | المَلْحد | المُلْحَد |
| ٢٧٢ | ٩ | سواد | سوداً |
| ٢٨١ | ٣٠ | الفارة | القارة |
| ٢٩٠ | ١٥ | الترفيص | الترقيص |
| ٢٩٢ | ٢٦ | سيغدو | سيعذو |
| ٣٣٧ | ٧ | منعنهما | منعتها |
| ٣٣٨ | ٦ | بافت | باقت |
| ٣٣٩ | ١٧ | وقنا | وقلنا |
| ٣٤١ | ٢ | ن | من |
| ٣٤٢ | ٥ | بذك | بذاك |

## اخطار مخصوص

قدوقع فى هامش الصحيفة الرابعة والعشرين لفظ من الطويل فى رأس الصحيفة بسهو المرتب والصوب ان يقع فى نهايتها ووقع ايضا فى الصحيفة الثلثمائة والرابعة عشر لفظ من مشطور الرجز فى رأس الصحيفة والصواب ان يقع فى اخرها وشرح لفظ ذى الاضوج فى الصحيفة المأتين والثالثة على انه جمع ضوج ثم بعد الطبع وجدنا فى معجم البلدان انه بفتح الواو اسم موضع بقرب المدينة فليعلم ذلك

علامة الزمان و نادرة الاوان مسلم الفضل بالاتفاق و استاذ الكل
على الاطلاق درس وكيلى فضيلتلو الحاج خالص افندى حضرتلرينك تقريظيدر

الحمد لله الذى رفع قدر الادب وفضل اهله على من يفاخر بالنسب والنشب والصلاة والسلام على المبعوث من اشرف بيوتات العرب لارشاد الامة الى المحجة بالحجة وعلى آله السادة واصحابه اقادة نجوم الهداية وشموس السعادة فى البداية و النهاية وبعد فان من المعلوم ان الكلام منثور ومنظوم وللاخير تأثير بليغ فى القلوب وللناظم رجحان على الناثر عندكل بادو حاضر ولايضع من قدره الا الجاهل البغيض ولايعيبه الا الجافى الغليظ وللشعر شان عجيب فى ادراك حقائق العلوم و دخل عظيم فى اذعان دقائقها الاترى ان مشكلات التنزيل و غرائب اخبار الرسول لايوثق بعد معونة الله تعالى منها الا بما نقله جهابذة الادب ورواة المنظوم من حكم العرب و كان الشعر فى الجاهلية ديوان علمهم وميدان حكمهم به يأخذون واليه ينتهون وكان فيهم اصحاب البدائه والبدائع يهدر شقاشق ارتجالهم فى المجامع .

و الشعر فيه الحكمة و فصل الخطاب يدل عليه قوله عليه الصلاة والسلام ان من الشعر لحكمة و ان من البيان لسحراً وهو خزائن المعانى الشريفة ومعادن الفوائد الجليلة ومكارم الاخلاق وهو قيد اوابدا القواعد وعقال الشوارد من الفوائد وفيه حفظ ايام العرب وانسابها و ضبط الوقائع و الحروب و ان شئت قلت هو اساس الفنون الادبية ومنه استنبط الاصول العربيه كاللغة و الصرف والنحو والبلاغة ولايخلو منه كتب الاصولين والحديث والتصوف والفقه الا يرى الى استشهاد اهل الكلام بشعر الاخطل فى صفة الكلام واستدلال الفقهاء فى معنى القرء و النكاح بشعر الاعشى وغيره وامثال هذا كثيرة وتجد المفسرين اشد الناس احتياجا اليه واستشهادا به هذا امام المفسرين عبد الله بن عباس رضى الله عنهما اجاب لنافع بن الازرق الخارجى عن مائتى سؤال فى تفسير كتاب الله تعالى واتى على كل جواب بشاهد من الشعر والقصة فى ذاك طويلة مذكورة فى كتب الادب و هذا امير المؤمنين عمر رضى الله تعالى عنه لما قرأ وهو على المنبر قوله تعالى اويأخذهم على تخوف الاية قال للصحابة ماتقولون فى معنى هذه الاية اى معنى التخوف فسكتوا فقام شيخ من هذيل فقال هذه لغتنا ياامير المؤمنين التخوف التنقص فقال له عمر وهل تعرف العرب ذلك فى اشعارها فقال نعم قال شاعرنا ابو كبير يصف ناقته

تخوف الرحل منها تامكاً قرداً  كما تخوف عود النبعة السفن

فقال عمر عليكم بديوانكم لا تضلوا قالوا وما ديواننا قال شعر الجاهلية فان فيه تفسير كتابكم و معانى كلامكم و قال ابن عباس رضى الله تعالى عنهما كنت مع عمر فى سفر فقال انشدلى يا ابن عباس فانشدت فكان كلما انشدت بيتاً يقول هيه فانشدت قريباً الى مائة بيت حتى اذا انفلق الفجر قال حسبك فافرأ القرآن . فقرأت سورة كذا ثم نزل فنزلنا و صلى الصبح بنا ويروى ان رسول الله صلى عاله وسلم انشده بعض العرب شعراً من قول عنتره فقال صلى الله عليه وسلم ماوصف لى اعرابى فاحببت ان اراه الاعنتره . وكان الصحابة والصحابيات لاسيما الخلفاء الراشدون ومن ادركهم من التابعين رضوان الله تعالى عليهم اجمعين. وهم اصحاب سليقة وذوو قرائح صحيحة مع صفاء قلوبهم ببركة الصحبة واقتباسهم من نبراس النبوة يتناشدون الاشعار ويتمثلون بها فى مخاطباتهم و قل من لايقول منهم شعراً واستمر الامر على هذا الى زمن الخلفاء الامويه والعباسيه فكثر الرغبات الى الشعراء وزيد لهم الجوئز السنية و العطيات الجزيلة قلما يخلو مجالس الخلفاء واندية الرؤساء من الادباء والشعراء منهم كجرير وفرزدق واخطل وكانوا يختارون مؤدبين لتربية اولادهم فيروون لهم من مختارات اشعار الفحول ومقطعاتها وقصائدها واراجيزها مما يهذب النفس من الدنس كالحسة والغدر و الكذب والخيانة والجبانة ويرغب الى علو الهمة كالجود والكرم والوفأ والسماحة والحماسة وكانوا يقضون حاجة المحتاج بشعر ينشده امام سؤاله ويعفون عن المسيئ بيت يتمثل به قدام الاعتذار عن حاله وهكذا شاع مااستجره مصاقع الخطباء وائمة البلغاء والذين جاؤا من بعدهم كانوا يقتدون باسلافهم و يقتفون آثارهم يروى انه مر ابو جعفر المنصور بالمهدى وهو ينشد المفضل بن محمد ( مؤدبه ) قصيدة المسيب بن علس التى اولها

ارحلت من سلمى بغير متاع  قبل العطاس ورعتها بوداع

فتلوم فى مشيته مستمعاً اليه وهو لايشعر بذلك حتى استوفاها فاستحسنها فلما استقر المجلس به دعاها واخبر المفضل بما كان منه وباعجابه بانشاده اياه ثم قال لو عمدت الى اشعار الشعراء المقلين فاخترت لفتاك من شعر كل شاعر اجود ماقال لكثر الانتفاع به ففعل المفضل ذلك وذكروا ان المفضليات كانت ثلاثين قصيدة وكان جمعها لامير المؤمنين المهدى فقرئت من بعد على الاصمعى فبلغ بها مأته وعشرين

هذا وهم هم لا يستغنون عما يعينهم على فهم معانى التنزيل والتأويل ويعين لهم

المقاصد فى اخبار الرسول و يرشدهم الى استنباط احكام الشرع بتفسير المشكل و تفصيل لمجمل ، و تعيين المجاز والمشترك . فما بالنا نستغنى و نحن فى الجهل وشدة الحاجة اليه نحن فانا لله ولاحول ولاقوة الا بالله ولا نشكو بثنا الا اليه ولا نستعين الا اياه هذا فكأن الله تعالى قد استجاب دعائنا و ازال شكوانا اذ ساق الينا فتى فتيان الادب واللوذعى الحلاحل فى العلم والنسب غواص بحر اللغة العربية و مستخرج دررها الثمينة البهية حافظ العلوم وحامى ذمارها وموفى عهدها فجدد معاهدها وعمر رسومها وطلول معالمها متع الله تعالى طالبى العلم بطول بقائه ونفع ذويه بلقائه فلله دره ودرابيه وكثر امثاله بين اهليه حيث انه جمع من اشعار الصحابة ماتيسر له جمعه مما كان متفرقاً فى بطون الكتب وشرحه فى كتاب سماه ( حسن الصحابة فى شرح اشعار الصحابه ) ولعمرى انه قد احسن فى هذا غاية الاحسان واجاد نهاية الاجادة اذا اختار من اشعار الاخيار ماهو اجدر بان يسمى ( صحابة الاشعار ) ولم يسبق اليه طال بقاه ورواة الشعر وعلماء الادب وان كانوا قد جمعوا دواوين الشعراء الجاهليين والمخضرين والاسلاميين والمحدثين و المولدين و مختارات القصائد و المقطعات كالمفضليات والمعلقات والحماسة وغيرها وشرحوها الا انه لم يخطر ببال احد منهم مثل هذا الصنيع وهى فضيلة ادخرها الله سبحانه و ساقها اليه فيا طالبى العلم وراغبى الادب اهنئكم بظهور هذه الكنوز المشحونة بنفائس اللآلى المكنونة وابشركم بنشر هذه الجواهر الزواهر التى كانت قبل هذا مخزونة شكر الله سعى جامعها الاريب الاديب والالمعى اللبيب حضرت ( على فهمى ) الموستارى المفتى سابقاً فى هرسك ومعلم الادبيات العربية فى دار الفنون اليوم فجمع نفعنا الله تعالى ببقاه ومتع طلبة العلم بعلومه فرائد جمة منها ذكر تراجم الصحابة ( وعند ذكر الصالحين تنزل الرحمة ) ومنها الدربة فى اللغة العربية والتأنيس بدقائق الشعر والوزن والقافية وقرض الشعر ومنها استنباط بعض الاحكام الشرعية الفرعية بآثارهم والاستدلال على المسائل الاصليه بكلماتهم ومنها علم احوال العرب وانسابها واكتساب الذوق والبراعه والاطلاع على طرق السليقه والبلاغة ومنها التخلق بمكارم اخلاقهم ومحاسن شيمهم والحمد لله رب العالمين والصلاة والسلام على رسوله واله وصحبه اجمعين

حرره العبد المعترف بالعجز والتقصير
والفقير الى عفو مولاه الكريم
محمد خالص بن محمد
الشروانى

## تونس علماء كرامندن وفضلاء بنامندن الشيخ محمد مكى بن عزوز افندى حضرتلرينك تقريظيدر

الحمد لله

من كان مشتاقا لصحب المصطفى ... خير القرون وخير ارباب الصفا

يهوى محافلهم وطيب حديثهم ... نظما ونثرا بالبراعة مكتفا

وسلوكهم بنزاهة وشهامة ... وحماسة بالحق تنهض مدنفا

حسن الصحابة فليصاحب ممعنا ... يأنس به ويفده علما محصفا

يا مغرم الآداب يبغى مسرحا ... بر ياضها وبشعرها متظرفا

اتضيع الوقت العزيز مشيبا ... فى وصل غانية وقد اهيفا

وخرافة القصص المسود طرسها ... حقا وزوراً ميزها لن يعرفا

فعليك ذا الديوان تلف عجائبا ... من نافعات العلم عزت مرشفا

تلفى به ميدان صدق جامعا ... لضروب ما للقارئين به شفا

طوراً ترى حزب الرسول كهالة ... دارت على قمر يجود تعطفا

وتراهمو طورا كاسد از أروا ... بقريض حرب سل سيفا مرهفا

كصواعق حلت على الاعدا وقد ... تركت حمى الطاغين قاعا صفصفا

وتراهمو وقت الهدوء كا جبل ... لو قارهم ما ان تمس تكلفا

حكم تلوح من القريض منيرة ... درسا لتربية يطيب تعرفا

تغدو على ما كان فى عصر مضت ... من سيرة العرب الجحاجح مشرفا

خلق الرسول وسيرة نبوية ... فوزا مرئ بسنا علاه تشرفا

فاجعله هجيراك واغنمه ولا ... تؤثر على ناديه الا المصحفا

تقفى علوم سياسة دولية ... ودهاء مكر الحرب عز تصرفا

وعدالةً رفعت وضيع القوم فى ... باب الحقوق وثم ساوى الاشرفا

ومحامداً ومكارما شفت على ... كرم الاصول اغاثة وتعففا

وفطانة وبسالة والصدق فى ... حركاتهم والعفو فضلا والوفا

وحماية الجيران طوع حمية ... لاغروان فرد للبيث وقفا

تلك المعالى فى السجية اصلها ... لا المدعون تشبعا وتصلفا

العرب عرب فى نقاء طباعها ... وذكائهم ماليس يقبل الانتفا

يدريه عراف العناصر من قفوا ... تاريخ ماضى الناس حق الاقتفا

و ازداد بالاسلام رونق فضلهم ... اصل السعادة هم درى من انصفا

فاهنأ بذا المجموع جمع سلامة ... من وصمة الشطط المفند والجفا

يحوى نكات بلاغة ولطائفا ... يلقاه من يحوه روضا مؤنفا

وبه اعاريب اللسان وصرفه ... ولغاته الغرا بيانا مسعفا

فاشكر لناسقه مؤلف شمله ... يا حسن صنع للمحاسن الفا

غواص ابحرها ومخرج درها ... و نظام عقد بالمهارة صففا

مفتى الانام علىّ فهم ساميا ... للنطح والعيوق لامتعسفا

للطالبين عرائس الادب اغتدى ... كشاف معضلها وظلامورفا

لذويه فى دارالفنون مغانم ... احيى عكاظ وسوقها المستطرفا

من ام نادى درسه لافادة ... قدام حاتم طيء متضيفا

ما شئت من نقل و من عقل ومن ... علم ومن خلق يسيل تلطفا

لله درك يا على ابنت فى ... هذا الكتاب الفضل قد برح الخفا

الدين والآداب والادباء فى ... لهج بشكرك مجمعين الاحتفا

دم غانما لمثوبة ولسان صدق ... طيب فى الاخرين موظفا

ثم الصلاة على النبى و آله ... ماسر شعر الاولين وشنفا

كتبه محمد مكى بن

عزوز

بسم الله الرحمن الرحيم

احمد الله تعالى شاكراً مزيد نعمائه وله سبحانه الفضل الوافر على مديد آلائه واصلى واسلم على سيدنا محمد قاموس العلوم الربانيه ومعدن اسرار التجليات القدسيه افصح من نطق بالضاد واكرم من بل الصدى بزلال حكمه من كل قلب صاد وعلى آله واصحابه هداة الدين واعلامه وطراز اردية الكمال وواسطة انتظامه الفائزين من البلاغة باوفى نصيب والحائزين لقصب السبق فى كل ميدان رحيب وبعد فقد سرحت طرف طرفى الفاتر وارخيت عنان فكرى القاصر فى رياض هذا السفر الجليل الموسوم بحسن الصحابه فى شرح اشعار الصحابة الذى ليس له فى بابه مثيل فرأيت فيه من الفوائد ما يستوقف الناظر ويسر الخاطر وشممت من خلال حدائقه الانيقة بأنف الابتهاج اريج الند والعود وشنفت مسامعى برنات نغمات حسن ترتيبه الحاكى للسمط النضيد المزرى بقلائد العقيان والعقد الفريد فبيخ بخ لموشى بروده اليمانيه ومطرزا كمام حلله السندسيه المالك لازمة جياد اللغة العربيه والراقى صهوة الفصاحة القريشية فما احلى هذا الجمع الصحيح السالم واعذب ذياك البحر المتلاطم ولا بدع فقد احكمت نسجه انامل نادرة ازمان ونابغة الاوان العالم الفاضل والنحرير الكامل مفتى هرسك سابقا حضرة على فهمى افندى ادامه الله تعالى فخر الاسلام وذخر الاهل العلم الخاص منهم والعام ما غردت بلابل الاقلام على افنان الطروس ففاح من عبير مدادها مسك الختام

فى غرة رجب الاصب ١٣٢٧

الفقير اليه عز شانه آلوسى زاده
احمد شاكر الحسينى من اعضاء
مجلس المعارف الكبير

AS

892.7108
F151hA
V.1
C.1

الجزء الاول

من

# حُسْنُ الصَّحَابَة

فى

شرح اشعار الصحابة

مؤلفى

هرسك مفتىء سابقى وحالا دارالفنون ادبيات عربيه معلمى

موستارلى

جابى زاده على فهمى

78810

درسعادت

( روشن مطبعه‌سى )

١٣٢٤

بسم الله الرحمن الرحيم

الحمدلله الذى انشأ فى قلوب شاعرى جلاله خوف هياج بحر سريع عقابه حتى اقشعرت اشعار جلودهم وكادت تنذاب قصائد جسومهم فزعاً من تلاطم متقارب اليم عذابه لولا ان تداركهم نعمة من ربهم فغرس فى جنان جنانهم رجاء بسيط رحمته وفتح مصاريع ابواب ضمائرهم لدخول آمال مديد رأفته فوقفوا على سر قول ربهم الكريم نبئ عبادى انى انا الغفورالرحيم وقوله ان الله بالناس لرؤوف رحيم فخفت اذ ذاك اعباؤهم وسكنت قلوبهم المذعورة بعض السكون واطمأنت جئوشهم الجائشة ولاييأس من روح الله الاالقوم الكافرون فكانوا وسطا عدلا لم يجربهم الدليل وعلى الله قصدالسبيل والتفتوا الى انفسهم فوجدوها مغمورة فى نعم لاتعد ولاتحصى ومنن لاتفصل ولاتستقصى فطفقوا يثنون على ربهم ويشكرونه آناء الليل واطراف النهار ويسبحونه بالعشى والابكار سبحان من لايبلغ مدحه القائلون وان هم فى مقالاتهم اسهبوا حتى بفنوا طوال اعمارهم ويذهبوا ولايخط تمام وصفه الكاتبون وان هم فى تحاريرهم اطالوا واطنبوا حتى يملئوا بطون قراطيس اقلامهم ويستوعبوا

وعلى تفنن واصفيه بحسنه  يفنى الزمان وفيه مالم يوصف

ولايدرك كنه جلاله العالمون وان كانوا احبارا ربانيين واعلاما ربيين فقصارى علم الراسخين سبحانك ماعرفناك حق معرفتك و حمادى امر الناسكين سبحانك ماعبدناك حق عبادتك اللهم انى لا احصى ثناءً عليك انت كما اثنيت على نفسك اللهم انى اتوسل اليك بخير الوسيلة واتوصل اليك بافضل الوصيلة مادبتك الجفلى والجفنة الغراء المبجل عند اهل الخضراء والغبراء خيرتك من اهل الارض والسماء المصطفى من الذورة العليا فى صميم العرب العرباء والمختار من خيرحيين هاشم الشماء

وزهرة الزهراء سيدنا ونبينا ابى القاسم محمد بن عبد الله بن عبد المطلب بن هاشم بكر آمنة بنت وهب بن عبد مناف بن زهرة عقيلة بنى مرة المجلى فى ميدان فصاحة اللسان والحائز قصب السبق فى مضمار البلاغة والبيان الذى آتيته السبع المثانى والقرأن وبعثته الى الانس والجان بكلمة طيبة كشجرة طيبة اصلها ثابت وفرعها فى السماء والملة النقية البيضاء الحنيفية السهلة السمحاء على فترة من الرسل وانقطاع من السبل بين اهل ترات وشحناء وذوى اختلاف من الاراء يعمهون فى الجاهلية الجهلاء ويسفهون بالقول الهراء يعبدون اللات والعزى ومناة الثالثة الاخرى ويذرون رب السموات والارض وما بينهما وما تحت الثرى فشرع لهم سبيل النجاء وقومهم على المحجة البيضاء وانقذهم من ظلة الشقاء وجمع الله به الشمل ولم الشعث ولاءم الصدع وجبر انكسر ورأب الثأى فعاد الطاعن مثنيا والذام مادحا والكافر شاكرا ورأوه سراجا مستنيرا وهاجا فدخلو فى دين الله افواجا وصاروا اخوانا متناصحين بعدما كانوا اعدا أمتباغضين فهو رحمة العالمين ومحمود فى الاولين والآخرين ومستوجب شكر السابقين واللاحقين جزاه الله عن امته خير الجزاء واعطاه الوسيلة والفضيلة والمقام المحمود الموعود الثناء والسناء اللهم فصل عليه صلاة زاكية بلا انقضاء وسلم تسليما ناميا بلا انتهاء وعلى آله الذين لم يألوا جهدا فى نصرته والاتباع لشريعته وسنته واصحابه الذين كانوا يحبونه اشد من الظمأ ان للماء البارد ويؤثرونه على الولد والوالد فقد قاتلوا تحت لوائه الآباء والابناء وبذالوا المهج وهراقوا الدماء على ما تواترت به الاخبار وتتابعت عليه الاثار المهاجرين منهم والانصار وغيرهم من اهل البوادى والامصار اجمعين والحمد لله رب العالمين اما بعد فيقول العبد المفتقر الى الله الغنى البارى على بن شاكر الموستارى نزيل دار الخلافة العلية القسطنطينية المحمية المعروف بجابى زاده جعله الله ممن لهم الحسنى وزيادة لما كان الشعر ديوان الادب ودستور كلام العرب اليه يرجع فى حل المشكلات وبه يستعان فى كشف المعضلات وكان قد روى عن اصحاب رسول الله صلى الله عليه وسلم شيء كثير منه وقع فى خلدى ان اجمع منه ما تيسر جمعه مما تفرق فى بطون اوراق السلف وتشتت فى سطور اقلام الخلف مما قالوه فى التوحيد والثناء على الله واعلاء كلمته ومدح الرسول صلى الله عليه وسلم وبيان ما عاينوه من معجزاته واظهار ما تحملوه من المكابد والمشاق من قطع الصحارى والفيافى على الاينق النواجى الضوامر المهارى فى وفودهم عليه فى بدء اسلامهم حبا فيه وفى دينه وبغضا للشرك واعوانه وما ارتجلوا به بديهة

عند رؤية طلعته الباهرة مصابيح الدجى النيرة وما ارتجزوا به فى مصاف الحروب ومتبارزها فى فخرهم على الاعداء وابراز حماستهم ارهابا لقلوبها وارغاما لانوفها وماها جوابه اهل الشرك انتصارا فاقرعوهم سن نادم حتى ولوا ادبارا ومانطقوا به فى المواعظ والحكم مما اغلى فيه العمأ القيم وماشبيوا وتغزلوا به فى غير منكر تأنيسا للانفس وازالة للضجر وبالجملة مما استخرجته قرائحهم الوقادة وطبائعهم النقادة فى المقامات الجليلة والمطالب الجميلة حبا فيهم وترغيبا فى مزيد حبهم باحياء تلك الاثار التى يظهر بها فضلهم وشدة تمسكهم بالدين المبين وقوة اعتصامهم بحبل الله المتين بحيث يتسع قلب المؤمن لازدياد جهم وينشرح صدره لتوفرودهم فيزداد ايمانا مع ايمانه ويكمل ايقانا مع ايقانه ويكون الاديب المتشرع قدا طلع على كثير من امور الدين وتاريخ الاسلام مما وقع فى عهده عليه الصلاة والسلام وعهد الخلفاء الراشدين من تأسيس الدين وظهور الفتح المبين فيجد نفسه كانها تعيش فى تلك العهود الشريفة والعصور المنيفة ويخيل اليه انه شهد بدرا واحدا والحديبية مع المصطفى خير البرية وخيبر والفتح وحنينا فيرتاح روحه ويقر عينا والعزمات الصديقية والفتوحات العمرية والملاحم اليرموكية وايام القادسية والجيوش العثمانية والفتكات العلوية والهجمات الخالدية ويكون مع ذلك قد اخذ حظا وافرا من اساليبه كلام العرب وفنون الادقيغنيه عن مجون ابن ابى ربيعة وابن الرومى وابى نواس ويلدهيه عنه فحش الفرزدق وجرير وابن الاحنف عباس فيكون قد استمسك من الفضل بكلتا العروتين ورفل من المجد فى كلتا الحلتين هذا وانه كان يثبطنى عما اقدر فى نفسى انى لم ارالى الآن كتابا نسج على هذا المنوال ولا مجموعا عنى به فى هذا المقال فان العلماء رحمهم الله وان ذكروا فى كتبهم شيئا كثيرا من اشعار الصحابة رضوان الله تعالى عليهم فانما ذلك فى ضمن تراجم احوالهم اوبيان غزواتهم اوعند ذكرهم مع غيرهم منى الشعراء اوفى الاستشهاد على المسائل والوقائع اونحو ذلك كل ذلك شتيتا مفرقا فاما ان يكون كتاب مستقل مفرد فى اشعارهم فلا فقلت انى لى ان اردمشر عالم يتقدمنى اليه فارط وكيف لى ان اسلك سبيلا لم يوطأ قبلى بخف ولا حافر فتذكرت قول الشاعر كم ترك الاول للاخر وقلت اذا كانت النية ذكر ما للصحابة من المفاخر وكان الله هو المعين والناصر فقد يتيسر مالم يتيسر للماضى للغابر واجمعت على ماقصدت عزمى وقلت بسم الله فاذا عزمت فتوكل على الله وَاسْمُتْ لَمَّا اغدودن المرعى وان كان

يقال استنّت الفصال حتى القرّعى فشمرت عن ساق الجد فى تطلب اشعار الصحابة فى مظانها واستخراجها من مكانها من كتب المتقدمين وزبر المتأخرين حتى كتبت لاكثر من مائتى رجل من الصحابة مابين بيت مفرد فقصيدة طويلة فامتلأ الوطاب واتسع الكتاب بعون المنعم الوهاب ولم اكتب من كل كتاب بلى من كتب الاثبات الثقات والاعلام الهداة المعول عليهم فى هذا الشان والمرجوع اليهم فى صحة النقل والبيان والمشار اليهم بالبنان وهاهى هذه الجامع الصحيح لابى عبدالله محمد بن اسمعيل البخارى والسيرة النبوية لابى بكر اوابى عبدالله محمد بن اسحق امام السير والمغازى والسيرة النوية لابى محمد عبدالملك بن هشلم الحميرى والكامل لابى العباس محمد بن يزيد المبرد والاخبار الطوال لابى حنيفة الدينورى وطبقات الشعراء لمحمد بن سلام الجمحى وكتاب المعمرين لابى حاتم السجستانى والاغانى لابى الفرج الاصفهانى والعقد الفريد لابى عمر بن عبد ربّه المغربى وديوان حسان بن ثابت رضى الله عنه صنع ابى سعيد السكرى وشرح ديوان ابى المحجن الثقفى رضى الله عنه لابى الهلال العكرى والاستيعاب فى معرفة الاصحاب وبهجة المجالس كلاهما لابن عبدالبر الاندلسى وبستان العارفين للفقيه ابى الليث السمرقندى والامالى لابى على القالى والروض الأنف لابى القاسم السهيلى المالقى وزهر الاداب للحصرى القيروانى واعلام النبوة للامام الماوردى والنهاية فى غريب الحديث والاثر لمجد الدين بن الاثير واسد الغابة فى معرفة الصحابة لاخيه عز الدين ابن الاثير والاصابة فى تميز الصحابة للحافظ ابن حجر العسقلانى وشرح البخارى للفاضل العينى وشرحه ايضا للفاضل القسطلانى ومعجم البلدان للفاضل ياقوت الحموى وغيرها من الكتب المعتبرة ثم انه بدالى ان اشرح ماجمعته من هذه الاشعار شرحا انحو به نحو الاختصار واقصد قصدا لا قتصار واذكر فيه ترجمة كل قائل اول ماذكر شعره واوضح ماتيسر لى فهمه من لفظ غريب اواعراب غير معرب اوكلام مستغلق او نسب لابد من الوقوف عليه والاحاطة بمالديه اومغزا لوح اليها او قصة دل عليها او خبر اشير اليه يوجد السبيل الى ثمته اواثرا ومى اليه يمكن الوصول الى تكملته مع الاعتراف بكلول الحد عن مبلغ ذلك الحدّ فليس الغرض المعتمد ان استولى على ذلك الامد ولكن من سافرت فى العلم همته فلا يلقى عصا التسيار وقد قيل فى قديم الاعصار متى تبلغ الكثيرا من الخير اذا كنت تاركا لاقله ومالا يدرك كله لا يترك كله هذا والنية ان أجز هذا الشرح على ثلثة اجزاء مرتبا على حروف المعجم بالنسبة الى قوا فى الابيات

ويكون الجزء الاول من قافية الهمزة الى قافية الراء والثانى من قافية الراء الى قافية اللام والثالث من قافية الالام الى قافية الياء آخر الحروف وان اسميه

## حُسْنَ الصَحابة فى شرح اشعار الصحابة

فشرعت مستعينا بالله الذى هو ميسر كل عسير وجعلت اخطو خطوا لحسير وانهض البرق الكسير ثم فتح الله جل ثناؤه على فصرت اسير رَهْوا بعدما كنت ازحف حَبْوا وماذاك الا ببركة النبى صلى الله عليه وسلم واصحابه رضوان الله عليهم حتى حقق الله الامل فوفقنى لاتمام الجزء الاول وكتبت فيه لستين رجلا من الصحابة ماينيف على سبعمائة وسبعين بيتا من الشعر وذكرت مأخذ كل شعر من الكتب التى كتبت منها فى اخر شرح الشعراو فى اوله وراعيت الترتيب فى اسماء القائلين فى كل باب على ترتيب حروف المعجم نظرا الى اوائل حروف اسمائهم فذكرت شعر حسان مثلا قبل شعر خفاف مثلا وهكذا وذكرت بعد اسم كل قائل شعر فى الشرح مايدل على انه فى اى موضوع واى مطلب شعره حتى يكون للناظر فيه علم اجمالى فيسهل تناوله وفهمه واشرت الى بحر كل شعر بازائه فى الهامش ولم اذكر من اشعارهم الجاهلية الا ماندر مما لم يكن فيه تظاهر بالشرك ولا هجو مقذع واشتمل مع ذلك على بلاغة رائعة او حماسة بارعة وارجو من الناظر فى كتابى هذا ان يغمض عينه عما وقع فيه من الخطأ والزلل والقصور والخلل ولا يعظم الامر فى ذلك فقد اخطأ العلماء وصح لهم هفوات كما حق للجياد كبوات فكيف بمن كان تراب نعالهم وواو عمر ونسبةً اليهم

نزلوا بمكة فى قبائل نوفل ونزلت بالبيداء ابعد منزل

مع ان هذا المجموع اول ما خط بنانى ولم يورق بعد اغصانى واول كل مركب صعب وفيه ما لا يخفى من التعب على ان كثيرا من تلك الاشعار بل يكاد يكون اكثرها لم اجدها مشروحة فى كتاب من الكتب فما اصبت فمن مواهب العلى الاعلى وما اخطأت فانا بذاك اولى وبعد فاى كتاب بعد كتاب الله سبحانه يصفو عن السقط ويخلو عن الغلط صغيرا كان او كبيرا وقال تعالى ولو كان من عند غير الله لوجد وافيه اختلافا كثيرا وقصارى ان اقول انا من الذين

اعترفوا بذنوبهم خلطوا عملا صالحا وآخر سيئا

ثم انى ادعو الله مجتهدا ان يوفقنى لا تمام الجزئين الاخيرين ويلهمنى الصواب و اليه المرجع والمآب و عنده حسن الثواب وله اللطف الجزيل وهو حسبى ونعم الوكيل

## مقدمه

و فيها فصول الاول فى تعريف الصحابى الثانى فى الطريق الى معرفة كون الشخص صحابيا الثالث فى تعديل الصحابة الرابع فى الشعر وما يتعلق به

## الفصل الاول

فى تعريف الصحابى هو بفتح الصاد نسبة الى الصحابة وهى كالصحبة مصدر صحب كسمع و هى المرادة فى لفظ حسن الصحابة فى اسم كتابنا و قيل نسبة الى الصحابة جمع صاحب قالوا و لم يجمع فاعل على فعالة الا هذا و كثيرا ما ينسب الى الجمع اذا كان علما او نحوه مثل انصارى وعلى كلا القولين هو بمعنى الصاحب و هوالرفيق والمعاشر شاع فى صاحب رسول الله صلى الله عليه وسلم و احسن ما قيل فى تعريفه انه من لقى النبى صلى الله عليه وسلم مؤمنا به ومات على الاسلام فيدخل فى من لقيه من طالت مجالسته له ومن قصرت و من روى عنه اولم يرو ومن غزا معه اولم يغزو من رأه رؤية ولولم يجالسه و من لم يره لعارض كالعمى وان جعل الايمان اعم من الاصلى والتبعى يدخل فيه اولاد المسلمين الذين لقوه قبل البلوغ ولو قبل سن التمييز كمحمد بن ابى بكر رضى الله عنه فانه ولد قبل وفاة النبى صلى الله عليه وسلم بثلثة اشهر ويخرج بقيد الايمان من لقيه كافرا ولو اسلم بعد ذلك ولم يجتمع به مرة اخرى و قوله به يخرج من لقيه مؤمنا بغيره كمن لقيه من مؤمنى اهل الكتاب قبل البعثة فقط وهل يدخل من لقيه منهم و آمن

بانه سيبعث اولا يدخل محل احتمال ومن هؤلاء بحيرا الراهب ونظراؤه ويدخل فى قولنا مؤمنا به مؤمنوا الجن الذين آمنوا به بالشرط المذكور وخرج بقولنا ومات على الاسلام من لقيه مؤمنا به ثم ارتد ومات على ردته والعياذ بالله وقد وجد من ذلك عدد يسير كعبيد الله بن جحش الذى كان زوج ام حبيبة رضى الله عنها فانه اسلم معها وهاجرا الى الحبشة فتنصر هو ومات على نصرانيته وكعبدالله بن خطل الذى قتل يوم الفتح وهو متعلق باستار الكعبة وكربيعة بن امية بن خلف فانه هرب فى عهد عمر بن الخطاب رضى الله عنه الى قيصر وتنصر ومات على نصرانيته على ما ذكره صاحب الاصابة فى ترجمته ويدخل فيه من ارتد وعاد الى الاسلام قبل ان يموت سواء اجتمع به صلى الله عليه وسلم مرة اخرى اولا وهذا هوالصحيح المعتمد والشق الاول لا خلاف فى دخوله وابدى بعضهم فى الشق الثانى احتمالا وهو مردود لاطباق اهل الحديث على عد الاشعث بن قيس الكندى فى الصحابة وعلى تخريج احاديثه فى الصحاح والمسانيد وهو ممن ارتدا ثم عاد الى الاسلام فى خلافة ابى بكر الصديق رضى الله عنه وهل يدخل فيه من رأه ميتا كابى ذؤيب الهذلى الشاعر ان صح محل نظر والراجح عدم الدخول على مافى الاصابة

## الفصل الثانى

فى الطريق الى معرفة كون الشخص صحابيا وذلك باشياء اولها ان يثبت بالتواتر انه صحابى ثم بالاستفاضة والشهرة ثم بان يروى عن احد من الصحابة ان فلانا له صحبة مثلا وكذا عن احد من التابعين بنا أعلى قبول التزكية من واحد وهو الراجح ثم بان يقول هو اذا كان ثابت العدالة والمعاصرة انا صحابى اما الشرط الاول فجزم به الآمدى وغيره لان قوله قبل ان تثبت عدالته انا صحابى اومايقوم مقام ذلك يلزم من قبول قوله اثبات عدالته لان الصحابة كلهم عدول فيصير بمنزلة قول القائل انا عدل وذلك لايقبل ونقل ابو الحسن بن القطان الخلاف فى ذلك و رجح عدم الثبوت واما ابن عبد البر فجزم فيمن لايعرف حاله الا من نفسه بالقبول بنا أ على ان الظاهر سلامته من الجرح وقوى ذلك بتصرف ائمة الحديث فى تخريجهم احاديث هذا الضرب فى مسانيدهم ومن صور هذا الضرب ان يقول التابعى اخبرنى فلان مثلا انه سمع النبى صلى الله عليه وسلم يقول واما اذا قال اخبرنى رجل مثلا عن النبى صلى الله عليه وسلم بكذا فثبوت الصحبة بذلك بعيد لاحتمال الارسال ويحتمل التفرقه بين ان يكون القائل من كبار التابعين فيرجح القبول اوصغارهم فيرجح عدمه واما الشرط الثانى وهو المعاصرة فيعتبر بعدم مضى مائة سنة وعشر سنين من هجرة النبى عليه السلام لقوله صلى الله عليه وسلم فى آخر عمره لاصحابه ارأيتكم ليلتكم هذه فان على رأس مائة سنة منها لايبقى على وجه الارض ممن هو اليوم عليها احد رواه البخارى ومسلم من حديث ابن عمر رضى الله عنهما زاد مسلم من حديث جابر رضى الله عنه ان ذلك قبل موت النبى صلى الله عليه وسلم بشهر ولفظه سمعت النبى صلى الله عليه وسلم يقول قبل ان يموت بشهر اقسم بالله ماعلى الارض من نفس منفوسة اليوم يأتى عليها مائة سنة وهى حية يومئذ ولهذه النكتة لم يصدق الائمة احدا ادعى الصحبة بهذه الغاية المذكورة وقد ادعاها جماعة فكذبوا وكان آخرهم رتن الهندى الذى ظهر على رأس القرن السادس من الهجرة فادعى انه رأى النبى صلى الله عليه وسلم شهد معه حفر الخندق وشهد زفاف فاطمة بنت رسول الله صلى الله عليه وسلم وروى احاديث عن النبى عليه السلام وقد الف الذهبى فى رد صحبته جزأ وقال فى الميزان رتن الهندى وما ادراك مارتن شيخ دجال

بلاريب ظهر بعد ستمائة فادعى الصحبة والصحابة لايكذبون وهذا جرئى على الله ورسوله وقد قيل انه مات سنة اثنتين وثلاثين وستمائة ثم قال لعمرى مايصدق بصحبة رتن الامن يؤمن بوجود محمد بن الحسن فى السرداب ثم بخروجه الى الدنيا فيملأ الارض عدلا ويؤمن برجعة على رضى الله عنه وهؤلاء لايؤثر فيهم علاج ربما جاء عن الائمة من الاقوال المجملة فى الصفة التى يعرف بها كون الرجل صحابيا وان لم يرد التنصيص على ذلك ما اورده ابن ابى شيبة فى مصنفه انهم كانوا فى الفتوحات لايؤمرون غير الصحابة وقول ابن عبد البر انه لم يبق بمكة ولا الطائف احد فى سنة عشر الا اسلم وشهد مع النبي صلى الله عليه وسلم حجة الوداع ومثل ذلك قول بعضهم فى الاوس والخزرج انه لم يبق منهم احد فى آخر عهد النبي صلى الله عليه وسلم الا دخل فى الاسلام ومامات النبي عليه السلام واحد منهم يظهر الكفر .

## ﴿ الفصل الثالث ﴾

فى تعديل الصحابة رضوان الله تعالى عليهم اتفق اهل السنة على ان الجميع عدول ولم يخالف فى ذلك الا شذوذ من المبتدعة وقد عدلهم الله سبحانه وتعالى فى آيات كثيرة منها قوله تعالى كنتم خير امة اخرجت للناس وقوله تعالى وكذلك جعلناكم امة وسطا قال اهل التفسير اى خيار اعدولا وقوله تعالى والسابقون الاولون من المهاجرين والانصار والذين اتبعوهم باحسان رضى الله عنهم ورضوا عنه وقوله تعالى يا ايها النبى حسبك الله ومن اتبعك من المؤمنين فى آيات كثيرة يطول ذكرها وكذلك عدلهم النبى صلى الله عليه وسلم بقوله الله الله فى اصحابى لا تتخذوهم غرضا من بعدى فمن احبهم فبحبى احبهم ومن ابغضهم فببغضى ابغضهم ومن آذاهم فقد آذانى ومن آذانى فقد آذى الله ومن آذى الله فيوشك ان يأخذه وقوله صلى الله عليه وسلم خير الناس قرنى وقوله عليه السلام لو انفق احدكم مثل احد ذهبا مابلغ مد احدهم ولا نصيفه وقوله صلى الله عليه وسلم ان الله اختار اصحابى على الثقلين سوى النبيين والمرسلين رواه البزار فى مسنده بسند رجاله موثقون من حديث سعيد بن المسيب عن جابر رضى الله عنه وفى هذا الباب احاديث كثيرة وفيما ذكرنا مقنع وجميع ماورد من الآيات والاحاديث يقتضى القطع بعدالتهم ولا يحتاج احد منهم مع تعديل الله

ورسـوله اياهم الى تعديل احد من الخـلق على انه لولم يرد فى فضلهم ماورد من الايات والاحاديث لاوجبت الحال التى كانوا عليها من الهجرة والجهاد ونصرة الاسلام وبذل المهج والاموال وقتل الاباء والابناء وقوة الايمان واليقين والمناصحة فى الدين ووصل حبله المبين وقطع دابر المشركين وفتح البلاد بالسيوف وسقى اهل العناد سم الحتوف القطع فى تعديلهم والاعتقاد لنزاهتهم وانهم افضل من جميع الخالفين بعدهم والمعدلين الذى يجيؤن من بعدهم على ان الفوز بصحبة الحبيب الاكرم ولو لحظة هى لعمرى الاكسير الاعظم فلايدعهم ماأشرق عليهم من نور طلعته فى ظلمة الذنب ودجنته بل يكاد يقطع بدخول من ابتلى منهم بشيء من ذلك حسب قضاء الله وقدره حيث لاعصمة لهم دخولا اوليا فى عموم قوله تعالى والذين اذا فعلوا فاحشة اوظلموا انفسهم ذكروالله فاستغفروا لذنوبهم ومن يغفر الذنوب الاالله ولم يصروا على مافعلواوهم يعلمون ونحن لاندعى عدالة اولئك القوم الا بمعنى انهم لم يذهبوا الى رب العالمين الا وهم ببركة صحبة النبى صلى الله عليه وسلم طاهرون مطهرون ولايلتفت الى ماقاله السعدفى التلويح ان الجزم بعدالة الصحابة مختص بمن اشتهر منهم بطول الصحبة والاخذ عنه صلى الله عليه وسـلم والباقون كسائر الناس فيهم عدول وغير عدول ولاالى ماقاله فى شرح المقاصد انه ليس كل من لقى النبى صلى الله عليه وسـلم بالخير موسوما وغير ذلك مما لم يكن ينبغى لمثله ان يقول مثله وقدسبقه بهذه السيئة المازرى حيث قال فى شرح البرهان لسنا نعنى بقولنا الصحابة عدول كل من رآه يوما اوزاره لماما او اجتمع به لغرض وانصرف عن كثب وانما نعنى به الذين لازموه وعزروه ونصروه واتبعوا النور الذى انزل معه اولئك هم المفلحون انتهى فان هذا مخالف لجمهور اهل السـنة ولم يتابع عليه بل اعترضه جماعة من الفضلاء قال الشيخ صلاح الدين العلائى هو قول غريب يخرج كثيرا من المشهورين بالصحبة كوائل بن حجر ومالك بن الحويرث وعثمان بن ابى العاص الثقفى وغيرهم ممن وفـد على النبى صلى الله عليه وسلم ولم يقم عنده الا قليلا وكذلك من لم يعرف الا بحديث اوحديثين ولم يعرف مقدار اقامته من اعراب القبائل والقول بالتعميم هوالذى صرح به الجمهور وهو المعتبر والله سبحانه اعلم .

## الفصل الرابع

فى الشعر وما يتعلق به الشعر كلام موزون مقفى قصدا فما وقع موزونا ولم يقصد وزنه فليس بشعر ولو كان مثل هذا شعر الكان كثير من الصبيان شعراء فان كثيرا من كلامهم يمكن تطبيقه على بحور الشعر والشعر كلام حسنه حسن وقبيحه قبيح وقد اخرج هذا البخارى فى الادب المفرد مرفوعا من حديث عبدالله بن عمر ورضى الله عنهما ولفظه قال رسول الله صلى الله عليه وسلم الشعر بمنزلة الكلام حسنه كحسن الكلام وقبيحه كقبيح الكلام وقد ورد فى مدحه احاديث وآثار كثيرة منها قوله صلى الله عليه وسلم ان من الشعر لحكمة وقد سمع رسول الله صلى الله عليه وسلم الشعر واجاز عليه وكان يستنشده فمن ذلك الخبر المعروف حين استسقى فسقى قال لله در ابى طالب لو كان حيا لقرت عينه من الذى ينشد شعره فقال على رضى الله عنه كأنك اردت قوله

وابيض يستسقى الغمام بوجهه ثمال اليتامى عصمة للارامل

يلوذ به الهلاك من آل هاشم فهم عنده فى نعمة وفواضل

كذبتم وبيت الله نُبْزى محمدا ولما نطاعن دونه ونناضل

ونسلمه حتى نُصَرَّع حوله ونذهل عن ابنائنا والحلائل

ولما نظر رسول الله صلى الله عليه وسلم الى القتلى يوم بدر مصر عين قال لابى بكر رضى الله عنه لو ان ابا طالب حى لعلم ان اسيافنا اخذت بالاماثل وذلك لقول ابى طالب

وانا لعمر الله ان جد ما ارى لتلتبسن اسيافنا بالاماثل

الاماثل الاشراف وهذا البيت مع الابيات السابقة من قصيدة لابى طالب تنيف على مائة بيت قالها فى وقعة الشعب وفيها مدح كثير لرسول الله صلى الله عليه وسلم قال الشيخ عبدالقاهر فى اوائل دلائل الاعجاز ومن المحفوظ فى ذلك حديث محمد بن مسلمه الانصارى رضى الله عنه جمعه وابن ابى حدرد الاسلمى رضى الله عنهما الطريق قال فتذاكرنا الشعر والمعروف قال فقال محمد كنا يوما عند النبى صلى الله عليه وسلم فقال لحسان بن ثابت انشدنى قصيدة من شعر الجاهلية فان الله قد وضع عنا آثامها فى شعرها وروايته فانشده قصيدة لاعشى همجابها علقمة بن علاثة العامرى

علقم ماانت الى عامر  الناقض الاوتار والواتر

فقال النبي صلى الله عليه وسلم ياحسان لاتعد تنشدني هذه القصيدة بعد مجلسك هذا فقال يارسول الله تنهاني عن رجل مشرك مقيم عند قيصر فقال النبي صلى الله عليه وسلم ياحسان اشكر الناس للناس اشكرهم لله وان قيصر سأل ابا سفيان عني فتناول مني وانه سأل هذا عني فاحسن القول وروى من وجه آخر ان حسان رضي الله عنه قال يارسول الله من نالتك يده وجب علينا شكره ومن المعروف في ذلك خبر عائشة رضي الله عنها انها قالت كان رسول الله صلى الله تعالى عليه وسلم كثيرا ما يقول ابياتك فاقول

ارفع ضعيفك لايحربك ضعفه  يوما فتدركه العواقب قدنمى

يجزيك اويثني عليك وان من  اثنى عليك بمافعلت فقدجزى

قالت فيقول رسول الله صلى الله عليه وسلم يقول الله تبارك وتعالى لعبد من عبيده صنع اليك عبدي معروفا فهل شكرته عليه فيقول يارب علمت انه منك فشكرتك عليه قال فيقول الله عزوجل لم تشكرني اذلم تشكر من اجريته على يده انتهى وعقلمة بن علاثة اسلم وصحب النبي صلى الله عليه وسلم وكان تنافر هو وعامر بن الطفيل العامري ففضل الاعشى عامرا على علقمة ومدح عامرا وهجا علقمة ثم حكم بينهما هرم بن قطبة الفزاري فقال انتما كركبتي البعير تقعان معا وكلا كما سيد كريم ولم يفضل وامر ابنيه ان ينحر احدهما عن عامر عشر او آخر عن علقمة مثلها فنحلا وكان علقمة بن علاثة اختصم هو وكنانة بن عبد ياليل بعد موت ابي عامر الراهب عند قيصر في ميراثه فاعطاه قيصر لكنانة لكونه من اهل المدر ولم يعطه لعلقمة وقال الشريد ابن السويد الثقفي رضي الله عنه كنت ردف النبي صلى الله عليه وسلم فاستنشدني شعر امية ابن ابي الصلت فانشدته فاخذ النبي صلى الله عليه وسلم يقول هيه هيه حتى انشدته مائة قافية فقال انكاد ليسلم ورثما كان صلى الله عليه وسلم يرتاح للشعر كارتياحه لشعر النابغة الجعدي رضه وقوله اجدت لايفضض الله فاك وقالت عائشه رضي الله عنها كان رسول الله صلى الله عليه وسلم يخصف نعله وكنت جالسة اغزل فنظرت اليه فجعل جبينه يعرق وجعل عرقه يتولد نورا قالت فبهت فنظر الي فقال مالك بهت فقلت يارسول الله

نظرت اليك فجعل جبينك يعرق وجعل عرقك يتولد نورا و لو رآك ابو كبير الهذلى لعلم انك احق بشعره قال ومايقول ابو كبير الهذلى قلت يقول هذين البيتين

ومبرّئ من كل غبر حيضة وفساد مرضعة وداء مغضل

واذا نظرت الى اسرّة وجهه برقت كبرق العارض المتهلل

قالت فوضع رسول الله صلى الله عليه وسلم ماكان بيده وقام وقبل مابين عينى وقال جزاك الله خيرا ياعائشة ماسررت منى كسرورى منك و بيتا ابى كبير الهذلى فى قصيدة له مدح بها تأبط شرا وكان ربيبه والقصيدة مذكورة فى اوائل ديوان الحماسة وابو كبير الهذلى اسلم رضى الله عنه وصحب النبى صلى الله تعالى عليه وسلم وارتياحه صلى الله عليه وسلم لانشاد كعب بن زهير مشهور وكان له صلى الله عليه وسلم علم بالشعر وان لم يقله روى ان سودة بنت زمعة رضى الله عنها انشدت ( عدى وتيم تبتغى من تحالف ) فظنت عائشة وحفصة رضى الله عنهما انها عرضت بهما وجرى بينهن كلام فى هذا المعنى فأخبر النبى صلى الله عليه وسلم فدخل عليهن وقال ويلكن ليس فى عديكن وتيمكن قيل هذا وانما قيل هذا فى عدى تيم يتم تيم وتمام هذا الشعر

فحالف فلا والله تهبط تلعته من الارض الا انت للذل عارف

الامن رأى العبدين اوذكراله عدى وتيم تبتغى من تحالف

وروى الزبير بن بكار قال مر رسول الله صلى الله عليه وسلم ومعه ابو بكر رضى الله عنه برجل يقول فى بعض ازقة مكة

يا ايها الرجل المحول رحله هلا نزلت بآل عبد الدار

فقال النبى صلى الله عليه وسلم يا ابا بكر هكذا قال الشاعر قال لا يارسول الله ولكنه قال

يا ايها الرجل المحول رحله هلا سألت عن ال عبد مناف

فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم هكذا كنا نسمعها وكان عمر رضى الله عنه انقد اهل زمانه للشعر وكان يمثل كثيرا باشعار الجاهلية وقال علموا اولادكم العوم والرماية ومروهم فليثبوا على الخيل وثبا وروهم مايجمل من الشعر وروى ان

كتب الى ابى موسى الاشعرى رضى الله عنه مر من قبلك يتعلم الشعر فانه يدل على معالى الاخلاق وصواب الرأى ومعرفة الانساب وقال ابن عباس رضى الله عنهما اذا قرأتم شيئاً من كتاب الله فلم تعرفوه فاطلبوه فى اشعار العرب فان الشعر ديوان العرب وكانت عائشة رضى الله عنها تروى شيأ كثيرا من الشعر ذكر ابن عبد البر فى ترجمة لبيد بن ربيعة رضى الله عنه عن عائشة رضى الله عنها انها قالت رويت للبيد اثنى عشر الف بيت وعن هشام بن عروة عن ابيه قال مارأيت امرأة اعلم بشعر ولا بطب ولا بلغة ولا بفقه من عائشة ام المؤمنين رضى الله عنها وكان السلف من الصحابة وغيرهم ينشدون الشعر ويتمثلون به وكانت الصحابة رضى الله عنهم يتناشدونه والنبى عليه السلام جالس بينهم يتبسم وكان الحسن البصرى يتمثل فى مواعظه وكان اوجعها عنده

اليوم عندك دلها وحديثها  وغدا لغيرك كفها والمعصم

والاستقصاء فى هذا الباب يحتاج الى افراده بكتاب وفيما ذكر كفاية واما قوله صلى الله عليه وسلم لان يمتلئ جوف احدكم قيحا حتى يريه خير له من ان يمتلئ شعرا فذكر الفقيه ابو الليث فى بستان العارفين ان عائشة رضى الله عنها لما بلغها ان اباهريرة رضى الله عنه يروى هذا الحديث قالت يرحم الله ابا هريرة انما قال النبى عليه السلام لان يمتلئ جوف احدكم قيحا حتى يريه خير له من ان يمتلئ شعرا يريد به الشعر الذى هجيت به يعنى رسول الله عليه السلام ولايخفى انه يبعد الحمل المذكور التعبير بيمتلئ فان القليل والكثير مما فيه هجو لخير البشر سواء وحمل الاكثرون الخبر المذكور على ما اذا غلب عليه الشعر وملك نفسه حتى اشتغل به عن الذكر والقرأن والفقه ونحوها ولذلك ذكر الامتلاء وانظر الى ماروى عن الامام الشافعى رحمه الله

ولولا الشعر بالعلماء يزرى  لكنت اليوم اشعر من لبيد

فبين بالشعر ان الشعر يزرى بالعلماء ولم يبين بالنثر فاشار الى ان التوغل بالشعر والتفرد له بالحيثية المذكورة فيما سبق مذموم فان ماذكره شعر واما قوله تعالى والشعراء يتبعهم الغاوون فانما هو فى الذين يكفرون ويكذبون صريحا ويهجون فى غير ماجوز الشرع الهجو فيه ويطعنون فى اعراض المسلمين فان الله سبحانه بين ذلك فقال الم تر انهم فى كل واد يهيمون وانهم يقولون مالا يفعلون واستثنى فقال الا الذين آمنوا

وعملوا الصالحات وذكروا الله كثيرا وانتصروا من بعد ما ظلموا فدل على جواز الشعر في التوحيد والثنأ على الله والحث على الطاعة والحكمة والموعظة والترهيب عن الدنيا والترغيب فيما عند الله ونشر محاسن رسول الله عليه السلام ومدحه وذكر معجزاته ليتغلغل حبه في سويداء قلوب السامعين ونشر مدائح آله واصحابه وصلحأ امته والانتصار للدين بهجو المشركين والتناخر عليهم لادخال الرعب في قلوبهم كما كان يفعله حسان بن ثابت وكعب بن مالك وعبدالله بن رواحة وغيرهم من الصحابة رضى الله عنهم فامثال هذا مما لا بأس به بل يمدح ويثاب عليه فاما الطعن في اعراض المسلمين والكذب الصريح كجعل الجواد بخيلا والبخيل جوادا كالذى قال في ابى دلف العجلى الجواد المعروف

ابا دلف يا اكذب الناس كلهم  سواى فانى فى مديحك اكذب

فهذا كذب صريح ومحرم فاما المبالغة في المدح والتوسع فيه فانه وان كان كذبا لا يلحق في التحريم بالكذب كقوله

ولو لم يكن في كفه غير روحه  لجاد بها فليتق الله سائله

فان هذا عبارة عن الوصف بنهاية السخأ فان لم يكن صاحبه سخيا كان كاذبا وان كان سخيا فالمبالغة من صنعة الشعر فلا يقصد منه ان يعتقد صورته وقد انشدت بين يدى النبي عليه السلام امثال هذا فلم ينه عنه على ما في الاحياء واما رواية مالا يجوز انشاؤه فان كان لغرض صحيح كتعلم العربية والوقوف على مزاياها والاستشهاد بذلك فلا باس به فقد رى العلمأ امثال هذا وذموا الفرزدق وجريرا على تهاجيهما ولم يذموا من استشهد بذلك على اعراب وغيره من علم اللسان هذا وبعد هذا نبدأ اشعار الصحابة وشرحها

## باب قافية الهمزة

## حسان بن ثابت الانصارى الخزرجى

## رضى الله عنه

يمدح النبي عليه السلام ويهدد كفار قريش ويهجو ابا سفيان بن الحرث قبل اسلامه وكان هجاءً للنبي عليه السلام واصحابه ثم اسلم قبيل الفتح و حسن اسلامه رضى الله عنه

## ترجمة حسان رضى الله عنه

هو حسان بن ثابت بن المنذر بن حرام بن زيد مناة بن عدى بن عمرو بن مالك بن النجار وهو تيم الله بن ثعلبة بن عمرو بن الخزرج يكنى ابا الوليد وهى الاشهر وابا المضرب وابا الحسام وابا عبدالرحمن وامه الفريعة بالتصغير بنت خالد بن حبيش بن لوذان خزرجية ايضا من بنى كعب بن الخزرج ادركت الاسلام فاسلمت وبايعت وهو فحل من فحول الشعراء حتى قيل انه اشعر اهل المدر وكان شاعر رسول الله عليه السلام يذب عنه ويهجو المشركين حتى قال له رسول الله عليه السلام ان روح القدس لا يزال يؤيدك ما كافحت عن الله ورسوله وروى صاحب الاغانى بسنده ان النبى عليه السلام قال ليلة وهو فى بعض اسفاره اين حسان بن ثابت فقال حسان لبيك يارسول الله وسعديك قال أُحْدُ فجعل ينشد ويصغى اليه النبى عليه السلام ويستمع فمازال يستمع اليه وهو سائق راحلته حتى كان رأس الراحلة يمس الورك حتى فرغ من نشيده فقال النبى عليه السلام لهذا اشد عليهم من وقع النبل وكان حسان رضى الله عنه سلف النبى عليه السلام فقد وهب له النبى عليه السلام سيرين اخت مارية ام ابراهيم رضى الله عنه التى اهد اهاله المقوقس مع مارية فصارت ام ولد حسان وولدت له عبدالرحمن بن حسان وكان عبدالرحمن شاعرا مفلقا ايضا قال ابو العباس المبرد فى الكامل واعرق قوم كانوا فى الشعر آل حسان فانهم يعتدون ستة فى نسق كلهم شاعر وهم سعيد بن عبدالرحمن بن حسان بن ثابت بن المنذر بن حرام وكان حسان رضى الله عنه من المعمرين قال فى الاستيعاب لم يختلفوا انه عاش مائة وعشرين سنة منها ستون فى الجاهلية وستون فى الاسلام وادرك النابغة الذبيانى وانشده شعره وانشد الاعشى وكلاهما قال له انك شاعر قال الحافظ الذهبى فى التجريد مات حسان رضى الله عنه سنة اربع وخمسين وقال صاحب الاستيعاب انه توفى قبل الاربعين فى خلافة على رضى الله عنه وقيل سنة خمسين وقيل سنة اربع وخمسين

قال رضى الله عنه

عَفَتْ ذاتُ الاصابع فالجواءُ ... الى عَذْراءَ مَنْزِلُها خَلاءُ

من الوافى

ديارٌ من بَنى الحَسْحاسِ قَفْرٌ تَعفّيها الرَّوامِسُ والسَّماء

وكانتْ لا يزال بها أنيسٌ خِلالَ مُروجِها نَعَمٌ وشاء

قوله عفت الخ عفت درست وذات الاصابع والجواء وعذراء مواضع بالشام وكان حسان كثيرا مايرد على ملوك غسان بالشام يمدحهم فلذلك يذكر هذه المنازل كذا قال السهيلي وخلاء بمعنى خال ولكونه فى الاصل مصدرا يستوى فيه المذكر والمونث والواحد والاكثر كالبراء قوله ديار من بنى الحسحاس الخ بنو الحسحاس بطن من الانصار ينسبون الى جدهم الحسحاس بن مالك بن عدى ابن عامر بن غنم بن عدى بن التجار منهم عامر بن امية بن زيد بن الحسحاس بدرى استشهد يوم احد رضى الله عنه هكذا ذكره فى العقد الفريد وقال السهيلي بنو الحسحاس بطن من بنى اسد واليهم ينسب عبد بنى الحسحاس الذى انشد عمر رضى الله عنه ولايخفى انه غير مناسب ههنا لان بنى اسد لا اتصال لحسان رضى الله عنه بهم لانهم من مضر بن نزار والانصار من اليمن والروامس الرياح التى ترمس الآثار وتغطيها والسماء المطر قوله وكانت لايزال بها الخ خلال ظرف بمعنى بين خبر مقدم والمروج جمع مرج وهو مرعى الدواب

فدعْ هذا ولكنْ من لطيفٍ يؤرّقنى اذا ذهب العشاء

لشعثاء التى قد تيمته فليس لقلبه منها شفاء

كأن سبيئة من بيت رأسٍ يكونُ مزاجها عسلٌ وماء

قوله فدع هذا الخ الطيف خيال النائم ويؤرقنى يسهرنى ويمنعنى عن النوم فان قيل كيف يؤرقه الطيف وهو خيال النائم فالجواب ان الذى يؤرقه لوعة يجدها عند زواله كما قال الطائى

ظبي تقنصته لما نصبت له  من آخر الليل اشراكان من الحلم
ثم انثنى وبنا من ذكره سقم  باق وان كان مغسولا عن السقم

قوله لشعثاء التى الخ شعثاء اسم امرأة يشبب بها قيل هى شعثاء بنت سلام بن مشكم اليهودى وقال السهيلى كانت تحته شعثاء بنت كاهن الاسلمة ولدت له ام فراس وتيمته عبدته وذللته وفيه التفات من التكلم الى الغيبة قوله كان سبيئة الخ السبيئة الخمر المشتراة وبيت رأس موضع بالشام يحمد خمره ويروى خبيئة وسلافة مكان سبيئة والسلافة خلاصة الخمر والخبيئة الخمر المخبئة المصونة قال السهيلى وخبر كأن محذوف اى فى فيها وزعم بعضهم ان بعد هذا البيت بيتا فيه الخبر وهو

على انيا بها اوطعم غض  من التفاح هصره اجتناء

وهو مصنوع لايشبه شعر حسان ولا لفظه انتهى وقوله يكون مزاجها بنصب مزاجها على انه خبر يكون والاسم عسل وهو رواية سيبويه فيكون قلبا لفظيا عند من لم يجوز الاخبار بالمعرفة عن النكرة فى باب كان واما على رواية رفع مزاجها فلا قلب واسم كان على هذا ضمير الشان المستتر فيه وجوه اخر مذكورة فى المطولات

اذا ما الاشربات ذكرن يوما  فهن لطيب الراح الفداء

نوليها الملامة ان المنا  اذا ما كان مغث او لحاء

ونشربها فتتركنا ملوكا  واسدا ما ينهنهنا اللقاء

قوله اذاما الاشربات الخ جمع اشربة جمع شراب وهو مايشرب كطعام واطعمة واطعمات والراح الخمر قوله نوليها الخ ان المنا من الام الرجل اذا اتى بما يلام عليه يقول ان اتينا بما نلام عليه صرفنا اللوم الى الخمر واعتذرنا بالسكر والمغث الضرب باليد واللحاء الملاحاة والمعارضة باللسان والخمر تزيد فى الهمة والاستعلاء والشجاعة فلذلك شبههم بالملوك والاسد والاسد بالضم جمع اسد قال مصعب الزبيرى هذه القصيدة قال حسان صدرها فى الجاهلية وآخرها فى الاسلام قال ومجم حسان على فتية من قومه يشربون

الخمر فعيرهم فى ذلك فقالوا يا ابا الوليد ما اخذنا هذه الامنك وانا نهم بتركها ثم يثبطنا عن ذلك قرلك ونشربها الى آخر البيت فقال هذا شيئ قلته فى الجاهلية والله ماشربتها منذ اسلمت كذا فى الاستيعاب

عدمنا خيلنا ان لم تروها ... تثير النقع موعدها كداء

ينازعن الاسنة مصغيات ... على اكتافها الاسل الظماء

تظل جيادنا متمطرات ... تلطمهن بالخمر النساء

اعلم ان عادة الشعراء ان يشببوا فى اول قصائدهم ثم ينتقلوا الى المقصود والتشبيب فى الاصل ذكر ايام الشباب واللهو والغزل ثم اتسع فى ابتداء كل امر وان لم يكن فى الشباب واللهو بل كان فى غير ماذكر كالادب والافتخار والشكاية ونحو ذالك ثم الانتقال من التشبيب الى المقصود ان كان بالمناسبة يسمى اقتضابا و هو مذهب العرب الجاهلية والمخضرمين الذين ادركوا الجاهلية والاسلام كحسان ولبيد وغيرهما وان كان بمناسبة يسمى تخلصا وقد يقال التخلص لكل انتقال وهو معنى لغوى فما كان من اول هذه القصيدة الى بيت عدمنا خيلنا تشبيب كما ترى ثم انتقل الى المقصود فقال عدمنا خيلنا الخ عدمنا خيلنا خبر فى معنى الدعاء اى لتعدم خيلنا فهو من التعليق بالمحال لاظهار كمال الوثوق بروئية المخاطبين وهم كفار مكة خيلهم مثيرة للنقع فى كداء وكداء بالفتح والمد الثنية العليا بمكة التى فى اصلها مقبرة مكة وهى المعلى وفى الحديث ان النبى عليه السلام دخل مكة عام الفتح من كداء قوله ينازعن الاسنة الخ الاسنة جمع سنان الرمح والمصغيات المائلات المنحرفات للطعن والاسل الرماح والظماء العطاش وهم يصفون الرماح بالرى والعطش ومعنى منازعتها الاسنة ان يضجع الرجل رمحه فكأن الفرس يركض ليسبق الرمح قوله تظل جيادنا الخ تظل تصير والجياد جمع جواد وهو الفرس الرائع الحسن والمتمطرات من قولهم تمطرت الخيل اذا جاءت تتسابق وتلطمهن بمعنى ينفضن ما عليها من الغبار فاستعار له اللطم ويروى يطلمهن واصل الطلم الضرب بالكف والخمر جمع خمار المرأة وهو ما

تغطي به رأسها قال ابن هشام فى السيرة وبلغنى عن الزهرى انه قال لما رأى رسول الله عليه السلام النساء يلطمن الخيل بالخمر تبسم الى ابى بكر الصديق رضى الله عنه

فاما تعرضوا عنا اعتمرنا ... وكان الفتح وانكشف الغطاء

والا فاصبروا لجلاد يوم ... يعين الله فيه من يشاء

وقال الله قد يسرت جندا ... هم الانصار عرضتها اللقاء

قوله فاما تعرضوا الخ اما مركبة من ان الشرطيه وما المزيدة وكان الفتح اى ثبت الفتح وقوله انكشف الغطاء مثل فى ظهور الامر بعد اكتتامه والمعنى ظهر ظهورنا وغلبتنا عليكم وقوله والافاصبروا الامركبة من ان الشرطية ولا للنفى اى ان لا تعرضوا والجلاد القتال قوله وقال الله الخ يسرت هيأت والانصار جمع ناصر كصاحب واصحاب وقيل جمع نصير كشريف واشراف لقب به اولاد الاوس والخزرج الذين اسلموا وهو اسم اسلامى لهم سموا بذلك لما فازوا به دون غيرهم من نصرة رسول الله عليه السلام وايوائه وايواء من معه ومواساتهم بانفسهم واموالهم والعرضة الهمة هكذا فسرها الجوهرى رحمه الله واللقاء لقاء العدو فى الحرب

لنا فى كل يوم من معد ... سباب او قتال او هجاء

فنحكم بالقوافي من هجانا ... ونضرب حين تختلط الدماء

معد هو ابن عدنان والمراد القبيلة ومنهم قريش قوله فنحكم بالقوا فى الخ نحكم من احكمه اذا منعه ومنه قول جرير

ابنى حنيفة احكموا سفهائكم ... انى اخاف عليكمو ان اغضبا

والقوا فى هذا الابيات كما قال الاخفش او القصائد كما قال ابن جنى فى قول الخذ ا

وقافية تحد السنا ن تبقى ويهلك من قالها

وقال الآخر

نبثت قافية قيلت تناشدها قوم ساترك فى اعراضهم ندبا

الندب بالتحريك اثر الجرح الباقى على الجلد

وقال الله قد ارسلت عبدا يقول الحق ان نفع البلاء

شهدتُ به وقومى صدّقوه فقلتم مانجيب وما نشاء

و جبريلُ امينُ الله فينا وروحُ القدس ليس له كفاء

جبريل بالصرف للضرورة والكفاء بالكسر المثل كالكفؤ بالضم وبضمتين والكفئ

الا ابلغ ابا سفيان عنّي مغلغلة فقد برح الخفاء

بأن سيوفنا تركتك عبدا وعبد الدار سادتها الاماء

ابو سفيان هو ابن الحرث بن عبد المطلب الهاشمى والمغللة الرسالة المحمولة من بلد الى بلد وقوله برح الخفاء بمعنى زال الخفاء وظهر الامر وهو من امثالهم فى ظهور الامر كقولهم كشف الغطاء كما مر وعبد الدار بطن من قريش وهم بنو عبد الدار بن قصى بن كلاب بن مرة بن كعب بن لؤى بن غالب بن فهر بن مالك بن النضر بن كنانة بن خزيمة بن مدركة بن الياس بن مضر بن نزار بن معد بن عدنان والنضر بن كنانة هو قريش عند كثير من علماء الانساب فمن ليس من ولده فليس قرشيا وعند بعضهم ان قريشا هو فهر بن مالك والى الاول ذهب ابو العباس المبرد فى الكامل وبنو عبد الدار كانوا اصحاب لواء قريش وسدنة الكعبة واهل كثرة فلذلك خصهم من بين بطون قريش ومعنى سادتها الاماء كانوا تحت حكمها وهو اشارة الى انحطاط امرهم وانقلاب شوكتهم وهذا نظير قول الاخطل

وقد سرنى من قيس عيلان انى رأيت بنى العجلان سادوا بنى بدر

وبنو العجلان من بنى عامر بن صعصعة وبنو بدر من فزارة وكلاهما من قيس وقد قالوا ان بيت قيس فزارة ومركزه بنو بدر والاخطل من تغلب بن وائل من قبائل ربيعة بن نزار وقد كانت بين تغلب وقيس مشاحنات ومحاربات كثيرة وتأنيث الضمير المنصوب فى سادتها باعتبار القبيلة ويروى مكان مغلغلة فقد برح الخفاء فانت مجوف نخب هواء المجوف من لاقلب له وهو الجبان والنخب بوزن فرح الجبان ايضا والهواء الجبان ايضا لخلو قلبه من الجرأة واصله فى الخالى قال الله تعالى وافئدتهم هواء وفى شعر عاتكة فهن هواء والحلوم عوازب اى خالية بعيدة العقول

هجوت محمدا فاجبت عنه وعند الله فى ذاك الجزاء

اتهجوه ولست له بكفء فشركما لخيركما الفداء

هجوت محمدا براً حنيفاً امين الله شيمته الوفاء

قوله هجوت محمدا الخ الخطاب لابى سفيان المذكور ويروى انه لما انتهى حسان رضى الله عنه الى هذا البيت قال رسول الله عليه السلام جزاؤك على الله الجنة ياحسان قوله اتهجوه الخ الهمزة للانكار والتوبيخ قال الامام السهيلى قوله فشركما لخيركما الفداء فى ظاهر هذا اللفظ شناعة لان الظاهر ان لايقال هو شرهما الا وفى كليهما شر ولكن سيبويه قال تقول مررت برجل شر منك اذا نقص عن ان يكون مثله وهذا يدفع الشناعة عن الكلام الاول ونحو منه قوله عليه السلام شر صفوف الرجال آخرها يريد نقصان حظهم عن الصف الاول ولا يجوز ان يريد التفضيل فى الشر انتهى وروى ان حسانا رضى الله عنه لما انتهى الى هذا البيت قال من حضر هذا انصف بيت قالته العرب قوله هجوت محمدا الخ البر الصادق والكثير البر اى الاحسان والحنيف الصحيح الميل الى الاسلام والمستقيم والشيمة الخلق والوفاء ضد الغدر

امن يهجو رسول الله منكم ويمدحه وينصره سواء

من الطويل

فانّ ابى و والده وعِرضي لِعرض محمد منكم وَقاء

لِسانى صارم لاعيب فيه وبحرى لا تُكَدِّرُه الدِّلاء

قوله امن يهجو الخ الهمزة للانكار والابطال ويمدحه بتقدير من وليس معطوفا على مدخول من وسواء يقتضى التعدد ويقال هما سواء وهم سواء وان شئت قلت هما سوا آن وهم اسواء يقول انتم ايها المشركون تهجون رسول الله عليه السلام ونحن معاشر المسلمين نمدحه وننصره فكيف نستوى كلا والذى قال مثل الفريقين كالاعمى والاصم والبصير والسميع هل يستويان مثلا افلا تذكرون قوله فان ابى الخ العرض هنا بمعنى النفس ذكره ابن قتيبة فى كتاب ادب الكاتب وتبعه ابن الاثير فى النهاية والوقاء كسحاب ويكسر ماوقيت به الشئ يقول ان ابى وجدى ونفسى فداء لنفس محمد صلى الله عليه وسلم وروى انه لما انتهى حسان رضى الله عنه الى هذا البيت قال رسول الله عليه السلام وقاك الله ياحسان حر النار قوله لسانى صارم الخ الصارم السيف القاطع وقوله لاعيب فيه قال ابن هشام فى السيرة ويروى لاعتب فيه انتهى والعتب بالتحريك التواء السيف عند انضريبة ويسكن التأ فى البيت للوزن وقوله وبحرى لاتكدره الدلاء التكدير ضد التصفية والدلاء جمع دلو يقول ان شعره متسع اتساع بحر لاتكدره الدلاء وعدم تكديره عبارة عن عدم بلوغ آخره لانه اذا بلغه حرك طينه فيتكدر ماؤه ففى الكلام استعارة البحر لشعره وقوله لاتكدر الدلاء ترشيح وهذه القصيدة لحسان رضى الله عنه كتبتها من سيرة ابن هشام الاانى ذكرت مكان خبيئة الواقعة فى السيرة لفظ سبيئة لانه رواية سيبويه والمبرد وهكذا وجد فى كثير من كتب المحققين كالرضى وغيره

## حسان بن ثابت ايضاً رضى الله عنه

يهجو هذيلا ويخص بنى لحيان منهم حين غدروا باصحاب رسول الله عليه السلام يوم الرجيع

لَحَى اللهُ لِحياناً فليست دماؤهم لنا من قتيلى غَدْرة بوفأ

همو قتلوا يوم الرجيع ابن حرة  اخا ثقة فى وده وصفاء

فلو قتلوا يوم الرجيع باسرهم  بذى الدبر ما كانوا له بكفاء

قتيل حمته الدبر بين بيوتهم  لدى اهل كفر ظاهر وجفاء

فقد قتلت لحيان اكرم منهمو  وباعو خبيباً ويلهم بلفاء

قوله لحى الله خبر فى معنى الدعاء اى قبح ولعن ومنه قول عروة بن الورد

لحى الله صعلوكا اذا جن ليله  مصافى المشاش آلفاً كل مجزر

وقول الحريرى فى المقامة الزبيدية

لحاك الله هل مثلى يباع  لكيما يشبع الكرش الجياع

وهو كثير فى الشعر ولحيان بكسر اللام بنو لحيان بن هذيل بن مدركة بن الياس بن مضر مصروف فى هذا البيت للضرورة وقتيلوا غدرة اصحاب رسول الله عليه السلام الذين قتلوا غدرا يوم الرجيع والرجيع ماء لهذيل بناحية الحجاز غدر عنده بنو لحيان برجال من اصحاب رسول الله عليه السلام ذكر حسان رضى الله عنه اسمائهم فى قصيدة له ستجئ فى باب الباء ونذكر هنالك قصة غزوة الرجيع ان شاء الله تعالى منهم عاصم ابن ثابت بن ابى الاقلح الانصارى رضى الله عنه وهو المراد بابن حرة والحرة الكريمة من النساء والود الحب ويثلث كالوداد وقوله بذى الدبر الباء للمقابلة وذو الدبر هو عاصم بن ثابت رضى الله عنه وتسميته بذى الدبر لما وقع فى صحيح البخارى وبعث ناس من كفار قريش حين حدثوا انه قتل ليؤتوا بشئ منه يعرف فبعث الله على عاصم مثل الظلة من الدبر فحمته من رسولهم فلم يقدروا على ان يقطعوا من لحمه شيئا انتهى ولذلك يلقب عاصم رضى الله عنه بحمى الدبر والى هذه القصة اشار بقوله قتيل حمته الدبر والدبر بالسكون النحل وقيل الزنابير كذا فى النهاية وقال ابن هشام وقد كان عاصم رضى الله عنه اعطى الله عهدا ان لا يمس مشركا

ولايمسه مشرك تنجسا فكان عمر بن الخطاب رضى الله عنه يقول حين بلغه ان الدبر منعته كان عاصم نذر ان لايمسه مشرك ولايمس مشركا فمنعه الله بعد وفاته كما امتنع فى حياته وقول ابن هشام تنجسا اى اجتنا باعن النجس كما يقال تأثم وتحنث اذا اجتنب عن الاثم والحنث وهو بمعنى الاثم قوله وباعوا خبيبا الخ خبيب هو ابن عدى الانصارى أسر يوم الرجيع فباعته هذيل بمكة من قريش فصلبوه وستأتى قصته وقوله ويلهم يدعو عليهم بالهلاك يقال ويله وويلاله بالنصب على المصدرية لفعل محذوف وويل له بالرفع على الابتداء واللفاء بالفتح القليل قال الجوهرى يقال رضى فلان عن الوفاء باللفاء اى عن حقه الوافى بالقليل وفى المقامة الدمياطية من مقامات الحريرى وارضى من الوفأ باللفأ

فَأُفٍّ لِلحِيانِ على كلّ حالة  على ذكرهم فى الذكر كُلُّ عفاء

قُبَيِّلَةَ بالغدر واللُّؤْمِ تَعْتَزِى  فلم تُمْسِ تُخْفِى لُؤْمَها بخفأ

فلو قُتِلو الم تُوف منه دماؤهم  بلى انّ قتل القاتليه شِفائي

قوله على ذكرهم فى الذكر كل عفاء العفاء الدروس يدعو عليهم بالمحو والهلاك بحيث لايبقى لهم ذكر اصلا وهذا كقول زهير يصف دارا

تحمل اهلها عنها فبانوا  على اثار من ذهب العفاء

وكما يقال عليه الدبار اذا دعا عليه ان يدبر فلا يرجع قوله قبيلة باللؤم الخ قبيلة تصغير قبيلة للتحقير وتعتزى تنتسب ولم تمس لم تصر وقوله بلى ان قتل القاتليه شفائى عود الى الكلام السابق بنقضه لنكتة وهو اظهار الحرص على قتلهم وهذا على نحو قول زهير

قف بالديار التى لم يعفها القدم  بلى وغيرها الارواح والديم

وهذا نوع من البديع يسمى بالرجوع وقوله القاتليه من باب الضاربوه من النحاة من يجعله مضافا الى الضمير وسيبويه يجوز النصب والاضافة

فإن لا أمت أذعر هذيلاً بغارة  كغادى الجهام المعتدى بإفأ

بأمر رسول الله والأمر أمره  يبيت للحيان الخنا بفناء

نصبح قوما بالرجيع كأنهم  جداء شتاء بتن غير دفاء

قوله فان لاامت اذعر الخ ذعره واذعره بمعنى اى خوفه والغارة اسم من الاغارة والغادى الآتى غدوة والجهام السحاب الذى هراق ماءه مع الريح والمعتدى المتجاوز والافى بالقصر قطع الغيم والواحدة افاة ومد للضرورة كما مد كثير فى قوله يصف غيثا

فابلغ من عشر واصبح مزنه  افاء وآفاق السماء حواسر

ويجوز مد المقصود فى الشعر عند بعض علماء العربية وان لم يجزه كثير منهم قال الرضى فى بحث غير المنصرف ويجوز مد المقصور فى الشعر نادرا واما قصر الممدود فجائز كثير لانه رد الشئ الى اصله بخلاف مد المقصور والخنا الهلاك فى القاموس اخنى عليهم اهلكهم وقال النابغة

امست خلاء وامسى اهلها احتملوا اخنى عليها الذى اخنى على لبد والفناء بالكسر فناء الدار وهو ما حولها من جوانبها قوله نصبح قوما الخ يقال صبحهم الجيش بالتخفيف وصبحهم بالتشديد اذا هجموا واغاروا عليهم لان ذلك اكثر ما يقع فى الصباح والجداء جمع جدى وهو الذكر من ولد المعز ودفاء جمع دفأن للمذكر ودفئ للمؤنث كعطشان وعطشى وعطاش والدفء والدفاءة نقيض حدة البرد او الدفء اسم لما يدفئك من صوف وغيره والمصدر الدفاءة وحاصل معنى الابيات الثلثة انه يهدد هذيلا ويوعدهم بانه يغير عليهم قريبا ويصب عليهم العذاب دفعة بحيث يهلكهم حول بيوتهم مع تحقيرهم بتشبيههم بجداء شتاء بين غير دفاء وهذه القصيدة كتبتها من سيرة ابن هشام رحمه الله

## حسان بن ثابت ايضا

### رضى الله عنه

يخاطب خزاعى بن عبدنهم المزنى لما وعد ان يأتى بقومه ليسلموا بعد ما وفد على النبى صلى الله عليه وسلم واسلم فابطأبهم فامر النبى صلى الله عليه وسلم حسانا فقال

من الوافر

الا ابلغ خزاعياً رسولا ... فان الغدر يغسله الوفاء

فانك خير عثمان بن عمرو ... واسناها اذا ذُكر السَّناء

فبايعت النبيّ فكان خيرا ... الى خيرو آداك الثَّراء

فما يعجزك اومالا تطيقه ... من الاشياء لا تعجز عداء

رسولا بمعنى رسالة وهو كثير فى اشعار العرب وقوله فان الغدر يغسله الوفاء يريد ان ابطائك يظن منه الغدر فان استعجلت فاوفيت محوت مايظن بك من الغدر والافالغدر والوفاء ضدان وعثمان بن عمرو بطن من مزينة منهم خزاعى ومزينة كلها عثمان بن عمرو واوس ابن عمرو نسبوا الى امهم مزينة ابنة كلب بن وبرة من قضاعة والسنأ بالمد الشرف والمجد وبالقصر الضياء وهذا البيت من شواهد الكامل للمبرد قوله فكان خيرا اى هذا الامر وهو مبايعتك النبى صلى الله عليه وسلم الى خير اى مسوقا الى رجل خيرمثلك يقال رجل خير من خيار الناس واخيارهم ومنه فى الشعر وابيك الخير اوالمعنى ان اتيت بقومك يكن امراخيرا منضما الى خير وهو اسلامك ومبايعتك وقوله وآداك الثراء بمعنى اعانك وقواك والثراء الكثرة يقال ثرى القوم ثراءً اى كثروا فيكون المعنى ان كثر اسلام قومك تتقوى بهم على ان آداك بمعنى يؤديك فيكون تحريضاله ان يأتى بقومه هذا ماظهرلى والله اعلم قوله فما يعجزك الخ يقال اعجزه الشئ اذا فاته وعداء بوزن

شداد عند بعضهم فخفف للوزن وبوزن الى عند بعضهم فمد للوزن بطن من عثمان بن عمرو منهم خزاعى رضى الله عنه لانه خزاعى بن عبدنهم بن عفيف بن اسيحم مصغرابن ربيعة بن عداء اوعدى بن ذويب المزنى يقول ان عجزت ان تأتى بجميع قومك فلاشك انك لاتعجز عن بنى عداء منهم لانهم عشيرتك الاقربون فينفذ فيهم فولك وفى طبقات ابن سعد انه لما بلغ شعر حسان خزاعياً قام فى قومه فقال يا قوم قد حضكم شاعرالرجل فانشدكم الله فاطاعوه واسلموا وقدموا على النبى صلى الله عليه وسلم وهذا الشعر لحسان رضى الله عنه كتبته من الاصابة لابن حجر

## خُفاف بن نُدْبة السُّلمى

## رضى الله عنه

### يمدح ابا بكر الصديق رضى الله عنه

### ترجمة خفاف رضى الله عنه

هو خفاف كغراب ابن عمير بن الحرث بن الشريد بن رياح بن يقظة بن عصية بن خفاف بن امرئ القيس بن بهثة بن سليم بن منصور السلمى رضى الله عنه وندبة بضم النون ويفتح على مافى القاموس وبالفتح على مافى الصحاح واللسان امه ينسب اليها وكانت سوداء حبشية وكنيته ابوخراشة وهوالمراد فى قول العباس بن مرداس السلمى

ابا خراشة اما انت ذانفر  فان قومى لم يأكلهم الضبع

وكان بينهما مشاحنات فى الجاهلية وخفاف رضى الله عنه معدود فى غربان العرب وهم رجال معروفون جاءهم السواد من امهاتهم منهم اسلاميون ومنهم جاهليون واسمائهم مذكورة فى القاموس وغيره قال الاصمعى شهد خفاف حنينا وقال غيره شهد فتح مكة ومعه لواء بنى سليم وشهد حنينا والطائف وبقى الى ايام عمر رضى الله عنه وهو احد فرسان قيس وشعرائها المذكورين قال الاصمعى هوودريد بن الصمة اشعر الفرسان

من السريع

ليس لشيء غير تقوى جَدا  وكُلُّ شيءٍ عُمْرُه للفَناءْ

انّ ابابكر هو الغيث اذا لم يشمل الارض سحاب بماء

تالله لا يدرك ايّامه ذو طرّة حاف ولا ذو حذاء

من يسع كي يدرك ايامه يجتهد الشدّ بارض فضاء

البيت الاول تشبيب والجدا ههنا بالقصر بمعنى العطية يقال اجدى عليه يجدى اى اعطاه واصله من الجدى بمعنى المطر العام ورد فى حديث الاستسقاء اللهم اسقنا جداً طبقا كذا ذكره ابن الاثير فى النهاية ويكتب لفظ الجدى بالالف والياء ذكره ابن السكيت وروى فى بيت خفاف رضى الله عنه وكل خلق مكان وكل شئ والفنأ بالفتح كضده البقاء يقول لاينفع شئ غير التقوى وكل مخلوق عاقبته الفنـاء ثم انتقل الى مدح ابى بكر رضى الله عنه فقـال ان ابا بكر هو الغيث الحالغيث المطر اوخاص بالخير النافع لانه يغاث به الناس والمذكور فى القرأن فى الرحمة الغيث وفى العذاب المطر شبهه بالغيث فى الجود والنفع العام وجعله بحيث يخلفه ونقل عن الاصمعى ان السحاب يذكر ويؤنث وفى بعض نسخ الكامل اذالم تشمل بتأنيث الفعل قوله تالله لايدرك ايامه الح لايدرك لايبلغ والايام المفاخر والنعم والطرة الناصية والحافى ضد المنتعل وذوحذاء المنتعل لان الحذاء هو النعل ومنه فى المثل كل الحذاء يحتذى الحافى الوقع والمراد لايدرك ايامه احد لان كل انسـان ذو طرة حاف اومنتعل وهذا كقول بشر بن ابى خازم فى مدح اوس بن حارثة بن لأم الطائى الجواد المعروف

وما وطئ الثرى مثل ابن سعدى ولالبس النعال ولا احتذاها

وسعدى اسم ام اوس بن حارثة وقوله يجتهد الشد بارض فضاء الشد العدو وارض فضاء واسعة وحاصل معنى البيت تشبيه حال من يسعى ليبلغ مفاخر ابى بكر رضى الله عنه بحال من يبالغ الشد فى ارض واسعة فى اتعاب النفس مع الخيبة وعدم نيل المطلوب وهذا الشعر لخفاف رضى الله عنه كتبته من الكامل لابى العباس المبرد برد الله مضجعه

## ضرار بن الخطّاب الفهرى

رضى الله عنه

يوم فتح مكة يسترحم من النبي عليه السلام لقومه قريش ويشكو سعد بن عبادة الانصارى الخزرجى رضى الله عنه لما قال لابى سفيان بن حرب اليوم يوم الملحمة اليوم تستحل المحرمة اليوم اذل الله قريشا

## ترجمة ضرار رضى الله عنه

هو ضرار بن الخطاب بن مرداس بن كبير بن عمرو بن حبيب بن عمرو بن شيبان بن محارب بن فهر بن مالك بن النضر القرشى الفهرى كان من شجعان قريش وفرسانهم وشعرائهم المطبوعين المفلقين قال الزبير بن بكار لم يكن فى قريش اشعر منه ومن ابن الزبعرى قال الزبير ويقدمونه على ابن الزبعرى لانه اقل منه سقطا واحسن صنعة له ذكر فى احد والخندق قال فى الاستيعاب انه احد الاربعة الذين وثبوا الخندق انتهى ويقال انه لقى عمر بن الخطاب رضى الله عنه يوم احد فقال انج يا ابن الخطاب فلم ينسها عمر له واختلف الاوس والخزرج فيمن كان اشجع يوم احد فمر بهم ضرار بن الخطاب فقالوا هذا شهدها وهو عالم بها فبعثوا اليه فتى منهم فسأله عن ذلك فقال انى لا ادرى ما اوسكم من خزرجكم ولكنى زوجت يوم احد منكم احد عشر رجلا من الحور العين وعن السائب بن يزيد بينا نحن مع عبد الرحمن بن عوف فى طريق اذ قال لرباح بن المغترف غننا فقال له عمر بن الخطاب فان كنت آخذا فعليك بشعر ضرار بن الخطاب وكان ضرار بن الخطاب من مسلمة الفتح قيل قتل باليمامة شهيدا والصحيح انه عاش الى ان حضر فتح المدائن ونزل الشام وذكر ابن الاثير فى تاريخه ان ضرار بن الخطاب اخذ يوم القادسية درفش كابيان وهو العلم الاكبر الذى كان للفرس فعوض منه ثلاثين الفا وكانت قيمته الف الف ومائتى الف وقصته مع ام جميل الدوسية مشهورة وهى ان هشام بن الوليد ابن المغيرة قتل ابا ازيهر الدوسى ولم يؤخذ له ثار فمر ضرار بن الخطاب ببلاد دوس فوثبت دوس عليه ليقتلوه فسعى فدخل بيت ام جميل فعاذ بها فرأه رجل منهم فلحقه فضربه فوقع ذباب السيف على الباب وقامت ام جميل فى وجوههم ودارت فى قومها فمنعوه فلما قام عمر ابن الخطاب رضى الله عنه ظنت انه اخوه فاتته فانتسبت له فعرف القصة فقال لست باخيه الا فى الاسلام وهو غاز وقد عرفنا منتك عليه

فاعطاها على انها ابنة سبيل فهذا صريح فى انه كان حيا فى زمن عمر بن الخطاب رضى الله عنه وغازيا والقصته مذكورة فى سيرة ابن هشام رحمه الله

قال رضى الله عنه

من الخفيف

بانبي الهدى اليك لجاحيـ ... ـي قريش ولات حين لجاء

حين ضاقت عليهم سعة الار ... ض وعاداهم اله السماء

والثقت حلقتا البطان على القو ... م ونودوا بالصيلم الصلعاء

لجا مخفف لجأ وحى قريش قبيلة قريش ولات مركبة من لا بمعنى ليس والتاء الزائدة للمبالغة كما فى علامة وتعمل عمل ليس وهذا مذهب جمهور النحاة والتزموا حذف احد الجزئين والغالب حذف المرفوع كما فى قراءة الجمهور ولات حين مناص اى ليس الحين حين منـاص فالتقدير ههنا ليس الحين حين لجاء يخيل اليه من خوفه انه فاته زمن الالتجاء وفى بعض نسخ الاستيعاب وانت خير لجاء اى خير من يلجأ اليـه قوله حين ضاقت عليهم سعة الارض مثل قوله تعـالى وضاقت عليكم الارض بما رحبت اى ضاقت عليهم لا يحدون فيها مقرا تطمئن فيـه نفوسهم من شدة الرعب او لا يثبتون فيها كمن لا يسعه مكانه كما قيل

كأن بلاد الله وهى فسيحة ... على الخائف المطلوب كفة حابل

وكفة الحابل بالكسر وتضم حبالته وعاداهم اظهر عداوتهم و قوله والتقت حلقتا البطان مثل فى بلوغ الامر شدته ونهايته والبطان حزام القتب الذى يجعل تحت بطن البعير وقال اوس بن حجر

وازد حمت حلقتا البطان باقوا ... م وطـارت نفوسهم جزعا

ويقولون ايضا التقت حلقتا البطان والحقب والحقب محركة حزام يلى حقو البعير ومن الامثال في هذا المعنى قولهم قد جاوز الماء الزبى وبلغ الخزام الطبيين وانقطع السـلا في البطن الزبى جمع زبية وهى مصيدة الاسـد فى رأس الجبل والطبيين

تثنية طبي بالضم والكسر حلمة الضرع التى في خف وظلف وحافر وسبع اومختص للحافر والسبع والسلا الجلدة الرقيقة التى يكون فيها الولد والصيلم الصلعاء الداهية الشديدة والمعروف ان يقال صلعاء صيلم قال فى الاساس وحلت بهم صلعاء صيلم قال الشاعر

فلما احلونى بصلعاء صيلم  باحدى زبى ذى البدتين ابى الشبل

انتهى ولكن ضرار ارضى الله عنه قدم واخر للقافية

ان سعدا يريد قاصمة الظهـ  ـرِ باهل الحجون والبطحاء

خزرجى لو يستطيع من الغيـ  ـظ رمانا بالنسر والعوأ

وغر الصدر لايهم بشيء  غير سفك الدما وسبي النسأ

سعد هو ابن عبادة بن دليم بن حارثة بن ابى حليمة ويقال ابن ابى خزيمة بن ثعلبة ابن طريف بن الخزرج بن ساعدة بن كعب بن الخزرج الانصارى الخزرجى الساعدى احد النقباء كانت راية رسول الله عليه السلام يوم الفتح بيده فلما مر بها على ابى سفيان وكان قد اسلم ابوسفيان قال سعد اذ نظر الى ابى سفيان اليوم يوم الملحمة اليوم تستحل المحرمة اليوم اذل الله قريشا فاقبل رسول الله عليه السلام في كتيبة الانصار حتى اذا حاذى اباسفيان ناداه يارسول الله امرت بقتل قومك فانه زعم سعد ومن معه حين مر بنا انه قاتلهم وقال اليوم يوم الملحمة اليوم تستحل المحرمة اليوم اذل الله قريشا وانى انشدك الله في قومك فانت ابر الناس وارحمهم واوصلهم وقال عثمان وعبد الرحمن بن عوف رضى الله عنهما يارسول الله مانأمن من سعد ان تكون منه صولة فى قريش فقال رسول الله عليه السلام لايا اباسفيان اليوم يوم المرحمة اليوم اعز الله قريشا وقال ضرار بن الخطاب الفهرى هذه القصيدة فارسل رسول الله عليه السلام الى سعد بن عبادة فنزع اللواء من يده وجعله بيد ابنه قيس ورأى رسول الله عليه السلام ان اللواء لم يخرج من يده اذ صار الى ابنه وابى سعد ان يسلم اللواء الا بامارة من رسول الله عليه السلام فارسل رسول الله

عليه السلام بعمامته فعرفها سعد فدفع اللواء الى ابنه قيس هكذا ذكر يحيى بن سعيد الاموى في السير ولم يذكر ابن اسحق هذا الشعر ولاساق هذا الخبر كذا فى الاستيعاب وقوله يريد قاصمة الظهر هي البلية فى الاساس ومن المجاز نزلت بهم قاصمة الظهر قال الشاعر

كأن لم يلاق المرء عيشا بنعمة  اذا نزلت بالمره قاصمة الظهر

وقصم الله ظهر الظالم انزل به البلية انتهى والحجون بفتح الحاء جبل بمعلاة مكة والبطحاء كالا بطح والبطيحة مسيل واسع فيه دقاق الحصى والمراد بطحاء مكة وقوله رمانا بالنسر والعواء النسر الواقع والنسر الطائر كوكبان والعواء ككتان منزل للقمر خمسة كواكب او اربعة كأنها كتابة الف كذا في القاموس

قد تلظّى على البطاع وجاءت  عنه هند بالسوءة السوآء

اذ ينادى بذل حيّ قريش  وابن حرب بذا من الشهداء

تلظى توقد من الغضب والبطاح جمع بطحاء يعنى اهلها وهند بنت عتبة ابن ربيعة بن عبد شمس بن عبد مناف امرأة ابن حرب وهو ابوسفيان صخر بن حرب بن امية بن عبد شمس بن عبد مناف واسلم ابو سفيان وهند رضى الله عنهما يوم الفتح وحسن اسلامهما والسوءة السوأء من باب ظل ظليل والشهداء جمع شهيد بمعنى الحاضر او بمعنى الشاهد الذى يبين مايعلمه

فلئن اقحم اللواء ونادى  يا حماة اللواء اهل اللواء

ثم ثابت اليه من بهم الخز  رج والاوس انجم الهيجاء

لتكونن بالبطاح قريش  فقعة القاع فى اكف الاماء

اقحم اللواء ادخله فى الحرب والحماة جمع حام بمعنى الحافظ المدافع وحماة اللواء

واهل اللواء اصحابه الذين تحت لوائه وثابت اليه رجعت وانضمت اليه والبهم كصرد جمع بهمة بالضم في الاساس فلان بهمة من البهم للشجاع الذى يستبهم على اقرانه مأتاه والهيجاء بالمد والقصر الحرب وهو فى البيت ممدود وانجم الهيجاء بمعنى الماضين في الحرب كما يقال فلان شهاب الحرب وفقعة القاع مثل في الذل لان الفقعة اردأ الكمأة والقاع والقر قر والقر قرة والقردد الارض المستوية والفقعة لا اصول لها ولا عروق واذا كانت في القاع يطأها الدواب فلذلك صارت مثلا في الذل

فَانْهَيْنَهُ فانّه اَسَدُ الاُسْـ ـدِ لدى الغاب والغ فى الدّمأ

انّه مُطْرِقٌ يُرِيدُ لنا الاَمْـ ـرَ سُكوتا كالحَيَّةَ الصَّمّاءْ

انهينه صيغة الامر من النهي لحقتها النون الخفيفة واسد الاسد من اضافة المفرد الى الجمع للمبالغة كابد الآباد والغاب جمع غابة ويقال لها الاجمة مأوى الاسد ومسكنه والاسد اشجع ما يكون اذا كان عند غابته وقوله والغ في الدماء يريد انه سفاك قتال واصله من ولغ السبع في الاناء اذا شرب مافيه باطراف لسانه او ادخل فيه لسانه فحركه والمطرق الساكت او المرخي راسه فسكوتا على الاول منصوب على المصدرية وعلى الثانى على الحالية بمعنى ساكتا والحية الصمأ التي لا تقبل الرقي فهي اخبث الحيات واضرها وهذه القصيدة لضرار رضى الله عنه كتبتها من الاستيعاب

## عبدالله بن رواحة الانصارى

## الخزرجى رضى الله عنه

يخاطب ناقته فى مسيره الى غزوة مؤتة ويظهر رغبته في القتل في سبيل الله

### الترجمة

هو عبدالله بن رواحة بن ثعلبة بن امرئ القيس بن عمرو بن امرئ القيس الاكبر بن مالك الاغر بن ثعلبة بن كعب بن الخزرج بن الحارث بن الخزرج الشاعر المعروف يكنى ابا محمد احد النقباء شهد العقبة وبدرا والمشاهد كلها الا الفتح ومابعده لانه استشهد

في غزوة مؤتة وكانت قبل الفتح في جمادى الاولى سنة ثمان بارض الشام وخرج النبي عليه السلام لغزوة الفتح في رمضان من تلك السنة وهو احد الشعراء المفلقين المحسنين الذين كانوا يذبون عن رسول الله عليه السلام وفيه وفي صاحبيه حسان بن ثابت وكعب ابن مالك نزل قوله تعالى الا الذين آمنوا وعملوا الصالحات وذكروا الله كثيرا الآية وامه كبشة بنت واقد بن عمرو بن الاطنابة خزرجية ايضا وآخى النبي عليه السلام بينه وبين المقداد بن الاسود رضى الله عنه ويروى عن النبي عليه السلام انه قال رحم الله عبدالله بن رواحة انه يحب المجالس التي تتباهى بها الملائكة ومناقبه رضى الله عنه كثيرة جدا قال في سيرة ابن هشام عن ابن اسحاق ان زيد بن ارقم رضى الله عنه قال كنت يتيما لعبدالله بن رواحة في حجره فخرج في سفره ذلك يعنى مؤتة مردفى على حقيبة رحله فوالله انه ليسير ليلة اذ سمعته ينشدا بياته هذه

من الوافر

اذا ادنيتني وحملت رحلي ... مسيرة اربع بعد الحساء

فشأنك فانعمي وخلاك ذم ... ولا ارجع الى اهلي ورائي

وجاء المسلمون وغادروني ... بارض الشام منتهى الثواء

وردك كل ذي نسب قريب ... الى الرحمن منقطع الاخاء

هنالك لا ابالي طلع بعل ... ولا نخل اسافلها رواء

قال زيد بن ارقم رضي الله عنه فلما سمعتهن بكيت فخفقني بالدرة وقال ماعليك يالكع ان يرزقني الله الشهادة وترجع بين شعبتي الرحل انتهى مافي السيرة قوله اذا اديتني الخ ويردى اذا ادنيتني واذا بلغتني يخاطب ناقته والرحل للناقة كالسرج للفرس وفي القاموس الحساء ككتاب موضع وفي معجم البلدان مياه لفزارة بين نخل وربذة يقال لمكانها ذوحساء قال عبدالله بن رواحة اذا بلغتني البيت وقال المبرد

في الكامل في شرح هذا البيت الحساء جمع حسي وهو موضع رمل تحته صلابة فاذا مطرت السماء على ذلك الرمل نزل الماء فمنعته الصلابة ان يغيض ومنع الرمل السمائم ان تنشقه فاذا بحث ذلك الرمل اصيب الماء يقال حسي واحسأ وحساء ممدودة انتهى قوله فشأنك الخ شأنك بالنصب اي الزمي شأنك وانعمى من النعمة بالفتح بمعنى المسرة والفرح كما فى قولهم انعم صباحا وخلاك ذم جاوزك ذم قال في النهاية يقال افعل ذلك وخلاك ذم اى اعذرت وسقط عنك الذم وفى كلام علي رضي الله عنه فى وصيته لاصحابه وخلاكم ذم مالم تشردوا اى تنفروا وتميلوا عن الحق وقوله ولاارجع مجزوم لانه دعاء ومعناه اللهم لاارجع كما تقول زيدلا يغفر الله له كذا فى الكامل ولله در عبدالله رضي الله عنه وما احسن قوله لناقته حيث دعا لها وقد اقتفى اثره فى ذلك داود بن سلم في قوله يمدح قثم بن العباس رضى الله عنه

نجوت من حل ومن رحلة  ياناق ان قربتنى من قثم

وقدعيب على الشماخ قوله في مدح عرابة الاوسي رضى الله عنه

اذا بلغتنى وحملت رحلى  عرابة فاشر قى بدم الوتين

حيث دعا على ناقته بان تذبح على خلاف قول عبدالله بن رواحة رضى الله عنه قالوا كان ينبغى له ان ينظر لها عند استغنائه عنها فقد قال رسول الله عليه السلام لامرأة الغفارى التى اسرت يوم ذى قرد ثم بخت على ناقة رسول الله عليه السلام فقالت انى نذرت ان انحرها يارسول الله ان نجانى الله عليها بئس ماجزيتها ان حملك الله عليها ونجاك بها ثم تنحرينها انه لانذر فى معصية ولانذر فيما لاتملكين انما هى ناقة من ابلى فارجعى الى اهلك وقد تبع ذوالرمة الشماخ فى صنيعه حيث قال

اذا ابن ابي موسى بلالا بلغته  فقام بفأس بين وصليك جازر

الوصل المفصل بما عليه من اللحم يقال قطع الله اوصاله والجازر الذى يقطع اللحم قوله وجاء المسلمون الخ غادروني تركوني ومنتهى الثواء على صيغة اسم الفاعل والثواء الاقامة وهو من باب حسن الوجه وقع حالا عن مفعول غادروا يريد ان قبره يكون بارض الشام وقوله وردك كل ذى نسب الخ يريد ان النسيب القريب لايقدر على رد الموت عنك بل يسلمك الى الله وينقطع اخاؤه وفى قوله وردك التفات

من التكلم الى الخطاب قوله هنالك لاابالى الخ الطلع مايبدو من ثمرة النخل اول ظهورها والبعل من النخل الذى يشرب بعروقه فيستغنى عن السقى والرواء بالفتح الماء الكثير المروى وحاصل معنى الابيات انه رضى الله عنه دعالنا قته على ابلا غنها اياه وعذرها وهل جزاء الاحسان الا الاحسان ودعا لنفسه بان يستشهد بارض الشام ورضى ان بسلمه اقاربه الى الله عزوجل ويقول انه لايبالى اعزاموالهم وهى النخيل سقية اوبرية بل يرجح الشهاده على حطام الدنيا رضى الله عنه وارضاه وهذا الشعر لعبدالله رضى الله عنه كتبته من سيرة ابن هشام

## عَدِىّ بن حاتم الطّائىّ

### رضى الله عته

يخاطب قومه فى اتخاذ وطاءله في ناديهم بعدما شاخ وكبر سنه

### الترجمة

هو عدى بن حاتم الجواد المعروف ابن عبدالله بن سعد بن الحشرج بن امرئ القيس بن عدى ابن ربيعة بن جرول بن ثعل بن عمر وبن الغوث بن طيئ الطائي يكنى ابا طريف قدم على النبى عليه السلام فى شعبان من سنة تسع وقيل في شعبان سنة عشر روى احمد والترمذى من طريق عباد بن حبيش الكوفى عن عدى بن حاتم رضى الله عنه قال اتيت النبى عليه السلام فى المسجد فقال الناس هذا عدى بن حاتم قال وجئت بغير امان ولا كتاب وكان قال قبل ذلك انى لارجو الله ان يجعل بده فى يدى فقام فاخذ بيدى فلقيته امرأة وصبي معها فقالا ان لنا اليك حاجة قال فقام معهما حتى قضى حاجتهما ثم اخذ بيدى حتى اتى فى داره فالقت اليه الوليدة وسادة فجلس عليها وجلست بين يديه فقال هل تعلم من اله سوى الله قلت لا ثم قال هل تعلم شيأ اكبر من الله قلت لا قال فان اليهود مغضوب عليهم وان النصارى ضالون وروى احمد والبغوى فى معجمه وغيرهما من طريق ابي عبيدة بن حذيفة قال كنت احدث حديث عدى بن حاتم فقلت هذا عدي في ناحية الكوفة فاتيته فقال لما بعث النبى عليه السلام كرهته كراهية

شديدة فانطلقت حتى كنت فى اقصى الارض مما يلى الروم فكرهت مكانى اشد مما كرهته فقلت لو اتيته فان كان كاذبا لم يخف علي وان كان صادقا اتبعته فاقبلت فلما قدمت المدينة استشر فنى الناس فقالوا هذا عدى بن حاتم فاتيته فقال ياعدى اسلم تسلم قلت ان لى دينا قال انا اعلم بدينك منك الست ترأس قومك قلت بلى قال الست ركوسيا الست تأكل المر باع قلت بلى قال فان ذلك لايحل لك فى دينك ثم قال اسلم تسلم قداطن انه انما يمنعك غضا ضة تراها ممن حولى وانك ترى الناس علينا البا واحدا قال هل انيت الحيرة قلت لم آتها وقد علمت مكانها قال يوشك ان تخرج الظعينة منها بغير جوارحتى تطوف بالبيت ولتفتحن علينا كنوز كسرى بن هرمز فقلت كسرى بن هرمز قال نعم وليفيضن المال حتى يهم الرجل من يقبل صدقته قال عدى فرأيت اثنتين الظعينة وكنت فى اول خيل اغارت على كنوز كسرى واحلف بالله لتجيئن الثالثة وآخر الحديث فى البخارى من وجه آخر كذا فى الاصابة وحديث عدى هذا فى لبخارى فى باب علامات النبوة فى الاسلام فليراجع قوله عليه السلام الست ركوسيا فى النهاية الركوسية دينهم بين النصارى والصابئين وفى شرح القاموس للسيد المرتضى وروى عن ابن الاعرابى انه من نعت النصارى وقوله عليه السلام الست تأكل المرباع المرباع ربع الغنيمة التى كانت ملوك الجاهلية تأخذها قال ابن عنمة الضبى فى مرثية بسطام بن قيس الشيبانى

لك المرباع منها والصفايا وحكمك فى النشيطة والفضول

وقوله عليه السلام انما يمنعك غضاضة الغضاضة المذلة والمنقصة يريد فقر اصحابه وقلتهم وقوله عليه السلام انك ترى الناس علينا البا واحدا يقال هم الب عليه والب واحد عليه اى متفقون وفى شعر كعب بن مالك رضى الله عنه يخاطب النبي عليه الصلام

والناس الب علينا فيك ليس لنا الا السيوف واطراف القنا وزر

وفى سيرة ابن هشام ان عدى بن حاتم انتقل الى الشام وترك بنته الحاتم فاغارت خيل رسول الله عليه السلام على بلادهم فسبت بنت حاتم فاتى بها الى المدنية مع السبي فقالت لرسول الله عليه السلام هلك الوالد وغاب الوافد فامنن على من الله عليك قال ومن وافدك قالت عدى بن حاتم قال الفار من الله وسوله فمن عليها فذهبت الى الشام

ولحقت باخيها فقال لها ماذا ترين فى امر هذا الرجل يعنى رسول الله عليه السلام قالت ارى والله ان تلحق به سريعا فان يكن الرجل نبيا فللسابق اليه فضله وان يكن ملـكا فلن تذل فى عز اليمن وانت انت فقال والله ان هـذالرأى فلحق برسول الله عليه السلام فذهب به الى بيته فالقى اليه وسادة فجلس عليها وجلس رسول الله عليه السام بالارض فقل عدى فى نفسـه ليس هذا بامر ملك ثم قال له رسول الله عليه السلام الست ركوسيا الم تك تسير فى قومك بالمرباع فذكر نحوا من حديث احمد والبغوى الا انه ذكر القادسية مكان الحيرة فاسلم عدى رضى الله انتهى ملخصا مختصراً وكان عـدى بن حاتم رضى الله عنه شريفا فى الجـاهليه والاسلام وكان من خيار اصحاب رسول الله عليه السـلام وفضلائهم وعقلائهم وكان خطيبا حاضر الجواب روى صاحب الاستيعاب بسند عن عدى بن حاتم رضى الله عنه قال مادخلت على رسول الله عليه السلام قط الا وسع لى اوتحرك لى وقد دخلت عليه يوما فى بيته وقد امتلأ من اصحابه فوسع لى وجلست الى جنبه وقدم عدى على ابى بكر رضى الله عنه بصدقات قومه فى حين الردة ومنع قومه فى طائفه معهم من الردة بثبوته على الاسلام وحسن رأيه واخرج الامام البخارى فى صحيحه عن عدى بن حاتم رضى الله عنه قال اتينا عمر رضى الله عنه فى وفد فجعل يدعو رجلا رجلا ويسميهم فقلت اما تعرفني يا امير المؤمنين قال بلى اسلمت اذ كفروا واقبلت اذا ادبروا ووفيت اذ غدروا وعرفت اذ انكروا فقـال عدى فلا ابالى اذاً وشهد عدى رضى الله عنه فتوح العراق ثم سـكن الكوفه وشهد صفين مع على رضى الله عنه والنهروان وفيه قال القائل

بأبه اقتدى عدىّ فى الـكرم ومن لم يشبه اباه فقد ظلم

ومات بالكوفه بعد الستين واسن قال ابو عمر مات وهو ابن مأته وعشرين سنه وقال ابو خاتم السجستانى فى كتاب المعمرين انه عاش مائه وثمانين سـنه فلما اسن استأذن قومه فى وطاء يجلس عليه فى ناديهم وقال انى اكره ان يظن احدكم انى ارى لى عليه فضلا ولكنى قد كبرت ودق عظمي فقـالوا ننظر فلما ابطؤا عليه انشأ يقول

من الوافر اجيبوا يابنى ثُعَل بن عمرو ولاتكتموا الجواب من الحياء

فانّى قد كَبِرْتُ ودَقّ عظمى  وقلّ اللحم من بعد النِّقاء

واصبحتُ الغداة اريد شيأ  يقَينى الارضَ من بَرْدِ الشّتأ

وِطاءً يابنى ثعل بن عمرو  وليس لشيخكم غيرُ الوطاء

فان تَرْضَوْا به فسرورُ راض  وان تَأْبَوْا فانّى ذواباء

ساترك ما اردت لما اردتم  وَرّدُك مَنْ عصاك من العَنأ

لانى من مَسائتكم بعيد  كبعد الارض من جَوّ السّماء

وانى لا اكون بغير قومى  فليس الدّلوُ الا بالرِّشاء

ثعل بن عمرو ابو بطن من طئ منهم عدى رضى الله عنه كما عرف فى نسبه وهو غير منصرف للعدل التقديرى والعلمية كعمر وبنو ثعل مشهورون باتقان الرمى وقد اكثر الشعراء من نسبة ذلك اليهم قال امرؤ القيس

رب رام من بنى ثعل  مخرج كفيه من ستره

ويروى متلج كفيه فى قتره اراد عمرو بن المسبح الثعلى الصحابى رضى الله عنه وسيجئ ترجمته عند ذكر شعرله فى باب البأ ان شأ الله اراد بستره ثيابه واكمامه والقتر جمع قتره وهى الزبيتة ومتلج جاعلهما فى التولج والاصل وولج كتراث يريد مخرج كفيه من ثيابه للرمى اومدخلهما فى غابه كيلا يرى كذا فى شرح ديوانه وقال ابن قلاقس

وحى من كناته قدر مونى  بما حوت الكنانة من سهام

اذا انتضلوا وما ثعل ابوهم  رموك بكل رامية ورام

وقال الطغرائى فى لامية العجم

انى اريد طروق الحى من اضم  وقد حماه رماة من بنى ثعل

وفى الاساس وان دعوت على ابناء رجل اسمه عمر او زفر قلت اتيح لكم يا بنى فعل رام من بنى ثعل قوله ولا تكموا الجواب الخ لا تكموا من كماه يكميه اذا ستره يقال كمى فلان شهادته اذا كتمها ومن للسببيه اى من اجل الحياء قوله فانى قد كبرت الخ كبر يكبر من الباب الرابع فى السن قال الله تعالى ولا تأكلوها اسرافا وبدارا ان يكبروا وكبر يكبر من الباب الخامس فى العظم قال الله تعالى كبرت كلمة تخرج من افواههم اى عظمت والنقاء بالكسر واصله مقصور يقال انقت الابل بمعنى سمنت وصار فيها نقىٌ وهو مخ العظام وشحمها من السمن وفى حديث ام زرع ولا سمين فينتقى اى ليس له نقىٌ فيستخرج يقال نقيت العظم ونقوته وانتقيته ومنه فى الحديث لا يجزئ فى الاضاحى الكسير التى لا تنقى اى التى لا مخ لها لضعفها وهزالها كذا فى النهاية وقوله يقينى من وقى يقى وقوله وليس لشيخكم غير الوطاء اراد بالشيخ نفسه والوطاء بالكسر ما يفرش على الارض ويوطئ ليجلس عليه يقال ماله غطاء ولا وطاء يريد ليس لشيخكم مطلوب منكم غير الوطاء وقوله فان ترضوا فسرور راض اى فسرورى سرور راض وقوله فانى ذو اباء اى آبى كما تأبون وقوله ساترك ما اردت لما اردتم من اعلى درجات المحبة قال الشاعر

اريد وصاله ويريد هجرى  فأترك ما اريد لما يريد

قوله وردك من عصاك من العناء العناء بالفتح التعب والمشقة يقول ان ردى عليكم ومخالفتى يكون تعبا ومشقة على لانه يكون اساءة اليكم منى وانى بعيد من مسائتكم بعد ابينا واضحا مثل بعد الارض من جو السماء اى هوائها المتصل بها او الجو بمعنى الداخل يقال جو البيت اى داخله وقوله انى لا اكون بغير قومى هذا كما يقال المرء باخيه والمرء بعشيرته وقوله فليس الدلو الا بالرشاء الرشاء بالكسر الحبل اى لا تكون الدلو بحيث ينتفع بها بان يستخرج بها الماء الا اذا كانت مقرونة بالرشاء وهذا مثل يضرب فى تقوى الرجل باقاربه وعشيرته وهو مذكور فى امثال الميدانى ويقال انك مسترش لفلان اى تابع لمسرته وهذا الشعر لعدى بن حاتم رضى الله عنه كتبته من كتاب المعمرين لابى حاتم السبجستانى رحمه الله كما قدمت

# كعب بن مالك الانصارى

## الخزرجى رضى الله عنه

فى يوم بدر

### الترجمة

هو كعب بن مالك بن ابى كعب واسم ابى كعب عمرو بن القين بن كعب بن سواد بن غنم بن كعب بن سلمة بكسر اللام ابن سعد بن على بن اسد بن ساردة بن يزيد بن جشم بن الخزرج السلمى بفتح اللام نسبة الى سلمة بكسرها كالشقرى والحيطى بالفتح فيهما الى شقرة وحيطات بالكسر فى تميم يكنى كعب رضى الله عنه ابا عبدالله وقيل ابا عبدالرحمن كان احد شعراء رسول الله عليه السلام الذين يذبون عنه وكان مجودا مطبوعا خصوصا فى وصف الحرب فقل من يدانيه فى هذا الباب شهد العقبة ولم يشهد بدرا وقال لقد شهدت مع رسول الله عليه السلام ليلة العقبة حين تواثقنا على الاسلام وما احب ان لى بها مشهد بدر وان كان بدر اذكر فى الناس وشهد احدا والمشاهد كلها حاشا تبوك فانه تخلف عنها وهو احد الثلثة من الانصار الذين قال الله تعالى فيهم وعلى الثلثة الذين خلفوا الآية وهم كعب بن مالك وهلال بن امية ومرارة بن الربيع تخلفوا عن غزوة تبوك فتاب الله عليهم وعذرهم وانزل القرأن المتلو فى شانهم وكان كعب بن مالك رضى الله عنه لبس يوم احد لامة النبى عليه السلام وكانت صفراء ولبس النبى عليه السلام لامته فجرح كعب احد عشر جرحا (غريبة) ومما وقع من الغلط للشهاب الخفاجى فى حاشيته على البيضاوى فى آخر سورة الشعراء ظنه كعب بن مالك الذى كان صاحب حسان وعبدالله بن رواحة وكان يهاجى المشركين وينتصر للاسلام كعب بن جعيل بن عجرة بن ثعلبة بن عوف بن مالك قال فمالك جده انتهى وهذا موضع المثل لكل عالم هفوة فان كعب بن جعيل لايصح صحبته فضلا عن ان يكون شاعر النبى عليه السلام ولم يذكره فى الصحابة الا بن فتحون نقلا عن بعضهم كما فى الاصابة وانما كان شاعر اهل الشام وشهد صفين مع معاوية وله مراجعات مع النجاشى شاعر اهل الكوفة والعجب كيف غفل الشهاب عن كعب بن مالك السلمى صاحب الترجمة مع تواتر صحبته

وهجوه المشركين مع حسان وابن رواحة فى شعره قال فى الاستيعاب توفى كعب بن مالك فى زمن معاوية رضى الله عنه سنة خمسين وقيل سنة ثلاث وخمسين وهو ابن سبع وسبعين وكان عمى فى آخر عمره قال رضى الله عنه

من الوافر

لَعَمْرَ ابيكما يا ابْنَىْ لُؤَىٍّ ... على زَهْوٍ لديكم وانتخاء

لَمَا حامت فوارسكم ببدر ... ولاصبر وابه عند اللّقاء

لعمر ابيكما تأكيد للكلام وليس قسما فان هذه الكلمة كما تستعمل فى القسم تستعمل للتأكيد كما فى قول الشاعر

لعمر ابى الواشين لاعمر غيرهم ... لقد كلفتنى خطة لا اريدها

فهذا تأكيد لاقسم لانه لا يقصد ان يحلف بابى الواشين وهو فى كلامهم كثير كذا ذكر ابن الاثير فى النهاية قلت وقول ابن الاثير لانه لا يقصد ان يحلف بابى الواشين يريد ان القسم فيه معنى التعظيم ولا يعظم الرجل اباء اعدائه ولؤى هو ابن غالب الاب التاسع للنبى عليه السلام مذكور فى عمود نسبه عليه السلام فانه محمد ابن عبد الله بن عبد المطلب بن هاشم بن عبد مناف بن قصى بن كلاب بن مرة بن كعب بن لؤى ابن غالب بن فهر بن مالك بن النضر بن كنانة بن خزيمة بن مدركة بن الياس ابن مضر بن نزار بن معد بن عدنان وابنا لؤى كعب وعامر والمراد بنو كعب وبنو عامر وخصهما بالذكر لان اكثر بطون قريش تنسب اليهما اولان اعقابهما سكان البلد وهم قريش البطاح بخلاف بنى فهر بن مالك فانهم سكنوا فى اطراف مكة ويقال لهم قريش الظواهر حاشا بنى هلال بن اهيب رهط ابى عبيدة بن الجراح رضى الله عنه والا فقد كان فى بدر رجال من قريش غير بنى كعب وعامر كبنى فهر بن مالك ومثله ماوقع فى صحيح البخارى فى حديث الحديبية من قول بديل بن ورقاء الخزاعى للنبى عليه السلام حين اتاه بالحديبية انى تركت كعب بن لؤى وعامر بن لؤى نزلوا اعداد مياه الحديبية وعلى فى على زهو بمعنى مع والظرف حال من المنادى وجمع الضمير فى لديكم لان المراد القبائل كما قدمنا ولديكم صفة زهو وهو الكبر والعجب وكذلك الانتخاء يقال زهى وازدهى على بناء المجهول وكذلك

نحى وانتحى على مافى النهاية وفى القاموس زها كدعا قليلة قوله لماحامت الخ حامت من المحاماة بمعنى المحافظة ينسبهم الى الجبن ولاصبروا به اى فى بدر والفوارس جمع فارس والفاعل الوصفى اذا كان للمذكر ومن ذوى العقول لايجمع على فواعل لانه جمع فاعلة وقد شذ فارس وفوارس وهالك وهوالك نعم قديأتى ذلك فى ضرورة الشعر كقول الفرزدق فى يزيد بن المهلب

واذا الرجال رأوا يزيد رأيتهم خضع الرقاب نواكس الاذقان

بخلاف ما اذا كان للمونث اولغير ذوى العقول كنساء حوائض فى جمع حائض وابل عواضه فى جمع عاضه ذكر ذلك سيبويه فى الكتاب وبدراسم موضع بين الحرمين اسفل وادى الصفراء وهو الى المدنية اقرب التقى فيه النبى عليه السلام والمشركون من قريش ومن معهم وكان اول قتال قاتله النبى عليه السلام وتسمى هذه الغزوة غزوة بدر الكبرى وكان يومها يوم الفرقان كما قال الله تعالى يوم الفرقان يوم التقى الجمعان اعز الله فيه الاسلام واهله ودمغ فيه الشرك وخرب محله وهذا مع قلة عدد المسلمين وكثرة العدو اذلم يكن المسلمون اكثر من ثلثمائة وثلاثة عشر رجلا على اصح الاقوال والمشركون كانوا بين خمسين وتسعمائة الى الالف مع ماكانوا فيه من سوابغ الحديد والعدة الكاملة والمسلمون على خلاف ذلك فهزم الله المشركين اشد هزيمة حتى قتل منهم سبعون واسر سبعون فى مدة قليلة كما قال ابو سفيان بن الحرث حين وصل الى مكة فى اول فل المشركين فسأله ابو لهب عن الوقعة كيف كانت لاشئ والله ان كان الاان لقيناهم فابخناهم اكتافنا يأسرون ويقتلون كيف شاؤا وكان خروج النبى عليه السلام من المدينة لثمان ليال خلون من شهر رمضان فى السنة الثانية للجرة وكانت الوقعة يوم الجمعة صبيحة سبع عشرة من شهر رمضان

وردناه بنور الله يجلو دجى الظلماء عنا والخطأ

رسول الله يقدمنا بامر من امر الله احكم بالقضأ

ضمير وردناه يعود الى بدر ونور الله رسول الله عليه السلام والباء للمصاحبة ويجلو يكشف والدجى جمع دجية وهو الظلمة والظلماء الليلة الشديدة الاظلام

والغطأ مايغطى به ويستر يريد انه عليه السلام يهديهم الحق وينقذهم ويحفظهم من الضلال ورسول الله بالجر بدل من نور الله اوعطف بيان اوبالرفع خبر مبتدأ محذوف وهو الضمير الراجع الى نور الله ويقدمنا من باب نصر بمعنى يتقدمنا وقوله من امر الله بالقاء حركة الهمزة على نون من نحو من ابوك وقرئ قوله تعالى يخرج الخب فى السموات والارض

فما ظفرت فوارسكم ببدر  وما رجعوا اليكم بالسواء

فلا تعجل ابا سفيان وارقب  جياد الخيل تطلع من كداء

بنصر الله روح القدس فيها  وميكال فيا طيب الملاء

قوله فما ظفرت فوارسكم الخ ماظفرت ماغلبت وبالسواء اى بالاستواء والانتظام بل تفرقوا شغر بغر قوله وارقب اى انتظر وتطلع تشرف وترى وقدم معنى كداء والباء فى بنصر الله للملابسة والظرف حال من ضمير تطلع وروح القدس بالرفع على الابتداء وفيها خبره والجملة حال اخرى والنداء للتعجب والاستحسان والملأ الاشراف ويمد للوزن قال السهيلى وليس من باب مد المقصور اذ لايجوز فى عصى عصاء ولافى رحىً رحاء لافى الشعر ولافى الكلام وان كانوا قد اشبعوا الحركات فى الضرورة فقالوا فى كل كلكال واما الملأ والخطأ وماكان من هذا الباب فان همزته تقلب الفافى الوقف بالاجماع فجمعوا بين العوض والمعوض عنه كما قالوا فى النسب الى فم فموى وفى النسبه الى اليمن يمان ثم يمانى فياطيب الملاء من هذا الباب وكذلك قولهم الخطاء فى الخطأ قال الشاعر

فكلكم مستقح لصواب من  يخالفه مستحسن لخطائه

وقد قال ورقة الا ماغفرت خطائيا انتهى ملخصا وما عزاه الى ورقة عجز بيت والبيت هكذا

وانى وان سبحت باسمك ربنا  لاكثر الاماغفرت خطائيا

وهو من قصيدة عزاها ابن اسحق الى زيد بن عمرو بن نفيل العدوى وابن

هشام الى امية بن ابى الصلت الثقفى وورقة المذكور هو ورقة بن نوفل بن اسد ابن عبدالعزى بن عم خديجة بنت خويلد بن اسد بن عبدالعزى ام المؤمنين رضى الله عنها له ذكر فى بدء وحى النبوة وهذه الابيات لكعب بن مالك رضى الله عنه كتبتها من سيرة بن هشام رحمه الله

## باب قافية الباء

## ابو احمد بن جحش الاسدى

## رضى الله عنه

### فى هجرته الى المدنية وهجرة قومه وذم المشركين والاشتكاء عنهم

### الترجمة

هو عبد بن جحش بن رياب بن يعمر بن صبرة بن مرة بن كبير بالموحدة بن غنم بن دودان بن اسد بن خزيمة الاسدى غلبت عليه كنيته وعرف بها وهو صهر رسول الله عليه السلام اخو زينب بنت جحش ام المؤمنين رضى الله عنها امه وام اخيه عبدالله المجدع وام اخته زينب اميمة بنت عبدالمطلب بن هاشم عمة رسول الله عليه السلام وكان ابو احمد هذا شاعرا معروفا وكان ضريرا هاجر الى الحبشة على قول بعضهم وهو من المهاجرين الاولين الى المدينة قال فى سيرة ابن هشام عن ابن اسحق ان اول من قدم المدينة مهاجرا بعد ابى سلمة زوج ام سلمة رضى الله عنه قبل النبى عليه السلام عامر بن ربيعة حليف بنى عدى بن كعب معه امرأته ليلى بنت ابى حثمة ثم عبدالله بن جحش احتمل باهله وباخيه عبد بن جحش وهو ابو احمد رضى الله عنه انتهى وكانت عند ابى احمد الفارعة بنت ابى سفيان بن حرب وتوفى ابو احمد رضى الله عنه بعد اخته زينب رضى الله عنها وكانت وفاتها سنة عشرين فى خلافة عمر بن الخطاب رضى الله عنه هكذا ذكر صاحب الاستيعاب وكان بنو غنم بن دودان اهل اسلام قداوعبوا الى المدينة مع رسول الله عليه السلام هجرة رجالهم ونساؤهم فقال ابو احمد رضى الله عنه يذكر ذلك

من الطويل

لمّا رأتني أمّ احمد غاديا ... بذمّة من اخشى بغيب وأرهب

تقول فاما كنت لابدّ فاعلا ... فيمّم بنا البلدان ولتنأ يثرب

فقلت لها بل يثرب اليوم وجهنا ... وما يشأ الرحمن فالعبد يركب

الى الله وجهي والرسول ومن يقم ... الى الله يوما وجهه لا يخيب

ام احمد زوج ابي احمد وغاديا اى ذاهبا للهجرة وقوله بذمة من اخشى الخ يريد بعهد الله وضمانه وتقول جواب لما وفاعلا اى فعل الهجرة ولتنأ ولتبعد ويثرب اسم قديم للمدينة المنورة روى عن النبي عليه السلام انه نهى ان يقال للمدينة يثرب قال بن الاثير غيرها النبي عليه السلام وسماها طابة وطيبة كراهية للتثريب وهو اللوم والتعيير وقيل هو اسم ارضها وقيل سميت باسم رجل من العمالقة انتهى ووجهنا اى مقصودنا وقوله الى الله وجهي اى توجهي وقوله ومن يقم اى يثبت ويدم ووجهه نفسه وذاته وقوله لا يخيب قال الامام السهيلي هكذا روى بالكسر على الاقواء ولو روى بالرفع لجاز للضرورة باضمار الفأ على مذهب المبرد وبالتقديم والتأخير على مذهب سيبويه مثل ان يصرع اخوك تصرع انتهى يريد ان كلمة الجزم وهي من عملت في لا يخيب فاذا حرك في البيت يحرك بالكسر فيكون اقواء لان قوا في القصيدة على الرفع والاقواء اختلاف اعراب القوافي وهو من عيوب الشعر وهو مع ذلك كثير في اشعارهم قال حسان بن ثابت يهجو بني الحرث بن كعب

لا بأس بالقوم من طول ومن عظم ... جسم البغال واحلام العصافير

ثم قال

كانهم قصب جوف اسافله ... منقب نفخت فيه الاعاصير

وقال بن جني اما سعة الاقواء في كلام العرب فبحيث لا يرتاب بها لكن ذلك في اجتماع الرفع والجر واما الاقواء بالنصب فقليل واما قوله ولو روى بالرفع الخ فيريد

ماقال المبرد فى الكامل فان كان الفعل الاول مجزوما فلايجوز رفع الثانى الاضرورة فسيبويه يذهب الى انه على التقديم والتأخير وهو عندى على ارادة الفاء فمن ذلك قوله

يا اقرع بن حابس يا اقرع  انك ان يصرع اخوك تصرع

اراد سيبويه انك تصرع ان يصرع اخوك وهو عندى على قوله ان يصرع اخوك فانت تصرع انتهى يعنى المبرد حذف الفاء والمبتدأ حتى يكون الجزاء جملة اسمية واما على مذهب سيبويه فالجزاء محذوف لدلالة المذكور المعتبر تقدمه خبرا لان وجملة الشرط معترضة بين اسم ان وخبرها والحاصل ان تصرع على مذهب المبر دخبر المبتدأ وعلى مذهب سيبويه خبر ان فترتفع

فكم قد تركنا من حميم مناصح  وناصحة تبكى بدمع وتندب

ترى ان وترا نأينا عن بلادنا  ونحن نرى ان الرغائب نطلب

كم خبرية والحميم القريب اوالصديق والمناصح مريد الخير وتندب تتوجع وتبكى بكاء النائحة النادبة على الميت وقوله ان وترا الخ الوتر بالفتح عند بعض العرب وبالكسر عند بعضهم الذحل كالترة والوتيرة وهو اسم ان ونأينا خبره وان كان معرفة والنأى البعد والحق جواز وقوع النكرة المحضة مبتدأ واسم باب ان عند الافادة واما الاخبار بالمعرفة عن النكرة فقد جوزه كثير من المحققين فى باب ان وكان كالرضى وابن مالك وغيرهما واما عند من لم يجوز فهو من باب القلب كما فى يكون مزاجها عسل وماء وجملة ترى استيناف كانه قال ماسبب بكاء الناصحة فقال ترى الخ يعنى ترى الناصحة ان هجرتنا سبب لانتقام اعدائنا منا وشماتتهم بنا ونحن نيتنا وطيتنا ابتغاء الثواب الذى يرغب فيه كل مؤمن

دعوت بنى غنم لحقن دمائهم  ولاحق للالاح للناس ملحب

اجابوا بحمد الله لما دعاهمو  الى الحق داع والنجاح فاوعبوا

بنو غنم بن دودان بطن من اسد بن خزيمة وهم قوم ابى احمد كما مرفى نسبه فى اول الترجمة وحقن الدماء حفظها من ان تراق ولاح ظهر ووضح والملحب الطريق الواضح قوله واوعبوا فى الاساس اوعب بنو فلان لبنى فلان اذا جاؤهم باجمعهم واوعبوا جلاء لم يبق فى بلدهم احد انتهى وقد قدمنا ان بنى غنم بن دودان اوعبوا الى الاسلام والهجرة فهذا مراد ابى احمد رضى الله عنه

وكنّا واصحابا لنا فارقوا الهدى ... اعانوا علينا بالسّلاح واجلبوا

كفوجين اما منهما فموفّق ... على الحق مهديّ وفوج معذّب

طغوا وتمنّوا كذبة وازلهم ... عن الحق ابليس فخابوا وخيّبوا

ورغنا الى قول النبى محمّد ... فطاب ولاة الحق منا وطيّبوا

قوله وكنا واصحابا لنا الخ يريد بالاصحاب المشركين وجملة فارقوا الهدى صفة لاصحابا وجملة اعانوا علينا حال بتقدير قد واجلبوا بمعنى جمعوا علينا الجموع مثل احلبوا بالحاء المهملة قال الكميت

على تلك اجريّاى وهى ضريبتى ... ولوا جلبوا طرا على واحلبوا

قوله كفوجين الخ كفوجين خبر كنا فى البيت الاول والكاف زائدة وقوله اما منهما فموفق فى تقدير اما فوج منهما فموفق كما فى قول النابغة

كأنك من جمال بنى اتيش ... يقعقع خلف رجليه بشن

والتقدير كأنك جمل من جمال بنى اتيش ويجوز حذف موصوف الجملة والظرف اذا كان امر الموصوف ظاهرا ظهورا يستغنى معه عن ذكره غير مشروط بشرط آخر كما يفهم من المفصل واللباب وذكر الرضى انه لايجوز حذفه الا ان يكون الموصوف بعض ماقبله من المجرور بمن اوبفى نحو قوله تعالى ومنهم دون

ذلك وقوله تعالى وما منا الا له مقام معلوم اى ما من ملائكتنا الا ملك له مقام معلوم الا لضرورة الشعر كما فى شمر النابغة المتقدم وحذف اما من قوله وفوج معذب كما حذف فى قوله تعالى والراسخون فى العلم بعد قوله تعالى فاما الذين فى قلوبهم زيغ عند بعضهم وحذف ضال ومخذول بقرينة ذكر مهدى وموفق فى الاول كما حذف من الاول منعم بقرينة ذكر معذب فى الثانى فاصل الكلام اما فوج منهما فموفق على الحق مهدى منعم واما فوج فمخذول ممنوع عن الحق ضال معذب فلا تخفى مافى الكلام من صنعة الاحتباك وقوله تمنوا بمعنى كذبوا وكذبة بالفتح مصدر كذب يكذب مفعول مطلق لتمنوا من غير لفظه وابليس بالصرف للضرورة والخيبة الخسران ومعنى خابوا وخيبوا اى ضلوا واضلوا قوله ورعنا الى قول النبى محمد رعنا بضم الراء من راع يروع وبكسرها من راع يريع كلاهما بمعنى رجع لكن الثانى اكثر قال البعيث

طمعت بليلى ان تريع وانما ... تقطع اعناق الرجال المطامع

ويقال وعظة فابى ان يريع وسئل الحسن البصرى عن الشئ يذرع الصائم فقال هل راع منه شئ فقال له السائل ماادرى ماتقول فقال هل عاد منه شئ يقول كنا مع المشركين فوجين احدهما على الحق والاخر على الباطل اما الذين على الباطل فهم هم لانهم طغوا وكذبوا على الله ورسوله واما الذين على الحق فهم نحن معاشر المسلمين لانا رجعنا الى قول رسول الله عليه السلام فقبلناه وتمسكنا بدينه فطابت احوالنا وارشدنا الناس فطابت احوالهم بنا والحمد لله

تمت بارحام الينا قريبة ... ولاقرب بالارحام اذ لا تقرب

فاى بن اخت بعدنا يأمنكم ... واية صهر بعد صهرى ترقب

ستعلم يوما اينا اذ تزايلوا ... وزيل امر الناس للحق اصوب

قوله تمت من مت يمت اذا توسل بقرابة ونحوها يريد تتوسل الجماعة الضالة وقوله ولاقرب بالارحام اذ لا تقرب يريد انه لا اعتبار بالنسب والرحم اذا

لم يقرب ذوو الارحام كما فعلتم بنا فاخرجتمونا من اوطاننا ولم تصلوا الاحام بل قطعتموها وهذا كما قال الآخر

ولقد سبرت الناس ثم خبرتهم ... وبلوت ما وضعوا من الاسباب
فاذا القرابة لا تقرب قاطعا ... واذا المودة اقرب الاسباب

قوله فاى ابن اخت الخ الصهر بالكسر قرابة بسبب الزواج ويؤنث حكى الفراء بيننا صهر فنرعاها نقله الصاغانى فلذلك قال اية صهر وترقب بالتأنيث بمعنى تحفظ يقول انا ابن اختكم فان امى قرشية هاشمية فاذا لم آمن انا منكم كيف يأمن غيرى مثلى وبينى وبينكم مصاهرة فان بنت ابى سفيان تحت نكاحى فاذا لم تحفظ حقوق مصاهرتى كيف تحفظ حقوق مصاهرة غيرى قوله ستعلم يوما اينا الخ العرب قد تذكر اليوم وتريد الوقت وقوله اذ تزايلوا بدل من يوما وضمير الجمع للناس المدلول عليهم بالفوجين والتزايل الافتراق والتباين ومنه عدو مزايل اي مباين فى المبالغة فى العداوة والتزييل التفريق واينا مبتدأ واصوب خبره وهو بمعنى صائب اى مصيب وقوله للحق متعلق بزيل اى لظهور الحق وكلمة تعلم معلقة بما فى اى من الاستفهام كما فى قوله تعالى لنعلم اى الحزبين احصى لما لبثوا امدا يقول ستعلم ايها العدو اذا تباين الناس وتخاصموا يوم القيمة وفصل وقضى بينهم بالقسط او فرق بينهم فى مساكنهم فقيل فريق فى الجنة وفريق فى السعير اينا اصاب الحق انحن معاشر المسلمين لم انتم معاشر المشركين نحن لاشك ولا مرية فويل لك من البلية وستعلم اذا انجلى بين عينيك الغبار افرس تحتك ام حمار وهذه القصيدة لابى احمد رضى الله عنه كتبتها من سيرة ابن هشام

## امية بن الاسكر الجندعى رضى الله عنه

يشكو من فراق ابنه كلاب بن امية فى كبره وهرمه

### الترجمة

هو امية بن حرثان بن الاسكر بن سرابيل الموت بن زهرة ين زبينه بن جندع ابن ليث بن بكر بن عبدمناة بن كنانة بن خزيمة بن مدركة بن الياس بن مضر

شاعر فارس مخضرم ادرك الجاهلية والاسلام وكان من سادات قومه وفرسانهم وله ايام مشهورة كان يسكن الطائف وعمر زمانا طويلا ذكره صاحب الاستيعاب ولم يذكر شيأ فى صحبته ولافى عدمها وقال فى التجريد فى صحبته نظر وذكره صاحب الاصابة فى قسم الصحابة من كتابه ونقل عن ابى عمرو الشيبانى مايدل على صحبته وعلى صنيع صاحب الاصابة اعتمدت فذكرت شعره فى كتابى هذا المختص باشعار الصحابة رضوان الله تعالى عليهم اجمعين كان لامية رضى الله عنه ابن يسمى كلابا فهاجر الى المدنية فى خلافة عمر بن الخطاب رضى الله عنه فاقام بها مدة ثم لقى ذات يوم طلحة بن عبيدالله والزبير بن العوم رضى الله عنهما فسألهما اى الاعمال افضل فقالا الجهاد فسأل عمر رضى الله عنه فاغزاه فى جيش وكان ابوه امية قد كبر وضعف فلما طالت غيبة كلاب قال امية رضى الله عنه

من الوافر

لمن شيخان قد نشدا كلاباً ... كتاب الله ان قبل الكتابا

أناديه فيعرض فى اباء ... فلا وابى كلاب ما اصابا

اذا سجعت حمامة بطن واد ... الى بيضاتها ادعو كلابا

لمن شيخان اى لمن يشكو شيخان اى عجوزان حتى يشكيهما يريد نفسه وزوجه ام كلاب على التغليب وقوله قد نشدا كلابا اى استعطفاه واقسما عليه قسم السؤال بكتاب الله يقال نشدته الله ونشدته به اذا قلت له بالله افعل هذا اولا تفعل وقوله فيعرض فى اباء الاباء اشد الامتناع ولافى قوله فلا وابى مزيدة لتأكيد القسم تقع فى الاثبات كما فى قوله تعالى فلا اقسم بمواقع النجوم وفى النفى كما فى قوله تعالى فلا وربك لايؤمنون وقيل ان لا فى مثل هذا رد للكلام السابق وكلاب مبتدأ وجملة ما اصابا باشباع الالف خبره والمجموع جواب القسم فان قيل كيف اقسم بابيه وقد نهى النبى عليه السلام ان يحلف الرجل بابيه قلنا هذه كلمة جارية على السن العرب نستعملها كثيرا فى خطابها وتريد بها التأكيد فهذا جرى منه على عادة الكلام الجارى على الالسن ولايقصد به القسم كاليمين المعفو عنها من قبيل اللغو عند بعض

الفقهـاء او ارادبه التوكيد فان هذه اللفظة تستعمل فى كلام العرب على وجهين للتعظيم وهو المراد بالقسم المنهى عنه وللتوكيد كما قدمنا ذلك فى قصيدة كعب بن مالك رضى الله عنه هكذا اجابوا عن قوله عليه السلام للذى سأله عن شرائع الاسلام افلح وابيه ان صدق وقوله اذا سجعت حمامة بطن واداخ يريد انها تذكره كلابا وتهيج شوقه اليه فيدعوه ويروى حمامة بطن وج وهواسم واد بالطائف بالبادية وهو مذكور فى شعر عروة بن حزام

احقايا حمامة بطن وج  بهذا النوح انك تصدقينا

وحاصل معنى الابيات ان شوقه الى ابنه كلاب ازدا دبحيث الجأه ان يستغيث بكل من يمكن ان يستغاث به فقال لمن يشكو عجوزان اللذان نشدا ابنهما كلابا بكتاب الله ان قبل هذه النشدة وابر القسم وانى هذا فانا اناديه وهو يمتنع اشد الامتناع فاقسم بابى ان كلابا ما اصاب فى هذا بل اخطأ واذا سجعت الحمامة شوقا الى بيضاتها تذكرنى كلابا لانه حنو الاصل الى الفرع وحنينه

اتاه مهاجران تكنفاه  فقارق شيخه خطأ وخابا

تركت اباك مرعشة يداه  وامك ماتسيغ لها شرابا

تمسح مهره شفقاً عليه  وتجنبه اباعرها الصعابا

تكنفاه احاطابه او اخذاه فى كنفهما وحمايتهما وشيخه اى اباه فى الاساس ورث من شيخه الكرم ومن اشياخه من ابائه انتهى وقال حسان بن ثابت رضى الله عنه يهجو الحرث بن عامر وبنيه

بئس البنون وبئس الشيخ شيخهم  تباً لذلك من شيخ ومن عقب

وقوله مرعشة يداه على صيغة اسم الفاعل او اسم المفعول قال فى الاساس ارعشة الكبر ورعشه وارعشت يداه انتهى وهو حال من اباك وقوله وامك ماتسيغ

لها شرابا اى وتركت امك حال كونها ماتسيغ لها شرابا من اسغت الشراب اذا سهلت مدخله فى الحلق وتمسح بحذف احدى التائين من المضارع كما فى تجنب بمعنى تمسح وفاعلها ضمير الام والمهر ولد الفرس ويطلق على الكبير ايضا والشفق بالتحريك الخوف لشدة النصح وحرص الناصح على اصلاح حال المنصوح وتجنبه من جنبه او اجنبه الشر اذا نحاه عنه وابعده، وقرئ واجنبنى وبنى بالقطع والا باعر جمع ابعرة جمع بعير والصعاب جمع صعب ضد الذلول المنقاد وفى المثل قد يركب الصعب من لا ذلول له يضرب فى الاكتفاء بالادنى عند عدم الاعلى وحاصل معنى الابيات ان رجلين من المهاجرين ذهبا بكلاب وهو خطأ منه لا يليق به لانه ترك اباه حال ارتعاش يديه من الكبر وليس له من ينظره وترك امه حال كونها محزونة بحيث لا تسيغ لها شرابا لفرط حزنها وغمها فان الحزين ذا الغصة تكون هذه حاله قال الشاعر

فساغ لى الشراب وكنت قبلا  اكاد اغص بالماء الحميم

وهى مع ذلك تمسح فرس كلاب اى تزيل عنه ماتلوث به وتحفظه من ان تناله مكروه من الدواب الصعاب

فانك قد تركت اباك شيخا  يطارق اينقا شربا طرابا

فنك والتماس الاجر بعدى  كباغى الماء يتبع السرابا

شيخا كبير السن ويطارق من تطارقت الابل اذا جاءت مجتمعة تتبع بعضها اثر بعض والاينق جمع ناقة واصله انوق والشرب جمع شروب وفعل فى جمع فعول قياس اردت به المذكر او المؤنث كصبور وصبور وغدر وغدور هكذا وجدنا شربا بالراء فى نسخ الاغانى التى رأيناها ولعله شزبا بالزاى اى ضامرة مهزولة ويؤيده رواية ابى على القالى فى ذيل الامالى شسبا بالسين وهو بمعنى الشزب والطراب الابل التى تنزع وتشتاق الى اوطانها قوله فانك والتماس الاجر بعدى الخ الالتماس الطلب وبعدى اى بعد تركى والباغى الطالب والسراب ماتراه نصف النهار كأنه ماء وحاصل معنى البيتين انك قد تركت اباك شيخا كبيرا وليس له من يورد ابله الماء

ويصدرها فيفعل ذلك بنفسه والابل كما شربت الماء تشتاق وتنزع الى اوطانها فتسرع بعضها اثر بعض وهو لكونه راعيها وحافظها يسرع معها فيتعب كل التعب وان زعمت انك فى سفرك هذا فى اجر ومثوبة فهيهات ذاك فمثلك كمثل ظمأن يرى سرابا بقيعة فيحسبه ماء حتى اذا جاءه لم يجده شيئا وهذه القصيدة لامية بن الاسكر رضى الله عنه مذكورة فى الاغانى لابى الفرج الاصفهانى ومنه كتبتها

## حسان بن ثابت الانصارى

## رضى الله عنه

فى غزوة بدر والقاء قتلى المشركين فى القليب وما ناداهم النبى عليه السلام قدمرت ترجمة حسان رضى الله عنه قال ابن اسحق حدثنى حميد الطويل عن انس بن مالك رضى الله عنه قال سمع اصحاب رسول الله عليه السلام رسول الله عليه السلام من جوف الليل وهو يقول ياعتبة بن ربيعة وياشيبة بن ربيعة ويا امية بن خلف ويا ابا جهل بن هشام فعدد من كان منهم فى القليب هل وجدتم ماوعدكم ربكم حقا فانى قد وجدت ماوعدنى ربى حقا فقال المسلمون يا رسول الله اتنادى قوما قد جيفوا فقال ما انتم باسمع لما اقول منهم ولكنهم لايستطيعون ان يجيبوا قال ابن اسحق وحدثنى بعض اهل العلم ان رسول الله عليه السلام قال يوم قال هذه المقالة يا اهل القليب بئس عشيرة النبى كنتم لنبيكم كذبتمونى وصدقنى الناس واخرجتمونى وآوانى الناس وقاتلتمونى ونصرنى الناس ثم قال هل وجدتم ماوعدكم ربكم حقا للمقالة التى قال وقال حسان بن ثابت رضى الله عنه فى هذا

من الوافر

عرفت ديار زينب بالكثيب ... كخط الوحى فى الورق القشيب

تداولها الرياح وكل جون ... من الوسمى منهمر سكوب

فامسى رسمها خلقا وامست ... يبابا بعد ساكنها الحبيب

الكئيب الرمل المستطيل المحدودب والوحى الكتابة والقشيب ماخالطه شئ فافسده واراد ههنا ما افسده من الدنس وطول العهد يعنى لم يبق من اثار الدار الارسوم كالكتاب المسطور فى الورق القشيب وقد شاع تشبيه الشعراء رسوم الدار بالكتابة قال حاتم بن عبدالله الطائى

اتعرف اطلالا ونؤيا مهدما  كخطك فى رق كتابا منمنما

وقال زهير

دار لاسماء بالغمرين ماثلة  كالوحى ليس بها من اهلها أرم

وتداولها بمعنى تناوبها حال بتقدير قد والجون الاسود اراد السحاب الاسود واوسمى مطر الربيع ومنهمر وسكوب كلاهما بمعنى شديد السيلان واسى بمعنى صار والرسم الباقى من اثر الدار والخلق بالتحريك البالى للمذكر والمؤنث يقال ثوب خلق وملحفة خلق ودار خلق والبباب الخراب ومن سجعات الاساس دارهم يباب لاحارس ولاباب والحيب صفة ساكنها ثم اراد ان يتخلص عن التشبيب الى المقصود فقال

فدع عنك التذكر كل يوم  وردد حزازة الصدر الكئيب

وخبر بالذى لاعيب فيه  بصدق غير اخبار الكذوب

بما صنع المليك غداة بدر  لنا فى المشركين من النصيب

دع اترك ورد امر من رد يرد وحزازة الصدر ماحل فى صدرك فاوجعك والكئيب الحزين وقوله غير اخبار الكذوب صفة كاشفة لصدق والكذوب بمعنى الكاذب وقوله بما صنع المليك بدل من قوله بالذى فى البيت السابق يريدانك تذكر ديار زينب ورسومها وهذا مع كونه مما يحزنك ويوجعك عيب عليك لانه صباً لايليق بمثلك فدعه واخبر بالاعيب فيه ولايحزنك بل يسرك وهو وقعة بدر التى نصر الله فيها المسلمين على المشركين

غداة كأنّ جمعهمو حراء  بدت اركانه جنح الغروب

فلا قينا هموا منّا بجمع  كاسد الغاب مُرْدانٍ وشيب

امام محمّد قدما زروه  على الاعداء فى لفح الحروب

بايديهم صوارمُ مُرْهَفاتٌ  وكلّ مجرّب خاظى الكعوب

بنو الاوس الغطارف وازرتها  بنو النجّار قى الدّين الصّليب

غداة مضاف الى لاسمية بعده بدل من غداة بدر فى البيت السابق وحراء جبل بمكة يذكر ويؤنث ويصرف ويمنع وهو المعروف الآن بجبل النور كان النبى عليه السلام يتحنث فيه على ماهو مذكور فى حديث بدء الوحى والاركان جمع ركن بمعنى الجانب والجنح بكسر الجيم وتضم بمعنى قطعة من الليل وبمعنى الجانب يريد ان جمعهم وعسكرهم فى العظم وما يعلوه من السواد لكثرتهم وكثرة الحديد فيهم كحراء اذا ظهرت وقت الغروب قوله فلا قيناهم الخ ويروى فوافيناهم والموافاة الاتيان وقوله منا حال من جمع قدمت عليه ولقد سهى العينى فى شرح شواهد الالفية حيث قال انه صفة لجمع فان الصفة لاتتقدم على الموصوف والجمع اسم لجماعة الناس ولكونه مفرد اللفظ تثنى كما فى قوله تعالى يوم التقى الجمعان ومردان جمع امرد وهو الشاب الذى طر شاربه ولم تنبت لحيته والمراد الشبان والشيب جمع اشيب وهو المبيض الشعر وقول حسان رضى الله عنه هذا كقول عمرو بن كلثوم فى معلقته

بشبان يرون القتل مجدا  وشيب فى الحروب مجربينا

قوله امام محمد الخ وازروه ويروى آزروه بمعنى اعانو ولفح الحرب شدتها واصله من لفح النار وهو حرها ووهجها قوله بايديهم صوارم الخ الصوارم جمع صارم بالصرف للضرورة والمرهفات جمع مرهف يقال رهفت السيف وارهفته فهو مرهوف ومرهف اذا شحذته واكثر مايقال مرهف والخاظى الممتلئ اراد كل رمح ممتلئ من الانابيب قوله بنو الاوس الخ الاوس اخو الخزرج وهما ابنا حارثة بن ثعلبة وهو

العنقاء بن عمرو وهو مزيقيا بن عامر وهو ماء السماء بن حارثة الغطريف بن امرئ القيس البطريق بن ثعلبة البهلول بن الازد بن الغوث بن نبت بن مالك بن زيد بن كهلان بن يشجب بن يعرب بن قحطان وبنو الاوس والخزرج قبيلا الانصار بالمدينة وقوله بنو الاوس خبر مبتدأ محذوف اى، هم يعنى الجمع المذكور بنو الاوس والغطارف جمع غطريف بالكسر وهو السيد الكبير وبنو النجار بن ثعلبة بن عمرو بن الخزرج بطن كبير من الخزرج شهد بدر امنهم جمع كثير ذكر فى سيرة ابن هشام انه شهد بدرا مأة وسبعون رجلا من الخزرج اربعة وخمسون منهم من بنى النجار والمراد ببنى النجار ههنا الخزرج وقوله فى الدين الصليب الصليب الشديد اى المحكم المتقن او الشديد المتصلب اهله على الاسناد المجازى

فغادرنا ابا جهل صريعا ... وعتبة قد تركنا بالجبوب

وشيبة قد تركنا فى رجال ... ذوى حسب اذا انسبوا حسيب

غادرنا تركنا وابو جهل عمرو بن هشام بن المغيرة المخزومى وصريعا ميتا وعتبة وشيبة ابنا ربيعة بن عبد شمس بن عبد مناف بن قصى والجبوب الارض والثلثة المذكورون قتلوا يوم بدر مشركين اما ابو جهل فضربه ابنا عفراء حتى تركاه وبه رمق وذفف عليه ابن مسعود رضى الله عنه اى اماته واما شيبة فقتله حمزة بن عبد المطلب رضى الله عنه واما عتبة فبارزه عبيدة بن الحرث بن المطلب رضى الله عنه فاختلفا ضربتين فأثخن كل منهما صاحبه فاعان حمزة وعلى رضى الله عنهما عبيدة فقتلا عتبة واحتملا عبيدة الى قومه فمات بعد ذلك وسيجئ لهذا زيادة بيان انشاءالله تعالى وقوله حسيب صفة حسب من باب ظل ظليل

ينادیهم رسول الله لما ... قذفناهم كباكب فى القليب

الم تجدوا كلامي كان حقا ... وامر الله يأخذ بالقلوب

فما نطقوا ولو نطقوا لقالوا ... صدقت وكنت ذا رأى مصيب

قذفناهم رميناهم والكباكب جمع كبكبة قال فى النهاية فى حديث الاسراء فمر موسى فى كبكبة من بنى اسرائيل هى بالضم والفتح الجماعة المتضامة من الناس وغيرهم انتهى والقليب البئر التى لم تطو ويذكر ويؤنث وقوله وامر الله اي فعل الله وهو تعجيزه اياهم او الموت يأخذ بالقلوب فيمنعهم عن الجواب ولذلك قال فما نطقوا الخ يريد انهم عاينوا ان النبى عليه السلام على الحق وانهم على الباطل وسمعوا نداء النبى عليه السلام فلو نطقوا لكان الجواب تصديق النبى عليه السلام وفى الابيات تلميح الى ماقدمنا عن ابن اسحق فى مقدمة نظم هذه القصيدة من القاء قتلى المشركين فى القليب ونداء النبى عليه السلام اياهم وهذه القصيدة مسطورة فى سيرة ابن هشام عن ابن اسحق ومنها كتبتها

## حسان بن ثابت الانصارى ايضا

### رضى الله عنه

يهجو الحرث بن عامر بن نوفل بن عبد مناف القرشى النوفلى

من البسيط

يا حار قد كنت لولا ما رميت به ... لله درك فى عز و فى حسب

جللت قومك مخزاة ومنقصة ... ما لن يجللـه حى من العرب

يا سالب البيت ذى الاركان حليته ... اد الغزال فلن يخنى لمستلب

سائل بنى الحرث المزرى بمعشره ... اين الغزال عليه الدر من ذهب

بئس البنون وبئس الشيخ شيخهمو ... تبا لذلك من شيخ ومن عقب

لابد من تقديم مقدمة حتى يفهم معنى هذه الابيات وهى ان جرهم حين ما خرجت من مكة وضعت فى زمزم غزالين من ذهب واسيافا وادراعا وطمستها وطوتها فلم تكن تعرف بئر زمزم حتى هدى الله عبد المطلب جد النبى عليه السلام

فوجد مكانها فحفر ووجد الطى فلما تمادى به الحفر وجد الغزالين والاسياف والادراع فضرب الاسياف بابا للكعبة وضرب فى الباب الغزالين من ذهب فكان اول ذهب حليته الكعبة على ماقيل ثم ان فتاك قريش وخلعائها كابى لهب بن عبدالمطلب والحكم بن ابى العاص والحرث بن عامر بن نوفل والفاكه بن المغيرة وغيرهم تذاكروا ذات يوم ان يسرقوا غزال الكعبة فيشربوا به الخمر فذهبوا فى ليلة مظلمة باردة مطيرة فحمل ابو لهب ورجل آخر الحرث بن عامر على ظهورهما حتى ارتفع فضرب الغزال فوقع فتناوله ابو لهب فاقتسموه وشربوا الخمر والقصة فى ذاك طويلة ويكفيك من القلادة ما احاط بالعنق ففى هذه القصة قال حسان رضى الله عنه هذا الشعر وهذا الحرث بن عامر خرج يوم بدر مع المشركين فقتل فيمن قتل منهم قال فى سيرة ابن هشام قتله خبيب بن اساف اخو بنى الحرث بن الخزرج فيما يقولون ونص صحيح البخارى على ان الذى قتله خبيب بن عدي اخو بنى جحجبى وبه صلبه المشركون بمكة بعد وقعة الرجيع فقول حسان رضى الله عنه ياحارثر خيم الحرث يريد الحرث بن عامر بن نوفل وقوله لله درك الدر فى الاصل اللبن واللبن فيه خير كثير فيكون المعنى لله خيرك نسبه الى الله لعظمه وهو مستعمل فى التعجب عن حسن الشئ فيكون مدحا فان اريد الذم قيل لادردره فيكون استعماله ههنا على التهكم قوله جللت قومك الخ اي الحقت بهم بحيث شملهم وعمهم كما يجلل الرجل بالثوب ومنه قوله على رضى الله عنه اللهم جلل قتلة عثمان خزيا ومخزاة خزيا وهو تمييز والمنقصة العيب وما مفعول ثان ولن يجلله على بناء المجهول وحاصل المعنى انك الحقت قومك من جهة الخزى والعيب مالم يلحقه حي من احياء العرب قوله ياسالب البيت الخ البيت الكعبة والحلية مايحلى ويزين به وهو منصوب على المفعولية لسالب او مجرور على انه بدل اشتمال من البيت وهو الاولى والمراد بالحلية الغزال المذكور فيما تقدم وقوله فلن يخفى لمستلب اما على صيغة اسم المفعول بمعنى مستلب العقل يقال سلبه فؤاده وعقله واستلبه وفاعل لن يخفى ضمير راجع الى كونه سارقا المفهوم من السياق واما على صيغة اسم الفاعل من استلبه بمعنى اختلسه وهو فاعل لن يخفى واللام زائدة للضرورة كما ذكر صاحب الاغانى وغيره فى قول حسان بن ثابت رضى الله عنه

اجمعت عمرة صرما فابتكر  انما يدهن للقلب الحصر

ان القلب فاعل يدهن والام مزيدة للضرورة والمعنى انه لايخفى الذى استلب الغزال بل هو ظاهر وهو انت فاده قوله سائل بنى الحرث الخ سائل اسأل والمزرى من ازرى بقومه ادخل عليهم عيبا وهو صفة الحرث وقوله من ذهب حال من فاعل الظرف اراجع الى الغزال او من الغزال عند من يجوز الحال عن المبتدأ وكذلك جملة عليه الدر قوله بئس البنون الخ المخصوص بالذم محذوف اى بنو الحرث والشيخ بمعنى الاب كما قدمنا عن الاساس اى بئس الاب ابو بنى الحرث وهو الحرث وقوله تبا لذلك الخ التب الخسران وهو دعاء عليهم منصوب على المصدرية بفعل واجب الحذف والمعنى الزمهم الله خسرانا وهلاكا ومن شيخ تميز بمن كما فى قولهم قاتله الله من شاعر وقال الحريرى

تباله من خادع مماذق  اصفر ذى وجهين كالمنافق

والعقب بفتح العين وكسر القاف وسكونها وهو ههنا بالكسر الولد وولد الولد وهذا الشعر لحسن رضى الله عنه مثبت فى ديوانه صنع ابى سعيد السكرى رحمه الله ومنه كتبته

## حسان بن ثابت ايضا
## رضى الله عنه

يهجو الحرث بن هشام بن المغيرة المخزومى وكان مع المشركين يوم بدر فهرب ثم اسلم يوم الفتح وحسن اسلامه وسيأتى ترجمته عند ذكر شعره وكان هجو حسان قبل اسلام الحرث

من الكامل

يا حار قد عولت غير معول  عند اللقأ وساعة الاحساب

اذ تمتطى سرح اليدين نجيبة  مرطى الجراء خفيفة الاقراب

والقوم خلفك قد تركت قتالهم  ترجو النجاء وليس حين ذهاب

الا عطفت على ابن امك اذ ثوى  قعص الاسنة ضائع الاسلاب

عجل المليك له فاهلك جمعه  بشنار مخزية وسوء عقاب

يا حار ترخيم يا حارث وعولت اعتمدت وغير معول من باب الحذف والايصال اى غير معول عليه وهو الفرار وساعة الاحساب زمان يعين ارجل صاحبه ويكفيه الشر من احسبه الشيء اذا كفاه ومنه عطاء حسابا اى جزاء كافيا قوله اذ تمتطى الخ امتطى الدابة اتخذها مطية وفرس سرح بضمتين وسرح اليدين اذا كان سريع السير والفرس مما يذكر ويؤنث ومرطى الجراء سريع السير والاقراب جمع قرب بالضم وهو الخاصرة وقرس خفيف الاقراب ولاحق الاقراب بمعنى ضامر والنجاء النجاة وقوله وليس حين ذهاب متل ولات حين مناص اى وليس الحين حين ذهاب قوله الا عطفت على ابن امك الخ الاحرف توبيخ وعطفت ترحمت وتحننت واصل العطف الميل وابن امه اخوه وشقيقه ابوجهل بن هشام بن المغيرة وانما نسبه الى امه تذكير المشفقة والرقة كما فى قوله تعالى حكاية عن هرون على نبينا وعليه السلام يا بن ام لاتأخذ بلحيتى فان الام اشفق وارق قلبا فنسبته اليها تذكير للرقة البشرية ولذا قالت العرب ويلمه دون ابيه فاذا ارادوا المدح قالوا لله در ابيه وثوى اقام وقعص الاسنة مقتولا بالرماح معجلا يقال قعصه وافعصه قتله مكانه ومات متعصا اصابته رمية او ضربة اوطعنة فمات مكانه وفى كلام عبدالله بن الزبير رضي الله عنه لما جاءه قتل اخيه المصعب بن الزبير اناوالله لانموت حبجا كميتة آل ابى العاصى انما نموت والله قتلا بالرماح وقعصا تحت ظلال السيوف قوله حبجا يقال حبج بطنه اذا انتفخ يعيرهم بكثرة الاكل وانهم يموتون من التخمة والاسلاب جمع سلب وهو مايكون على المرء ومعه فى الحرب فيأخذه قرنه قوله عجل المليك له الخ الشنار بالفتح العيب والمخزية الوقعة المفضحة وهى انهزام جمعه وسوء العقاب قتله اى الوقعة المخزية قتله وسوء العقاب عقاب الآخرة وحاصل معنى الابيات انه يقول ياحارث انك قدعولت يوم بدر على امر لاينبغى ان يعول ويعتمد عليه اذ هربت على فرس سريعة السير ضامرة نجيبة اى كريمة

ترجو بذلك النجاة والحال ان هذا الحين ليس حين الفرار عند الرجال الاحرار والشجعان الابطال بل هو حين الحماية عن الصاحب والقريب فهلا عطفت على اخيك اذ سقط ميتا مقتولا مكانه عجل الله سبحانه فى اهلاك جمعه والحق به عيبا وفضيحة وعقابا فى الدنيا ولعذاب الآخرة اشد واخزى وهذا الشعر كتبته من سيرة بن هشام

## حسان بن ثابت ايضا

## رضى الله عنه

يبكى خبيب بن عدى الانصارى رضى الله عنه لما صلبه المشركون بمكة بعد وقعة الرجيع

من البسيط

يا عين جودى بدمع منك منسكب ... وابكى خبيبا مع الفتيان لم يؤب

صقرا توسط فى الانصار منصبه ... سمح السجية محضا غير مؤتشب

قد هاج عينى على علاّت عبرتها ... اذ قيل نصّ الى جذع من الخشب

يا عين مثل يا غلام وجودى اكثرى ومنسكب منصب وخبيب هو ابن عدى المذكور وستأتى ترجمته عند ذكر شعره له فى باب العين انشاء الله والفتيان جمع فتى ولم يؤب لم يرجع قوله صقرا توسط الخ الصقر يشبه به فى الحفة وسرعة الحركة وتوسط بمعنى علا والمنصب الحسب والمقام والسمح الجواد والسجية الطبيعة والمحض الخالص ورجل محض النسب خالصه وعربى محض خالص النسب ورجل مؤتشب غير صريح النسب قوله قد هاج عينى الخ هاج بمعنى ثار وتهيج وعينى فاعله وقوله على علات عبرتها العلات جمع علة قال الاعلم الشنتمرى فى قول زهير

ان البخيل ملوم حيث كان ولـ ... ـكنّ الجواد على علاته هرم

اى على ما ينوبه من قلة ذات يد وعوز وقال فى قوله

ان تلق يرما على علاته هرما  تلق السماحة منه والندى خلقا

يقول ان تلقاه على قلة مال اوعدم تجده كريما فكيف به وهو على غير تلك الحال فمراد حسان رضى الله عنه ان وقعة خبيب هاج عينى بسببها وان كانت عبراتى فى انفسها قليلة لكونى جلدا فى النائبات لا ابكى كما قال بعضهم لاحبا ئه الغائبين

لقد ذاب قلبى من دموعى عليكمو  على انى فى النائبات جليد

ففيه اعظام وقعة خبيب اشد الاعظام ونص مجهول نصه اذا رفعه والضمير المستتر لخبيب والجذع من الخشب الذى صلب عليه والجملة مقول القول

يا ايها الراكب الغادى لطيته  ابلغ لديك وعيدا ليس بالكذب

بنى كهيبة ان الحرب قد لقحت  محلوبها الصاب اذ تمرى لمحتلب

فيها اسود بنى النجار تقدمهم  شهب الاسنة فى معصوصب لجب

الطية بالكسر النية والجانب الذى قصد يقال مضى لطيته اى نيته التى انتواها الوعد فى الخير والوعيد فى الشر ونى كهيبة مفعول ثان لابلغ واراد ببنى كهيبة الذين اوقعوا بخبيب واصحابه قال الامام السهيلى جعل كهيبة كأنه اسم علم لامهم وهذا كما يقال بنو ضوطرى وبنو الغبراء وبنو درزة وهذا اسم لكل من ينسب الى التحقير وعبارة عن السفلة من الناس انتهى وجملة ان الحرب قد لقحت فى تأويل المصدر بدل من وعيدا ولقحت الحرب اشتدت ويقولون حرب لاقح على النسبة قال الاعلم فى قول زهير

اذا لقحت حرب عوان مضرة  ضروس تهر الناس انيابها عصل

قوله اذا لقحت حرب اى حملت ومعناه اشتدت وقويت وضرب اللقاح مثلا لكمالها وشدتها انتهى والصاب جمع صابة وهي شجرة مرة اوعصارتها وتمري من امرت الناقة اذا درلبنها والمحتلب الحالب قوله فيها اسود بنى النجار الخ هذه الجملة حال من فاعل لقحت والحرب مؤنث فى كلامهم والاسود جمع اسد وتقدمهم من الباب الاول بمعنى تتقدمهم والضمير المنصوب يعود الى بنى النجار

وفاعل تقدم شهب الاسنة والشهب جمع اشهب بمعنى ابيض والاسنة جمع سنان الرمح وهو من اضافة الصفة الى الموصوف اي الاسنة الشهب وجملة تقدمهم حال من فاعل الظرف فى الجملة السابقة يريد ان بنى النجار اشرعوا رماحهم التى اسنتها بيض لصقالتها وجلائها وهي امامهم يطعنون بها فهى تقدمهم وقوله فى معصوصب لجب المعصوصب على صيغة اسم الفاعل من اعصوصب القوم اذا اجتمعوا ولجب كفرح صفة معصوصب بمعنى كثير عرمرم واللجب محركة الصياح فاللجب بكسر الجيم على النسبة يقال جيش ذولجب بالفتح وجيش لجب بالكسر بمعنى واحد يعنى انهم فى جيش مجتمع عظيم وهذا الشعر لحسان رضى الله عنه مسطور فى سيرة ابن هشام ومنها كتبته

## حسان بن ثابت ايضا

## رضى الله عنه

يبكى عاصم بن ثابت واصحابه رضوان الله تعالى عليهم وهم اصحاب الرجيع ويسميهم

من الكامل

صلّى الاله على الدين تتابعوا ... يوم الرّجيع فأكرموا وأثيبوا

رأس السّريّة مرثد وأميرهم ... وابن البكير امامهم وخبيب

وابن لدثنة وابن طارق منهمو ... وافاه ثمّ حمامه المكتوب

والعاصم المقتول عند رجيعهم ... كسب المعالى انّه لكسوب

منع المقادة ان ينالوا ظهره ... حتّى يجالد انه لنجيب

صلى الاله رحم الله وتتابعوا جاؤا واحدا بعد واحد ولابد من بيان غزوة الرجيع بالاختصار وقد وعدنا ذلك فنقول قدم على رسول الله عليه السلام بعد احد رهط من عضل والقارة وعضل والقارة من الهون بن خزيمة بن مدركة فقالوا ان فينا اسلاما فابعث معنا نفرا من اصحابك يفقهوننا فى الدين فبعث رسول الله

عليه السلام هؤلاء النفر الستة الذين ذكر حسان رضى الله عنه اسمائهم فى هذا الشعر وهم مرثد بن ابى مرثد الغنوى من غنى بن يعصر وهو وابوه من المهاجرين وممن شهد بدرا وكان حليف حمزة بن عبد المطلب رضى الله عنه وخالد بن البكير الليثى من بنى ليث بن عبد مناة بن كنانة وهو من المهاجرين وممن شهد بدرا وقديم الاسلام اسلم والنبى عليه السلام فى دار الارقم بن ابى الارقم وكان حليف بنى عدى بن كعب وعاصم بن ثابت بن ابى الاقلح الانصارى الاوسى من بنى عمرو بن عوف وممن شهد بدرا وخبيب بن عدى الانصارى الاوسى من بنى جحجبى بن كلفة وممن شهد بدرا وزيد بن الدثنة الانصارى الخزرجى من بنى بياضة وممن شهد بدرا وعبدالله بن طارق البلوى حليف بنى ظفر من الاوس وممن شهد بدرا وامر عليهم مرثد بن ابى مرثد رضى الله عنه فلما كانوا بالرجيع وهوماء لهذيل بناحية الحجاز غدروا بهم فاستصرخوا عليهم هذيلا فلم يرع القوم اعنى المسلمين وهم فى رحالهم الا الرجال بايديهم السيوف قدغشوهم فاخذوا اسيافهم ليقاتلوهم فقالوا انا لانريد قتالكم ولكنا نريدان نصيب بكم شيأ من اهل مكة ولكم عهدالله وميثاقه ان لانقتلكم فاما مرثد بن ابى مرثد وخالد بن البكير وعاصم بن ثابت فقالوا والله لانقبل من مشرك عهدولاعقدا بدافقاتلوا حتى قتلوا واما زيد بن الدثنة وخبيب بن عدى وعبد الله بن طارق فاعطوا بايديهم فاسروهم ثم خرجوابهم الى مكة حتى اذا كانوا بالظهران انتزع عبدالله بن طارق يده من القران ثم اخذ سيفه واستأخر عنه القوم فرموه بالحجارة فقتلوه وقدموا بخبيب وزيد مكة فباعوهما من قريش فابتاع زيدا صفوان بن امية فقتله بابيه امية بن خلف الذى قتل ببدر وابتاع خبيبا عقبة بن الحرث بن عامر فصلبه هذا خلاصة مافى سيرة ابن هشام وفى صحيح البخارى ان الرجال كانوا عشرة وكانوا عينا ويعلم مما نقلناه من السيرة ان اميرهم كان مرثد اويؤيده هذا الشعر لحسان رضى الله عنه وهوراية ابن اسحاق وفى صحيح البخارى ان اميرهم كان عاصم بن ثابت وهوراية معمر عن الزهرى وقوله وابن البكير امامهم اى قدامهم يمدحه بذلك وهوكبيرهم لانه من المهاجرين الاولين وقديم الاسلام كما مر وفى قوله وخبيب السناد وهو اختلاف الردفين ومنه اختلاف حركة ما قبلهما والردف حرف ساكن من حروف المدوالمين

يقع قبل حرف الروى ليس بينهما شئ والسناد عيب فى الشعر عند بعضهم والعرب كثيرا ماتفعله قال عمرو بن كلثوم

كأن سيوفنا منا ومنهم مخاريق بايدى الاعبينا

مع قوله

كأن غضونهن متون غدر تصفقها الرماح اذا جرينا

قوله وابن لدثنة بكسر المثلثة لكنها تسكن للوزن والرواية فى طارق بسقوط التنوين مع بقاء الكسر ولوانه حين حذف التنوين نصب وجعل كالاسم الذى لاينصرف لكان وجها وقياسا صحيحا لان الكسر تابع للتنوين فاذا ازيل التنوين زال الخفض لئلا يلتبس بالمضاف الى ياء المتكلم لان ضمير المتكلم وان كان ياء فقد يحذف ويكتفى بالكسر منه وزوال التنوين فى كل ما لاينصرف انما هولاستغناء الاسم عنه اذ هوعلامة الانفصال عن الاضافة فكل اسم لاتتوهم فيه الاضافة لايحتاج الى التنوين لكنه اذا لم ينون لم يخفض لما ذكرنا من التباسه بالمضاف الى المتكلم وقدجاء فى الشعر كنار ابى حباحب والظبينا بفتح الباءمن حباحب فى موضع الخفض وكان حق كل علم ان لاينون لانه مستغن عن الاضافة كما لم ينون جميع انواع المعارف ولكن الخفض فى طارق مروى ووجهه انه لما كان ضرورة فى شعر ولم يكثر فى كلامهم لم يتبعوا الخفض ههنا اذلا يتوهم اضافته الى المتكلم اذلا يقع الا نادرا فى الشعر فالالتباس فيه بعيد كذا فى الروض الانف للسهيلى ومذهب الكوفيين وبعض البصريين ترك صرف المنصرف للضرورة بشرط العلمية وقوله وافاه اى ادركه يعنى ابن طارق وثم ظرف يشار به الى المكان اى فى الرجيع والمراد بقربه ومادام فى ايدى اهل الرجيع من الكفار لان ابن طارق قتل بالظهران كما مر وقوله منع المقادة يقال اعطى فلان قياده ومقادته اذا انقاد لما يراد منه ويقال منع قياده ومقادته ولم يعط اذا امتنع قال المعرى

وما نهنهت عن طلب ولكن هى الايام لا تعطى قيادا

وقوله ان ينالوا ظهره مفعول له بتقدير كراهة ان ينالوا وقوله حتى يجالد اى يقاتل اشارة الى ان عاصما رضى الله عنه لم يرض بتسليم نفسه بل قاتل حتى قتل

ويروى حتى يجدل اى يلقى على الجدالة وهى الارض وهذا الشعر مذكور فى سيرة ابن هشام عن ابن اسحاق ومنها كتبته وقال ابن هشام واكثر اهل العلم بالشعر ينكره لحسان رضى الله عنه وانما كتبته لانه ذكر فيه اسماء اصحاب الرجيع مع ما نسبه ابن اسحق اليه وهو مثبت ايضا فى ديوان حسان صنع ابى سعيد السكرى والله اعلم

## حسان بن ثابت ايضا
## رضى الله عنه

فى يوم احد يجيب ابا سفيان بن حرب عن قصيدة قالها يفتخر فيها بصبره وثباته وبقتلهم حمزة بن عبد المطلب ورجالا من اصحاب رسول الله عليه السلام وقصيدته مذكورة فى سيرة ابن هشام ولولا خوف الاطالة لذكرتها

ذكرت القروم الصيد من آل هاشم ... ولست لزور قتله بمصيب — من الطويل

اتعجب ان اقصدت حمزة منهمو ... نجيبا وقد سميته بنجيب

الم يقتلوا عمرا وعتبة وابنه ... وشيبة والحجاج وابن حبيب

غداة دعا العاصي عليا فرامه ... بضربة عضب بله بخضيب

القروم جميع قرم بمعنى السيد والصيد جمع اصيد بمعنى الملك والاسد والزور الكذب قوله اتعجب الخ ينكر عجبه واستعظامه وان اقصدت فى تقدير من ان اقصدت يقال عجبت منه كتعجبت واقصدت قتلت مكانه وفى شعر حميد بن ثور الهلالى رضى الله عنه الذى يقال انه انشده بحضرة النبى عليه السلام

اصح قلبى من سليمى مقصدا ... ان خطأ منها وان تعمدا

وقوله وقد سميته بنجيب فان ابا سفيان قال فى شعره

وسلى الذى قدكان فى النفس انى قتلت من النجار كل نجيب
ومن هاشم قرما كريما ومصعبا وكان لدى الهيجاء غير هيوب

اراد حمزة بن عبدالمطب ومصعب بن عمير رضى الله عنهما قوله الم يقتلوا عمرا الخ عمرو هو ابوجهل بن هشام وعتبة ابن ربيعة وابنه الوليد وشيبة ابن ربيعة والحجاج كل من نبيه ومنبه ابنى الحجاج والعرب تقيم المضاف اليه فى هذا الباب مقام المضاف كما قال كثير فى محمد بن الحنفيه

وصي النبي المصطفى وابن عمه وفكاك اعناق وقاضى مغارم

اراد ابن وصي النبى عليه السلام وكما قال الاخر

صبحن من كاظمة الخص الخرب يحملن عباس بن عبدالمطلب

يريد ابن عباس رضي الله عنهما وليس فى قتلى المشركين يوم بدر من اسمه الحجاج واما ابن حبيب فلم اظفر الى الآن بالمراد منه ولم اجد هذا الاسم فيمن قتل يوم بدر من المشركين فيما طالعت من الكتب المهم الان يكون نسبة واحد منهم الى جد له لم يذكروا نسبته اليه عند ذكر اسماء القتلى ولعل الله سبحانه ان يطلعنى عليه بفضله واحسانه وقوله غداة دعا العاصى عليا الخ غداة ظرف الم يقتلوا وهو يوم بدر والعاصى هوا بن ابى احيحة سعيد بن العاص بن امية ابن عبد شمس والد سعيد بن العاص الصحابى رضى الله عنه قتله على رضى الله عنه يوم بدر وليس هو العاص بن هشام بن المغيرة وان كان مقتولا ايضا يوم بدر فانه قتله عمر بن الخطاب رضى الله عنه وهو خال عمر رضى الله عنه وروي انه قال لسعيد بن العاص الصحابى انى اراك كأن فى نفسك شيأ اراك تظن انى قتلت اباك يوم بدر انى لو قتلته لم اعتذر اليك من قتله ولكنى قتلت خالى العاص بن هشام بن المغيره واما ابوك فانى مررت به وهو يحث بحث الثور بروقه فحدت عنه وقصد اليه ابن عمه على بن ابى طالب فقتله وانما قال ابن عمه لان عليا رضى الله عنه ومقتوله العاصى كلاهما من بنى عبد مناف اما على فهاشمى واما العاصى فعبشمى وقوله راعه خوفه والعضب السيف القاطع والخضيب المخضوب يعنى الدم وحاصل معنى الابيات انه يقول لابى سفيان لاينبغى لك ان تزهو وتفتخر بقتل

حمزة يوم احد فانه ليس بكبير فى جنب ما فعل المسلمون بكم يوم بدر فانهم قتلوا صناديدكم المذكورين وهم ائمة الكفر فاذا تفكرت هذا لاتعجب مما اتيتم ولاتستكبر وهذا الشعر لحسان رضى الله مسطور فى سيرة ابن هشام ومنها كتبته

## حسان بن ثابت أيضا

## رضى الله عنه

فى يوم احد يهجو قريشا ويعيب عليهم فخرهم باللواء

فَخَرْتم باللّواء وشَرُّ فخر  لواءٌ حين رُدَّ الى صَواب  من الوافر

جَعلتم فخركم فيه لعبد  من الأَم من وَطيء عَفْرَ التّراب

ظَننتم والسَّفيه له ظَنُون  وما انْ ذاك من امر الصَّواب

بأنّ جِلادنا يوم التقينا  بمكة بيعُكم حُمْرَ العِياب

روي انه لما كان يوم احد قال ابو سفيان بن حرب لاصحاب اللواء من بنى عبد الدار يحرضهم بذلك على القتال يابنى عبد الدار انكم قد وليتم لوائنا يوم بدر فاصابنا ماقدر أيتم وانما يؤتى الناس من قِبَل الويتهم اذا زالت زالوا فاما ان تكفونا لوائنا واما ان تخلوا بيننا وبينه فنكفيكموه فهموا به وتواعدوه وقالوا انحن نسلم اليك لوائنا ستعلم اذا التقينا كيف نصنع فلما التقى الناس صاح طلحة بن ابى طلحة العبدري صاحب اللواء من يبارز فبرزله على بن ابى طالب رضى الله عنه فلما التقيا بين الصفين بدره على رضى الله عنه فضربه على رأسه حتى فلق هامته فوقع وهو كبش الكتيبة فسر رسول الله عليه السلام بذلك واظهر التكبير وكبر المسلمون وشدوا على كتائب المشركين حتى نقضت صفوفهم ثم حمل لوائهم عثمان بن ابى طلحة العبدري ابوشيبة وهو امام النساء يرتجز ويقول

ان على اهل اللواء حقـا ان يخضبوا الصعدة او تندقا

وحمل عليه حمزة بن عبدالمطلب رضى الله عنه فضربه بالسيف على كاهله حتى انتهى الى مؤتزره بد اسحره ثم حمله ابو سعيد بن ابى طلحة فرماه سعد بن ابى وقاص رضى الله عنه فاصاب حنجرته فادلع لسانه ادلاع الكلب ثم قتله قال ابن هشـام ويقال قتله على بن ابى طالب رضى الله عنه ثم حمله مسـافع بن طلحة بن ابى طلحة فرماه عاصم بن ثابت بن ابى الاقلح رضى الله عنه فقتله ثم حمله الحرث بن طلحة بن ابى طلحة فرماه عاصم بن ثابت فقتله ثم حمله كلاب بن ابى طلحة فقتله الزبير بن العوام رضى الله عنه ثم حمله الجلاس بن طلحة فقتله عاصم بن ثابت ايضا ثم حمله ارطاة بن عبدشرجيل بن هاشم بن عبدمناف بن عبدالدار فقتله على بن ابى طالب رضى الله عنه ويقال قتله حمزة بن عبدالمطلب رضى الله عنه ثم حمله القاسـط بن شريح بن هاشم بن عبد مناف بن عبـد الدار فقيل ليس يدرى من قتله وقال ابن هشام قتله قزمان ثم حمله صواب غلامهم فقيل قتله على رضى الله عنه وقيل قتله سعد بن ابى وقاص رضى الله عنه وقيل قتله قزمان وهوا ثبت الاقوال وصواب هذا على وزن سحاب وهو آخر من حمل اللواء من بنى عبدلدار وهو غلام لهم ففى هذا يقول حسان رضى الله عنه فخزتم باللواء الخ فقوله صواب اى غلام مسمى بصواب وقوله من ادم من وطى بالقاء حركة الهمزة من الأم على نون من قبلها وبقلب همزة وطئى ياء سـاكنة وعفر التراب وجه الارض قال فى الاساس ماعلى عفر الارض مثله اي على وجهها وقوله والسفيه له ظنون السـفيه الخفيف العقل والظنون بفتح الظاء المعجمة ما لا يوثق به يقال علمه ظنون اي لايوثق به اوبضمها جمع ظن وقوله وما ان ذاك من امر الصواب مانافيه وان زائدة لتأكيد النفى وذاك اشارة الى الظن المستـاد من ظننتم والصواب ضد الخطأ وقوله بان جلادنا الخ الباء زائدة وتزاد كثيرا فى مفعول افعال القلوب نحو قوله تعالى الم يعلم بان الله يرى ويوم ظرف لجلادنا وبمكة متعلق ببيعكم المؤخر ويجوز تقديم معمول المصدر اذا كان ظرفا اوشبهه نحو اللهم ارزقنى من عدوك البراءة قال الله تعالى ولا تأخذكم بهما رأفة وهو فى كلامهم كثير على ماذكره الرضي وبيعكم بالرفع خبر ان على التشبيه اى كبيعكم وحمر العياب مفعول بيتكم

وهو من اضافة الصفة الى الموصوف اي العياب الحمر والعياب جمع عيبة وهو ما يوضع فيه الثياب ووعاء من ادم يجعل فيه المتاع وحاصل معنى الابيات انكم ايها المشركون فخرتم بلوائكم وهو ليس مما يفخر به فانكم هلكتم عنده حتى لم يبق منكم من يحمله فرد آخر الامر الى عبد حبشي لكم مسمى بصواب فهو شرفخر وعبدكم هذا الأم الناس كلهم ثم ايها المشركون ظننتم ان القتال معنا حماة الحرب سهل كبيعكم حمر العياب بمكة وفرق بيّن بين الامرين فان الحرب بأسها شديد خصوصا مع حماة الحرب مثلنا فلا بدلها من رجال ونعم ماقيل

خلق الله للحرب رجالا ورجالا لقصعة وثريد

وبيع العياب ونحوها شيئ سهل والاشتغال به لايتوقف على قوة القلب وحمل النفس على مكروهها فهو بالنسبة الى الحرب امر حقير لا يقاس بها ولله در جرير حيث يقول

لاتحسبن مراس الحرب اذ لقحت شرب الكسيس واكل الخبز بالصبر

وقال آخر

ليست مقارعة الكماة لدى الوغى شرب المدامة فى اناء زجاج

وليس هذا الظن بمستبعد عنكم فانكم سفهاء والسفيه له علم لايوثق به او السفيه له ظنون متنوعة فاسدة وان الظن لايغنى من الحق شيأ وهذا الشعر لحسان رضى الله عنه مسطور فى سيرة ابن هشام ومنها كتبته

## حسان بن ثابت الانصارى ايضا

## رضى الله عنه

فى يوم احد يهجو عضلا ويذكر شان عمرة بنت علقمة الحارثية ورفعها اللواء

اذا عَضَلٌ سيقت الينا كأنهم جداية شرك معلمات الحواجب من الكامل

اقمنالهم طعنا مبيرا منكّلا وحزناهموبالضرب من كل جانب

فلولا لواء الحارثية اصبحوا يباعون فى الاسواق بيع الجلائب

يصّون ارصاف السّهام كأنّهم اذاهبطوا سهلاو بارشوازب

نفجّئ عنا الناس حتى كأنما تلفّحهم جمر من النار ثاقب

عضل قبيلة من بنى الهون بن خزيمة بن مدركة وبنو الهون من الاحابيش على ماسيجئ عن ابن اسحق فى القصيدة التى بعدهذه وقد كانت قريش استنفرت الاحابيش يوم احد فنفرناس منهم وخرجوا مع قريش فهجا حسان عضلا منهم بهذا الشعر فقوله سيقت اشارة الى ان قريشا ساقتهم كما قال فى كنانة فى شعر آخر له

سقتم كنانة جهلا من سفاهتكم الى الرسول فجندالله مخزيها

وقوله جداية شرك اراد الجداية من الوحش وهى اولاد الظباء وتجمع على جدايا وقد ورد فى الحديث انه اتى بجدايا وضغابيس وحكى السهيلى عن ابى عبيدانه يقال للواحد والجمع والذكر والانثى جداية وعليه يحمل قول حسان لانه اراد الجمع والشرك بضمتين ويسكن للوزن جمع شرك بالتحريك وهو حبالة الصيد وقيل شرك موضع وقوله معلمات الجواجب اي فى حواجبها سمات وعلامات والحواجب جمع حاجب العضو المعروف ارادانها معلمات بالدم لان عضلا مشهورة بالغدر قال الاخفش سألت المبرد عن قول السعدين سعد بن معاذ وسعد بن عبادة فى قريظة عضل والفارة بعدما اتيا رسول الله عليه السلام وكان قد ارسلهما يوم الخندق ليتجسسا امر قريظة لما بلغه من نقضهم العهد وكان قال لهما فان كانوا على العهد فاعلنا بذلك وان كانوا قد نقضوا مابيننا فالحنالى لحنا اعرفه اي اشيرا الى اشارة وعرضا ولاتفتا فى اعضاد المسلمين اي لاتفصحا قنوهنا قوة المسلمين فقال هذان حيان كانا فى نهاية العداوة لرسول الله عليه السلام فارادا انهم فى الانحراف عنه والغدر

به كهاتين القبيلتين وقدسبق غدر عضل والقارة باصحاب رسول الله عليه السلام يوم الرجيع قال السهيلي ويجوز ان يكون معناه معلمات بالسواد خلقة قوله اقتالهم الخ اقتنا اي اذممنا والمبير المهلك والمنكل اسم فاعل من نكل به تنكيلا اذا صنع به صنيعا يحذر به غيره قوله فلولا لواء الحارثية اصبحوا الخ اضافة اللواء الى الحارثية لادنى ملابسة لان اللوا لقريش والحارثية هي عمرة بنت علقمة احدى نساء بني الحرث بن عبد مناة بن كنانة كانت خرجت يوم احد مع اللاتي خرجن من نساء المشركين فلما قتل اصحاب اللواء من المشركين كما قدمنا وقع اللواء صريعا ولم يزل كذلك الى ان اخذته عمرة المذكورة فرفعته لقريش فلاثوا به اي احاطوا به واجتمعوا عنده واصبحوا صاروا والجلائب جمع جلوبة وهي ماتجلب من دواب وغيرها قوله يمصون ارصاف السهام الخ الارصاف جمع رصف بالتحريك وهو العقب الذي يلوي فوق الرعظ والرعظ مدخل سنخ النصل قيل اراد بذلك تعييرهم بانهم صناع وقوله كأنهم اذا هبطوا سهلا وبار شوازب السهل من الارض ضد الحزن والوبار بكسر الواو وجمع وبر بفتحها وهو دويبة كالسنور وشوازب جمع شازب بمعنى الضامر يقال فرس شازب وخيل شوازب واضافة الوبار الى الشوازب من باب اضافة الموصوف الى الصفة قوله نفجئ عنا الناس الخ نفجئ نكشف ونبعد وتلفحهم من التلفيح تحرقهم كتلفحهم من الثلاثي وفي التنزيل العزيز تلفح وجوههم النار وبناؤه من التفعيل للمبالغة وقوله ثائب اي مضيء وهو اما بارفع صفة لجمر كما هو الظاهر فيكون اقواء واما بالجر على الجوار كما قيل في جحر ضب خرب والابيات الثلاثة الاول من هذا الشعر مذكورة في سيرة ابن هشام وقال فيها هذه الابيات في ابيات له اي لحسان ولم يذكرها ووجدت البيتين الاخيرين في ديوان حسان رضي الله عنه صنع ابي سعيد السكري رحمه الله فكتبتهما مع الثلاثة المذكورة في السيرة

## حسان بن ثابت ايضا

## رضي الله عنه

في يوم الخندق يجيب عبدالله بن الزبعرى السهمي عن قصيدة قالها في اليوم المذكور ومطلعها

حيي الديار محا معارف رسمها  طول البلى وتراوح الاحقاب

وهى مذكورة فى سيرة ابن هشام

من الكامل

هل رسم دارسة المقام يباب  متكلم لمحاور بجواب

قفر عفارهم السماء رسومها  وهبوب كل مطلة مرباب

ولقد رأيت بها الحلول يزينهم  بيض الوجوه ثواقب الاحساب

قوله هل رسم دارسة المقام الخ المقام اسم مكان من اقام اي هل رسم دار كان يقام فيها ثم درست ويباب بالجر صفة دارسة المقام للاعتماد على الموصوف المقدر الظاهر تقديره او بدل على وجه او عطف بيان يقال دار يباب اي خراب والمحاور السائل قوله نفر عفارهم السماء الخ الرهم على وزن عنب جمع رهمة بالكسر المطر الضعيف الدائم ورسومها مفعول عنا ومطلة على صيغة اسم الفاعل بحذف الموصوف اي ريح مطلة من اطل بمعنى دام ومرباب كمدرار بمعنى دائما ايضا من رب بالمكان اذا اقام به قوله ولقد رأيت بها الحلول الخ الحلول جمع حال كقعود وجمع قاعد وبيض الوجوه وثواقب الاحساب كلاهما من اضافة الصفة الى الموصوف اي الوجوه البيض والاحساب الثواقب والحسب الثاقب المشهور المرتفع وحاصل معنى الابيات انه يسأل عن دار خربة محا نزول الامطار وهبوب الارواح آثارها ورسومها وقد كانت قبل معمورة فيها اهلها لهم اوجه بيض واحساب ثاقبة هل يجيب الباقى من رسمها لسائله ومحاوره مع علمه بانه لا يجيب وانما يسأل تفجعا وتحزنا على فراقه اهلها وتذكر فى للعهد القديم كما قال زهير فى اول معلقته

امن ام او فى دمنة لم تكلم  بحومانة الدراج فالمتثلم

ثم انه اراد ان يتخلص عن التشبيب الى المقصود فقال

فدع الديار وذكر كل خريدة  بيضاء آنسة الحديث كعاب

وَاشْكُ الهُمومَ الى الاله وماترى  من معشر ظَلموا الرّسول غِضاب

ساروا باجمعهم اليه والبَوا  اهلَ القُرى وبَوادِى الاعْراب

الخريدة الحيية من النساء وآنسة الحديث طيبة الحديث او التى تحب حديثك والكعاب بالفتح المرأة حين يبدو ثديها للنهوض كالكاعب والبوا جمعوا وبوادي الاعراب من اضافة الصفة الى موصوفها اي العرب البادية والبادية لها ثلث اطلاقات بمعنى البدو ضد الحضر وبمعنى محل البدو وبمعنى اهل البدو كما ههنا

جيشِ عُيَيْنَةَ وابن حرب فيهمو  مُتَخَمِّطُون بحَلْبَة الاحزاب

حتى ازاوَرَدوا المدينةَ وارتَجَوْا  قتلَ الرسول ومَغْنَمَ الاسْلاب

وغَدَوْا علينا قادرين بايْدِهم  رُدّوا بغيظهم على الاعْقاب

عيينة هو ابن حصن بن بدر الفزاري كان قائد فزارة وغطفان يوم الخندق وهو الذي اغار على لقاح رسول الله عليه السلام يوم ذي قرد كما سيجئ ثم اسلم بعد الفتح وقيل قبل الفتح وشهد الفتح وحنينا والطائف مسلما وكان من المؤلفة قلوبهم واعطاه رسول الله عليه السلام مائة من الابل من غنائم حنين وعاش الى خلافة عثمان رضى الله عنه وابن حرب هو ابو سفيان صخر بن حرب الاموي والد معاوية ويزيد وعتبة وهند وام حبيبة ام المؤمنين رضوان الله عليهم ولد قبل الفيل بعشر سنين وكان من اشراف قريش فى الجاهلية والاسلام اسلم فى الليلة التى دخل فى صبيحتها رسول الله عليه السلام مكة للفتح وشهد مع رسول الله عليه السلام حنينا والطائف واعطاه من الغنائم مائة من الابل واربعين اوقية وفقئت عينه يوم الطائف فلم يزل اعور حتى فقئت عينه الاخرى يوم اليرموك قال سعيد بن المسيب فقدت الاصوات يوم اليرموك الاصوت رجل يقول يانصر الله اقترب والمسلمون يقتتلون هم والروم فذهبت انظر

فاذا هو ابوسفيان تحت لواء ابنه يزيد رضي الله عنه ومات ابوسفيان رضي الله عنه سنة ثلاث وثلاثين فى خلافة عثمان رضي الله عنه وصلى عليه ابنه معاوية وقيل عثمان رضي الله عنه ودفن بالبقيع وهو ابن ثمان وثمنين سنة وقوله متخمطون فى الاساس ومن المجاز تخمط اذا تغضب وثار واجلب والجلبة خيل تجمع من كل اوب للسباق اوالنصرة والاحزاب جمع حزب وهو الجماعة من الناس ويطلق على طوائف كانوا تألبوا وتظاهروا على حرب رسول الله عليه السلام وهم قريش وغطفان والنضير وقريظة جاؤا الى المدينة وحاصروها وكانوا زهاء اثنى عشر الفا قريش فى عشرة آلاف من الاحابيش وهم الجماعات المتفرقة اجتمعوا على امر واحد من بنى كنانة واهل تهامة قيل سموا احابيش لانهم حالفوا قريشا وتحالفوا بالله انهم ليد واحدة على غيرهم ماسجا ليل وما وضح نهار وما رسا حبشي وهو جبل باسفل مكة وقال ابن اسحق ان الاحابيش هم بنو الهون بن خزيمة وبنو الحرث بن كنانة وبنو المصطلق من خزاعة تحبشوا اي تجمعوا فسموا بذلك وخرج غطفان معهم فى الف ومن تبعهم من نجد وغطفان هو ابن سعد بن قيس عيلان بن مضر ومعهم يهود قريظة والنضير وحين سمع رسول الله عليه السلام بأقبالهم ضرب الخندق حول المدينة باشارة سلمان الفارسى رضي الله عنه ثم خرج فى ثلاثة آلاف من المسلمين وامر بالذراري والنساء فرفعت الى الآطام واشتد الخوف ومضى على الفريقين قريب من شهر لاحرب بينهم الا الترامى بالنبل اي فلما كان غير الترامي والا فقد كانت مقارعة بالسيوف بين على رضي الله عنه وبين عمرو بن عبدود العامري وقتله على رضي الله عنه ثم انزل الله نصره على المسلمين وهزم الاحزاب كما سنبين ان شاء الله وكانت غزوة الخندق وتسمى غزوة الاحزاب ايضا فى شوال سنة اربع على ما قال موسى بن عقبة وسنة خمس على ما قال ابن اسحق والذى جنح اليه البخاري هو قول موسى بن عقبة واستدل له فى صحيحه بحديث نافع عن ابن عمر رضي الله عنهما ان النبي عليه السلام عرض ابن عمر يوم احد وهو ابن اربع عشرة سنة فلم يجزه وعرضه يوم الخندق وهو ابن خمس عشرة سنة فاجازه فيكون بين احد والخندق سنة واحدة واحد كانت سنة ثلث فتكون الخندق سنة اربع وقوله وارتجزوا بمعنى رجوا وقوله بايدهم بقوتهم من آديئد

وفى التنزيل واذكر عبدنا داود ذا الايد قال الزجاج كانت قوته يصوم يوما ويفطر يوما وهو اشد الصوم وكان يصلى نصف الليل وقيل اياه قوته على الانة الحديد باذن الله وتقويته اياه وقوله ردوا بغيظهم اي مغيظين على ان الباء للمصاحبة والظرف حال والغيظ غضب العاجز يقال غاظه الشئ فهو مغيظ ولا يقال اغاظه والاعقاب جمع عقب بالتسكين وكتف مؤخر القدم وردهم على اعقابهم يراد به ردهم على الحالة الاولى وفى البيت تلميح الى قوله تعالى ورد الله الذين كفروا بغيظهم لم ينالوا خيرا

بهبوب معصفة تفرق جمعهم ... وجنود ربك سيد الارباب

فكفى الاله المؤمنين قتالهم ... واثابهم فى الاجر خير ثواب

من بعدما قنطوا ففرق جمعهم ... تنزيل نصر مليكنا الوهاب

واقر عين محمد وصحابه ... واذل كل مكذب مرتاب

عاتى الفؤاد موقع ذى ريبة ... فى الكفر ليس بطاهر الاثواب

علق الشقاء بقابه ففؤاده ... فى الكفر آخر هذه الاحقاب

قوله بهبوب معصفة الخ المعصفة الريح الشديدة وجنود الرب الملائكة المنزلون يوم الاحزاب وكانوا الفا على ما فى الكشاف وفى البيت تلميح الى قوله تعالى فارسلنا عليهم ريحا وجنودا لم تروها روى انه تعالى ارسل عليهم صبا باردة فى ليلة شاتية فاخصرتهم وسفت التراب فى وجوههم وقلعت خيامهم وماجت الخيل بعضها فى بعض وكبرت الملائكة فى جوانب المعسكر فقال طليحة بن خويلد الاسدى اما محمد فقد بدأكم بالسحر فالنجاء النجاء فانهزموا من غير قتال وقال حذيفة بن اليمان رضى الله عنه قال لى رسول الله عليه السلام اذهب فأتنى بخبر القوم ولا تحدثن

شيحق ترجع تان فانيت القوم فاذا ريح الله وجنوده تفعل بهم ماتفعل مايستمسك لهم بناء ولاتطمئن لهم قدر وانى كذلك اذخرج ابوسفيان من رحله ثم قال يا معشر قريش لينظر احدكم من جليسه يخوفهم ان يكون عليهم عيون من المسلمين قال حذيفة فبدأت بالذى بجنبى فقلت من انت فقال انا فلان ثم دعا ابوسفيان براحلته فقال يامعشر قريش فوالله ما انتم بدار مقام لقد هلك الخف والحافر واخلفتنا قريظة وهذه الريح لايستمسك لنا معها شئ ولاتثبت لنا نار ولا تطمئن قدر فارتحلوا فانى مرتحل ثم عمد فركب راحلته وانها لمعقولة ماحل عقالها الا بعد ما ركبها قال فقلت فى نفسى لورميت عدوالله فقتلته كنت صنعت شيئا فوترت قوسى ثم وضعت السهم فى كبد القوس وانا اريد ان ارميه فاقتله فتذكرت قول رسول الله عليه السلام لاتحدثن شيئا حتى ترجع قال فحططت القوس ثم رجعت الى رسول الله عليه السلام وهو يصلى فلما سمع حسى فرج بين رجليه فدخلت تحته وارسل علي طائفة من مرطه فركع وسجد ثم قال ماالخبر فاخبرته فقال عليه السلام نصرت بالصبا واهلكت عادا بدبور قوله فكنى الاله المؤمنين الخ كنى يتعدى الى مفعولين يقال كناه مؤنته والمعنى لم يحوجهم الى القتال بل دفع العدو عنهم بدونه والظاهر ان المراد بالقتال الذى كفاهم الله اياه القتال على الوجه المعروف من تعبية الصفوف وكثرة المقارعة بالسيوف والطعن بالرماح وبالجملة القتال الذى كان يقتضيه مثل هذا التحزب والاجتماع فى مثل هذه المدة والا فقد وقع الترامى بالنبل وتقارع بالسيوف بين علي رضى الله عنه وعمرو بن عبدود العامرى حتى شج عمرو عليا فى رأسه حيث استدل له على ماذكره السهيلى فى الروض الانف عن ابن اسحق من غير رواية ابن هشام وعده زيادة حسنة ولم يستشهد من المسلمين يوم الخندق الا ستة نفر وكلهم من الانصار ثلثة من بنى عبد الاشهل سعد بن معاذ وانس بن اوس بن عتيك وعبدالله بن سهل ومن بنى جشم بن الحرث ثم من بنى سلمة رجلان الطفيل بن النعمان وثابة بن غنمة ومن بنى النجار ثم من بنى دينار رجل وهو كعب بن زيد رضوان الله تعالى عليهم وقتل من المشركين ثلاثة كلهم من قريش من بنى عامر بن لؤي عمرو بن عبدود ومن بنى عبدالدار بن قصي عثمان بن امية بن منبه ومن بنى مخزوم بن يقظة نوفل بن عبدالله بن المغيرة قوله من بعد ماقنطوا اي يئسوا من النصر والمراد بعضهم وهم المنافقون والذين فى قلوبهم مرض فان اسم

المؤمن يجمعهم فى الظاهر واما المخلصون الثبت القلوب فلم يبأ سوا كما يدل عليه قوله تعالى ولما رأى المؤمنون الاحزاب قالوا هذا ماوعدنا الله ورسوله وصدق الله ورسوله ومازادهم الا ايمانا وتسليما او الكل فالمخلص ظنوا ان الله يمتحنهم فخافوا ان تزل اقدامهم فلا يتحملون مانزل بهم وهذا لاينافى الاخلاص والثبات اوانه كان فيهم من قبيل الخواطر البشرية التى اوجبها الخوف الطبيعى ولايمكن دفعها للبشر ومثل ذلك معفوا نظر التفاسير فى قوله تعالى وتظنون بالله الظنونا قوله واقر عين محمد الخ اذا ارادوا الكناية عن السرور قالوا اقر الله عينه وقرت عينه واصله من القر وهو البرداي جمدت عينه فلم تدمع وهو بازاء سخنت عينه واسخن الله عينه كناية عن الحزن والسخونة ضد البردودة وصحاب جمع صاحب كجياع جمع جائع قوله عاتى الفؤاد الخ العاتى المستكبر المجاوز الحد والموقع اسم مفعول من التفعيل من اصابته البلايا والبعير يكثر اثار الدبر عليه يستعمل فى الرجل الذليل الحقير على التشبيه وذورية بكسر الراء ذوتهمة وقوله فى الكفر ظرف مستقر صفة مكذب كسائر الصفات المتقدمة وكذلك ليس بطاهر الاثواب يقال فلان طاهر الثياب اذا وصفوه بطهارة النفس والبراءة من العيوب وجاء فى تفسير قوله تعالى وثيابك فطهر وعملك فاصلح ويقال فلان دنس الثياب اذا كان خبيث النفس والمذهب كذا فى النهاية قوله علق الشقاء الخ صفة ايضا وخلاصة البيت وصفهم بالتعند والكفر بالاصرار والدوام وهذه القصيدة لحسان رضى الله عنه مسطورة فى سيرة ابن هشام رحمه الله ومنها كتبتها

## حسان بن ثابت ايضا

## رضي الله عنه

متغزلا يشبب بشعثاء

تطاول بالخمان ليلى فلم تكد ... تهم هوادى نجمه ان تصوبا — من الطويل

ابيت اراعيها كأنى موكل ... بها لا اريد النوم حتى تغيبا

اذا غار منها كوكب بعد كوكب  تراقبُ عيني آخرَ الليل كوكبا

غوائرُ تترى من نجوم تخالها  مع الصبح يتلوها زواحفُ لغبّا

قوله تطاول الخ تطاول اظهر الطول والامتداد والخمان موضع بالشام ذكره في شعر آخر له قال

لمن الدار اوحشت بمغان  بين اعلى اليرموك فالخمان

والهوادي جمع هادي لاول كل شيء ومنه الهادي للعنق وهوادي الخيل للرعيل الاول الذي يطلع منها و هوادي الليل اوائلها وهوادي النجم اول مايطلع منها وان تصوبا بحذف احدى التائين من المضارع كما في تجنب والتصوب كالصوب الانحدار يريد غروبها وفاعل لم تكد ضمير الشان وجملة تهم خبره وهوادي نجمه فاعل تهم ويجوز ان يكون من باب التنازع ولك ان تعمل اي الفعلين شئت لان كلا منهما مؤنث فيتوافق الفاعل المظهر والمضمر كما في كاد زيد يخرج بخلاف قوله تعالى من بعد ما كاد تزيغ قلوب فريق منهم فيمن قرأ بالتأنيث حيث لايجوز الا اعمال الاول واما فيمن قرأ يزيغ بالتذكير فلايجوز التنازع اصلا لانه لوكان تنازع لوجب تأنيث احد الفعلين المسند الى ضمير الجمع فهو على اضمار ضمير الشان في كاد على ماذكره الرضي وان تصوبا في تأويل المصدر مفعول تهم فوله ابيت اراعيها الخ من راعيت الامر اي راقبته ونظرت الام يصير نقله الراغب قال ومنه مراعاة النجوم وقوله كأني موكل على صيغة اسم المفعول اي كأنه فوض الي امر مراقبتها فصرت ولي هذا الامر قوله اذا غار منها كوكب الخ غار غاب وقوله تراقب عيني الخ يريد انه لم ينم حتى الصباح قوله غوائر تترى اي هذه الكواكب غوائر جمع غائرة وتترى بمعنى متواترت بعضها اثر بعض كما يقال جاء القوم تترى اي واحدا بعد واحد والتاء بدل من الواو والاصل وترى لانه من الوتر بمعنى الفرد واكثر العرب لاينونها على ان الفها للتأنيث كتقوى ومنهم من ينونها على ان الفها للالحاق كارطى وقرأ ابو عمرو وابن كثير في قوله تعالى ثم ارسلنا رسلنا تترى بالتنوين وقرأ الباقون بغير التنوين وقوله مع الصبح الخ مع الصبح اي حال كونها قريبة من الصبح ولذلك قال يتلوها

اى يتبعها الصبح فقوله مع الصبح حال من مفعول تخال و يتلوها حال اخرى وزواحف مفعول ثان لتخال والزواحف البطيئة الحركة امامن زحف الصبي واما من زحف البعير اذا اعيا ولغبا جمع لاغب وهو المعيي صفة لزواحف يقول ان تلك النجوم عند قرب الصبح تكون تبطئ فى حركتها اشد الابطاء كانها تزحف زحف الصبي اوكانها اعيت اعياء البعير والحاصل انه يجد آخر الليل يطول اشد الطول

اَخافُ مُفاجاةَ الفراق بِبَغْتَة ... وصَرْفَ النَّوى من اَنْ تَشِتَّ وتَشْعَبا

و ايقنتُ لمّا قَوَّضَ الحيُّ خَيْمَهم ... بروعات بَيْن يَتْرُكُ الرأسَ اَشْيَبا

و اَسْمَعَكَ الدّاعى النّصيحُ بفُرْقَةٍ ... و قد جَنَحَتْ شمسُ النّهار لِتَغْرُبا

وبَيَّنَ فى صوت الغُراب اغترابُهم ... عشيّةَ اَوْ فى غُصْنَ بان فطَرَّبا

وفى الطّير بالعَلْياء اذ عَرَضَتْ لنا ... و ما الطَّيْرُ الاّ اَنْ تَمُرَّ و تَنْعَبا

قوله اخاف مفاجاة الفراق الخ جملة اخاف حال من فاعل ابيت وصرف النوى كما يقال صروف الدهر اي نوائبه والنوى البعد وتشت من الباب الثانى و تشعب من الثالث وكلاهما بمعنى تفرق قوله و ايقنت الخ يقال قوضوا خيمهم اذا نقضوها ورفعوها والخيم جمع خيمة كالخيام والروعات جمع روعة بمعنى الخوف والبين الفراق ورأس اشيب مبيض الشعر قوله واسمعك الداعى الخ فى اسمعك التفات من التكلم الى الخطاب والنصيح الصادق الذى لاغش فيه والفرقة بالضم اسم من الافتراق وجنحت مالت قوله وبين فى صوت الغراب الخ بين على صيغة المعلوم من التبيين بمعنى وضح كما فى المثل السائر قد بين الصبح لذى عينين وبان و ابان و بين وتبين و استبان كلها بمعنى وضح وظهر وبمعنى اوضح واطهر فهى متعديات و لوازم والعرب تتشأم من الغراب وصوته حتى سموه غراب البين واوفى بمعنى اشرف وطرب من التطريب

وهو صوت الطائر قوله وفى الطير بالعلياء الخ وفى الطير معطوف على فى صوت الغراب اي وبين فى الطير بالعلياء وهو المكان العالى اورأس الجبل وعرضت على بناء المعلوم بمعنى ظهرت و بدت وقوله وما الطير الا ان تمر و تنعبا الجملة حال من فاعل عرضت وهو من باب فانما هى اقبال وادبار اي وماحال الطير و شانه او وماالطير الاذوان تمر وتنعبا او يرادالمبالغة فى الحمل وهوالاحسن ويقال نعب الغراب وغيره صاح وحاصل معنى الابيات انى كنت ابيت اراعى النجوم خائفا ان يفاجئنى الفراق ويبغتنى و اخاف نائبة البعد المفرق وايقنت لما نقض القوم خيامهم للرحيل بروعات الفراق الذى يجعل الراس اشيب لشدته والشيب يظهر من الشدة حتى يعبر به عنها قال الله تعالى يوما يجعل الولدان شيبا و فى الحديث شيبتنى سورة هودو ايقنت ايضا لما نادى المنادى الصادق بالرحيل و ايقنت ايضا لما وضح فى صوت الغراب المشئوم المأخوذ اسمه من الغربة اغترابهم وتباعدهم ووضح ايضا فى الطير بالمكان العالى مع كثرة مرورها و صياحها حتى كانها ليست حالها الا المرور و الصياح اوانها عين المرور والصياح والظاهر ان هذه القصيدة جاهلية اذليس فيها شيئ من امور الاسلام فلايرد ان الاسلام يمنع عن التشأم بالغراب ونحوه على انها لوكانت اسلامية لامكن الاعتذار بانه مبنى على عادة شعراء العرب غير مرادبه حقيقة التشأم

وكنتُ غداةالبين يغلبنى الهوى ... أُعالج نفسى ان اقوم فاركبا

وكيف ولا يُنسى التَّصابى بعدما ... تجاوز رأسَ الاربعين وجرَبا

وقدبان مايأتى من الامر واكتست ... مفارقه لونا من الشَّيب مُغرِبا

جملة يغلبنى خبر كنت وجملة اعالج حال وهو بمعنى امارس وادافع يقول كنت اريدان انهض فاركب وارحل معهم حيث رحلوا لغلبة العشق علي لان حبيبى فيهم ثم قال وكيف اي وكيف لااركب والحال انه لاينسى التصابى ولاينسى على بناء المعلوم والفاعل ضمير مستتر يرجع الى العاشق المفهوم من الكلام يريد نفسه والتصابى اللهو والغزل مع النساء وتجاوز رأس الاربعين جاوزه والرأس النهاية ومنه رؤس

الأي لخواتمها وجرب على بناء المعلوم من التفعيل بمعنى عرف الامور وحنكته التجاريب فهو مجرب بكسر الراء واما المجرب بفتحها فهو الذى بلوته وعرفت احواله وقوله وقد بان مايأتي من الامراي وضحت اموره لانها امور رجل بلغ اشده وجرب واكتست اي تلبست والمفارق جمع مفرق الرأس والمغرب على صيغة اسم الفاعل ذوغرابة يستغرب منه كما يقال هل من مغربة خبراي مايستغرب منه يريد ان الشيب احاط بمفارقه احاطة الثوب بلابسه

أتجمع شوقا ان تراخت بها النوى ... وصدا اذا ما اسقبت وتجنبا

اذا انبت اسباب الهوى وتصدعت ... عصا البين لم تسطع لشعثاء مطلبا

وكيف تصدى المرء ذى اللب للصبا ... وليس بمعذور اذا ما تطربا

ثم انه جرد عن نفسه شخصا يلومه على صنيعه مع معشوقته فقال اتجمع شوقا الخ تراخت تباعدت والصد الاعراض واسقبت قربت ومنه فى الحديث الجار احق بسقبه وقوله وتجنبا عطف على صدا اي مجانبة يقول اتجمع شوقا اذا بعدت واعراضا عنها اذا قربت يتهمه بعدم صدق حبه قوله اذا انبت اسباب الهوى الخ انبت انفعل من بته يبته اذا قطعه فمعنى انبت انقطع وتصدعت تكسرت والعصا مؤنث فى كلامهم ولذا انث الفعل المسند اليها والعرب تقول شق فلان العصا اذا خرج عن الطاعة ويقال شقوا بينهم عصا الشقاق اذا توافقوا فيما بينهم وتطاوعوا والبين من الاضداد يكون بمعنى الوصل وبمعنى الفراق قال الشاعر

لقد فرق الواشين بيني و بينها ... ففرت بذاك الوصل عيني وعينها

وقال الاخر

لعمرك لولا البين لانقطع الهوى ... ولولا الهوى ماحن للبين آلف

فالبين هنا الوصل وانشد بعض الفضلاء وقد جمع بين المعنيين

وكنا على بين ففرق شملنا ... فاعقبه البين الذى شتت الشملا

فيا عجبا ضدان واللفظ واحد فلله لفظ ما امر وما احلى

فالبين ههنا اعنى فى قوله وتصدعت عصا البين بمعنى الوصل ومعنى تصدعت عصا البين انقطعت اسباب الوصل وحصل الفراق وقوله لم تسطع لم تطق يقال استطاع يستطيع واسطاع يسطيع بحذف التاء ومنه قوله تعالى فما اسطاعوان يظهروه وقوله تعالى ذلك تأويل مالم تسطع عليه صبرا والمطلب مصدر بمعنى الطلب وقوله وكيف تصدى المرء التصدى مصدر تصدى مضاف الى فاعله وذواللب ذوالعقل والصبا اللهو والغزل والتطرب الخفة والحركة والشوق وحاصل معنى الابيات انك لست بصادق فى حبك فانك تدعى الشوق اذا بعدت عنك وتعرض عنها وتجانبها اذا قربت منك وهل هذا الا كذب فى الحب و اذا انقطع اسباب المحبة والهوى كترك الزيارة والاعراض اذا قربت وانشقت عصا الوصل لا تستطيع ولا تطيق على طلب لشعثاء و ايضا من الدليل على عدم صدقك فى محبتك ان الرجل المستكمل العقل مثلك المجاوز للاربعين لايتصدى للصبابل لو اظهر شيئا من علاماته كالطرب يلام عليه ولا يكون معذورا بل يكون ملوما لانه خارج عن قاعدة العادة وتجاوز فى الحد نعم الشباب يكون عذرا فى هذا الباب عند العامة ثم انه ارا ان يجيب لمتهمه فقال

أطيل اجتنابا عنهمو غير بغضة ولكن بقيا رهبة و تصحبا

الا لا أرى جارا يعلل نفسه مطاعا ولا جار الشعثأ معتبا

البغضة بكسر الباء الابغاض وبقيا بضم الباء وتفتح كبقوى بفتحها وتضم اسم من الابقاء والرهبة الخوف و قوله و تصحبا عطف على بقيا والتصحب الحياء يقال فلان يتصحب منا اي يستحيي يريد انى اطيل المجانبة عنها اذا قربت ولكن لالابغا ضها بل لاجل جبي اياها فلولم اظهر الصد لخيف عليها فان الناس فيهم ارباب نمائم فينمون ويفشون سرنا فيبلغ ذلك اهلها فتتضرر كثير الضرر والحاصل انى اشفق عليها وايضا يمنعنى الحياء من اظهار الشوق والشعراء يعتذرون بمثله قال حسان رضي الله عنه فى قصيدة اخرى

ولقد تجالسنى فيمنعني ضيق الذراع وعلة الخفر

والخفر الحياء و قيل التصحب بمعنى التمتع و خبر لكن محذوف وهو قصدي ونحوه كما قيل فى قوالشاعر ولكن زنحيا طويلا مشافره . ان الخبر محذوف ويشبه بيتي حسان بيتا ابى حية النميري

اصدو ما الصد الذى تعلمينه شفأ لنا الا اجتراعَ العلاقم

حياءً و بقيا ان تشيع نميمة بنا وبكم اف لاهل النمائم

ولله در ذي الرمة حيث قال فى هذا المعنى فاجاد

و ما هجرتك النفس ياميَّ انها قلتك ولا ان قل منك نصيبها

ولكنهم يا املح الناس اولعوا بقول اذا ما جئت هذا حبيبها

وقوله لا ارى جارا الخ الجار ههنا الدخيل واراد نفسه وقوله يعلل من علله اذا شغله بشيئ كما تعلل المرأة صبيها بشيئ من المرق و نحوه ليجزأ به عن اللبن ومطاعا مفعول ثان للا ارى لانها قلبية وقوله ولا جار الشعثاء معتبا عطف على معمولى عامل واحد ولا زائدة لتأكيد النفى والمعتب اسم مفعول من اعتبه اذا اعطاء العتبى بالضم وهى الرضا و حاصل معنى البيت انا جار لشعثاء اعلل نفسي بجهالى ورضاها عنى ولكن لا ارانى مطاعا اي لا اراها تطيعنى ولا اراها تعطينى العتبى وترضى عنى وهذه القصيدة لحسان رضي الله عنه مذكورة فى ديوانه ومنه كتبتها

## الحسين بن على بن ابى طالب

## رضى الله عنهما

فى زوجه رباب بنت امرئ القيس الكلبى وابنته منها سكينة رحمهم الله تعالى

### الترجمة

هو الحسين بن على بن ابى طالب بن عبد المطلب الهاشمي امه فاطمة بنت رسول الله عليه السلام يكنى اباعبدالله ولد لخمس خلون من شعبان سنة اربع وقيل

ثلاث هذا قول الواقدى وطائفة قال الواقدي علقت فاطمة رضى الله عنها بالحسين بعد مولد الحسن بخمسين ليلة وروى جعفر بن محمد عن ابيه قال لم يكن بين الحسن والحسين الا طهر واحد وقال قتادة ولد الحسين بعد الحسن بتسعة او عشرة اشهر لخمس سنين وستة اشهر من التاريخ وعق عنه رسول الله عليه السلام كما عق عن اخيه الحسن رضى الله عنه وكان الحسين رضى الله عنه فاضلا دينا كثير الصلاة والصيام والحج وقتل يوم الجمعة لعشر خلت من المحرم يوم عاشوراء سنة احدى وستين بموضع يعرف بكربلاء من ارض العراق بناحية الكوفة و يعرف الموضع ايضا بالطف كذا فى الاستيعاب وقال مصعب الزبيري حج الحسين رضى الله عنه خمسا وعشرين حجة ماشيا وروي عن ابى هريرة رضي الله عنه بسند صحيح يقول ابصرت عيناي وسمعت اذناى رسول الله عليه السلام وهو آخذ بكفي حسين رضى الله عنه وقدماه على قدم رسول الله عليه السلام وهو يقول ترقه ترته عين بقة قال فرقي الغلام حتى وضع قدميه على صدر رسول الله عليه السلام ثم قال رسول الله عليه السلام افتح فاك ثم قبله وقال اللهم احبه فانى احبه وفى النهاية انه عليه السلام كان يرقص الحسن اوالحسين ويقول حزقة حزقة ترق عين بقة فترقى الغلام حتى وضع قدميه على صدره الحزقة الضعيف المتقارب الخطو لضعفه وقيل القصير العظيم البطن فذكرهاله على سبيل المداعبة والتأنيس له وترق بمعنى اصعد وعين بقة كناية عن صغر العين وحزقة مرفوع على انه خبر مبتدأ محذوف اي انت حزقة وحزقة الثانى كذلك او انه خبر مكرر ومن لم ينون حزقة اراديا حزقة فحذف حرف النداء وهو من الشذوذ نحو اطرق كرا لان حرف النداء انما يحذف من العلم المضموم اوالمضاف انتهى وقوله انما يحذف من العلم المضموم اوالمضاف مشكل لانه سواء اراد بالمضاف العلم المضاف اوالاسم المضاف لايصح الحصر لجواز حذف حرف النداء عن بعض المعارف غير المضموم والمضاف كالموصول نحو من لايزال محسنا احسن الى وعدم جوازه عن النكرة المضافة فالاحسن فى التعليل ان يقال لان حرف النداء لايحذف عن النكرة قبل النداء وحزقة كذلك واختلف فى سن الحسين رضي الله عنه يوم قتله فقيل قتل وهو ابن سبع وخمسين وقيل ابن ثمان وخمسين قال قتادة قتل الحسين رضي الله عنه وهوابن اربع وخمسين وستة اشهر وذكر المزنى عن الشافعى رحمه الله عن سفيان بن عيينة قال قال لى جعفر

بن محمد قتل على رضي الله عنه وهو ابن ثمان وخمسين سنة وتوفى على بن الحسين رحمه الله وهو ابن ثمان وخمسين سنة وتوفى محمد بن على بن الحسين رحمه الله وهو ابن ثمان وخمسين سنة قال سفيان وقال لى جعفر وانا بهذه السنة فى ثمان وخمسين فتوفى فيها رحمه الله تعالى

قال رضي الله عنه

من الوافر

لعمرك انّنى لاُحبّ ارضا ... تَحُلُّ بها سُكَيْنَةُ والرَّبابُ

احبّهما وابذُلُ جُلَّ مالى ... وليس لعاتب عندى عتاب

فلستُ لهم وان غابوا مُضيعا ... حياتى او يُغَيِّبنى التّراب

كأنّ اللّيل موصول بليل ... اذا زارت سكينةُ والرباب

تحل من حل بالمكان اذا نزل به من بابى نصر وضرب وسكينة تصيغة التصغير بنت الحسين واسمها اميمة وقيل امينة وقيل آمنة وقيل امية وسكينة لقب لقبت به وكانت بارعة الجمال تزوجت عدة ازواج اولهم عبدالله بن الحسن بن على رضى الله عنهم وممن تزوجت به مصعب ابن الزبير ومهرها الف الف فكتب عبدالله بن الهمام السلولى الشاعر الى عبدالله ابن الزبير هذه الابيات

ابلغ امير المؤمنين رسالة ... من ناصح لك لايريد خداعا

بضع الفتاة بالف الف كامل ... وتبيت سادات الجنود جياعا

لولا بى حفص افول مقالتى ... وابث ما ابثتكم لارتاعا

وقال محمد بن سلام الجمحى كانت سكينة مزاحة فلسعتها دبرة فقالت لها امها مالك ياسيدتى فضحكت وقالت لسعتنى دبيرة مثل الابيرة اوجعتنى قطيرة كذا فى الاغانى وذكر لها فيه ترجمة طويلة والرباب هى بنت امرئ القيس بن عدي بن

اوس بن جابر بن كعب بن عليم الكلبي زوج الحسين رضى الله عنه وام ابنته سكينة اسلم ابوها امرؤ القيس فى زمن عمر بن الخطاب رضى الله عنه روى صاحب الاغانى بسند يتصل الى عوف بن خارجة المرى قال والله انى لعند عمر بن الخطاب اذ دخل رجل افحج اجلى امعر يتخطى رقاب الناس حتى قام بين يدي عمر رضى الله عنه فحياه بتحية الخلافة فقال له رضى الله عنه ممن انت قال انا امرؤ القيس الكلبى قال فلم يعرفه عمر رضى الله عنه فقال رجل هذا صاحب بكر بن وائل الذي اغار عليهم يوم فلج قال فما تريد قال اريد الاسلام فعرضه عليه عمر رضى الله عنه ثم دعاله برمح فعقدله على من اسلم من قضاعة بالشام فادبر الشيخ واللواء يهتز على رأسه قال عوف فوالله مارأيت رجلا لم يصل لله ركعة امر على المسلمين قبله ونهض على بن ابى طالب رضى الله عنه ومعه ابناه الحسن والحسين رضى الله عنهما حتى ادركه واخذ بثيابه فقال له ياعم انا على بن ابى طالب ابن عم رسول الله عليه السلام وصهره وهذان ابناي من ابنته وقد رغبناك فى صهرك فانكحنا قال ياعلى قد انكحتك المحياة بنت امرئ القيس و انكحتك ياحسن سلمى بنت امرئ القيس و انكحتك ياحسين الرباب بنت امرئ القيس وقال هشام بن الكلبي وكانت الرباب من خيار النساء وافضلهن وخطبت بعد الحسين رضي الله عنه فقالت لا احب حماً بعد رسول الله عليه السلام انتهى ثم ذكر صاحب الاغانى بسند يتصل الى عوانة قال رثت الرباب بنت امرئ القيس ام سكينة زوجها الحسين حين قتل فقالت

ان الذى كان نورا يستضاء به ... بكر بلاء قتيل غير مدفون

سبط النبى جزاك الله صالحة ... عنا وجُنّبتَ خسران الموازين

قد كنت لى جبلا صعبا الوذ به ... وكنت تصحبنا بالرحم والدين

من لليتامى ومن للسائلين ومن ... يُغْنى و يأوى اليه كل مسكين

والله لا ابتغى صهرا بصهركم ... حتى أُغيّب بين الرمل والطين

وقوله وليس لعاتب عندي عتاب اي عتاب بحق فانهما تستحقان قالت سكينة عاتب عمي الحسن ابى الحسين فقال هذه الابيات وقوله لهم متعلق بمضيعا الذى هو خبر لست وقوله حياتى من اقامة المصدر مقام الظرف اي مدة حياتى واوفي او يغيبنى

بمعنى الى ان او الا ان ينتصب المضارع بعده قوله كأن الليل موصول الخ اي كان الليل لطوله ليلان وصل احدهما بالاخر يريد انه يكون فى قلق وحزن لفراقها وقوله اذا زارت اي اهلها فغابت عنه والابيات الثلثة الاول كتبتها من الاغانى وكتبت البيت الرابع من الروض الانف للسهيلى رحمه الله تعالى

## الحسين بن على ايضا

## رضى الله عنهما

فى زوجه الرباب المذكورة

من البسيط

اُحِبُّ لِحُبِّهَا زَيْدًا جميعا ... ونَتْلَةَ كلَّها وبنى الرَّباب

واَخْوَ الالها من أل لَاءم ... اُحِبِّهمو وطُرَّبنى جَنَاب

زيد قبيلة وهم بنو كعب بن عليم بن جناب عرفوا بامهم زيد بنت مالك وزيد مصروف فى البيت و علمأ الاعراب مختلفون فى مثله اعني لفظ المذكر الثلاثى الساكن الوسط اذا سمي به مؤنث قال الرضى فالخليل وسيبويه وابو عمر ويمنعونه الصرف متحتما كماه وجور لظهور امر التأنيث بالطرأن وابوزيد وعيسى والجرمى يجعلونه مثل هند فى جواز الامرين ويرجحون صرفه على صرف هند نظرا الى اصله قيل ومذهب المبرد كمذهب ابى زيد و صاحبيه ونتله قبيلة لم اقف عليها الى الآن والظاهر انها من الهبلات و قوله وبنى الرباب هم قبيله يعرفون بامهم الرباب بنت انيف بن حارثة بن لاءم الطائى وهى ام الاحوص وعروة ابني عمرو بن ثعلبة بن حصن بن ضمضم بن عدى بن جناب ابن هبل وهبل ابو الهبلات من كلب بن وبرة وهو هبل بن عبدالله بن كنانة بن بكر بن عوف بن عذرة بن زيد اللات بن رفيدة بن ثور بن كلب بن وبرة من قضاعة والاحوص بن عمرو المذكور فيما سبق جد نائلة بنت الفرافصة زوج عثمان بن عفان رضي الله عنه قوله واخو الالها من آل لاءم بالاضمار على شريطة التفسير يفسره احبهم بعده اي واحب اخو الالها وآل لاءم هم بنو لاءم بن عمرو بن طريف بن مالك بن جدعان بن ذهل بن رومان بن

جندب بن خارجة بن سعد بن قطرة منهم اوس بن حارثة بن لأم الطائى الجواد المعروف قوله وطر بنى جناب اي واحب جميع بنى جناب وجناب هو ابن هبل ابى الهبلات المذكور فيما سبق وحاصل معنى البيتين انه يقول لاجل حبى الرباب زوجى احب جميع القبائل المذكورة لان بينها وبين تلك القبائل اتصالا ورحما اما من جهة الاب كغير آل لأم الطائيين لان كلها من كلب ابن وبرة وهى اعنى الرباب من الهبلات ايضا لانها من كعب بن عليم كما عرفت واما من جهة الام كأل لأم لانهم اخوالها وفى البيت استعمال لفظ طر غير حال وهو خلاف ماعليه كثير من علماء الاعراب من ان كافة وطرا وقاطبة لاتقع فى الكلام غير حال فان صح ان البيت لحسين رضى الله عنه فهو حجة عليهم لان حسينا رضى الله عنه فصيح يستشهد بكلامه والبيتان عزاهما السهيلى فى الروض الانف الى الحسين رضى الله عنه ومنه كتبتهما

## حُمَيْد بن ثَوْر الهلالى

## رضى الله عنه

## الترجمة

يقال فى نسبه حميد بن ثور بن عبد الله بن عامر بن ابى ربيعة بن نهيك بن هلال بن عامر بن صعصعة كذا قال فيه ابو عمر والشيبانى وغيره اسلم حميد وقدم على النبى عليه السلام وانشده قصيدته التى اولها

اضحى فؤادى من سليمى مقصدا ان خطأ منها وان تعمدا

كذا فى الاستيعاب ولم اظفر بهذه القصيدة الى الآن ولم اجد منها غير هذا البيت وبيتين آخرين ذكرهما فى الاستيعاب ولعل الله سبحانه ان يطلعنى عليها بفضله وكرمه وقال الذهبى فى التجريد ان حميد اشهد حنينا كافرا ثم اسلم ووفد على النبى عليه السلام انتهى وهو من رهط ميمونة بنت الحرث الهلالية ام المؤمنين رضى الله عنها وكان حميد رضى الله عنه يحب التغزل والتشبيب فى شعره وعده محمد بن سلام الجمحى فى الطبقة الرابعة من الشعراء الاسلاميين وشعره رقيق جيد منه ما انشده له الزبير بن بكار وذكر انه قدم على النبى عليه السلام مسلما وهو قوله

فلا يبعد الله الشباب وقولنا  اذا ماصبونا صبوة سنتوب  من الوافر

ليالى ابصار الغوانى وسمعها  الىّ واذ يحى لهنّ جنوب

واذ مايقول الناس امر مهون  علينا واذ غصن الشباب رطيب

يقال بعد بالكسر عن الخير فهو باعد اي هالك والبعد الهلاك ويقال ابعده الله اي اهلكه فاذا ارادوا الدعاء بالخير قالوا لايبعدولايبعده الله واذا ارادوا الدعاء عليه قالوا بعد وابعده الله وفى التنزيل الابعدالمدين كما بعدت ثمود واما البعدالحسى ضدالقرب فهو من الباب الخامس وقوله اذا ماصبونا اذا بمعنى اذ ظرف لقولنا وسنتوب اي سنستغفر مقول القول وقوله ليالى بالنصب بدل من اذا مضاف الى الاسمية بعده مبتدأها ابصار الغوانى وخبرها الىّ اي معطوفة ومائلة الىّ كما يقال قلبى اليك والغوانى جمع غانية وهى المرأة التى تُطْلب ولاتَطْلب او الغنية بحسنها عن الزنية وقيل هى التى تعجب الرجال ويعجبها الشبان وقوله واذ يحى لهن جنوب على تشبيه حاله معهن بالريح الجنوب فى الرغبة فان العرب كانت تفضل ريح الجنوب على ريح الشمال لان الجنوب ينعقد معها السحاب وتجلب المطر وفى الحديث ماهبت الريح الجنوب الا اسال الله بها واديا وقال رجل يمدح رجلا

فتى خلقت اخلاقه مطمئنة  له نفحات ريحهن جنوب

يريد ان الجنوب تأتى بالمطر والندى والشمال تقطع السحاب وقلما يكون معها مطر والمعنى واذ حالى وشانى موافق لهن ومرغوب عندهن كريح الجنوب حيث يوافقهم ويرغبون فيه قوله واذ مايقول الناس امر مهون ماموصولة مبتدأ وامر خبره والمهون المحقور الهين وعلينا متعلق بمهون والمعنى واذالذى يقوله الناس فى عذلنا ولومنا حقير هين لانلتفت اليه لان زمرة العشاق لايلتفتون الى مايقوله العذال ولايلقون له بالا وقوله واذ غصن الشباب رطيب يريد واذالشباب فى كماله كغصن الشجر الرطيب يعنى زمان انه غض طري وخلاصة معنى الابيات تذكر عهد الشبيبة والبكاء على فقدها ولله در القائل

شيأن لو بكت الدماء عليهما  عيناي حتى تؤذنا بذهاب

لم يبلغا المعشار من حقيهما  فقد الشباب وفرقة الاحباب

وهذا الشعر كتبته من الاستيعاب لابن عبدالبر رحمه الله تعالى

## الخنساء الشاعرة

## رضى الله عنها

### فى مرثية اخيها صخر بن عمرو

### الترجمة

اسمها تما ضربنت عمرو بن الشريد بن رياح بن ثعلبة بن عُصَيّة بن خفاف بن امرىء القيس ابن بُهْثَة بن سُلَيْم بن منصور بن عكرمة بن خصفة بن قيس عيلان بن مضر والخنسأ لقبها ويقال لها خناس ايضا و انما لقب بالخنساء كناية عن الظبية وكذلك الذلفاء فى الاسماء والخنس تأخر لانف عن الوجه مع ارتفاع قليل فى الارنبة والذلف قصر فى الانف وكلاهما من صفات الظبأ قدمت الخنساء على رسول الله عليه السلام مع قومها من بنى سليم فاسلمت معهم فذكروا ان رسول الله عليه السلام كان يستنشدها فيعجبه شعرها وكانت تنشده وهو يقول هيه ياخناس ويومى بيده قالوا وكانت الخنساء فى اول امرها تقول البيتين والثلاثة حتى قتل اخوها لابيها وامها معاوية بن عمر وقتله هاشم ودريد ابنا حرملة المريان استطرد له احدهما فشغله واغتره الآخر فقتله وصخرا خوها لابيها وكان احبهما اليها لانه كان جوادا حليما محبوبا فى العشيرة وكان غزا بنى اسد فطعنه ابو ثور الاسدى طعنة فمرض منها قريبا من حول ثم مات فلما قتل اخواها اكثرت من الشعر واجادت واجمع اهل العلم بالشعر انه لم يكن امرأة قبلها ولا بعدها اشعر منها وحكى الشيخ ابن عبدالبر عن الزبير بن بكار انها شهدت حرب القادسية ومعها اربعة بنين لها فقالت لهم من اول الليل يابنىّ انكم اسلمتم طائعين وهاجرتم مختارين والله الذى لااله الاهو انكم لبنو رجل واحد كما انكم بنو امرأة واحدة ماخنت اباكم ولا فضحت خالكم ولا هجنت حسبكم ولا غيرت نسبكم وقد تعلمون ماأعد الله للمسلمين من الثواب الجزيل فى حرب الكافرين واعلموا ان الدار الباقية خير من الدار الفانية يقول الله تعالى يا ايها الذين آمنوا اصبروا وصابروا و رابطوا واتقوا الله لعلكم

نفلحون فاذا اصبحتم انشاء الله سالمين فاغدوا الى قتال عدوكم مستبصرين وبالله على اعدائه مستنصرين فاذا رأيتم الحرب قدشمرت عن ساقها واضطرمت لظى على سباقها وجللت نارا على ارواقها فتيمموا وطيسمها وجالدوا رئيسها عند احتدام خميسها تظفروا بالغنم والكرامة فى دارالخلد والمقامة فخرج بنوها قابلين لنصحها فلما اصبحوا باشروا القتال حتى قتلوا كلهم واحدا بعد واحد وكل منهم انشدر جزا قبل ان يشتشهد فانشد الال

يا اخوتى ان العجوز الناصحة ... قد نصحتنا اذ دعتنا البارحة
مقالة ذات بيان واضحة ... فباكروا الحرب الضروس الكالحة
وانما تلقون عند الصائحة ... من آل ساسان الكلاب النابحة
قدا يقنوا منكم بوقع الجائحة ... و انتم بين حياة صالحة
اوميتة تورث غنما رابحة

وانشد الثانى

ان العجوز ذات حزم وجَلَدْ ... والنظر الاوفق والرأي السدد
قد امرتنا بالسداد وانرَشَدْ ... نصيحة منها و برا بالولد
فباكروا الحرب حماة فى العدد ... اما لفوز بارد على الكبد
اوميتة تورثكم عزا فى الابد ... فى جنة الفردوس والعيش الرغد

وانشد الثالث

والله لا نعصي العجوز حرفا ... قد امرتنا حربا و عطفا
نصحا وبرا صادقا ولطفا ... فبادروا الحرب الضروس زحفا
حتى تافوا آل كسرى لفا ... او يكشفوكم عن حماكم كشفا
انا نرى التقصير منكم ضعفا ... والقتل فيكم نجدة وزلفى

وانشد الرابع

لست لخنساء ولا للاحزم ... ولالعمرو ذي السناء الاقدم
انلم ارد فى الجيش جيش الاعجم ... ماض على الهول خِضَّم خضرم

اما لفوز عاجل ومغنم او لوفاة فى السبيل الاكرم

قال فبلغها الخبر بقتلهم فقالت الحمدالله الذي شرفنى بقتلهم وارجو من ربى ان يجمعنى بهم فى مستقر رحمته وكان عمر بن الخطاب رضى الله عنه يعطى الخنساء ارزاق اولادها الاربعة لكل واحد مأئتى درهم حتى قبض رضى الله عنه وكانت وفاة الخنساء فى زمن معاوية رضى الله عنه سنة خمسين من الهجرة ومما يستجاد من شعرها قولها فى مرثية اخيها صخر

من الطويل

يا عينِ مالكِ لا تبكين تَسْكابا ... اذراب دهر وكان الدهر رَيّابا

فابكى اخاكِ لايتام وارْمَلَةٍ ... وابكى اخاكِ اذا جاورتِ اجْنابا

وابكى اخاكِ لخيل كالقطا عُصُب ... فقَدْنَ لمّا ثوى سَيْبا وانْهابا

وابكيه للفارس الحامى حقيقته ... وللضّريك اذا ماجاء منتابا

التسكاب مصدر للمبالغة من السكب وهو صب الدموع وهو منصوب على المصدرية وراب دهر اصاب نوائبه وحوادثه من رابنى اذا ساءنى وازعجنى واقلقنى وفى حديث فاطمة رضى الله عنه يريبنى ما يريبها اي يسوءنى ما يسوءها ويقال رابنى الامر وارابنى اذا رأيت منه ماتكره وامر ريب مفزع كثير الشر تقول انها كانت فى نعمة وسرور مع اخيها و دهر يعجبها فتغير عليها فجاء بشر وهو قتل اخيها فابكى اخاك لايتام الخ الايتام جمع يتيم والارملة الفقيرة او التى مات زوجها وقولها اذا جاورت اجنابا الاجنب الغرباء جمع جنب بالضمتين ومنه الجار الجنب اي ان الاجانب كانوا يستجيرون به وكان يختار لذلك وقوله و ابكى اخاك لخيل الخ القطا طائر معروف يضرب بها المثل فى السرعة والاهتداء والعصب جمع عصبة بمعنى الجماعة روي عصب بالجر على انه صفة خيل وروى بالنصب على انه حال من القطا وثوى مات وسيبا مفعول فقدن والسيب العطاء والانهاب

مصدر انهب ماله اي كان صخر يعطي وينهب ماله لاضيافه اوالانهاب بفتح الهمزة جمع نهب بمعنى الغنيمة و يؤيده رواية سيبا بتقديم الموحدة على التحتية اي كان يغير فينال اصحابه بسببه السبي والغنيمة فلما مات فقدوا هذا قولها وابكيه للفارس الحامى حقيقته الخ فى الاساس وفلان حامى الحقيقة وهو من حماة الحائق اي يحمى مالزمه الدفاع عنه من اهل بيته قال لبيد

اتيت ابا هند بهندو مالك ... باسماء انى من حماة الحقائق

انتهى وفى النهاية فلان حامى الحقيقة اذا حمى مايجب عليه حمايته انتهى والضريك المحتاج والمنتاب الزائر او الذى اصابته نوائب الدهر

يَعْدُو به سابِحٌ نَهْدٌ مَراكِلُه ... اذا اكْتَسى من سواد اللّيل جِلْبابا

حتى يُصَبِّحَ قوماً فى ديارهم ... ويَحْتوى دون دار القوم اسْلابا

يَهْدى الرَّعيلَ اذا جارَ الدَّليلُ بهم ... قَصْدَ السَّبيل لزُرْق السَّمْر رَكَّابا

يقال عدا الفرس يعد واذا جرى والباء فى به للمصاحبة اوللتعدية والضمير المجرور لاخيها المرثي والسابح الفرس الحسن مد اليدين فى الجرى يقال فرس سابح وسبوح وخيل سوابح والنهد المرتفع والمراكل جمع مركل كمقعد موضع تصيبه برجلك من الدابة اذا حركتها للركض وهما مركلان وفرس نهد المراكل مرتفعها وعظيمها قال عنترة بن شداد

وحشيتي سرج على عبل الشوى ... نهد مراكله نبيل المحزم

قوله ويحتوى دون دار القوم اسلابا اي قرب دارهم قبل ان يخالطهم والاسلاب جمع سلب يريد الغنائم قولها يهدى الرعيل الخ الرعيل القطعة المتقدمة من الخيل والطير والرجال والابل وغيرها وجار الدليل مال وعدل عن الطريق والدليل الهادي وقصد السبيل مفعول يهدى وهو استقامة الطريق وفي التنزيل وعلى الله قصد السبيل ويقال طريق قصد وقاصدة على خلاف قولهم طريق جور وجائرة وقولها ازرق السمر متعلق

بركابا المؤخر واللام لتقوية كمافي انالزيد ضارب والسمر جمع اسمر وهوالرمح والزرق جمع ازرق وهوالمجلو لانه يضرب الى الزرقة تقول انه كان سفار اخريتاماهرا بالهداية قوادا للجيوش مقدا مافي الحروب ركابا على الاسنة

فالحمد حلته والجود علته والصدق حوزته ان قرنه هابا

خطاب مفصلة فراج مظلمة ان هاب مفظعة اتى لها بابا

حمال الوية شهاد انجية قطاع اودية للوتر طلابا

سم العداة وفكاك العناة اذا لاقى الوغى لم يكن للقرن هيابا

قولها فالحمد حلته الحلة ثوبان ازارو رداء تقول ان الحمد محيط به من جميع جوانبه من القرن الى القدم كما ان الحلة محيطة كذلك قولها والجود علته العلة العيب وهو مبتدأ والجود خبر قدم لتكون الجمل على وتيرة واحدة فيكون المعنى لاعلة اى لاعيب فيه وفيه الجود كما في قوله تحية بينهم ضرب وجيع اي لاتحية بينهم وفيهم ضرب وجيع ولو عكس بان جعل الجود مبتدأ وعلته خبرا لانعكس المعنى فيكون ذما لانه يكون المعنى لاجود فيه وفيه العيب ولذلك غلطوا المتنبي في قوله

ثياب كريم مايصون حسانها اذا نشرت كان الهبات صوانها

فذمه وهو يرى انه مدحه الاترى انه اثبت الصون ونفى الهبات لان القاعدة في هذا الباب ان يثبت الخبر وينفى المبتدأ وقولها والصدق حوزته اي صدق الحديث اوصدق القتال وهوالجد والاجتهاد فيه حوزته اي مايحوزه ويحتويه والقرن بالكسر الكفؤ في الحرب وهو فاعل هاب المقدرة المفسرة بالمذكورة مثل وان احد من المشركين استجارك وهاب بمعنى خاف قولها خطاب مفصلة اي خطبة ذات فصل بين الحق والباطل وفراج مظلمة اي حادثة شديدة ومفظعة مفعول هاب وهي النازلة الشديدة واتى من التفعيل بمعنى هيأ اي دبر لها مايزيلها قولها حمال الوية

AMERICAN UNIVERSITY OF BEIRUT LIBRARY

الالوية جمع لواء الامير وحمال صيغة مبالغة كشهاد والانجية جمع نجي كغني وهو الذى يسارّك ويحدثك ويخاطبك ومنه موسى نجي الله صلى الله على نبينا وعليه وسلم والمراد انديةالقوم ومجالس مشورتهم وقوله قطاع اودية الاودية جمع الوادى تريد انه يبعد فى السفر والغزو والوتر الذحل والانتقام واللام متعلق بطلابا وهو حال من فاعل قطاع قولها سم العداة الخ السم بالفتح والضم والعداة جمع العادي وهو العدو تريد انه يقتلهم كالسم والعناة جمع العاني وهو الاسير تريد انه يفك الاسرى بتحمل الفداء والوغى فى الاصل الصياح والصوت فى الحرب ثم يقال للحرب وقولها لم يكن للقرن هيابا اي لم يكن يهابه اصلا فالمراد مبالغة النفي لا نفي المبالغة كما فى قوله تعالى وماربك بظلام للعبيد واكثر شعر الخنساء رضي الله عنها شعرجا هلي فلذلك لم آت بكثير منه وانما قصدى ان لايخلو كتابي المخصوص باشعار الصحابة عن شعرها لانها صحابية كما عرف فى ترجمتها

## راشد بن عبد ربّه السّلمى

## رضى الله عنه

فى سبب اسلامه

### الترجمة

هو راشد بن عبد ربه باضافة العبد الى الرب والرب الى الضمير والسلمى بضم السين نسبة الى سليم بن منصور من قبائل قيس عيلان كان اسمه غاويا فسماه رسول الله عليه السلام راشدا وهو صاحب البيت المشهور

فالقت عصاها واستقر بها النوى كما قرعينا بالاياب المسافر

روي انه كان سادن الصنم الذى يقال له سواع فكان عند الصنم يوما اذ اقبل ثعلبان فرفع احدهما رجله فبال على الصنم فانشد

ارب يبول الثعلبان برأسه لقد ذلّ من بالت عليه الثّعالب من الطويل

استشهد الجوهرى بهذا البيت على ان الثعلبان بالضم مذكر الثعالب وخطأه

صاحب القاموس فقال واستشهاد الجوهري بهذا البيت غلط صريح وهومسبوق والصواب فى البيت فتح الثاء لانه مثنى كان غاوى بن عبدالعزى سادنالصنم لبنى سليم فبينا هو عنده اذ اقبل ثعلبان يشتد ان حتى تسنماه فبالا عليه فقال البيت ثم قال يا معشر سليم لا والله لايضر ولاينفع ولا يعطى ولا يمنع فكسره ولحق بالنبي عليه السلام فقال ماسمك فقال غاوي بن عبدالعزى فقال بل انت راشدبن عبد ربه وقال السيد المرتضى فى شرحه للقاموس ان الكسائى سبق الجوهرى وهو الذى اراد صاحب القاموس بقوله وهو مسبوق ثم قال استدل المؤلف بهذه القصة على تخطئة الكسائى والجوهرى والحديث ذكره البغوى فى معجمه وابن شاهين وغيرهما وهو مشروح فى دلائل النبوة لابى نعيم الاصبهانى ونقله الدميرى فى حياة الحيوان وقال الحافظ ابن ناصر اخطأ الهروى فى تفسيره وصحف فى روايته وانما الحديث فجاء ثعلبان بالضم وهوذكر الثعالب اسم مفرد لامثنى واهل اللغة يستشهدون بالبيت للفرق بين الذكر والانثى كما قالوا الا فعوان ذكر الافاعى والعقربان ذكر العقارب وحكى الزمخشرى عن الجاحظ ان الرواية فى البيت انما هى بالضم على انه ذكر الثعالب وصوبه الحافظ شرف الدين الدمياطى وغيره من الحفاظ وردواخلاف ذلك قال شيخنا وبه تعلم ان قول المصنف والصواب غير صواب والبيت مسطور فى الاصابة ومنها كتبته

## سَواد بن قارِب

## رضى الله عنه

### فى سبب اسلامه ووفوده على النبي عليه السلام

### الترجمة

قال ابن الكلبى هودوسى وقال ابن حيثمة سدوسى من بنى سدوس وكان يتكهن فى الجاهلية وكان شاعرا ثم اسلم وداعبه عمر رضى الله عنه يوما فقال مافعلت كهانتك ياسواد فغضب وقال ماكنا نحن وانت ياعمر من شركنا وجهلنا شرمن الكهانة فمالك تعيرنى بامرتبت منه وارجو من الله العفو عنه وقدروي انه لما غضب

سواد استحيي عمر رضى الله عنه فقال هو ماكنا عليه من الشرك اعظم من كهانتك ثم سأله عمر رضى الله عنه عن حديثه فى بدء اسلامه وما اخبره به رئيه من ظهور رسول الله عليه السلام فاخبره انه اتاه رئيه ثلاث ليال متواليات وهو فيها كلها بين النائم واليقظان فقال له قم ياسواد فاسمع مقالتى واعقل ان كنت تعقل قد بعث رسول من لؤي بن غالب يدعو الى عبادة الله وانشد فى كل ليلة من الليالى الثلث ثلاثة ابيات معناها واحد وقافيتها واحدة اولها

عجبت الجن وتطلا بها ... وشدها العيس باقتابها
تهوي الى مكة تبغى الهدى ... ماصادق الجن ككذابها
فارحل الى الصفوة من هاشم ... ليس قدا ماها كاذنابها

كذا فى الاستيعاب وحديث سواد بن قارب مع عمر رضى الله عنهما ذكره البخارى فى صحيحه فى باب اسلام عمر بن الخطاب رضى الله عنه وذكر فيه من شعر رئيه قوله لسواد رضى الله عنه

الم تر الجن وابلا سها ... ويأسها من بعد انكاسها
ولحوقها بالقلاص واحلاسها

الابلاس الخوف ومن بعد انكاسها اي من بعد انقلابها على رأسها معناه يئست من استراق السمع بعدان كانت الفته فانقلبت عن الاستراق قد ايست من السمع والاحلاس جمع حلس وهو كساء يجعل تحت رحل الابل على ظهورها تلازمه ومنه قيل فلان حلس بيته اي ملازمه والمراد ظهور النبى العربى عليه السلام ومتابعة الجن للعرب ولحوقهم بهم فى الدين اذ هو رسول الثقلين وهذا الشعر الذى فى البخارى من السريع لكن وقع الاخير غير موزون نعم روي ورحلها العيس باحلاسها وهذا موزون والعيس بكسر العين الابل البيض مع شقرة يسيرة واحدها اعيس وعيساء ثم يستعمل فى الابل مطلقا ونقل الفاضل القسطلانى فى شرح البخارى عن البيهقى مما وصله من حديث البراء بن عازب رضى الله عنه بعد قوله واحلاسها

تهوى الى مكة تبغى الهدى ... مامؤ منوها مثل ارجاسها
فانهض الى الصفوة من هاشم ... واسم بعينيك الى راسها

قال ثم نبهني فافزعني وقال ياسواد ان الله عزوجل بعث نبيا فانهض اليه تسعد وترشد فلما كان في الليلة الثانية اتاني فنبهني ثم قال

عجبت للجن وتطلابها وشدها العيس باثتابها
تهوي الى مكة تبغي الهدى ليس قداماها كاذنابها
فانهض الى الصفوة من هاشم واسم بعينيك الى نابها

فلما كان في الليلة الثالثة اتاني فنبهني فقال

عجبت للجن وتنفارها وشدها العيس باكوارها
تهوي الى مكة تبغي الهدى ماموءمنوا الجن كلكنا رها

وفي شرح العيني وتجأرها مكان وتنفارها قال هو مصدر من جأر اذا تضرع وهو من المصادر الشاذة التاء زائدة انتهى

قال سواد فوقع في قلبي الاسلام فاتيت المدينة فلمارأني رسول الله عليه السلام قال مرحبا بك ياسواد بن قارب قد علمت ماجاء بك قال قد قلت شعرا فاسمعه مني فقلت

من الطويل

اتاني رئيي بعد ليل وهجعة ولم اك فيما قد بليت بكاذب
ثلث ليال قوله كل ليلة اتاك نبي من لؤى بن غالب
فشمرت عن ساقي الازار ووسطت بي الذعلب الوجناء عند السباسب

قوله اتاني رئيي الخ يقال للتابع من الجن رئي بوزن كمي وهو فعيل او فعول سمي به لانه يترائى لمتبوعه او هو من الرأي من قولهم فلان رئي قومه اذا كان صاحب رأيهم وقد تكسر راؤه لاتباعها مابعدها كذا في النهاية وقوله بعد ليل اي بعد دخول ليل او بعد قطعة من ليل والهجعة النومة الخفيفة من اول الليل وهو اشارة الى ماقد مناه من قصته انه كان بين النائم واليقظان حين جاءه رئيه وقوله ثلث ليال ظرف لفعل اتاني وقوله اي مقوله مبتدأ وكل ليلة بالنصب ظرف وجملة اتاك

نبي خبر والجملة حال من فاعل اتانى ولؤى بن غالب هو الاب التاسع لرسول الله عليه السلام على ماتقدم فى نسبه الشريف قوله فشمرت عن ساق الازار الخ تشمير الساق كناية عن الجد فى الشيء والاهتمام به ووسطت على البناء للفاعل من التوسيط وهو جعل الشيء فى الوسط ومنه قراءة بعضهم فوسطن بهم جمعا والذعلب بالكسر كالذعلة الناقة السريعة السير والوجناء الغليظة الصلبة وقيل العظيمة الوجنتين والسباسب بفتح السين الاولى وكسر الثانية جمع سبسب بالفتح وهو المفازة او الارض المستوية البعيدة يقال بلد سبسب وسباسب كأنهم جعلوا كل جزء منه سبسبا فجمعوه وقال بعضهم السباسب بالضم كعلابط صفة مفرد

فَأَشْهَدُ أَنَّ اللهَ لارَبَّ غيرُه ... وأَنَّكَ مأْمونٌ على كلِّ غائبِ

وأَنَّكَ أَدْنى المرسلين شفاعةً ... الى اللهِ يا ابنَ الأكرمين الأطايبِ

فَمُرْنا بما يأْتيكَ يا خيرَ مرسلٍ ... ولوكانَ فيما جاءَ شَيْبُ الذَّوائبِ

وكُنْ لى شفيعا يوم لاذوشفاعة ... سِواكَ بمُغْنٍ عن سَوادِ بنِ قارِبِ

المأمون هو الموثوق به الذي يؤمن منه يصفه صلى الله عليه وسلم بكمال الامانة وادنى المرسلين اقربهم من الدنو وقوله فمر ناصيغة امر من الامر والذوائب جمع ذؤابة وهى الناصية اوما احاط بالدوارة من الشعر وقد يطلق على ما يرخى كما فى المصباح وقوله شيب الذوائب اي مايكون سببا لشيب الذوائب من التكاليف الشاقة لان الشيب يكون مع المشقة والبلاء ويتسارع من الهم عادة ولذلك يعبر به عن الهم قال الله تعالى يوما يجعل الولدان شيبا اي يوما يهم الناس هما عظيما وفى الحديث شيبتنى سورة هود اي اهمتنى هما عظيما يريدانا منقاد لامرك كيفما كان يسيرا اوعسيرا قوله وكن لى شفيعا الخ كلمة لاهى المشبهة بليس وبمغن خبرها والباء زائدة كما تزاد فى خبر ليس والبيت مذكور فى كتب النحو وقوله عن سواد بن قارب من وضع المظهر موضع المضمر والاصل عنى وشعر سواد بن قارب رضى الله على

النهج الذي كتبته مسطور فى شرح البخاري للفاضل القسطلانى وهو مذكور فى الاستيعاب ايضا لكن بنوع مغايرة لما كتبته من شرح القسطلانى

## عاتكة بنت زيد بن عمر بن نفيل العدوية

## رضى الله عنها

### ترثى زوجها عمر بن الخطاب رضى الله عنه

### الترجمة

هى اخت سعيد بن زيد رضى الله عنه من العشرة المبشرة وابنة عم عمر بن الخطاب رضى الله عنه وامها ام كريز بنت عبد الله الخضرمية كانت من المهاجرات تزوجها عبد الله بن ابى بكر رضى الله عنهما وكانت بارعة الجمال فاولع بها وشغلته عن مغازيه فامره ابوه بطلاقها فقال عبد الله رضى الله عنه فى ذلك شعرا سيجئ فى باب الميم فعزم عليه ابوه حتى طلقها ثم تبعتها نفسه فهجم عليه ابوه فوجده وهو ينشد فى ذلك شعرا سيجئ فى باب القاف فرق له ابوه فامره فارتجعها ثم شهد عبد الله رضى الله عنه غزوة الطائف مع رسول الله عليه السلام فرمي بسهم فمات منه بعد بالمدينة فرثته عاتكة رضى الله عنها بشعر سيجئ فى باب الراء فتزوجها زيد بن الخطاب رضى الله عنه على ماقيل فقتل عنها شهيدا يوم اليمامة ثم تزوجها عمر بن الخطاب رضى الله عنه فى سنة اثنتى عشرة من الهجرة ثم قتل عنها فرثته بهذا الشعر الذى كتبته ههنا ثم تزوجها الزبير بن العوام رضى الله عنه وكانت كثيرة الاختلاف الى المسجد وكان يكره ذلك وذكر ابن عبد البر فى التمهيد ان عمر رضى الله عنه لما تزوجها شرطت عليه ان لا يمنعها من المسجد النبوى ثم شرطت ذلك على الزبير فتحيل عليها ان كمن لها لما خرجت لصلاة العشاء فلما مرت به ضرب على عجيزتها فلما رجعت قالت انا لله فسد الناس فلم تخرج بعد حتى قتل الزبير رضى الله عنه فرثته بشعر سيجئ فى باب الدال ثم خطبها على رضى الله عنه بعد انقضاء عدتها فارسلت اليه انى لاضن بك يا ابن عم رسول الله عليه السلام عن القتل وفى زهر الآداب للحصرى القيروانى ان عليا رضى الله عنه كان يقول من اراد الشهادة الحاضرة فليتزوج بعاتكة انتهى وكان عبد الله بن

الزبير رضى الله عنهما لما قتل ابوه ارسل الى عاتكة رضى الله عنها يرحمك الله انك امرأة عدوية ونحن من بنى اسد وان دخلت فى اموالنا افسدتها واضررت بنا فقالت رأيك يا ابابكر ما كنت لتبعث الى بشىء الاقبلته فبعث اليها بثمانين الف درهم فقبلتها وصالحت عليها قالت رضى الله عنها

عَيْن جُودى بعَبْرَةَ و نَحيب  لا تَمَلّى على الامام النَّجيبِ  من الخفيف

فَجَّعَتْنى المَنونُ بالفارس المُعْ  لِمِ يومَ الهِياج والتثويب

قل لاهل الضّراء والبُؤس موتوا  قدسَقَتْه المنون كأس شَعوب

قولها عين جودى الخ اي ياعينى وجودى اكثرى والعبرة الدمعة والنحيب البكاء كالنحب ولا تملى لا تسأمى عن البكاء قولها فجعتنى المنون الخ يقال فجعنى بالتخفيف وفجعنى بالتشديد اوجعنى اوهو ان يوجع بشى يكرم عليه فيعدمه كذا فى القاموس والمنون يقال للدهر ومنه قول ابى ذؤيب الهذلى رحمه الله

امن المنون وريبه تتوجع  والدهر ليس بمعتب من يجزع

يذكر ويؤنث على معنى الدهور والرد على عموم الجنس كما ذكر الاصمعى فى قول الشاعر

غلام وغى تقحمها فابلى  فخان بلائه الدهر الخئون

فان على الفتى الاقدام فيها  وليس عليه ماجنت المنون

ويقال للموت ايضا قال ثعلب يحمل على المنايا فيؤنث وقال غيره يذكر حملا على الموت ويؤنث حملا على المنية فان جعل فى فجعتنى المنون بمعنى الدهر فقوله بالفارس ظرف لغو بتقدير المضاف اى بموت الفارس وان جعل بمعنى الموت فهو ظرف مستقر اى حال كونه ملتبسا بالفارس والمعلم على صيغة اسم الفاعل من اعلم نفسه فى الحرب اذا شهرها بعلامة تعرف بها حتى ينتدب الابطال لبرازه واما المعلم على صيغة اسم المفعول فهو الذى يشار اليه ويُدَلّ عليه بانه فارس الكتيبة وواحد السرية وكان

حمزة بن عبد المطلب رضى الله عنه اعلم نفسه يوم بدر بريشة نعامة في صدره واعلم ابو دجانة سماك بن حرشة الانصارى رضى الله نفسه يوم احد بمشهرة وهي عصابة حمراء على ما صرح ابن هشام في سيرته وابن الاثير فى تاريخه فظن صاحب الاقيانوس مترجم القاموس ان مشهرة ابي دجانة السيف الذى دفعه اليه رسول الله عليه السلام يوم احد ظن لا يغنى من الحق شيئا والهياج القتال والتثويب الاستغاثة والاستصراخ قولها قل لاهل الضراء والبؤس الخ الضراء الشدة قال ابن الاثير هي نقيض السراء وهما بنا آن للمؤنث ولا مذكر لهما والبؤس شدة الحاجة ومنه البائس المسكين وبؤساله عند الترحم وقولها موتوا هذا كما يقال في الشدة بطن الارض خير لك من ظهرها تقول ان النظر والحماية لهم مختصان به فتعدمان بموته وفيه من المبالغة في المدح ما لا يخفى والمنون في سقته المنون بمعنى الدهر لا غير وشعوب كصبور المنية واختلف في صرفه ومنعه وهو في البيت مصروف للضرورة على القول بامتناعه وهذا الشعر لعاتكة رضى الله عنها مسطور فى الاستيعاب ومنه كتبته

## عاتكة بنت زيد بن عمرو بن نفيل ايضا

## رضي الله عنها

ترثي ايضا زوجها عمر بن الخطاب رضي الله عنه

من الطويل

وفجعني فيروز لا درّ درّه ... بابيض تال للكتاب منيب

رؤف على الادنى غليظ على العدى ... اخى ثقة فى النائبات نجيب

متى ما يقل لا يكذب القول فعله ... سريع الى الخيرات غير قطوب

فيروز ابو لؤلؤة غلام المغيرة بن شعبة الذي قتل عمر رضي الله عنه ولا درّ دره لاكثر خيره يستعمل فى الذم كما مر والابيض النقي العرض قال الازهري اذا قالت العرب فلان ابيض وفلانة بيضاء فالمعنى نقاء العرض من الدنس والعيوب ومن ذلك قول زهير يمدح هرم بن سنان

اشم ابيض فياض يفكك عن ايدى العُناة وعن اعناقها الرِبَقا

وقال ابن قيس الرقيات فى عبدالعزيز بن مروان

وامك بيضاء من قضاعة فى الـ بيت الذي يستظل بطنبه

وهذا كثير فى شعرهم لايريدون به بياض اللون ولكنهم يريدون المدح بالكرم ونقاء العرض واذا قالوا فلان ابيض الوجه وفلانة بيضاء الوجه اراد وانقاء اللون من الكلف والسواد الشائن انتهى والظاهر من استعمالاتهم ان ماقال الازهرى هو الغالب وليس كليا وتال من التلاوة والمنيب الراجع الى الله و فى التنزيل العزيز منيبين اليه اي راجعين الى ما امر به غير خارجين عن شيئى من امره والرؤف الرحيم العطوف والرأفة ارق من الرحمة و لا تكاد تقع فى الكراهة والرحمة قد تقع فى الكراهة للمصلحة ذكره فى النهاية والادنى الاقرب والعدى بالكسر والقصر المتباعدون والاجانب و اسم جمع العدو أوجمعه قالوا ولا نظيرله فى النعوت لان باب فعل وزان عنب مختص بالاسماء ولم يأت منه فى الصفات الاقوم عدى وضم العين لغة كذا فى المصباح والمراد بالادنى القريب بالدين وهم المسلمون و بالبعيد الكفار فيكون موافقا لقوله تعالى اشداء على الكفار رحماء بينهم والنائبات وكذا النوائب جمع نائبة وهي ماينوب الانسان من المهمات والحوادث قولها متى مايقل لايكذب القول فعله لا يكذب من الاكذاب والقول مفعوله و فعله فاعله يقال اكذبه اذا الفاه كاذبا اوقال له كذبت اوحمله على الكذب والمعنى ان فعله لايخالف قوله وهو مدح له بانجاز الوعود وايفاء العهود وبانتفاء رزيلة الكذب عنه على الاطلاق والقطوب العبوس الكلوح وهذا الشعر لعاتكة رضي الله عنها مسطور فى زهر الآداب للحصرى القيروانى ومنه كتبته ويوجد فى بعض نسخ ديوان حسان بن ثابت والله اعلم

## العباس بن مرداس السلمي

## رضي الله عنه

## فى يوم حنين واوطاس

### الترجمة

هو العباس بن مرداس بن ابى عامر بن حارثة بن عبد قيس بن رفاعة بن الحرث بن بهثة بن سُلَيم بن منصور السلمي يكنى ابا الفضل وقيل ابا العباس وقيل ابا الهيثم

اسلم قبل فتح مكة بيسير وكان من المؤلفة قلوبهم وممن حسن اسلامه منهم وكان شاعرا محسنا مشهورا بذلك روي ان عبدالملك بن مروان قال يوما وقد ذكروا الشعراء في الشجاعة اشجع الناس فى الشعر عباس بن مرداس حيث يقول

اقاتل في الكتيبة لا ابالى  احتفي كان فيها او سواها

ولعباس بن مرداس رضى الله عنه اشعار حسان فى يوم حنين نذكر شيأ كثيرا منها إنشاء الله قال صاحب الاغانى وام العباس بن مرداس الخنساء الشاعرة المعروفة بنت عمرو بن الشريد وكذلك ذكرا لسيوطى فى شرح شواهد المغنى نقلا عن ابى عبيدة وكذلك ذكر البغدادى فى شرح شواهد الرضى ثم نقل عن ابن الكلبى ان الخنساء ام ولد مرداس جميعا الا العباس ولم يذكر من امه انتهى وذكر بعض الفضلاء ان مايقال ان ام العباس بن مرداس هو الخنساء الشاعرة خطأ محض والصواب الذى لامحيد عنه ان امه سوداء زنجية وافتخر بذلك رباح بن سنيح الزنجى مولى بنى ناجية على جرير حين بلغه قوله

لاتطلبن خؤلة فى تغلب  فالزنج اكرم منهم اخوالا

فغضب رباح وقال فى قصيدته المشهورة

فالزنج ان لاقيتهم فى صفهم  لاقيت ثم جحاجحا ابطالا

فذكر فيها رجالا اشرافا من شجعان العرب الابطال منهم عباس بن مرداس السلمى وابن عمه خفاف بن ندبة وغيرهم وذكر ان امهاتهم زنجيات انتهى وسنذكر كيفية اسلام العباس ابن مرداس رضى الله عنه عند ذكر قصيدة له كافية انشاء الله تعالى

قال رضى الله عنه

من الوافر

انى والسوابح يوم جمع  ومايتلو الرسول من الكتاب

لقد اجبت مالقيت ثقيف  بجنب الشعب امس من العذاب

هموا رأس العدو من اهل نجد  فقتلهمو الذ من الشراب

البيت الاول مخروم والخرم ذهاب الفاء من فعولن اوالميم من مفاعيلن وتمامه وانى والواوفى والسوابح للقسم والسوابح جمع سابح وقدمر معناه فى شعر الخنساء وجمع بلالام علم للمزدلفة ويوم جمع يوم عرفة قال الحريرى

وانفق ماجمعت بارض جمع  واسلوبا لحطيم عن الخطام

ومايتلوالرسول عطف على السوابح قوله لقد احببت مالقيت ثقيف الخ لقد احببت جواب القسم وثقيف لقب قبيلة من هوازن واسم ثقيف قسى بن منبه بن بكر بن هوازن بن منصور بن عكرمة بن خصفة بن قيس عيلان والجنب الجانب والشعب ماانفرج بين الجبلين والمراد شعب حنين والعذاب ههنا القتل وقدكانت ثقيف كلهاشهدت حنينا واستحر القتل فيهم فى بنى مالك فقتل منهم سبعون رجلا تحت رايتهم فيهم عثمان بن عبدالله بن ربيعة بن الحرث بن حبيب وكانت رايتهم معذى الخمار فلما قتل اخذها عثمان بن عبدالله فقاتل بهاحتى قتل ولما بلغ رسول الله عليه السلام قتله قال ابعده الله انه كان يبغض قريشا وكانت راية الاحلاف مع قارب بن الاسود فلما انهزم الناس اسند رايته الى شجرة وهرب هووبنو عمه وقومه من الاحلاف فلم يقتل من الاحلاف غيررجلين رجل من بنى غيرة يقال له وهب ورجل من بنى كبة يقال له الحجاج فقال رسول الله عليه السلام لمابلغه قتل الحجاج قتل اليوم سيد شباب ثقيف الاما كان من ابن هنيدة يريد بابن هنيدة الحرث بن اوس وثقيف فرقتان بنو مالك والاحلاف نقله الجوهرى رحمه الله

هَزَمْنا الجمعَ جمعَ بنى قَسِيٍّ  وَحَكَّتْ بَرْكَها بِبَنِى رِئاب

وصِرْماً مِن هِلالٍ غادَرَتْهم  بأَوْطاسٍ تُعَفَّرُ بالتُّراب

ولولاقَيْنَ جَمْعَ بَنى كِلابٍ  لقامَ نِساؤهم والنَّقْعُ كابى

بنو قسي قبيلة ثقيف لان ثقيفا لقب قسي بن منبه وقوله وحكت بركها اى الحرب المفهومة من السياق المشبهة بالناقة وقدشاع فى كلامهم تشبيه الحرب

بالنافة واثباب الحلك لها تخييل والبرك كلكل البعير الذى يدك به الشيء وهو ترشيح او فى الكلام استعارة تمثيلية والمقصود بيان ان شدة الحرب اصابت بني رئاب وهم بطن من بني نصر بن معاوية بن بكر بن هوازن واستحر القتل فيهم فزعموا ان عبدالله بن قيس رضى الله عنه وهو احد بني وهب بن رئاب قال يارسول الله هلكت بنو رئاب فزعموا ان رسول الله عليه السلام قال اللهم اجبر مصيبتهم كذا في سيرة ابن هشام قوله وصرما من هلال الخ الصرم بالكسر الجماعة ليسوا بالكثير وهلال قبيلة وهم بنو هلال بن عامر بن صعصعة بن معاوية بن بكر بن هوازن رهط ميمونة بنت الحرث الهلالية ام المؤمنين رضى الله عنها ولم يشهد حنينا من بنى هلال الاناس قليل كما فى سيرة ابن هشام ولذلك قال وصرما من هلال وغادرتهم تركتهم واوطاس وادى ديار هوازن وفيه عسكروا هم وثقيف والتقوا بحنين ولما انهزم المشركون بحنين عسكر بعضهم باوطاس فارسل رسول الله عليه السلام اباعامر الاشعري رضى الله عنه عم ابى موسى رضى الله عنه فى اثرهم فادرك من الناس بعض من انهزم فناوشوه القتال فرمى ابوعامر رضى الله عنه بسهم رماه رجل من بنى جشم بن معاوية فادرك ابوموسى الجشمى فقتله ومات ابوعامر فولى الناس ابوموسى ففتح الله على يديه وهزمهم وادرك ربيعة بن رفيع بن اهبان بن ثلبة السلمى رضى الله عنه دريد بن الصمة فاخذ بخطام جمله وهو يظن انه امرأة وذلك انه فى شجار له فاذا برجل فاناخ به فاذا شيخ كبير فاذا هو دريد بن الصمة ولا يعرفه الغلام فقال له دريد ماذا تريد بى قال اقتلك قال ومن انت قال انا ربيعة بن رفيع السلمى ثم ضربه بسيفه فلم يغن فيه شيئا فقال بئس ماسلحتك امك خذ سيفى هذا من مؤخر الرحل وكان الرحل فى الشجار ثم اضرب به وارفع عن العظام واخفض عن الدماغ فانى كذلك كنت اضرب الرجال ثم اذا اتيت امك فقل قتلت دريد بن الصمة فرب والله يوم فيه قد منعت نسائك فزعم بنو سليم ان ربيعة قال لما ضربته فوقع تكشف فاذا عجانه وبطون فخذيه كالقرطاس من ركوب الخيل فلما رجع ربيعة الى امه اخبرها بقتله اياه فقالت اما والله لقد اعتق امهات لك ثلاثا وتعفر مضارع معلوم من تفعل بحذف احدى التائين او مجهول من فعل بالتشديد يقال عفره فى التراب يعفره بالكسر وعفره بالتشديد مرغه فيه ودسه فانعفر وتعفر والمراد قتلهم قوله ولولا قوين الخ يريد لولا قوت

جموعنا اوخيلنا وبنو كلاب قبيلة من هوازن وهم بنو كلاب بن ربيعة بن عامر بن صعصعة منهم زفر بن الحرث الكلابي ووكيع بن الجراح الفقيه ولم يشهد بنو كلاب بن ربيعة ولا بنو كعب بن ربيعة حنينا وشهدها بنو نصر بن معاوية وبنو سعد بن بكر وناس من بني هلال قليل كما مر وقوله لقام نساؤهم جواب لو اي لقامت تنوح عليهم من اجل قتلهم والنقع الغبار وكابى من كبا الغبار اذا علا وارتفع يريد العجاج الذي يثور عند وقوع القتيل وسقوطه على الرمل

ركضنا الخيل فيهم بين بُسّ  الى الاوراد تنحط بالنهاب

بذى لجب رسول الله فيهم  كتيبته تعرض للضراب

الركض استحثاث الفرس للعدو وبس بالضم ارض لبنى نصر بن معاوية قرب حنين ويقال بسى ايضا والاوراد موضع عند حنين والنهاب جمع نهب وهو الغنيمة وتحط من النحط وهو صوت الخيل من الثقل والاعياء يقول ان خيلهم اعيت واثقلت بما عليها من الغنائم لكثرتها فتصوت صوتا معروفا قوله بذي لجب اي بجيش كثير وقد مر معناه واصله فى شعر حسان بن ثابت رضى الله عنه والكتيبة القطعة العظيمة من الجيش والتعرض التصدي للشى والضراب القتال (تنبيه) حنين كزبير موضع بين الطائف ومكة يذكر على معنى المكان والبلد فيصرف كما فى قوله تعالى ويوم حنين ويؤنث على معنى البقعة فيمنع كما فى بيت حسان بن ثابت رضى الله عنه

نصروا نبيهم وشدوا ازره  بحنين يوم تواكل الابطال

عرف هذا الموضع بحنين بن مهليائيل من العمالقة على ما ذكره السهيلى وقع فيه القتال بين النبى عليه السلام وبين هوازن وثقيف سنة ثمان من الهجرة بعد فتح مكة وكان جماع امر المشركين الى مالك بن عوف النصرى فنصر الله سبحانه نبيه عليه السلام واصحابه وغنموا وسبوا كثيرا ثم اسلم مالك بن عوف كما سيجئ عند شرح قصيدته التى انشدها عند وفوده على النبى عليه السلام وهذه القصيدة لعباس بن مرداس رضي الله عنه مذكورة فى سيرة ابن هشام ومنها كتبتها

## عبدالله بن الاعور الاعشى المازنى او الحرمازى

### رضى الله عنه

يشكو زوجه الى رسول الله عليه السلام وكانت قد نشزت وخرجت من داره

### الترجمة

قال فى الاستيعاب فى باب الالف هو من بنى مازن بن عمرو بن تميم وقال فى باب العين الحرمازي المازنى من بنى مازن بن عمرو بن تميم وهو الاعشى الشاعر المازنى كانت عنده امرأة يقال لها معاذة فخرج يمير اهله من هجر فهربت امرأته بعده ناشزة فعاذت برجل منهم يقال له مطرف بن نهصل فجعلها خلف ظهره فلما قدم الاعشى لم يجدها فى بيته واخبر انها نشزت وانها عاذت بمطرف بن نهصل فاتاه فقال له يا ابن عم عندك امرأتى معاذة فادفعها الى فقال ليست عندى ولو كانت عندي لم ادفعها اليك وكان مطرف اعز منه فخرج حتى اتى النبى عليه السلام فعاذ به وانشأ يقول فذكر الابيات الثلثة التى نحن بصدد كتابتها وقال الذهبى فى التجريد عبدالله بن الاعورا والاطول الحرمازي المازنى هو الاعشى وقال صاحب الاصابة فى باب الالف الاعشى المازنى ويقال الحرمازى ومازن وحرماز اخوان من بنى تميم وقال فى باب العين عبدالله بن الاعور المازنى الشاعر وقال المرزبانى اسم الاعور روبة بن فزار بن غضبان بن حبيب بن سنين بن مكذر بن الحرماز بن عمرو بن تميم يكنى ابا شعيثة وهكذا نسبه الآمدي وقال اهل الحديث يقولون المازنى وانما هو الحرمازى وليس فى بنى مازن اعشى انتهى وقول صاحب الاستيعاب وصاحب التجريد الحرمازى المازنى مشكل لان حرمازا ومازنا اخوان على ما عرف فى انساب تميم فلا يكون المازنى حرمازيا ولا العكس ولوقوع هذا الاختلاف فى عبدالله رضى الله عنه قلت فى العنوان المازنى او الحرمازى كما قال صاحب الاصابة فى باب الالف

قال رضى الله عنه

يا سيّدَ النّاس وديّانَ العربْ  اشكو اليك ذِرْبَةً مِن الذِّرَبْ  من الرجز

خَرَجْتُ ابغيها الطّعامَ في رجب  فخلفتني بنِزاع وهَرَبْ

اَخْلَفَتِ العهدَ ولَطّتْ بالذَّنَبْ  وهُنَّ شرُّ غالب لِمَنْ غَلَبْ

الديان فعال من دان الناس اي قهرهم على الطاعة يقال دنتهم فدانوا اي قهرتهم فاطاعوا ومنه شعر الاعشى الحرمازى يخاطب النبي عليه السلام كذا فى النهاية وقوله ذربة من الذرب قال ابن الاثير كنى عن فسادها وخيانتها بالذربة واصله من ذرب المعدة وهو فسادها وذِرْبَة منقولة من ذَرِبَة كمِعْدَة من مَعِدَة وقيل اراد سلاطة لسانها وفساد منطقها من قولهم ذرب لسانه اذا كان حاد اللسان لا يبالى ماقال وقوله فخلفتني اي بقيت بعدي قال ابن الاثير ولو روي بالتشديد كان معناه تركتني وراء ظهري وقوله بنزاع اي خصومة اوشوق و رواية ابن الاثير في النهاية وحرب بالحاء المهملة قال اي خصومة وغضب وقوله ولطت بالذنب اراد منعته بضعها من لطت الناقة بذنبها اذا سدت فرجها به اذا ارادها الفحل وقيل اراد توارت واخفت شخصها عنه كما تخفي الناقة فرجها بذنبها كذا في النهاية قوله وهن شر غالب لمن غلب فاعل غلب ضمير عائد الى شر غالب والعائد الى من محذوف اي لمن غلبه والمعنى ان شر النساء وضررهن لمغلوبهن اشد واعظم من شر كل غالب وضرره قال في الاستيعاب فقال النبي عليه السلام وهن شر غالب لمن غلب يعنى تصديقا للشاعر وفيه ايضا فكتب له النبي عليه السلام الى مطرف انظر امرأة هذا معاذة فادفعها اليه فاتاه بكتاب النبي عليه السلام فقرئ عليه فقال لها يامعاذة هذا كتاب النبي عليه السلام وانا دافعك اليه فقالت خذلي العهد والميثاق وذمة النبي عليه السلام ان لا يعاقبني فيما صنعت فاخذلها ذلك ودفعها اليه وهذه الابيات للاعشى رضي الله عنه مذكورة فى الاستيعاب و منه كتبتها وقد وقع فى الاصابة ان مثل هذه القصة و هذا الشعر وقعا لشجاع بن الحرث السدوسي الصحابى رضي الله عنه والله اعلم

## عبدالله بن الحرث ابو ظبيان الغامدى

## رضي الله عنه

في يوم القادسية

### الترجمة

هو عبدالله بن كبير بالموحدة وكان اسمه عبدشمس فغيره النبي عليه السلام لما وفد عليه وكتب له كتابا والغامدي منسوب الى غامد ابى قبيلة من الازد و اسمه عمر بن عبدالله بن كعب بن الحرث ابن كعب بن عبدالله بن مالك بن نصر بن الازد بن الغوث وابوظبيان رضى الله عنه صاحب راية قومه يوم القادسية وهو القائل

من مشطور الرجز

انا ابو ظَبْيان غيرُ المُكْذَبَة ... ابى ابو العفا و خالى اللَّهَبَة

أكرمُ من تعلمه من ثعلبة ... ذبيانها وبكرها فى المنسبه

نحن صحابُ الجيش يوم الاحسبه

قوله غير المكذبة المكذبة على مفعلة بمعنى الكذب وغير بالنصب على انه مفعول مطلق مؤكد لمضمون الجملة المتقدمة كما فى قولهم هذا زيد غير ماتقول مافيه مصدرية اي قولا غير قولك ومعنى هذا زيد مثل انا ابوالنجم فمعنى انا ابوظبيان غير المكذبة انا المعروف المشهور اقول قولي هذا صدقا غير كذب وقوله وخالي اللهبة بالتحريك قال ابن الكلبي اراد باللهبة مالك ابن عوف بن قريع بن بكر بن ثعلبة وكان شريفا قلت وثعلبة هو ابن الدؤل بن سعد مناة ابن غامد واراد بثعلبة القبيلة ولذلك قال بكرها و ذبيانها على الابدال من ثعلبة اي من بكر بن ثعلبة وذبيان بن ثعلبة هكذا ذبيان في كثير من النسخ ونقل السيد المرتضى في شرح القاموس عند ذكر ذبيان ان القبيلة التى في الازد ذيبان بتقديم التحتية على الموحدة والمنسبة بمعنى النسب وقوله نحن صحاب الجيش يوم الاحسبة الصحاب جمع صاحب ويوم الاحسبة يوم كان بينهم بالسراة وهذا الشعر لابي ظبيان رضي الله عنه مسطور في الاصابة ومنها كتبته

## عبدالرحمن بن ابى بكر الصديق
## رضى الله عنهما

في ليلى بنت الجودي وكان قد عشقها ووصل اليها كما سيأتي

### الترجمة

يكنى ابا عبدالله وقيل ابا محمد بابنه محمد الذي يقال له ابو عتيق والد عبدالله بن ابى عتيق و ادرك ابو عتيق و ابوه وجده وابو جده رسول الله عليه السلام ويقال انه لم يدرك النبي عليه السلام اربعة ولا اب وبنوه الا ابو قحافة وابنه ابو بكر وابنه عبدالرحمن وابنه ابو عتيق وام عبدالرحمن ام رومان يقال بفتح الراء وضمها بنت عامر الكنانية والخلاف من ابيها الى كنانة كثير جدا واتفقوا انها من بني غنم بن مالك بن كنانة وهي ام عائشة ام المؤمنين رضي الله عنها فهو شقيقها وشهد عبدالرحمن بدرا واحدا مع قومه كافرا ودعا الى البراز فقام اليه ابوه ليبارزه فذكران رسول الله عليه السلام قال له متعنا بنفسك ثم اسلم وحسن اسلامه وصحب النبي عليه السلام في هدنة الحديبية قالوا كان اسمه عبدالكعبة فسماه رسول الله عليه السلام عبدالرحمن وكان عبدالرحمن من اشجع رجال قريش و ارماهم بسهم وحضر اليمامة مع خالد بن الوليد رضي الله عنه فقتل سبعة من كبارهم شهد له بذلك جماعة عند خالد بن الوليد وهو الذى قتل محكم اليمامة وكان من اعظم اصحاب مسيلمة واشجعهم رماه بسهم في نحره فقتله فيما ذكر جماعة من اهل السير ابن اسحق وغيره وكان محكم اليمامة قد سد ثلمة من الحصن فدخل المسلمون من تلك الثلمة وكان عبدالرحمن اسن ولد ابي بكر رضى الله عنه وقال الزبير وكان امرأ صالحا وفيه دعابة ونفله عمر بن الخطاب رضي الله عنه ليلى بنت الجودي حين فتح دمشق وكان قد رأها قبل ذلك فكان يشبب بها وله فيها اشعار وكان ابوها عربيا من غسان امير دمشق وتوفي عبدالرحمن رضي الله عنه فجأة بموضع يقال له الحُبْشى على نحو عشرة اميال من مكة وحمل الى مكة فدفن بها ويقال انه توفي فى نومة نامها ولما اتصل خبر موته باخته عائشة ام المؤمنين رضي الله عنها ظعنت من المدينة حاجة حتى وقفت على قبره فبكت عليه وتمثلت بقول مُتَمِّم بن نويرة فى اخيه مالك بن نويرة

وكنا كندماني جذيمة حقبة  من الدهر حتى قيل لن يتصدعا

فلما تفرقنا كأني ومالكا  لطول اجتماع لم نبت ليلة معا

وقالت اما والله لو حضرتك لدفنتك حيث مت مكانك ولو حضرت ما بكيتك ومما شبب بليلى بنت الجودي قوله

من الرمل

يا ابنة الجودي قلبي كئيب  مستهام عندها ما ينيب

جاورت اخوالها حي عك  فلعك من فؤادي نصيب

ولقد قالوا فقلت دعوها  ان من تنهون عنه حبيب

انما ابلى عظامي وجسمي  حبها والحب شيء عجيب

الكئيب الحزين والمستهام الهائم المتحير من العشق وما ينيب مايرجع عن حبها وعك ابن عدثان بالثاء المثلثة ابن عبدالله بن الازد وقيل عك ابن عدنان قوله ولقد قالوا اي دع حبها وقوله فقلت دعوها اي محبوبة الي كما هي كما افصح عنه قوله ان من تنهون عنه حبيب وكان عبدالرحمن احب بنت الجودي حبا شديدا واعجب بها وقدمها على جميع نسائه فلامته عائشة رضي الله عنها على مايصنع بها فقال يا أخية دعيني فوالله لكأني ارشف من ثناياها حب الرمان ثم ملها وهانت عليه حتى شكت ذلك الى عائشة رضي الله عنها فقالت له يا عبدالرحمن لقد احببت ليلى فافرطت وابغضت ليلى فافرطت فاما ان تنصفها واما ان تجهزها الى اهلها فجهزها الى اهلها وهذا الشعر لعبدالرحمن بن ابي بكر رضي الله عنهما مسطور في الاغاني لابي الفرج الاصفهاني ومنه كتبته

علي بن ابي طالب

رضي الله عنه

فى مبارزته وقتله عمرو بن عبدود العامرى يوم الخندق

## الترجمة

هو على بن ابى طالب بن عبد المطلب بن هاشم بن عبد مناف القرشى الهاشمى يكنى ابا الحسن وكناه النبى عليه السلام ابا تراب فكان يحب هذه الكنية وسبب تكنيته عليه السلام اياه انه عليه السلام دخل على فاطمة رضى الله عنها فلم يجد عندها عليا رضى الله عنه فقال اين ابن عمك قالت هو ذاك مضطجع فى المسجد فجاء رسول الله عليه السلام فوجده قد سقط الرداء عن ظهره وخلص التراب الى ظهره فجعل يمسح التراب عن ظهره ويقول اجلس ابا تراب قال سهل بن سعد رضى الله عنه ما كان اسم احب اليه منه والحديث اخرجه البخارى فى صحيحه فى باب مناقب على رضى الله عنه وما احسن ماقال بعضهم

اذا ما مقلتى رمدت فكحلى ... ترب من نعال ابى تراب

هو البكاء فى المحراب ليلا ... هو الضحاك فى يوم الضراب

وانشد صاحب القاموس فى البصائر

انا وجميع من فوق التراب ... فداء تراب نعال ابى تراب

وام على رضى الله عنه فاطمة بنت اسد بن هاشم بن عبد مناف قال فى الاستيعاب قيل انها ماتت قبل الهجرة وليس بشئ والصواب انها هاجرت الى المدينة وبها ماتت وروى ذلك بسند اخره الشعبى ثم قال وقال الزبير هى اول هاشمية ولدت لهاشمى قال وقد اسلمت وهاجرت الى رسول الله عليه السلام قال ابو عمر وروى سعد ان بن الوليد الساترى عن عطاء بن ابى رباح عن ابن عباس رضى الله عنهما قال لما ماتت فاطمة ام على رضى الله عنه البسها رسول الله عليه السلام قميصه واضطجع معها فى قبرها فقالوا ما رأيناك صنعت ماصنعت بهذه فقال انه لم يكن احد بعد ابى طالب ابر بى منها انما البستها قميصى لتكسى من حلل الجنة واضطجعت معها ليهون عليها انتهى وكان على رضى الله عنه اصغر ولد ابى طالب والذى عليه الثقات الاثبات انه اول الناس ايمانا بعد خديجة رضى الله عنها ومايقال ان ابابكر رضى الله عنه

اسلم قبله فانما هو لان ابابكر اظهر الاسلام وعلي اخفاه مدة قال ابو عمر في الاستيعاب سئل محمد بن كعب القرظي عن اول من اسلم علي او ابوبكر فقال سبحان الله على اولهما اسلاما وانما شبه على الناس لان عليا اخفى الاسلام من ابي طالب واسلم ابوبكر فاظهر اسلامه ولاشك ان عليا اولهما اسلاما انتهى واختلف في سنه حين اسلم على اقوال فيما بين ثماني الى ست عشرة سنة قال ابو عمر بعد آخر الاقوال التي نقلها وهو انه اسلم وهو ابن ثلاث عشرة وتوفي وهو ابن ثلاث وستين هذا اصح ماقيل في ذلك وكان معه لواء رسول الله عليه السلام في اكثر الغزوات وهو ابن عمه عليه السلام وختنه على ابنته فاطمة سيدة نساء الجنة وابو الحسنين سيدي شبان اهل الجنة ومن اصحاب العباء وهم خمسة نفر اضطجعوا تحت عباءة واحدة وهم النبي عليه السلام وعلى وفاطمة وابناهما الحسن والحسين رضوان الله عليهم وهو الذي قال له النبي عليه السلام لما خلفه على اهله وامره بالاقامة حين توجه لغزوة تبوك الاترضى ان تكون مني بمنزلة هرون من موسى الا انه لانبي بعدي وشهد مع النبي عليه السلام جميع مشاهده الا تبوك وهو الذي ربي في حجر النبي عليه السلام ولم يزل بعد النبي عليه السلام متصديا لنشر العلم والفتيا وكفاه فضلا بهذه المناقب وهي اكثر من ان تحصى بويع له بالخلافة بعد عثمان رضي الله عنه في ذي الحجة سنة خمس وثلاثين ورزق الشهادة في ليلة السابع عشر من رمضان سنة اربعين من الهجرة فمدة خلافته خمس سنين الا ثلثة اشهر ونصف شهر ثم ان العلماء اختلفوا في الشعر المنسوب الى علي رضي الله عنه قال الما زني لم يصح انه تكلم بشيء من الشعر غير هذين البيتين وصوبه الزمخشري وهما

تلكم قريش تمنـاني لتقتلني ... فلا وربك مابروا ولاظفروا
فان هلكت فرهن ذمتي لهمو ... بذات ودقين لاتعفو لهـا اثر

كذا نقل صاحب القاموس وهذا القول غريب فقد روى ثقات العلماء لعلي رضي الله عنه شعرا غير هذ بن البيتين قال ثعلب في قوله انا الذي سمتني امي حيدره لم يختلف الرواة ان هذ الرجز له وايضا قد اشتهر في كتب المغازي والسير انه له وقال ابو العباس المبرد في الكامل ومن شعر علي بن ابي طالب رضي الله عنه الذي لااختلاف فيه انه قاله وانه كان يردده ان الخوارج لما ساموه ان يقر بالكفر ويتوب

حتى يسيروا معه الى الشام فقال ابعدصحبة رسول الله عليه السلام والتفقه فى الدين ارجع كافرا

ياشاهدالله علي فاشهد  انى على دين النبي احمد
من شك فى الله فانى مهتدى

و يروى انى توليت ولى احمد وقد نقل العلماء عن المازنى انه استقبح ضمير المتكلم بعدالموصول فى اناالذى سمتنى امي حيدره وقال لولااشتهار مورده لرددته فهو نفسه معترف بانه اشتهرانه لعلى رضى الله عنه ولذلك كف عن رده وقداشتهرعنه اشعاربحيث لاتطمئن النفوس الى انه لم يقل غير البيتين المذكورين فى القاموس حتى ان صاحب القاموس عزا اليه فى خ ي س قوله فى بنائه محبسا سماه نافعا و آخرسماه مخيسا قوله

الم ترنى كيسا مكيسا  بنيت بعد نافع مُخَيَّسَا
باباحصينا واميناكَيِّسا

و سنأتى به فى باب السين مشروحا ان شاء الله تعالى و قال الشعبي وكفاك به قدوة كان ابو بكر شاعرا وكان عمر شاعرا وكان على اشعر الثلثة ذكره ابن عبدالبر وعن سعيد بن المسيب مثل قول الشعبي ذكره الشيخ ابن عبدربه فى العقد الفريد وبعد فان الشعرله فضل معروف نطقت به السنة حكماء العرب وعلمائها وورد فى الحديث ان من الشعر لحكمة وان النبي عليه السلام كان يستنشد الصحابة رضى الله عنهم وينشدونه وكان يعجبه اشعارهم وكان يأمر بعض شعرائهم ان ينصروا الاسلام ويذبوا عنه بالشعر فقد كان احد انواع السلاح ولم يزل ابطال المسلمين ينشدونه فى مصافّهم ومتبارزهم وعلى رضي الله عنه فى اعلى طبقات اهل العلم والحكمة والشجاعة فكيف يقال بانه لم يقل غير بيتين من الشعر ويبعد كل البعداذا ارتجز الابطال فى مواطن الحروب خصوصا الذين دعوا اللبراز كعمرو بن عبد ودالعامرى ومرحَب اليهودي ان يسكت علي رضى الله عنه ولا يجيب مع قدرته وخروجه للمبارزة بل هذالعمرى ممالايمكن ان يقع فان قال قائل ان النبي عليه السلام لم يكن يقول الشعر فلذلك لم يقله على رضى الله عنه فالجواب ان حكمة عدم قوله عليه السلام الشعر معلومة وهذه الحكمة لاتوجد فى على رضى الله عنه

على ان الشيئى قديكون مدحافيه عليه السلام وكمالاله ويكون ضده مدحافى احاد امته وكمالاً لهم الايرى انصنة الامية مدح فيه عليه السلام وكمال له مع ان عليا رضى الله عنه كان من احسن كتاب عصره وكان مدحافيه وكمالاله وكان يكتب للنبى عليه السلام نعم ينسب الى على رضى الله عنه شيء كثيرمن الشعر فلسنا نقول ان كل ذلك له فان فيمانسب اليه من الديوان المعروف شعرانص العلماء على انه ليس له فمنه فى الديوان

قال المنجم والطبيب كلا هما  لايحشر الاموات قلت اليكما
ان صح قولكما فلست بخاسر  وان صح قولى فالخسار عليكما

فقدقال الامام الغزالى رحمه الله فى كتاب الاربعين الذى الفه بعد الاحياء فى التوبيخ والتأنيب على منكرى الحشر حتى ان الشاعرمع ركاكة عقله تنبه لذلك وقال فانشد البيتين فلاشك ان الغزالى عرف ان البيتين ليسا لعلى رضى الله عنه اذوصف قائلهمابركاكة العقل هذا وان البيتين لابى العلاء المعرى مثبتان فى ديوانه المعروف بلزوم مالا يلزم مع ابيات اخر وقيل ان الديوان المنسوب لعلى رضي الله عنه انما هو للشريف المرتضى الشيعى صاحب كتاب الدرر والغرر و انا اذا وجدت شعراله في كتب الثقاة كسيرة ابن اسحق وابن هشام وكامل المبرد والروض الانف للسهيلى و نحوها اكتبه انشاءالله وها نحن نبدأ فى شرح شعر له يوم الخندق حين قتل عمرو بن عبد ودالعامري قال السهيلى فى الروض الانف ان عمرو بن عبدود العامري دعا للبراز يوم الخندق فاستأذن على رضي الله عنه رسول الله عليه السلام ان يخرج اليه فلم يأذن له ثم الح عمرو فى الدعوة فاستأذن على رضي الله عنه مرة ثانية فلم يأذن له ثم استأذن ثالثة فاذن له وكان عمرو على فرسه وعلي راجلا فدعاه للنزول فنزل له فبعد ماجرى بينهما كلام اقبل عمرو نحو على واستقبله على رضي الله عنه بدرقته فضربه عمرو فيها وقدها واثبت فيها السيف واصاب رأسه فشجه وضربه على رضي الله عنه على حبل العاتق فسقط وثار العجاج و سمع رسول الله عليه السلام التكبير فعلم ان عليا رضي الله عنه قد قتله ثم يقول على رضي الله عنه

من الكامل  اعلي يقتحم الفوارس هكذا  عنى و عنه اخروا اصحابى

فاليوم تمنعنى الفرار حفيظتى ومصمم فى الرأس ليس بناب

ادى عمير حين اخلص صقله صافى الحديدة يستفيض ثوابى

قوله اعلى يقتحم الفوارس الخ الاقتحام الدخول فى الامر بلا تثبت ولا روية وهكذا اي مثل هذا الاقتحام الذى فعله عمرو بن عبدود اي ماينبغى لهم ان يقتحموا علي فانى مهلكهم و قوله اخروا بمعنى تأخروا من اخر بمعنى تأخر كقدم بمعنى تقدم فى القاموس وتأخر واخر تأخيرا استأخر وفى حديث جنازة ابن ابيّ اخر عنى ياعمر اي تأخر فلاحاجة الى تقدير المفعول كما فعله الميدى فى شرح الديوان المنسوب الى على رضي الله عنه حيث قال اي انفسكم و اصحابى منادى يحذف حرف النداء يقول خلونى وحدى معه ولا تعينونى فانا غالب عليه باذن الله قوله فاليوم تمنعني الفرار الخ الفرار مفعول تمنعنى وحفيظتى فاعله والحفيظة الغضب لماينبغى ان يغضب له والحمية والمصمم على صيغة اسم الفاعل السيف المضي فى العظم قال الفرزدق يمدح الحجاج ويشبهه بالسيف

وما هو الا كالحسام مجردا يصمم احيانا وحينا يطبق

والتطبيق اصابة السيف المفصل حتى يبين العضو وقوله ليس بناب من نبا السيف اذا ارتفع عن االضريبة و لم يعمل فيها قوله ادى عمير الخ صغره للتحقير والصقل التجلية وهو مفعول اخلص وصافى الحديدة ازاد به السيف وهو مفعول صقله ويستفيض اي يتشر ويعم الصقل وجملة يستفيض حال من صقله وثوابى مفعول ادى قال السهيلى اي ادى الي ثوابى حين اخلص صقله واحسن جزائى

فغدوت التمس القراع بمرهف عضب مع البتراء فى اقراب

آلى ابن عبد حين شد اليّة وحلفت فاستمعوا من الكذاب

ان لا يفر و لا يهلل فالتقى رجلان يلتقيان كل ضراب

قوله فغدوت الخ غدوت صرت والقراع المقارعة بالسيوف والمرهف المشحذ المصقول وقدمر والعضب القاطع والبتراء النافذة الماضية تكون صفة للحجة وللحديدة وهي ههنا للحديدة والاقراب مصدر اقرب اذا جعل السيف في القراب او اتخذلها قرابا اي غمدا ومعنى كونها فى اقراب ان السيف لابدلها من القراب قوله آلى ابن عبد الخ آلى من الايلاء وهو القسم اي اقسم وابن عبد عمرو بن عبدود العامري من بني عامر بن لؤى ثم احد بني مالك بن حسل و يقال له عمرو بن عبد ايضا كما في سيرة ابن هشام ولذلك قال ابن عبد وشد بمعنى كر فى الحرب والالية على فعيلة اليمين وقوله من الكذاب يريد عمرا قوله ان لايفر ولا يهلل يجوز ان ينتصب المضارعان على ان ان مصدرية وان يرتفعا على انها مفسرة لان فى الايلاء معنى القول ومعنى الايهلل لايرجع ولا ينكص وفى قصيد كعب بن زهير رضى الله عنه

لايقع الطعن الا فى نحورهم ومالهم عن حياض الموت تهليل

اي نكوص وتأخر وقيل ارادان لايتشهد شهادة الحق من هلل اذا قال لااله الاالله وروى مكان فالتقى رجلان فالتقى اسد ان وقوله كل ضراب بالنصب على المصدر لقوله يلتقيان لانه فى معنى يتضاربان كما فى قول الراجز وانبت فعل السائر المحقحق لان الانبتات والحقحقة فى معنى واحد وهو الاستعجال فى السير اولفعل محذوف يدل عليه الكلام اى يتضاربان

نَصَرَ الحجارةَ من سفاهة رأيه ونصرتُ ربَّ محمّد بصواب

فصدرتُ حين تركته متجدلًا كالجذع بين دكادكٍ و رواب

وعففتُ عن أثوابه ولو انّنى كنتُ المقطّر بزّنى أثوابى

لا تحسبنّ الله خاذلَ دينه ونبيه يامعشر الاحزاب

قوله نصر الحجارة الخ يريد ان عمرا نصر الاصنام وروى عبد الحجارة وعبدت رب محمد قوله فصدرت حين تركته الخ صدرت رجعت و متجدلا ملقى

على الجدالة وهى الارض يقال جدله بالتخفيف وجدله بالتشديد فتجدل وانجدل والدكادك جمع دكدك كجعفر ويكسر من الرمل ماتكبس واستوى وروابى جمع رابية وهى الهضبة قوله وعففت عن اثوابه الخ عففت كففت وقوله ولوانى بالقاء حركة الهمزة على واولو والمقطر على صيغة اسم المفعول الملقى على القطر اى الجانب يقال قطره القاه على قطره وقوله بزنى اثوابى اى انتزعها منى وسلبها ومنه قولهم من عزبز اى من غلب سلب يقول انى عففت عن اثوابه ولو انه قتلنى لسلب اثوابى ولم يظهر المروءة وفى الروض الانف عن ابن اسحق ان عليا رضى الله عنه بعدما قتل عمرا اقبل الى رسول الله عليه السلام وهو متهلل فقال له عمر بن الخطاب رضى الله عنه هلا سلبته درعه فانه ليس فى العرب درع خير منها فقال انى حين ضربته استقبل الى بسوأته فاستحييت منه ان استلبه وخرجت خيله منهزمة حتى اقتحمت الخندق فمن هنالك لم يأخذ على رضى الله عنه سلبه وقيل تنزه عن اخذه وهذا الشعر لعلى رضى الله عنه من بيت نصر الحجارة مسطور فى سيرة ابن هشام عن ابن اسحق قال ابن هشام واكثر اهل العلم بالشعر يشك فيها لعلى رضى الله عنه ومن اول القصيدة الى بيت نصر الحجارة مسطور فى الروض الانف للسهيلى برواية البكائى عن ابن اسحق رحمه الله

## عمرو بن المُسَبِّح الطّائى الثُّعلى

## رضى الله عنه

### فى كبرسنه وشيخوخته

### الترجمة

قال فى الاصابة عمرو بن المسبح بضم الميم وفتح المهملة وتشديد الموحدة المكسورة وبعدها مهملة وضبطه ابن دريد فى الاشتقاق على وزن عظيم ابن كعب بن عصر بن غنم بن حارثة ابن ثوب بضم المثلثة وفتح الواو بعدها موحدة ابن معن بن عتود بمثناة خفيفة مضمومة ابن عش بفتح المهملة وتشديد المعجمة ابن ابن ثعل بضم المثلثة وفتح المهملة ثم لام ابن عمرو بن الغوث بن طيئ الطائى

الفارس المشهور المعمر قال ابن الكلبي والطبرى عمر مائة وخمسين سنة ثم وفد على النبي عليه السلام وهو الذى عناه امرؤ القيس بقوله

رب رام من بنى ثعل  مخرج كفيه من سترة

وكذا قال ابن عبد البر وابن شاهين انتهى وقال ابوحاتم فى كتاب المعمرين عاش فيما زعموا حتى ادرك النبي عليه السلام وهو ابن خمسين ومائة سنة ومات فى زمن عثمان بن عفان رضى الله عنه وهو القائل

من الوافر

لقد عمرت حتى شف عمرى  على عمر ابن عكوة وابن هب

وعمر الحنظلى وعمر سيف  وعمر بن الرداة قريع كعب

قوله شف عمرى اي زاد من الشف وهو الزيادة ويجيء بمعنى النقصان ايضا فهو من الاضداد يقال شف الدرهم يشف من الباب الثانى اذا زاد واذا نقص وابن عكوة هو حامل ابن حارثة بن عمرو بن مالك بن عكوة من طيء قال ابو حاتم عاش ثلاثين ومائتى سنة واما ابن وهب فقال فى الاصابة بعد ما انشد هذا البيت يشير الى رجلين معمرين من قومه ومقتضى ذلك ان ابن وهب ايضا من طيء كابن عكوة لكنا لم نجد فى المعمرين من طيء من يقال له ابن وهب ووجدنا فى كتاب المعمرين لابى حاتم ان سنان بن وهب بن تيم الادرم بن غالب بن فهر عاش دهرا طويلا وهو ليس من طيء بل من قريش فلعله هو المراد ههنا والحنظلى هو همام بن رياح بن يربوع بن حنظلة بن مالك بن زيد مناة بن تميم عاش مائة وثمانين سنة على ما ذكره ابوحاتم فى كتاب المعمرين وسيف الذى ذكره الظاهر انه ابن ذى يزن الحميرى الملك المعروف وابن الرداة عبد يغوث بن كعب بن الرداة بن ذهل بن كعب بن قعين بن مالك بن النخع بن عمرو بن علة بن جلد بن ادد بن مالك بن يشجب اوابوه كعب بن الرداة فقد ذكر ابوحاتم كليهما فى المعمرين وقال عاش كعب بن الرداة ثلثمائة سنة وعاش ابنه عبد يغوث سبعين ومأة سنة وقوله قريع كعب اى سيدهم من قرعه اذا اختاره وكعب هو ابن قعين بطن من النخع وصفه

بانه سيد قومه والبيتان مسطوران فى كتاب المعمر بن لابى حاتم السجستانى رحمه الله ومنه كتبتهما

## فاطمة الزهراء بنت رسول الله

## صلى الله على ابيها ورضى عنها

ترثى والدها سيد البشر صلى الله عليه وسلم

### الترجمة

هى فاطمة بنت امام المتقين ورسول رب العالمين الى الخلق اجمعين محمد بن عبدالله بن عبد المطلب بن هاشم الهاشميته صلى الله على ابيها ورضى عنها قال فى الاصابة قال ابن جريج قال لى غير واحد كانت فاطمة اصغر بنات رسول الله عليه السلام وقال صاحب الاستيعاب بعد نقل الاختلاف فى ايتهن اصغر واكبر والذى تسكن اليه النفس على ماتوا ترت الاخبار فى ترتيب بنات النبي عليه السلام ان زينب الاولى ثم الثانية رُقَيَّة ثم الثالثة ام كلثوم ثم الرابعة فاطمة الزهراء صلى الله على ابيهن ورضي عنهن والراجح من الاقوال فى تاريخ ولادة فاطمة رضي الله عنها انها ولدت سنة بنيت الكعبة والنبي عليه السلام ابن خمس وثلاثين سنة وتزوجها على رضي الله عنه فى اوائل المحرم سنة اثنتين او فى رجب سنة مقدمهم المدينة و بنى بها بعد ولها ثمانى عشرة سنة وكان سن على رضي الله عنه احدى وعشرين سنة فولدت له حسنا وحسينا ومُحَسِّناً وام كلثوم وزينب ورقية فماتت رقية ولم تبلغ ومات محسن ايضا صغيرا و لم يتزوج عليها على رضي الله عنه حتى ماتت ولم يبق للنبي عليه السلام عقب الا من فاطمة رضى الله عنها وتوفيت بعد النبي عليه السلام بستة اشهر فى اشهر الروايات وهى افضل بناته عليه السلام لقوله عليه السلام افضل نساء اهل الجنة خديجة بنت خويلد وفاطمة بنت محمد ومريم بنت عمران و آسية بنت مزاحم امرأة فرعون ولان سائرهن متن فى حياته صلى الله عليه وسلم فكن فى صحيفته ومات عليه السلام فى حياتها فكان فى صحيفتها ولا يقدر قدر ذلك الا الله وقالت عائشة رضى الله عنها مارأيت احدا كان اشبه كلاما وحديثا برسول الله عليه السلام من فاطمة وكانت اذا دخلت عليه قام اليها فقبلها ورحب بها كما كانت تصنع هى به عليه السلام

وقالت عائشة رضي الله عنها مارأيت احدا كان اصدق لهجة من فاطمة الا ان يكون الذى ولدها صلى الله عليه وسلم ويروى ان رسول الله عليه السلام كان اذا قدم من غزوة اوسفر بدأ بالمسجد فصلى فيه ركعتين ثم يأتى فاطمة رضي الله عنها ثم يأتى ازواجه وقالت عائشة رضي الله عنها كانت ازواج النبي عليه السلام عنده فاقبلت فاطمة رضي الله عنها تمشي فلما رأها قال مرحبا بابنتى فاجلسها الى جنبه ثم سارها فبكت بكاأ شديدا فقلت لها خصك رسول الله عليها لسلام من بيننا بسر فبم تبكين فلما رأى حزنها سارها ثانية فضحكت فلما قام رسول الله عليه السلام سالتها عما سارها فقالت ما كنت لافشي سر رسول الله عليه السلام فلما توفى رسول الله عليه السلام استخبرتها عنه فقالت حين سارنى فى الاولى اخبرنى ان جبريل كان يعارضني بالقرأن كل عام مرة وانه قد عارضني العام به مرتين ولا ارى الاجل الاقد اقترب فاتقي واصبرى فانى نعم السلف لك وانك اول اهلى لحوقا بى فبكيت لذلك وحين سارنى الثانية قال الاترضين ان تكونى سيدة نساء العالمين او سيدة نساء هذه الامة والحديث اخرجه الشيخان وتوفيت فاطمة رضي الله عنها ليلة الثلثاء لثلث خلون من شهر رمضان سنة احدى عشرة وهي بنت تسع وعشرين سنة وصلى عليها العباس بن عبد المطلب رضي الله عنه وقيل ان عليا رضي الله عنه صلى عليها صلى الله على ابيها رسول الله ورضي عنها قالت رضي الله عنها

من البسيط

انا فقدناك فقد الارض وابلها ... وغاب مذ غبت عنا الوحى والكتب

فليت قبلك كان الموت صادفنا ... لما نعيت وحالت دونك الكثب

قولها انا فقدناك الخ فقد الارض مفعول مطلق للنوع اي فقدا كفقد الارض والوابل المطر الكبير القطر وقولها وغاب مذ غبت الخ تريد انقطاع نزول الوحي بعد وفاته عليه السلام قولها فليت قبلك الخ اسم ليت ضمير الشان المحذوف وخبرها جملة كان الموت صادفنا كما ذكر الرضي وغيره فى قول يزيد بن الحكم الثقفي

فليت كفافا كان خيرك كله ... وشرك عني ما ارتوى الماء مرتو ٠

ان اسم ليت ضمير الشان المحذوف على رواية خيرك بالرفع وكفافا خبر كان وجملة كان مع معموليه خبر ليت وكذا ذكروا فى قول الاخر

فليت دفعت الهم عني ساعة  فبتنا على ماخيلت ناعمي بال

ان اسم ليت ضمير الشان المحذوف والفعلية بعدها خبرها و قبلك ظرف لصادفنا و قولها لما نعيت على صيغة المجهول المخاطب والنعي الاخبار بالموت وحالت من الحيلولة والكثب بضمتين جمع كثيب و هو التل من الرمل تريد لما ووريت فى التراب وتمنيها هذا رضي الله عنها عبارة عن اظهار عظم الخطب وتفاقم المصيبة على ماهو الجاري من عادة المصاب ان يقول ياليتنى مت قبل هذا وكنت نسيا منسيا وفى صحيح البخارى برواية انس بن مالك رضى الله عنه ان النبى عليه السلام لما دفن قالت فاطمة رضى الله عنها يا انس اطابت نفوسكم ان تحثوا على رسول الله عليه السلام التراب قال الفاضل القسطلانى سكت انس رضى الله عنه عن جوابها رعاية للادب ولسان حاله يقول لم تطب انفسنا ولكنا قهرنا على فعل ذلك امتثالا لامر النبى عليه السلام انتهى وقد عاشت فاطمة رضى الله عنها بعد رسول الله عليه السلام ستة اشهر فما ضحكت فى تلك المدة وحق لها ذلك قال الامام السهيلى وقد كان موته عليه السلام خطبا كالحا ورزأ فى الاسلام فادحا كادت تهد له الجبال وترجف الارض وتكسف النيران لانقطاع خبر السماء مع ما آذن به موته عليه السلام من اقبال الفتن الشحم والحوادث الدهم والكرب المدلهمة فلولا ما انزل الله من السكينة على المؤمنين واسرج فى قلوبهم من نور اليقين وشرح صدورهم من فهم كتابه المبين لانقصمت الظهور وضاقت من الكرب الصدور ولعاقهم الجزع عن تدبير الامور ولقد كان من قدم المدينة يومئذ من الناس اذا اشرفوا عليها سمعوا لاهلها ضجيجا وللبكاء فى ارجائها عجيجا وحق ذلك لهم ولمن بعدهم كما روي عن ابى ذؤيب الهذلى رحمه الله تعالى قال بلغنا ان رسول الله عليه السلام عليل فاستشعرنا حزنا وبت باطول ليلة لايجاب ديجورها ولايطلع نورها فظللت اتاسى طولها حتى اذا كان قرب السحر اغفيت فهتف بى هاتف وهو يقول

خطب اجل اناخ بالاسلام  بين النخيل ومعقد الآطام

قبض النبى محمد فعيوننا  تهمى الدموع عليه بالتسجام

قال فوثبت من نومى فزعا فلم ارالا سعد الذابح فتفاءلت به ذبحا يكون فى العرب وعلمت ان النبى عليه السلام قد قبض فركبت ناقتى وسرت فقدمت المدنية ولاهلها ضجيج بالبكاء كضجيج الحجيج فقلت مه فقالوا قبض رسول الله عليه السلام فجئت المسجد فوجدته خاليا فاتيت رسول الله عليه السلام فوجدت بابه مرتجا وقيل هو مسجى فدخلا به اهله فقلت اين الناس فقيل فى ثقيفة بنى ساعدة فجئتهم فتكلم ابوبكر رضى الله عنه فلله دره من رجل لا يطيل الكلام ومديده فبايعوه ورجع فرجعت معه فشهدت الصلاة على النبى عليه السلام ودفنه انتهى كلام السهيلى وهذان البيتان لفاطمة رضى الله عنها مسطوران فى العقد الفريد لا بن عبد ربه ومنه كتبتهما

## فاطمة الزهراء بنت رسول الله

## صلى الله على ابيها و رضى عنها

بعد وفاة والدها رسول الله صلى الله عليه وسلم

قد كان بعدك انباء وهنبثة  لو كنت شاهدها لم تكثر الخطب

انا فقدناك فقد الارض وابلها  فاختل قومك فاشهدهم ولا تغب

الانباء جمع نبأ وهو الخبر او العظيم منه والهنبثة كدحرجة واحدة الهنابث وهى الامور الشديدة والهنبثة الاختلاط فى القول والنون زائدة كذا فى النهاية وقولها لو كنت شاهدها اى حاضرها والخطب جمع خطبة وقولها فاختل قومك تريد ما وقع بينهم من الاختلاف فى بعض الامور المعروفة وقولها ولا تغب بارفع لقافية وهذان البيتان لفاطمة رضى الله عنهما مسطور ان فى النهاية لا بن الاثير ومنها كتبتهما وقال فى لسان العرب بعد عزوهما الى فاطمة رضى الله عنها وقد ورد هذا الشعر فى حديث آخر قال لما قبض النبى عليه السلام خرجت صفية تلمع بثوبها وتقول البيتين انتهى يقال لمع بثوبه والمع به اذا رفعه وحركه ليراه غيره فيجيء اليه

## قَطَن بن حارثة العُلَيْمِىّ

رضي الله عنه

يخاطب النبى عليه السلام حين وفد عليه مع قومه ويمدحه

الترجمة

هو من بنى عليم بن جناب بن كلب بن وبرة من قضاعة قال المرزبانى وفد على النبى عليه السلام مع قومه فاسلم وانشد النبى عليه السلام

رأيتُك يا خير البَرِّيَّة كلّها ... نَبَتَّ نُضاراً فى الارومة من كعب — من الطويل

اَغَرّ كأنّ البدر سُنَّة وجهه ... اذا ما بدا للناس فى خِلَلِ العَصْب

اقمت سبيلَ الحق بعد اعوجاجها ... ودِنْتَ اليتامى فى السِّقاية والجَدْب

البرية الخلق وهو فعيلة اما من برأ الله الخلق اي خلقهم فخفف همزتها وقرأ نافع وابن ذكوان خير البريئة وشر البريئة على الاصل واما من براه يبروه بروا اي خلقه من البرى وهو التراب فهو غير مهموز ويجمع على البرايا والبريات والنضار بالضم ويكسر الذهب والخالص من كل شئ وخشب للاوانى ومنه كان منبر النبى عليه السلام وقدحه وفى حديث عاصم الاحوال رأيت قدح رسول الله عليه السلام عند انس وهو قدح عريض من نضار والارومة بالفتح وتضم الاصل وكعب هو ابن لؤي من اجداد النبى عليه السلام شبه النبي عليه السلام بالنضار وجعله من منبت واصل حسن قوله اغر كأن البدر الخ الاغر الابيض المستنير وسنة وجهه حره او دائرته وفى الكلام التشبيه المقلوب والاصل كأن سنة وجهه البدر وقوله فى خلل العصب الخلل محركة منفرج مابين الشيئين وبالكسر بمعنى بين والعصب غيم احمر يكون فى سنى الجدب قوله

اقمت سبيل الحق الح السبيل مما يذكر ويؤنث كالطريق ولذلك صح تأنيث ضميره في اعوجاجها وقوله ودنت اليتامى من الدين بمعنى التدبير اي دبرت امرهم اومن دنته ادينه اذا احسنت اليه وقوله في السقاية والجدب اي في الخصب والقحط اي على كل حال ولما انشد قطن رضي الله عنه هذا الشعر للنبي عليه السلام رد عليه خيرا وكتب له كتابا ذكره ابن قتيبة في كتاب غريب الحديث وقال فيه شهد بذلك سعد بن عبادة وعبدالله ابن انيس وغيرهما وكتب ثابت بن قيس بن شماس كذا في الاصابة وصورة كتابه صلى الله عليه وسلم لقطن بن حارثة على مافي بعض المعتبرات هذا كتاب من محمد لعمائر كلب واحلافها ممن ظأره الاسلام من قطن بن حارثة العليمي باقامة الصلاة لوقتها وايتاء الزكاة بحقها في شدة عقدها ووفاء عهدها بمحضر من شهود المسلمين وسمى جماعة منهم دحية بن خليفة الكلبي وسعد بن عبادة وعبدالله بن انيس عليهم من الهمولة الراعية البساط الظئار في كل خمسين ناقة ذات عوار والحمولة المائرة لهم لاغية وفي الشَّوِيّ الوَرِيّ مسنّة حامل اوحائل وفيما سقى الجدول من العين المعين العشر وفي العثري شطره بقيمة الامين لايزاد عليهم وظيفة ولايفرق عَهدَ على ذلك الله ورسوله وكتب ثابت بن قيس بن شماس وتفسير ذلك ان العمائر جمع عمارة بالفتح اصغر من القبيلة والاحلاف المحالفون لهم والمعاهدون ومن ظأره الاسلام اي من جمعه الاسلام والهمولة بفتح الهاء هي التي ترعى بنفسها بان تكون سائمة والبساط التي معها اولادها والظئار بالفتح والكسر مصدر ظأرت الناقة وظأرت هي اذا عطفتها او عطفت على غير ولدها وبالضم جمع ظئر بمعنى المرضعة قوله ناقة بالرفع مبتدأ والظرف وهو عليهم خبر مقدم وكلمة على يفيد الوجوب فالمعنى يجب عليهم ناقة والعوار بفتح العين المهملة وضمها العيب وقوله والحمولة المائرة لهم لاغية الحمولة بفتح الحاء والمائرة التي تحمل الميرة وهي الطعام والمعنى ان الابل التي تحمل الميرة لهم لاتؤخذ منها زكاة وقوله وفي الشوي بفتح الشين المعجمة وكسر الواو والياء المشددة اسم جمع للشاة والوري بفتح الواو وكسر الرأ والياء المشددة السمينة والمسنة مالها سنتان والجدول النهر الصغير والعين المعين الظاهر الجارى على وجه الارض بلا تعب والعثري الزرع الذي لايسقيه الاماء المطر وقوله بتقويم الامين اي بتقويم الخراص

العدل والله اعلم وهذا الشعر لقطن بن حارثة رضي الله عنه مذكور فى الاصابة نقلا عن المرزبانى ومن الاصابة كتبته

## كعب بن مالك الانصارى

### رضي الله عنه

فى يوم الخندق ناقض بها قصيدة لابن الزبعرى مذكورة فى سيرة ابن هشام وقد مرت ترجمة كعب بن مالك رضى الله عنه فى باب الهمزة

ابقى لنا حدث الحروب بقية ... من خير نحلة ربنا الوهاب — من الكامل

بيضاء مشرفة الذرى ومعاطناً ... حم الجذوع غزيرة الاحلاب

كاللوب بذل جمعها وحفيلها ... للجار وابن العم والمنتاب

قوله ابقى لنا الخ الحدث واحد الاحداث يقال احداث الدهر وحوادثه اي نوائبه ونوازله والبقية اسم لما يبقى والنحلة بالكسر العطية يقول ان حوادث الحروب التى مارسناها وكابدناها ابقت لنا بقية عظيمة على ان تنوين بقية للتعظيم كما يقتضيه سوق القصيدة يعنى ان لنا الآن عددا وعددا نذب بها وندفع اعدائنا ثم شرع يعد انواع البقية فقال بالابدال عنها بيضاء الخ فبيضاء بالنصب على البدل من البقية والمراد بيضاء الآطام والمشرفة المرتفعة والذرى جمع ذروة بالضم والكسر قيل والفتح ايضا وهي اعلى كل شيء وقوله ومعاطنا عطف على بيضاء والمعاطن جمع معطن وهو مبرك الابل عند الحوض والمراد به ههنا منابت النخل عند الماء شبهها بالمعاطن كذا قال السهيلي وحم الجذوع بمعنى سود الجذوع لان الحم جمع الاحم بمعنى الاسود والجذوع جمع جذع النخلة ومعنى اسودادها ان خضرتها لشدتها تضرب الى السواد وقوله غزيرة الاحلاب بمعنى كثيرة الاحلاب والاحلاب جمع حلب بالتحريك وهو اللبن المحلوب والمراد به ههنا مايجتنى من ثمرات النخيل واللوب جمع لوبة كاللاب جمع لابة

بمعنى الحرة وهي الارض ذات الحجارة السود ويبذل على صيغة المجهول يعطى والحفيل الكثير والمنتاب الزائر ذكره السهيلي ولك ان تجعل المنتاب بمعنى الذي اصابته نوائب الدهر ففي الصحاح والنوبة اسم من قولك نابه امر وانتابه اي اصابه

ونزائعا مثل السراح نمى بها ... علف الشعير وجزة المقضاب

عرى الشوى منها واردف نحضها ... جرد المتون وسائر الآراب

قوداً تراح الى الصياح اذا غدت ... فعل الضراء تراح للكلاب

قوله ونزائعا مثل السراح الخ النزائع جمع نزيعة في الاساس ومن المجاز خيل نزائع غرائب نزعت عن قوم آخرين وعنده نزيع اونزيعة اي نجيب ونجيبة من غير بلاده ويقال ايضا فرس نزيع اذا نزع الى عرق كريم كما في الرجل والسراح جمع سرحان بمعنى الذئب وهذا الجمع بعد حذف الزوائد وهو الالف والنون من سرحان والا فجمع سرحان على الاصل سراحين كذا في الروض الانف وقد اكثر الشعراء في تشبيه الفرس بالذئب في ضموره وعدوه واول من فعل ذلك امرؤ القيس فقال في معلقته

له ايطلا ظبي وساقي نعامة ... وارخاء سرحان وتقريب تتفل

ولو تركنا هذا المذهب لساغ ان يقال السراح جمع سرحة بمعنى الشجرة الطويلة فهو يريد تشبيه خيلهم بعظام الشجر كما قال عنترة في معلقته

بطل كأن ثيابه في سرحة ... يحذى نعال السبت ليس بتوأم

وفي النهاية في حديث ظبيان يأكلون ملاحها ويرعون سراحها السراح جمع سرح او سرحة وقوله نمى بها اي سمنها على ان الباء للتعدية وعلف الشعير فاعل نمى والعلف بالتحريك طعام الدابة والمصدر بسكون اللام يقال علفت الدابة علفا اذا اطعمتها العلف والجزة بكسر الجيم وفتح الزاي المشددة ماجز اي قطع يريد الحشيش والمقضاب

المنجل قوله عري الشوى منها الخ الشوى بالقصر القوائم ويقال ردفه واردفه اذا تبعه فاردف على بناء المجهول والنحض اللحم والمعنى ان لحمها متراكب بعضه فوق بعض لسمنها وقوله جرد المتون الجرد جمع اجرد وجرداء بمعنى قصيرة الشعر والمتون جمع متن وهو الظهر والآراب جمع ارب بالكسر وهو العضو يقال قطعه اربا اربا اي عضوا عضوا قوله قودا تراح الخ القود جمع اقود وقوداء وهو الفرس الطويل العنق وتراح من راح الى الشيئ يراح اذا نشط له وسر به ومنه الاريحية والصياح بالكسر والضم الصوت والمراد صياح الحرب والاستغاثة وقوله مثل السراح ونمى بها وعرى الشوى وجرد المتون وقودا وتراح كلها صفات للنزائع تمدح بها وقوله فعل الضراء منصوب على المصدرية اي تفعل فعل الضراء والضراء جمع ضرو بالكسر وهو من السباع ماضري باللحم ولهج به وفى الحديث ان قيسا ضراء الله فى الارض اي انهم شجعان تشبيها بالسباع الضارية فى شجاعتها يقال ضري بالشيئ يضرى ضرى وضراوة فهو ضار اذا اعتاده وفى حديث عمر رضي الله عنه اياكم وهذه المجازر فان لها ضراوة كضراوة الخمر اى عادة ينزع اليها كعادة اللحم مع شاربها فمن اعتاد اللحم لم يكد يصبر عنه فدخل فى حد المسرف فى النفقة كذا فى النهاية والكلاب كنصار جمع كالب وهو الذى يصيد بالكلاب يريد ان خيولهم تنشط وتسر بالحرب فانها الفت وتمرنت على الحرب كما ان السباع الضارية التى تصادبها تسر بالاصطياد وتسرع الى صاحبها اذا دعاها للصيد ولقد صدق صاحب رسول الله صلى الله عليه وسلم وشاعره كعب رضى الله عنه وارضاه فقد ذكر فى سيرة ابن هشام انه لما وقع الفزع بالمدينة يوم ذى قرد وسمع صهيل الخيل جال فرس لمحمود بن مسلمة رضى الله عنه كان مربوطا بجذع نخلة فقال نساء من نساء بني عبدالاشهل لمحرز بن نضلة رضى الله عنه حين رأين الفرس يجول هل لك فى ان تركب هذا الفرس فانه كما ترى فتلحق برسول الله صلى الله عليه وسلم وبالمسلمين قال نعم فاعطينه اياه فخرج عليه ثم استشهد هناك رضى الله عنه وجال الفرس فلم يقدر عليه حتى وقف على آرية من بنى عبدالاشهل انتهى والآرية معلف الدابة ومحبسها

وتحوط سائمة الديار وتارة ترْدى العداو تعود بالأسلاب

حُوشُ الوُحوشِ مُطارةٌ عندالوغى  عُبُسُ اللِّقَأمُبينَةَ الانجاب

عُلِفَتْ على دَعَةٍ فصارت بُدَّناً  دَخْسَ البَضيعِ خفيفةَ الاَقْصاب

قوله وتحوط سائمة الديار الخ تحوط بمعنى تحفظ وتمنع كما فى قول ابى طالب يمدح البنى عليه السلام

وماترك قوم لا ابالك سيدا  يحوط الذمار غير ذرب مواكل

وسائمة الديار مفعول تحوط اوحال من الفاعل والاضافة كما فى ياسارق الليلة ومكر الليل والمعنى تحوط المواشى السائمة فى ارضنا وبلادنا اوتحوط حال كونها سائمة ومفعول تحوط محذوف للتعميم اى كل مايلزم حياطته وتردى اى تهلك العدى اى الاعداء حذفت تارة من الاول بقرينة ذكرها فى الثانى يعنى انها للحفظ والدفاع والاغارة والهجوم قوله حوش الوحوش من قولهم ابل حوش وحوشية اى وحشية وقيل الحوش بلاد الجن وفى الاساس رجل حوش الفؤاد اى كيس ذكى واصله من الابل الحوشية وهى التي يزعمون ان فحول نعم الجن ضربت فيها انتهى وقوله مطارة عند الوغى يقال فرس مطار وطيار حديد الفؤاد ماض كانه يستطير اى يتفرق وينتشر من شدة العدو قوله عيس اللقاء العبس بضمتين جمع عبوس كصبر وصبور وقوله مبينة الانجاب ظاهرة النجابة قوله علفت على دعة الخ علفت على بناء المجهول والدعة الراحة وسعة العيش والبدن جمع بادن وهو الضخم الجسيم والدخس بالفتح المكتنز والبضيع اللحم يقال دخس البضيع كما يقال خاظى البضيع للسمين الممتلىء وقوله خفيفة الاقصاب جمع قصب بالضم وهو المعى وفى الحديث رأيت عمرو بن عامر بن لحى الخزاعى يجر قصبه فى النار وكان اول من سيب السوائب والمراد به ههنا الخصر مجازا كما فى قول امرى القيس والقصب مضطمر والمتن ملحوب على ماذكر فى لسان العرب ان المراد الخصر مجازا ولذلك يقال فرس خفيفة الاقصاب كما يقال خفيفة الاقراب اذا كانت ضامرة

يَعْدُونَ بالزَّغْفِ المُضاعَفِ شَكَّهُ  وبمُتْرَصاتٍ فى الثِّقافِ صِيابِ

وصوارمٍ نَزَعَ الصّياقلُ عَلْبَها  وبكل اَرْوَعَ ماجدِ الانساب

يَصِلُ اليمينَ بمارنٍ مُتَقارِب  وُكِلَتْ وَقيعَتُه الى خَبّاب

قوله يعدون بالزغف الخ نزل الخيل منزلة العقلاء فقال يعدون اي تعدو الدواب وتجرى بالزغف اى اهلها والزغف بالفتح الدرع اللينة المحكمة الواسعة يقال درع زغف ودروع زغف والمضاعف من ضاعف الشيء اذا جعله مثلين وشكه حلقه والدرع المضاعفة التى نسجت حلقتين حلقتين وقوله وبمترصات اى رماح محكمة مقومة معدلة فى الثقاف وهو بالكسر الآلة التى تقوم بها الرماح ومنه الرماح المثقفة والصياب جمع صائب كقيام جمع قائم اوجمع صيوب بمعنى المصيب وهو صفة مترصات قوله و صوارم الخ صوارم بالصرف للضرورة والصياقل جمع صيقل وهو شحاذ السيوف وجلائها والعلب بالتحريك الصلابة والخشونة والجسؤ ويسكن اللام للوزن والاروع الذي يعجبك حسنه ومنظره اوشجاعته قوله يصل اليمين الخ اليمين اليد اليمنى والمارن الرمح اللدن والمتقارب الصغير وجملة يصل صفة اروع وفى الكلام قلب و الاصل يصل المارن المتقارب باليمين فيكون فى معنى قوله رضي الله عنه فى قصيدة اخرى له

نصل السيوف اذا قصرن بخطونا  قدما ونلحقها اذا لم تلحق

يريد ان رمحه اذا تقاصر يتقدم فيصله بالعدو ووكلت على بناء المجهول اي سلمت وفوضت والوقيعة الصقل وخباب كشداد اسم قين بمكة كان يضرب السيوف ويدقها حتى ضرب به المثل ونسبت اليه السيوف وتكالم الزبير وعثمان رضى الله عنهما فقال الزبير ان شئت تقاذفنا اى ترامينا فقال عثمان رضي الله عنه ابالبعر يا ابا عبدالله قال بل بضرب خباب وريش المقعد والمقعد رجل كان يريش السهام كذا فى القاموس

واَغَرَّ ازرقَ فى القَناة كانّه  فى طُخْيَةِ الظَّلْماء ضوء شهاب

وكتيبةٍ تَنْفِي القِرانَ قَتيرُها  وتَرُدُّ حَدَّ قَواحِزِ النُّشّاب

جَأْوى مُلَمْلَمَةٍ كأنّ رماحها  فى كلّ مَجْمَعَهٍ صريمَةُ غاب

قوله واغر ازرق يريد الرمح فهو اغر لبريقه ولمعانه يضرب الى الزرقة والظلماء الليلة المظلمة والطخية مثلثة على مافى الكامل شدة الظلمة قوله وكتيبة تنفى القران الخ القران بالكسر السيف وهو مفعول تنفى وقتيرها فاعله والقتير رؤس مسامير الدرع وقوله وترد حدقواحز النشاب القواحز جمع قاحز بمعنى المهلك والنشاب كرمان النبل الوا حدة بهاء وهو من اضافة الصفة الى الموصوف اى النبال المهلكة قوله جأوى ململمة الخ جأوى وململمة صفتان لكتيبة يقال كتيبة جاواء بالمد ويقصر للوزن مؤنث اجوى من الجاو وهو حمرة تضرب الى السواد يوصف بها الكتيبة لما تعلوها من السواد لكثرة الحديد والململة بفتح اللام الكثيرة المجتمعة والمجمعة موضع الاجتماع وصريمة غاب جماعة غاب يقال صريمة من غضى اوسلم اي جماعة منه كما فى الصحاح

تَأْوى الى ظِلّ اللِّواء كأنّه  فى صَعْدَةَ الخَطِّيّ فَيْئُ عُقاب

اَعْيَتْ اباكَرِبٍ واَعْيَتْ تُبَّعاً  وابَتْ بَسالَتُها على الاعْراب

قوله تأوى الى ظل اللواء الخ اي ترجع وتطمئن الكتيبة الجأواء والصعدة القناة المستوية التى نبتت كذلك ولا تحتاج الى التثقيف والخطي نوع من الرماح منسوب الى الخط وهو موضع باليمامة تباع فيه والفيء ههنا بمعنى القطعة من الطير يريد كأنه قطعة مجتمعة من العقبان والعقاب طائر معروف يشبه به اللواء قوله اعيت اباكرب الخ اعيت اعجزت اى كتيبتنا اباكرب وهو بكسر الراء اسعد بن مالك الحميرى من ملوك اليمن من التبابعة واحدها تبع والتبابعة ملوك اليمن كالاكاسرة والقياصرة فى الفرس والروم وفى قوله اعيت اباكرب تلميح الى قصة وهو ان تبعا الاخير اباكرب قتل ابن له بالمدينة فجاء مع عسكر كثير ليخرب المدنية ويقطع نخيلها ويستأصل اهلها ويسبي الذرية فتحصنت الاوس والخزرج فى آطامهم وقاتلوه وكان رئيسهم احيحة بن الجلاح وعمرو بن طلة وطلة اسم امه فكانوا يقاتلونه بالنهار ويقرونه بالليل وازعجوه حتى قال مارأيت قوما صنعوا بى ماصنع اهل

يثرب ثم خرج اليه حبران من احبار اليهود فقالا له ان هذه البلدة انا نجد اسمها كبيرا فى كتابنا وانها مهاجر نبي من بنى اسماعيل اسمه احمد فاعجبه قولهما وانصرف واخذ الحبرين معه ثم دله الحبران حتى ذهب الى مكة وكسا الكعبة المعظمة وتهود وفشت اليهودية فى اليمن بواسطة الحبرين هذا ملخصته من الاغانى والقصة بتمامها مذكورة فيه مطولة فى ترجمة احيحة بن الجلاح وكذا فى اوائل سيرة ابن هشام وقوله ابت اي امتنعت والبسالة الشجاعة

و مواعظ من ربنا نهدى بها ... بلسان ازهر طيب الاثواب

عرضت علينا فاشتهينا ذكرها ... من بعد ما عرضت على الاحزاب

حكما يراها المجرمون بزعمهم ... حرجا ويفهمها اولوا الالباب

جاءت سخينة كى تغالب ربها ... وليغلبن مغالب الغلاب

قوله بلسان ازهر الازهر الابيض المشرق اللون يعنى رسول الله عليه وسلم وطيب الاثواب كناية عن طهارة النفس والبراءة عن العيوب وقد مر قوله فاشتهينا اى احببنا ذكر تلك المواعظ والاحزاب طوائف الناس وكان النبى عليه السلام يعرض نفسه النفيسة على احياء العرب ويدعوهم الى دين الله فلم يجيبوه حتى اتى الانصار بالموسم فقبلوا منه وتواثقوا معه عند العقبة وقوله حكما جمع حكمة وهو حال من نائب عرضت وقوله بزعمهم اى بكذبهم وقد فسر الزعم بالكذب فى قوله تعالى فقالوا هذا لله بزعمهم وقوله حرجا مفعول ثان ليرى والحرج الشك اى مايشك فيه وقوله ويفهمها اى يوقن بها اولوا الالباب وهم المؤمنون ففيه تعريض للكفار بانه لا لباب اى لاعقول لهم لعدم جريهم على موجبها قوله جاءت سخينة الخ السخينة فى الاصل حساء من دقيق يتخذ عند غلاء السعر وعجف المال وكلب الزمان وكانت قريش تأكل السخينة فلقبتها العرب بها فمراد كعب رضى الله عنه بالسخينة قريش قال ابن قتيبة فى كتاب ادب الكاتب مازح

معاوية رضى الله عنه الاحنف بن قيس فما رؤى مازحان او قرمنهما قال معاوية رضى الله عنه يا احنف ما معنى الملفف فى البجاد قال الاحنف السخينة يا امير المؤمنين اراد معاوية رضى الله عنه قول الشاعر

اذا مامات ميت من تميم فسرك ان يعيش فجيء بزاد

بخبز او بتمر اوبسمن اوا لشيء الملفف فى البجاد

تراه يطوف الافاق حرصا ليأكل رأس لقمان بن عاد

والملفف فى البجاد وطب اللبن واراد الاحنف ان قريشا تعير باكل السخينة انتهى وكانت تميم تعير بكثرة الاكل فهجاهم الشاعر بالشعر السابق فلما ذكر معاوية ماتعير به تميم اجاب له الاحنف بما تعير به قومه قريش وتعيير العرب قريشا بالسخينة معروف مذكور فى كثير من الكتب وقال الامام السهيلى فى الروض الانف كان هذا الاسم مما سميت به قريش قديما ذكروا ان قصيا كان اذا ذبح ذبيحة او بحرت بحيرة بمكة اتى بمجزها فصنع منه خزيرة وهو لحم يطبخ ببر فيطعمه الناس فسميت قريش سخينة وقيل ان العرب كانوا اذا اشتوا اكلوا العلهز وهو الوبر بالدم وتأكل قريش الخزيرة واللفيتة فنفست عليهم العرب ذلك فلقبوهم بالسخينة ولم تكن قريش تكره هذا اللقب ولوكرهته ما استجاز لكعب رضى الله عنه ان يذكره ورسول الله عليه السلام منهم ولتركه اذبامع رسول الله عليه السلام اذ كان قرشيا ولقد استنشد عبدالملك بن مروان ماقاله الهوازنى فى قريش ياشدة ماشددنا غير كاذبة البيت فقال مازاد هذا على ان استثنى ولم يكره سماع اللقب بسخينة فدل على ان هذا اللقب لم يكن مكروها عندهم ولا كان فيه تعيير لهم انتهى وتمام بيت الهوازنى الذى ذكر السهيلى المصراع الاول منه هوقوله على سخينة لولا الليل والحرم وقائل البيت خداش بن زهير من بنى عامر بن صعصعة قاله ايام حرب الفجار وكانت هوازن يوماهزموا قريشا الى الحرم وحجز الليل بينهم قوله فليغلبن مغالب الغلاب ليغلبن على صيغة المجهول مع النون المشددة والمغالب من يجارى و يسابق غيره والغلاب مبالغة الغالب يريد ان الله سبحانه هو الغلاب فمن اراد ان يغلبه كقريش فلاشك ان ذلك المغالب يكون مغلوبا وفي سيرة ابن هشام انه لما قال كعب رضي الله عنه هذا البيت قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لقد شكرك الله

يا كعب على قولك هذا و قال الشيخ عبدالقاهر في اوائل دلائل الاعجاز روي انه عليه السلام قال لكعب رضي الله عنه مانسي ربك وماكان ربك نسيا شعرا قلته قال ماهو يارسول الله قال انشده يا ابابكر فانشد ابو بكر رضي الله عنه

زعمت سخينة ان ستغلب ربها  وليغلبن مغالب الغلاب

وهذه القصيدة لكعب رضي الله عنه مذكورة في سيرة ابن هشام ومنها كتبتها

## كعب بن مالك اوعبدالله بن رواحة
## رضى الله عنهما

في قتل احبار اليهود ورؤسائهم من بني النضير وقريظة ومن تبعهم

لَعمرى لقد حَكّت رَحَى الحَرب بعدما  اطارت لؤيّا قبلُ شرقا و مغربا  من الطويل

بَقيّةَ آل الكاهنَين وعزّها  فما د ذليلا بعد ما كان اغلبا

قوله لعمرى لقدحكت الخ حكت اضرت و رحى الحرب معظمها و حومتها ولفظ الرحى مؤنث ولهذا قال حكت واطارت بالتأنيث ومعنى اطارت فرقت وشتتت ولؤي هو ابن غالب من اجداد النبي صلى الله عليه وسلم والمراد بنو لؤي وهم قبائل قريش وقدمر هذا قوله بقية آل الكاهنين الخ قدمر ان البقية بمعنى ما يبقى ولك ان تقول ان البقية بمعنى اولى البقية اي الابقاء على انفسهم او اولى العلم والفهم وهم الاحبار والرؤساء و به فسر قوله تعالى فلولا كان من القرون اولو بقية ينهون عن الفساد في الارض وهو الملائم لسوق القصيدة فانها مسوقة لبيان قتل احبار اليهود ورؤسائهم وقوله وعزها معطوف على بقية اي ذوي عزها والكاهنين بصيغة التثنية النضير وقريظة قال في النهاية وفي الحديث انه قال يخرج من الكاهنين رجل يقرأ القرأن لايقرأ احد قرائته قيل انه محمد بن كعب القرظي وكان يقال للنضير وقريظة الكاهنان وهما قبيلا اليهود بالمدينة وهم اهل كتاب وعلم وفهم وكان محمد بن كعب من اولادهم والعرب تسمي كل من يتعاطى علما دقيقا كاهنا ومنهم من كان يسمى

المنجم والطبيب كاهنا انتهى وقال في الاغاني وبنو قريظة وبنو النضير يقال لهم الكاهنان وهم من ولد الكاهن بن هرون اخي موسى بن عمران صلى الله على محمد وآله وعليهما وكانوا نزلوا بنواحي يثرب بعد وفاة موسى بن عمران على نبينا وعليه السلام وقبل تفرق الازد عند انفجار سيل العرم ونزول الاوس والخزرج بيثرب ثم قال بداسطر وكان يقال لبني النضير وقريظة خاصة الكاهنان نسبوا بذلك الى جدهم الذي يقال له الكاهن كما يقال العمران والحسنان والقمران انتهى والظاهر ان هذا ليس من قبيل العمران ونحوه لان العمرين ونحوه من قبيل تغليب اسم احد المسميين على الآخر لمناسبة بين المسميين بل هو من باب آخر وهو ان العرب قد تحذف لفظ الابن المضاف وتقيم المضاف اليه مقامه قال ابو العباس المبرد في الكامل في قول جرير يخاطب الفرزدق ويضع منه

كأنك لم تشهد لقيطا و حاجبا ... و عمرو بن عمرو اذ دعوا يال دارم
ولم تشهد الجونين والشعب ذا الصفا ... و شدات قيس يوم دير الجماجم

ان الجونين معاوية وحسان ابنا الجون الكنديين اسرافي ذلك اليوم وهو يوم شعب جبلة فمثل هذا الكاهنان

فطاح سلام وابن سعية عنوة ... و قيد ذليلا للمنايا ابن اخطبا
واجاب يبغي العز والذل يبتغي ... خلاف يديه ما جنى حين اجلبا
كتاركة سهل الارض والحزن همه ... وقد كان ذا في الناس اكدى واصعبا

قوله فطاح سلام الخ طاح هلك وسلام بالتخفيف ابو رافع بن ابي الحقيق مصغر من يهود بني النضير كان يؤذي النبي عليه السلام ويحزب الاحزاب عليه قتله عبد الله بن عتيك الانصاري الخزرجي رضي الله عنه ذهب اليه في نفر من قومه فقتله وسط بيته على فراشه في ظلمة الليل وكان قتله في رمضان سنة ست من الهجرة كما قال ابن سعد بعد ماقتل رجال الاوس كعب بن الاشرف وكان قتله في ربيع الاول من السنة

الثالثة كما قال ابن سعد فيكون بعد غزوة احد لان غزوة احد كانت في شوال وقال ابن اسحاق قبل احد وقصة قتل ابى رافع بتمامها مذكورة فى صحيح البخارى فى الجهاد وفى المغازى ايضا وابن سعية المذكور فى البيت لعله ابو ياسر بن اخطب بن سعية اخو حيي بن اخطب فانه قتل صبرا فى اسراء بنى قريظة كما ذكره الشهاب ولا يمكن ان يراد ابن سعية اسد او اسيد بن سعية ولا اخوه ثعلبة بن سعية وان ذكرا فى كتب السير فيمن عادى النبي صلى الله عليه وسلم من اليهود فانهما نزلا الى رسول الله صلى الله عليه وسلم فى الليلة التى نزلت فيها قريظة على حكم رسول الله عليه السلام واسلما وحسن اسلامهما وماتا فى حياة رسول الله عليه السلام كما اتفق عليه ارباب السير والذين كتبوا فى الصحابة رضوان الله عليهم وقال الشهاب فى شرح الشفاء وقيل ان ابناء سعية كانوا سبعة انتهى يعنى اثنين اللذين اسلما وخمسة اخرين فلعل واحدا من الخمسة مراد فى بيت كعب والعنوة القهر والغلبة وقيد مجهول قاد ضد ساق وابن اخطب هو حيي بن اخطب من يهود بنى النضير وكان من اشد من عادى النبي عليه السلام من اليهود وهو الذي حزب الاحزاب يوم الخندق خرج فى نفر من اليهود الى قريش فحرضوهم على النبي عليه السلام وقالوا سنكون معكم حتى نستأصله فقالت لهم قريش يا معشر اليهود انتم اصحاب الكتاب الاول والعلم بما اصبحنا نختلف فيه نحن ومحمد افديننا خير ام دينه قالوا بل دينكم خير من دينه وانتم اولى بالحق منه فهم الذين انزل الله فيهم الم تر الى الذين اوتوا نصيبا من الكتاب يؤمنون بالجبت والطاغوت ويقولون للذين كفروا هؤلاء اهدى من الذين آمنوا سبيلا الى قوله وكفى بجهنم سعيرا فلما قالوا ذلك لقريش سروا به ونشطوا واجتمعوا واتعدوا لحرب رسول الله عليه السلام ثم خرج هؤلاء النفر من اليهود الى غطفان فحرضوهم فخرجت قريش وغطفان فى جموعهما ثم ذهب حيي بن اخطب الى كعب بن اسد القرظى وهو صاحب عقد قريظة وعهدهم وكان قد وادع رسول الله عليه السلام على قومه وعقده على ذلك فدعاه الى حرب رسول الله عليه السلام فامتنع واغلق دونه باب حصنه وقال ويحك ياحيي انك رجل مشؤم فلم يزل حيي بكعب يفتل فى الذروة والغارب حتى وافقه وبرئ مما كان بينه وبين رسول الله عليه السلام من العهد فلما اجتمعت القبائل المذكورة وقعت وقعة الاحزاب فهذا قول كعب رضى الله عنه واجاب يبنى العزالخ

اجلب بمعنى جمع الجيوش وفى التنزيل واجلب عليهم بخيلك ورجلك ويبغى بمعنى يطلب حال من فاعل اجلب اواستيناف وقوله والذل يبتغى الوا وعاطفة والذل مفعول يبتغى قدم عليه للحصر والجملة عطف على جملة يبغى العز اوالواو حالية من باب قمت واصك وجهه ويبتغى بمعنى يطلب شبه سعيه وعمله لا بتغاء العز بابتغاء الذل لانه صار ثمرة سعيه وعمله وحاصل المعنى انه اجلب يبغى العز فى الظاهر ويطلب الذل فى الحقيقة لان الذل صار آخر امره وعاقبته ولذلك قال بيانا له خلاف يديه ماجنى حين اجلبا وخلاف يديه مبتدأ وماجنى خبر واراد باليدين العمل والسعى اي مخالف قصده وعمله ماترتب على عمله وهو الذل فانه لما انهزمت الاحزاب يوم الخندق دخل حيي مع قريظة فى حصنهم فلما فتحت قريظة وقتل رجالها اتى بحيي مجموعة يداه الى عنقه فقتل وفى قول كعب رضى الله عنه وقيد ذليلا للمنايا اشارة الى هذا (تنبيه) مازال اولم يزل يفتل فى الذروة والغارب مثل فى التحريض على الشيء والالحاح فيه بالتلطف والخداع عند الامتناع واصله فى البعير يستصعب عليك وتريدان تؤنسه فتمريدك وتمسح على ذروته وغارب سنامه وتفتل هنالك فيجد البعير لذلك لذة فيأنس وينقاد قوله كتارك سهل الارض الخ السهل مالان من الارض والحزن ماغلظ يعنى ان حاله كحال من كان له طريقان احدهما سهل خفيف والآخر حزن وعرفترك السهل واهتم بالحزن فكذلك هو كان له ان يتبع النبى عليه السلام فيعز فى الدارين لكنه لم يتبعه بل اصر على الكفر ومعاداة النبى عليه السلام فصار ذليلا فى الدارين

وشاس وعزال وقد صليا بها ... وما غيبا عن ذاك فيمن تغيبا

وعوف بن سلمى وابن عوف كلاهما ... وكعب رئيس القوم حان وخيبا

فبعدا وسحقا للنضير ومثلها ... ان اعقب فتح او ان الله اعقبا

قوله وشاس الخ اي وهلك شاس وعزال وشاس هو ابن قيس اليهودى ذكره ابن اسحاق فيمن عادى النبي عليه السلام من يهود بنى قينقاع وهو الذى لما رأى

جماعة من الانصار بعضهم من الاوس وبعضهم من الخزرج وهم متحابون فيما بينهم غاظه ذلك فارسل شابا من اليهود فذكرهم يوم بعاث وكان فى الجاهلية يوما الاوس على الخزرج حتى اغرى بينهم وكادوا يتقاتلون فاصلح النبى عليه السلام بينهم ونزل قوله تعالى يا ايها الذين آمنوا ان تطيعوا فريقا من الذين اوتوا الكتاب يردوكم بعد ايمانكم كافرين وعزال هو ابن سموأل اليهودى من بنى قينقاع ممن عادى النبى عليه السلام وقوله وقد صليا بها اي الحرب اي قاسيا شدتها قوله وعوف بن سلمى وابن عوف كلاهما لم اطلع على عوف بن سلمى فيما طالعت من الكتب ولعل الله سبحانه ان يطلعنى واما ابن عوف ففى يهود بنى قينقاع مالك بن عوف وفى يهود قريظة الحرث بن عوف من رؤساء اليهود وممن عادى النبى عليه السلام وقوله وكعب رئيس القوم هو كعب بن اسد القرظى رئيس قريظة وصاحب عقدها كما مر ولذلك قال رئيس القوم وحان من الحين وهو الهلاك وجملة حان فى موقع خبر المبتدأ وهو كعب اى كعب هلك وقتل مع من قتل من رجال قريظة وقوله خيبا على صيغة المجهول باشباع الالف او على صيغة المعلوم اى خيب غيره وهو قومه فانه كان سبب خيبتهم وخسرانهم لانه كان رئيسهم الذى يصدرون عن امره وقوله فبعدا وسحقا منصوبان على المصدرية بفعلين محذوفين والبعد الهلاك وكذا السحق وتأنيث الضمير فى مثلها الراجع الى النضير بتأويل القبيلة وقوله ان اعقب فتح او ان الله اعقبا الاول على صيغة المجهول والثانى على صيغة المعلوم ومعنى الاول ان يكون بمباشرة الاسباب ومعنى الثانى ان يكون بمحض فضل الله ولذلك اضافه الى الله وان كان الكل منسوبا اليه سبحانه يقول بعدا وسحقا للنضير ومثلها ان كان لنا فتح وغلبة بعد هذا كيفما كان بقتال منا او بمحض فضل الله سبحانه وتعالى وهذه القصيدة لكعب رضى الله عنه مسطورة فى سيرة ابن هشام ومنها كتبتها

## كعب بن مالك الانصارى

## رضي الله عنه

فى يوم خيبر يجيب مرحبا اليهودى لما خرج من حصنهم وقد جمع سلاحه يرتجز ويقول

قد علمت خيبر انى مرحب  شاكى السلاح بطل مجرب

اطعن احيانا وحينا اضرب  ان حماى للحمى لا يقرب

مرحب كمنبر قتل يوم خيبر قيل قتله محمد بن مسلمة رضي الله عنه وقيل قتله الزبير بن العوام رضى الله عنه والصحيح الذى عليه اكثر اهل السير والحديث ان عليا رضى الله عنه هو الذى قتل مرحبا اليهودى بخيبر كذا فى الاستيعاب قال رضى الله عنه

من امشطور لرجز

قد علمت خيبر انّى كعب  مُفَرِّجُ الغُمّا جَرِئٌ صُلْب

اذ شُبِّتِ الحرب تَلَتْها الحرب  معى حُسام كالعقيق عضب

نَطَأُكُمْ حتّى يَذِلَّ الصَّعب  نعطى الجزاء او يفئَ النَّهْب

بكف ماض ليس فيه عتب

قوله قد علمت خيبر انى كعب الخ انى كعب من باب انا ابو النجم اي انى رجل معروف مشهور بالشجاعة والغماء بالمد والقصر الامر الشديد من شدائد الدهر اعني الداهية قالوا اذا مدت فتحت واذا قصرت ضمت والصلب بالضم الشديد قوله اذشبت الحرب الخ يقال شبت النار وشببتها ايضا لازم ومتعد شبهت الحرب بالنار استعارة بانكناية وشبت تخييل قوله تلتها الحرب حال من الحرب والمقصود حين حمي وطيسها وقوله كالعقيق قال فى الاساس ماادرى شمت عقيقة ام شمت عقيقة اي سللت سيفا ام نظرت الى برق وهى البرقة التى تستطيل فى عرض السحاب ولقد اكثروا استعارتها حتى جعلوها من اسمائه فقالوا سلوا عقائق كالعقائق قوله نطأكم الخ نطأكم من وطئه برجله وحتى يذل حتى يصير ذلولا منقادا والصعب ضد الذلول وقوله اويفيء النهب اوبمعنى الى ان اوالاان فالمضارع منصوب والفيئ الرجوع والنهب الغنيمة والمعنى نجزيكم بالقتل حتى يكون اموالكم غنيمة لنا وقوله بكف ماض اي بكف فيه سيف ماض نافذ والعتب بالتحريك

التواء السيف عندالضريبة ونبوته وقد مر ويسكن للوزن وهذا الشعر لكعب رضى الله عنه مسطور فى سيرة ابن هشام ومنها كتبته

## كعب بن مالك الانصارى

### رضى الله عنه

فى يوم احد

سائل قريشا غداة السفح من احد ماذا لقينا ومالاقوا من الهرب من البسيط

كنا الاسود وكانوا النمر اذ زحفوا ما ان نراقب من الٍ ولا نسب

فكم تركنا بها من سيد بطل حامى الذمار كريم الجد والحسب

قوله سائل قريشا الخ سائل اسأل والسفح عرض الجبل اواصله اواسفله واحد بضمتين جبل قرب المدينة صارت عنده وقعة بين النبي عليه السلام وكفار قريش سنة ثلاث من الهجرة وقوله من الهرب بيان لما فى مالاقوا ومبين ما فى ماذا لقينا محذوف بقرينة المقابلة اى من الفوز والظفر قوله كنا الاسود الخ الاسد مثل فى الشجاعة والنمر مثل فى الحقد والغضب يقال لبسوا جلود النمر وايضا الاسد فى الدرجة الاولى من السباع والنمر فى الثانية كما ذكر الدميرى فى حيوة الحيوان فمن ذلك شبه كعب رضى الله عنه المسلمين بالاسود والكفار بالنمر وهو بضم النون وسكون الميم جمع نمر بالفتح وبالكسر فالسكون ويجمع ايضا على انمر وانما رو نمر بضمتين ونمار ونمارة بالكسر فيهما ونمور والزحف مشي الجيش رويدا الى الفئة الاخرى شبه بزحف الصبي ومافى ما ان نراقب نافية وان زائدة لتأكيد النفى والمراقبة الحفظ والال بكسر الهمزة وتشديد اللام الحلف والعهد وبه فسر فى قوله تعالى لا يرقبون فى مؤمن الا ولا ذمة وفسر بالقرابة ايضا كما فى قول حسان رضى الله عنه

لعمرى ان انك من قريش  كال السقب من رأل النعام

يقوله لرجل ينكر نسبه من قريش والسقب ولد الناقة والرأل ولد النعام والظاهر انه ههنا يعنى فى بيت كعب بمعنى الحلف والعهد لذكره النسب بعده صريحا وهذا الكلام وهو قوله ما ان نراقب من ال ولا نسب يحتمل معنيين احدهما انهم لا يراقبون العهد والنسب فى اعدائهم بل يقاتلونهم ويضربونهم وان كانوا حلفائهم فى الاصل ونسبائهم كما روى ان اباعبيدة رضى الله عنه قتل اباه فى حرب وان ابابكر اراد ان يبارز ابنه عبدالرحمن يوم بدر كما تقدم وان عمر رضى الله عنه قتل يوم بدر خاله العاص بن هشام المخزومى كما مر وثانيهما انهم لا يراقبون حلفائهم ونسبائهم من المسلمين اى لا يضنون بهم اذ كان ذلك نصرة للدين وحفظا لبيضة الاسلام والقتل فى مواطن الحرب لا يعد عيبا فى نظر العامة فضلا عن ترغيب الشريعة فى احراز رتبة الشهادة وعن هذين المعنيين يتفرع معنيان فى قوله فكم تركنا بها الخ فعلى الاول يكون المراد بالمتروكين الموصوفين بالصفات المذكورة الكفار وعلى الثانى المسلمين فان قلت كيف يصح بناء على المعنى الاول توصيفه الكفار المقتولين بالصفات المذكورة فانها صفات مادحة فان البطل الشجاع البين الشجاعة كأنه تبطل جراحته فلا يكترث لها ولا تكفه عن نجدته اولانه تبطل عنده دماء الاقران وحامي الذمار على ما فى الاساس هو الذى اذا حمى ما لو لم يحمه لئيم وعنف من حماه وحريمه كقولهم حامى الحقيقة وقال ابوطالب يمدح النبي عليه السلام

وما ترك قوم لا ابالك سيدا  يحوط الذمار غير ذرب مواكل

لانا نقول انهم قد يفعلون ذلك لار المقتول كلما كان اشرف كان شان القاتل امدح وذكر دانبه الا يرى الى قول حسان بن ثابت رضى الله عنه فى قصيدة له يصف قتل المسلمين للمشركين

فقتلنا كل رأس منهمو  وقتلنا كل جحجاح رفل

كم قتلنا من كريم سيد  ماجد الجدين مقدام بطل

وشريف لشريف ماجد  لا نبالیه لدى وقع الاسل

فينا الرسول شهاب ثم نتبعه  نور مضيء له فضل على الشهب

الحق منطقه والعدل سيرته  فمن يجبه اليه ينج من تبب

نجد المقدم ماضى الهم معتزم  حين القلوب على رجف من الرعب

قوله فينا الرسول شهاب الخ الشهاب شعلة نار ساطعة ويقال للنجم ايضا فيشبه به فى الاحراق والاضاءة بالمعنى الاول وفى المضي والاضاءة بالمعنى الثانى فيقال فلان شهاب اي محرق من يقرب منه اومضيء اوماض فى الحرب ولذلك يقال هو شهاب الحرب وهم شهبان الجيش فتشبيهه عليه السلام بالشهاب اما بمعنى الكوكب فى المضي اوبمعنى الشعلة فى الاحراق او باي المعنيين كان فى الاضاءة فعلى هذا يكون قوله نور مضيء الخ مبنيا على انه لما شبهه فى الاضاءة تذكر نحوا من قول الشاعر

ظلمناك فى تشبيه صدغيك بالمسك  وقاعدة التشبيه نقصان ما يحكى

فرجع فترقى وقال نور مضيء الخ قوله الحق منطقه الخ الضمير فى اليه راجع الى ماذكر من مجموع الحق والعدل والتبب بالتحريك الهلاك والخسران كالتب بالتشديد قوله نجد المقدم الخ النجد الشجاع الماضى فيما يعجز غيره والمقدم مصدر ميمى من التقديم بمعنى التقدم فمعنى نجد المقدم نجد فى اقدامه كما يقال جرىء المقدم وماضى الهم هو الذى اذا عزم على امر امضاه والمعتزم الجاد فى الامور والاسد ايضا وقوله حين القلوب على رجف من الرعب حين ظرف للصفات المذكورة مضاف الى الاسمية بعده مبتدأها القلوب وخبرها على رجف مثل اتيتك زمن الحجاج الامير والرجف التحرك والاضطراب الشديد والرعب الخوف يقول ان فيه صلى الله عليه وسلم الصفات المذكورة حين ترتعد قلوب الناس من الخوف ويحجم الابطال فليس عنده عجز ولاخوف اصلا

يمضي فيذمرنا عن غير معصية  كانه البدر لم يطبع على الكذب

بدالنا فاتّبعناهُ نصدّقه وكذّبوه فكنا اسعد العرب

قوله نمضي فيذمرنا الخ يذمرنا يشجعنا ويحرضنا وقوله عن غير معصية عن فيها معنى السببية كما قال الرضى فى قوله تعالى وما ينطق عن الهوى اى نطقا صادرا عن الهوى وكما يقال قلت هذا عن علم اوعن جهل اى قولا صادرا عن علم اوعن جهل والمعنى انا نمضى وهو يشجعنا وليس تشجيعه ايانا شأ عن استنكافنا عن الحرب وعصياننا له وفى بعض النسخ يمضي بصيغة الغائب وقوله لم يطبع على الكذب اي لم يخلق على الكذب اي ليس الكذب من خلقه فهو صلى الله عليه وسلم كما قال مادحه

خلقت مبرأ من كل عيب كانك قد خلقت كما تشاء

قوله وكذبوه يعنى قريشا اى اكثرهم فان اقلهم كان الله قد عصمهم بالاسلام

جالوا وجلنا فما فاؤا وما رجعوا ونحن نثفنهم لم نأل فى الطلب

ليسا سواءً وشتّى بين امرهما حزب الاله واهل الشرك والنصب

قوله جالوا وجلنا الخ يقال جال القوم ووقع فيهم جولة اذا انكشفوا وزالوا عن مواطنهم فى الحرب ثم عادوا وكروا يعنى وقعت لهم ولنا جولة يوم احد فان المشركين انكشفوا فى ابتداء الحرب بعد ما قتل اصحاب اللواء ثم انكشف المسلمون بعد ما ترك الرماة مواقعهم فى الشعب وجاء خيل المشركين من خلفهم وارجف قتل الرسول عليه السلام وكر المشركون ثم كر المسلمون وانهزم المشركون ولم يعودوا وهذا معنى قوله فما فاؤا وما رجعوا والفيء الرجوع اى كان عاقبة امرهم الانهزام التام وقوله ونحن نثفنهم من ثفنه يثفنه من حدى نصر وضرب بمعنى تبعه ومشى خلفه وجملة ونحن نثفنهم حال من فاعل ما فاؤا ولم نأل اى لم نقصر من الى يألو يريد وان وقع فينا جولة لكنا عدنا وكررنا عليهم ولم يعودوا قتم عليهم الدست آخر الامر قوله ليسا سواء الخ ضمير ليسا الى الحزبين المفهومين مما سبق اى المسلمين والكفار فيكون قوله حزب الاله الخ استينافا بحذف المسند اليه اى احد الحزبين

خرب الاله والاخر حزب الشرك فكيف يستويان اوالكلام من باب واسروا النجوى الذين ظلموافيكون حزب الاله مع ماعطف عليه بدلا من ضمير ليسا اوعلى لغة اكلوني البراغيث اوليسا خبر مقدم وحزب الاله مع ماعطف عليه مبتدأ مؤخر وشتى مخفف شتان لضرورة الشعر كماقالوا فى بيت جميل بن معمر

اريد صلاحها وتريد قتلى وشتى بين قتلى والصلاح

هذا قول الجمهور وقال ابن جنى شتان وشتى كسرعان وسكرى يعنى ان شتى ليس مؤنث شتان كسكرى وسكران وانما هما اسمان تواردا وتقابلا فى عرض اللغة من غير قصد فالظاهر من قوله انه ليس مخفف شتان لضرورة الشعر انما هو لغة فى شتان وشتان بمعنى افترق فى نحو شتان زيد وعمرو وبمعنى بعد فى نحو شتان مابينهما وشتان بينهما وفى شتان ايضا معنى التعجب فالمعنى فى البيت ماابعدما بين امرهما والنصب بضمتين كل ماعبد من دون الله كالنصب بالضم كذافى القاموس وفى الكشاف فى تفسير قوله تعالى وماذبح على النصب كانت لهم حجارة منصوبة حول البيت يذبحون عليها ويشرحون اللحم عليها يعظمونها بذلك ويتقربون به اليها تسمى الانصاب والنصب واحد قال الاعشى

وذا النصبَ المنصوبَ لاتعبدنّه لعاقبة واللهّ ربك فاعبدا

وقيل هو جمع والواحد نصاب انتهى وهذه القصيدة مسطورة فى سيرة ابن هشام ومنها كتبتها

## مُحَيِّصَة بن مسعود الانصارى

## رضي الله عنه

فى قتله ابن سبينة اوكعب بن يهوذا اليهوديين ولوم اخيه اياه وردده على اخيه

### الترجمة

قال فى القاموس فى ح وص وحويصة ومحيصة ابنا مسعود مشددتى الصاد وهو سبق قلم والصحيح مشددتى الياء المكسورة مع ضم الميم وفتح الحاء المهملة فى محيصة

وضم الحاء وفتح الواوفى حويصـة وذكر العيني فى شرح البخاري تخفيف الياء ايضا ومحيصة بن مسعود بن كعب بن عامر بن عدي بن مجدعة بن حارثة بن الحرث ابن الخزرج بن عمرو بن مالك بن الاوس الانصارى الحارثى هكذا نسبه ابن هشام وابن عبدالبر وابن الاثير وابن حجر في كتبهم فلم يذكر وا بين مسـعود وكعب اسما ووقع في صحيح البخارى في كتاب الصلح محيصة بن مسعود بن زيد ومن حفظ حجة على من لم يحفظ يكنى محيصة اباسعد بعثه رسول الله عليه السلام الى اهل فدك يدعوهم الى الاسلام وشهد احدا والخندق ومابعدها من المشاهد وهو اخو حويصة بن مسعود واسلم حويصة على يد محيصة وكان حويصة اكبر وكان محيصة انجب وله خبر عجيب في المغازى ذكره ابن اسحق عن ثور بن زيد عن عكرمة عن ابن عباس رضي الله عنهما في قصة كعب بن الاشرف اليهودى قال فلما قتل كعب بن الاشرف قال رسول الله عليه السـلام من ظفرتم به من رجال يهود فاقتلوه فوثب محيصة بن زيد على ابن سـبينة رجل من تجار يهود وكان يلا بسهم ويبايعهم فقتله وكان حويصة بن مسعود اذذاك لم يسلم فلما قتله جعل حويصة يضربه ويقول اي عدو الله قتلته اما والله لرب شحم في بطنك من ماله قال محيصة فقلت له والله لقد امرنى بقتله من لو امرنى بقتلك لضربت عنقك قال آلله لو امرك بقتلى لقتلتنى قلت والله لو امرني بقتلك لقتلتك قال اما والله ان دينا بلغ بك هذا لعجب فاسلم حويصة وكان ذلك اول اسلامه فقال محيصة رضى الله عنه

من الطويل

يلوم ابن أمّى لو أمِرتُ بقتـله ... لطبقتُ ذفراه بأبيضَ قاضبِ

حُسامٍ كلون الملح أخلصَ صقلُه ... متى ما أصوبه فليس بكاذب

وماسرّنى أنّى قتلتـك طائعـا ... وأنّ لنا مابين بُصرى ومأرب

هكذا ذكر قصة محيصة وانها كانت في قتل ابن سبينة صاحب الاستيعاب عن ابن اسحق وقال ابن هشام فى سيرته بعد ماحكى قول ابن اسحق كما نقله صاحب الاستيعاب وحدثني ابوعبيدة عن ابي عمر والمدنى قال لما ظفر رسول الله السلام

بني قريظة اخذ منهم نحوا من اربعمائة رجل من اليهود وكانوا حلفاء الاوس على الخزرج في الجاهلية فامر رسول الله عليه السلام بان تضرب اعناقهم فجعلت الخزرج تضرب اعناقهم ويسرهم ذلك فنظر رسول الله عليه السلام الى الخزرج ووجوههم مستبشرة ونظر الى الاوس فلم ير ذلك فيهم فظن ان ذلك للحلف الذي بين الاوس وبين بني قريظة ولم يكن بقي من بني قريظة الا اثنى عشر رجلا فدعهم الى الاوس فدفع الى كل رجلين من الاوس رجلا من بني قريظة وقال ليضرب فلان وليذفف فلان فكان ممن دفع اليهم كعب بن يهوذا وكان عظيما في بني قريظة فدفعه الى محيصة بن مسعود والى ابى بردة بن نيار وقال ليضربه محيصة وليذفف عليه ابو بردة فضربه محيصة ضربة لم تقطع وذفف ابو بردة فاجهز عليه فقال حويصة وكان كافرا لاخيه محيصة اقتلت كعب بن يهوذا قال نعم فقال حويصة اما والله لرب شحم قد نبت في بطنك من ماله انك للئيم يا محيصة فقال له محيصة لقد امرني بقتله من لو امرني بقتلك لقتلتك فعجب من قوله ثم ذهب عنه متعجبا فذكروا انه جعل يتيقظ من الليل فيعجب من قول اخيه محيصة حتى اصبح وهو يقول والله ان هذا لدين ثم اتى النبي عليه السلام واسلم فقال محيصة في ذلك الابيات انتهى ولنبدأ بشرح الابيات قوله يلوم ابن امي الخ مفعول يلوم محذوف وفاعله ابن امى يريد اخاه حويصة اي يلومني اخي على قتل ابن سبينة او كعب بن يهوذا والجملة الشرطية في موقع الحال من فاعل يلوم او من مفعوله المحذوف كما في قوله اهذا الذى بعث الله رسولا اي بعثه وقوله تالى ذرني ومن خلقت وحيدا اي خلقته والتطبيق قدمر معناه في شعر على رضي الله عنه والذفرى بالكسر والقصر ما من لدن المقذ الى نصف القذال او العظم الشاخص خلف الاذن كذا في القاموس وقوله كلون الملح اي لونه كلون الملح وقد اشتهر تشبيه لون السيف بالملح وهو الشيئ المعروف الذي يطيب به الطعام والملح اللبن ايضا قال ابو الطمحان القينى وكانت له ابل فسقى قوما من البانها ثم انهم اغاروا عليها فاخذوها

وانى لارجو ملحها فى بطونكم  وما بسطت من جلد اشعث اغبر

والتشبيه فى البياض واللمعان فلو اريد الملح بمعنى اللبن لم يبعد وقوله متى ما اصوبه اى متى اخفضه للضرب وقوله فليس بكاذب اى لاينبو عن الضريبة بل

يمضى وينفذ وقوله وماسرنى الح يريد قدقلت انه لوامرنى النبي عليه السلام بقتلك لقتلتك مع انه لوجعل لى جميع مابين بصرى ومأرب مع سعته وكثرة قيمته لااحب ان اقتلك من عند نفسى لكونك اخالى احبه ولكن حب النبى عليه السلام وطاعته فوق كل حب وطاعة وبصرى بضم الباء وسكون الصاد وبالقصر بلدة بالشام ومأرب مدينة باليمن فى آخر جبال خضرت موت لا تنصرف فى السعة للعلمية والتأنيث وهى فى البيت مصروفة للقافية وهذا الشعر لمحيصة رضى الله عنه مسطور فى سيرة ابن هشام وفى الاستيعات عن ابن اسحق ومن الاستيعاب كتبته مع القصة

## مُسْلِيَة اومَسْلَمَة بن هَزَّان او حَدَّان الحَدَّانى

## رضى الله عنه

### فى مدح رسول الله صلى الله عليه وسلم حين وفد عليه بعد الفتح

### الترجمة

قال فى القاموس ومسلية كمحسنة ابو بطن وابن هزان صحابى وقال فى التجريد للذهبى مسلية بن حدان الحدانى قدم بعد الفتح فانشد وقال فى الاصابة فى باب من اسمه مسلمة بفتح الميم مسلمة بن هزان ويقال ابن حد ان الحدانى ذكره الرشاطى انتهى ولوقوع هذا الاختلاف فى اسمه واسم ابيه ذكرت الاسمين كليهما فى العنوان بالترديد كما ترى والحدانى بفتح الحاء نسبة الى حدان بفتحها بطن من بنى سعد بن زيد مناة بن تميم منهم اوس بن مغراء الشاعر وبضمها نسبة الى حدان بن شمس بضم الشين بطن من الازدو الى ذي حدان بالضم ابن شراحيل بطن من همدان ولم يظهرلي الى الآن الى اي هذه البطون نسبة هذا الصحابى رضي الله عنه ولعل الله سبحانه ان يطلعني بفضله وكرمه قال في الاصابة نقلا عن الرشاطي وفد على النبي عليه السلام بعد الفتح ومدحه بشعر منه

من الطويل حافت برب الرقصات الى منى طوالع من بين القصيمة بالرَّكْب

بان رسول الله فينا محمدا  له الرأس والقاموس من سلف كعب

اتانا ببرهان من الله قابس  اضاء به الرحمن مظلمة الكذب

اعز به الانصار لما تقارنت  صدور العوالي في الحناديس والضرب

الراقصات المسرعات في الاساس ومن المجاز رقص البعير رقصا ورقصانا اذا خب والخبب ضرب من العدو والسرعة وطوالع جمع طالعة من طلع عليهم اذا اتى واقبل بحيث يرونه والقصيمة رملة تنبت الغضى اوجماعة الغضى المتقارب وماسهل من الارض وكثر شجره والركب اسم جمع راكب قوله بان رسول الله الخ جملة له الرأس خبران ورأس كل شيء اعلاه والقاموس وسط البحر ولجته والسلف من تقدمك من ابائك وصيغة التثنية لارادة طرفي الاب والام وكعب هو ابن لؤى بن غالب من اجداد النبي عليه السلام كان موحدا وكان عظيم القدر عند العرب ولذلك ارخوا بموته الى عام الفيل ثم ارخوا بالفيل وكان يخطب الناس ايام الحج وخطبته التي اخبر فيها بالنبي عليه السلام مشهورة وفيها يقول امابعد فاسمعوا وافهموا وتعلموا واعلموا ليل داج ونهار صاح والارض مهاد والسماء بناء والجبال اوتاد والنجوم اعلام والاولون كالآخرين فصلوا ارحامكم واحفظوا اصهاركم وثمروا اموالكم الدار امامكم والظن غير ماتقولون وفيها يقول سيأتي لحرمكم نبأ عظيم وسيخرج منه نبي كريم وينشد ابياتا منها

نهار وليل كل يوم يحادث  سواء علينا ليلها ونهارها

منوبان بالاحداث حين تناوبا  وبالنعم الضافي علينا ستورها

على غفلة يأتي النبي محمد  فيخبر اخبارا صدوق خبيرها

وينشد ايضا

ياليتني شاهد فحواء دعوته  حين العشيرة تبغي الحق خذلانا

وكان بينه وبين مبعثه عليه السلام خمسمائة وستون وقيل وعشرون سنة والمقصود بالبيت مدح النبي عليه السلام بان له الحسب الاتم والفخر الاكمل فى بني كعب بن لؤى قوله اتانا ببرهان الخ يقال قبس واقتبس منه نارا اخذها وعلما استفاده فالظاهر ان القابس ههنا بمعنى المقبوس كعيشة راضية والبرهان القرأن اوالمعجزة على الاطلاق اودين الاسلام لانه ثابت بالبرهان واضاء لازم ومتعد وهوههنا متعد مفعوله مظلمة الكذب والمظلمة بفتح اللام وكسرها مصدر بمعنى ذهاب النور كالظلمة ويعبر بها عن الشرك والجهل والفسق كما يعبر بالنور عن اضدادها والكذب بكسر الكاف وسكون الذال لغة فى مصدر كذب يكذب اومخفف من الكذب وزان كتف والكذب ههنا الكفر اواعم واضافة المظلمة الى الكذب ههنا من اضافة المشبه به الى المشبه كلجين الماء والمعنى ان الله سبحانه ازال باشراق هذا البرهان الكفر الذى هوكالمظلمة قوله اعزبه الانصار الخ الصدور جمع صدر وهو اعلى مقدم كل شيئ والعوالى جمع العالية وهى اعلى الرمح واسفله السافلة والحنادس جمع حندس بالكسر وهو الظلمة اراد ظلمات الحرب اوالحندس الليل فشبه الحرب بالليل فى الاظلام والمأل واحد يقول ان الانصار تمسكوا بهذا الدين طوعا ونصروه خصوصا فى مواطن الحروب ومشاهدها فجعلهم الله اعزة فى الدارين فهذه منقبة عظيمة لهم ولعمري انهم احقاء بكل فخر يشهد لهم بذلك اسمهم الذى سماهم به ربهم وقد شهد لهم نبيهم فى اواخر ايامه على ملأ المسلمين بانهم وفوا الذى عليهم وبقي الذى لهم واوصى بهم خيرا

يارب لا تسلبنى حبهم ابدا ويرحم الله عبدا قال آمينا

## مُكْنَف بن زيد الخَيل الطّائى

### رضى الله عنه

فى قتال اهل الردة مع خالد بن الوليد رضي الله عنه فى اوائل عهد ابى بكر الصديق رضي الله عنه

### الترجمة

هو مكنف بن زيد الخيل بن مهلهل بن منهب بن عبد رضا صنم كان لطيء ابن محلس بن ثور بن عدى بن كنانة بن مالك بن نائل بن نبهان وهوا سود بن عمرو بن الغوث بن جلهمة وهوطيء بن ادد بن مذحج بن زيد بن يشجب الاصغر بن عريب بن مالك بن زيد بن كهلان بن سبابن يشجب بن يعرب بن قحطان بن عابر وهوهود النبي على نبينا وعليه السلام كذا نسبه النسابون والله اعلم كذا فى الاغانى فى ترجمة زيد الخيل رضى الله عنه اسلم مكنف رضى الله عنه وصحب النبي عليه السلام وهو اكبر اولاد ابيه وبه كان يكنى فيقال ابو مكنف وشهد مكنف رضى الله عنه قتال اهل الردة مع خالد بن الوليد رضى الله عنه وكان له غناء فيه قال فى الاصابة وذكر الواقدى فى كتاب الردة انه كان ممن ثبت على الاسلام وقاتل بنى اسد لما ارتدوا مع طليحة وانشد له فى ذلك ابيات شعر

من الكامل

ضَلّوا وغرّهمو طُلَيحَةُ بالمُنى ... كَذِباً وداعى ربّنا لايَكْذِبُ

لمّا رأونا بالفضاء كَتائِبا ... نَدْعوالى ربّ الرّسول ونَرْغَبُ

ولَوا فِرارا والرّماحُ تَؤُزُّهم ... وبكل وَجْه وَجْهوا نترقب

قوله ضلوا الخ اي اصحاب طليحة وغرهم خدعهم وطليحة هوابن خويلد الاسدي اسد خزيمة وفد على رسول الله عليه السلام مع وفد بنى اسد واسلم ثم ارتد وتنبأ فى حياة النبى عليه السلام فوجه اليه النبي عليه السلام ضرار بن الازور الاسدى عاملا على بنى اسد وامرهم بالقيام على من ارتد فضعف امر طليحة حتى لم يبق الا اخذه فضربه بسيف فلم يصنع فيه شيأ فظهر بين الناس ان السلاح لايعمل فيه فكثر جمعه وتوفي النبي عليه السلام وهم على ذلك وارتد كثير من قبائل العرب خاصة اوعامة فعقد ابوبكر رضي الله عنه الالوية وعقد لخالد بن الوليد رضي الله عنه وامره بطليحة فسار خالد مع جيشه فالتقوا على بُزاخَة وهي ماء لبني اسد فاقتتلوا قتالا شديدا وطليحة متلفف بكساء يتنبأ لهم وكان عيينة بن حصن بن بدر

الفزاري قدارتدولحق بطليحة في سبعمائة رجل من قومه فلما اشتد القتال كرعيينة على طليحة وقال له هل جاءك جبريل قال لافقال عيينة الى متى فقد والله بلغ مناثم رجع فقاتل قتالا شديدا ثم كر على طليحة فقال هل جاءك جبريل قال نعم قال فما ذاقال لك قال قال ان لك رحى كرحاه وحديثا لاتنساه فقال عيينة قد علم الله انه سيكون حديث لاتنساه انصر فوايا بنى فزارة فانه كذاب فانصرفوا وانهزم الناس وهرب طليحة فلحق بالشام ونزل على كلب ثم اسلم حين بلغه ان اسدا وغطفان اسلموا وحسن اسلامه ولم يغمص عليه في اسلامه بعدوشهدحرب القادسية ونهاوندوذكره ارباب السير مشاهد عظيمة في الفتوح وكان طليحة بعد اسلامه مربجنبات المدينة حاجا في عهد ابى بكر رضي الله عنه فقيل لابى بكر رضي الله عنه هذا طليحة فقال ماانصنع به قداسلم ثم اتى عمر رضى الله عنه بعدما استخلف فبايعه فقال له عمر رضي الله عنه انت قاتل الرجلين الصالحين يعنى ثابت بن اقرم الانصاري وعكاشة بن محصن الاسدي رضى الله عنهماوكانا طليعتين لخالدبن الوليد رضى الله عنه فلقيهما طليحة واخوه سلمة فقتلا هما وكان ثابت وعكاشة رضي الله عنهمامن اجلاء الصحابة رضى الله عنهم وشهدابدرا جميعامع رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال ياامير المؤمنين لم يهنيّ الله بايديهما واكرمهما بيدي فقال والله لااحبك ابدا قال فمعاشرة جميلة فان الناس يتعاشرون مع البغضاء فبايعه عمر رضى الله عنه ولما انهزم الناس من طليحة اسر عيينة بن حصن فاتى به الى ابي بكر رضي الله عنه فحقن دمه وتجاوزعنه انتهت قصة طليحة قوله بالمنى جمع منية وهي مايقدره الانسان ويتصوره فى نفسه ممايحبه ويشتهيه ويقال مناه المنى من التفعيل اي القى وجعل له منية وفي التنزيل يعدهم ويمنيهم وفي معناه غره بالمنى وقوله كذبا اي يكذب لهم كذبا قوله لمارأونا بالفضاء الخ كتائبا بالصرف للضرورة جمع كتيبة وجملة ندعوصفة كتائبا ونرغب من ارغبه في الشيئ كرغبه قوله ولوا فرار الخ ولوا اعرضوا وادبروا وفرارا امامصدر مفعول مطلق من غير لفظ الفعل واماجمع فارحال مؤكدة وقوله والرماح تؤزهم اي تزعجهم وتحملهم على الفرار وفي التنزيل الم ترانا ارسلنا الشياطين على الكافرين تؤزهم ازاقيل فى تفسيره تزعجهم وتغريهم على المعاصي وقوله وبكل وجه متعلق بنترقب المؤخر والوجه الجهة ووجهوا على بناء المعلوم من التوجيه بمعنى توجهوا كما في المثل السائرايما

اوجه الق سعدا ونترقب بمعنى ننتظر يريد لما ولوامدبرين قعدنا لهم كل مرصدفلم ندع جهة توجهوا اليها الا ونقتلهم فيها وهذا الشعر لمكنف رضي الله عنه كتبته من الاصابة كما اسلفت ذلك

## ناجية بن جندب الاسلمي

## رضى الله عنه

في يوم خيبر على مافي سيرة ابن هشام رحمه الله

### الترجمة

هو ناجية بن جندب بن عمير بن يعمر بن دارم بن عمرو بن واثلة بن سهم بن مازن ابن سلامان بن اسلم بن افصى الاسلمي هكذا ساق نسبه في الاستيعاب وهو الذى نزل بسهم رسول الله عليه السلام في البئر بحديبية و قيل ان الذي نزل البراء بن عازب رضي الله عنه وقيل خالد بن عبادة الغفاري رضي الله عنه وكان اسم ناجية ذكوان فسماه النبي عليه السلام ناجية حين نجا من قريش وذلك انه قال للنبي عليه السلام حين صد الهدي زمن الحديبية ابعث معي بالهدى حتى انحره في الحرم قال وكيف تصنع قل آخذ في اودية لايقدرون علي قال فدفعه الي فنحرته في الحرم و ناجية رضي الله عنه هو الذى عدل برسول الله عليه السلام عن الطريق حين جاءه خبر قريش انها بعثت خالد بن الوليد جريدة خيل يتلقى رسول الله عليه السلام فكره رسول الله عليه السلام ان يلقاه وكان بهم رحيما فقال من برجل يعدلنا عن الطريق فقال ناجية بن جندب انا بابي انت وامي يا رسول الله قال فاخذت بهم في طريق قد كان بها فدافد وعقاب فاستوت لي الارض حتى انزلته على الحديبية قال رضي الله عنه

من مشطور الرجز

انا لمن انكرني ابن جندب ... يارب قرن في مكرى انكب

طاح بمندى انسر وثعلب

قوله انا لمن انكرنى ابن جندب مثل هذا القول يقوله الابطال فى مواطن الحرب فخرا وانذار للاعداء اي انا الرجل المعروف المشهور بالشجاعة ويقال انكره اذا لم يعرفه ولمن انكرنى متعلق بالقول المقدر اي اقول هذا لمن لم يعرفنى حتى يعرفنى وقوله يارب قرن فى مكرى انكب فى تقدير ياقوم ونحوه لان مدخول حرف النداء لا يكون غير الاسم ومثله فى الحديث يارب كاسية فى الدنيا عارية فى الاخرة وفى قول ذي الرمة

الا يا اسلمي يادارمي على البلى ولا زال منهلا بجرعائك القطر

وقيل ان يافى مثل هذه المواضع لمجرد التنبيه فلا حاجة الى التقدير والمكر اسم مكان من كر فى الحرب اذا شد على عدوه وهجم وانكب صفة قرن والانكب الذى عدل ومال وطاح بمعنى هلك او سقط والمغدى موضع الغداء وهو طعام الغداة وانسر جمع نسر وهو طائر معروف وثعلب حيوان معروف وكلاهما يأكلان الجيف فالمراد بكونه فى مغداهما كونه مقتولا يريد انه اذا كر على اقرانه يغلب عليهم ويتركهم جزر السباع

## ناجية بن جندب الاسلمى ايضا

## رضى الله عنه

فى يوم خيبر ايضا على مافى سيرة ابن هشام رحمه الله

من مشطور الرجز

يا لَعِبادِ اللهِ فيمَ يرغَبْ ماهو الّا مأكَلٌ ومَشرَبْ

وجَنّةٌ فيها نَعيمٌ مُعجِبْ

اللام فى قوله يا لعباد الله مفتوحة لانها للاستغاثة دخلت على المستغاث به فاذا دخلت على المستغاث له كسرت فتقول يا لزيد للخطب الجليل تفتح الاولى وتكسر الثانية قال الشاعر

تكنفنى الوشاة فاز عجونى فيا لَلناسِ للواشي المطاع

بفتح الاولى وكسر الثانية واذا عطفت على المستغاث به باللام كسرت فى المعطوف كما فى قوله

يبكيك ناء بعيد الدار مغترب  يا للكهول و للشبان للعجب

بفتح لام للكهول وكسر لام للشبان وذلك لان فتح اللام فى المستغاث به انما كان للفرق بين المستغاث به والمستغاث له فلما عطفت على المستغاث به ارتفع الاشتباه لان الشيئ انما يعطف على مثله فلم تبق حاجة الى الفرق فعادت اللام الى حالها المعروفة اذا دخلت على المظهر وهي الكسر وقوله فيم يرغب كلمة فى دخلت على ما الاستفهامية فحذف الفها وكذلك تحذف اذا دخل عليها سائر حروف الجر كم ولم وعم وعلام ومم وحتام والى مه وقد تثبت فى الشعر قال حسان بن ثابت رضي الله عنه

على ما قام يشتمنى لئيم  كخنزير تمرغ فى دمان

وفيم فى محل النصب بيرغب ونائب الفاعل المصدر المدلول عليه بالفعل اي يرغب الرغب اي تفعل الرغبة وسأل ابن جنى اباعلى الفارسي عن قولهم فيك يرغب وقال لايرتفع بما بعده فاين المرفوع فقال المصدر اي فيك يرغب الرغب اي تفعل الرغبة انتهى وانما قال لايرتفع بما بعده لان النائب لايتقدم على عامله ولذلك غلطوا الزمخشري فى قوله ان عنه نائب الفاعل لمسئولا فى قوله تعالى كان عنه مسئولا والوجه فى عنه مسئولا ان يقال ان الجار والمجرور مرتفعان بمحذوف يفسره المذكورا سند الى ضمير مستتر حذف منه حرف الجر واوصل اليه ولايصح هذا التوجيه في قوله فيم يرغب لمكان الاستفهام قلو قدرنا الفعل للجار والمجرور فاما ان نقدره مقدما فيبطل صدارة الاستفهام اومؤخرا فيلزم تقديم النائب على الفعل فلذلك جعلناه مما اسند الى المصدر المدلول وجعلنا الجار والمجرور مفعولا فيه يسأل عما ينبغى ان يرغب فيه ثم قال مجيبا ماهو اي مايتصور ان يرغب فيه وماهو من مظانه الا مأكل ومشرب اي اكل وشرب اي الدنيا التى هي عبارة عن الاكل والشرب اي ونحو هما من لذات الدنيا وشهواتها وخصهما لانهما امس بصاحبهما من غيرهما يريدان ماهو فى مظان الرغبة ينقسم الى قسمين احدهما الدنيا وشهواتها

وثانيهما الجنة ونعيمها واللذات الدنيوية لكونها حظوظا عاجلة سريعة الدثورو الزوال فما احقها بان تهجر ولله در القائل

اشـد الغم عندي في سرور تيقن عنه صاحبه انتقالا

وامانعم الجنة فهي دائمة لاتنقطع ولا تفنى فهي مما ينبغى ان يرغب فيه خاصة

## النعمان بن بشير الانصارى الخزرجى

## رضى الله عنه

في مدح الانصار

### الترجمة

هو النعمان بن بشير بن سعد بن الحصين بن ثعلبة بن خلاس بن زيد بن مالك الاغر ابن ثعلبة بن كعب بن الخزرج بن الحرث بن الخزرج وامه عمرة بنت رواحة اخت عبدالله بن رواحة رضى الله عنه وهي التي يقول فيها قيس بن الخطيم الاوسي

اجـد بعمرة غنيانهـا فتهجرام شاننا شانها
وعمرة من سروات النسا ء تنفخ بالمسك اردانها

ولد النعمان رضي الله عنه في السنة الثانية من الهجرة يقال انه اول مولود ولد للانصار بعد الهجرة كما ان عبدالله بن الزبير رضى الله عنه اول مولود للمهاجرين وابوه بشير بن سعد رضى الله عنه شهد العقبة وبدرا والمشـاهد كلها وهو اول من بسط يده من الانصار لابي بكر رضى الله عنه يوم سـقيفة بنى ساعدة وللنعمان رضى الله عنه رواية عن رسـول الله صلى الله عليه وسلم في عدة احاديث ذكرهـا اهل العلم كان اميرا لمعاوية على الكوفة سـبعة اشهر ثم كان اميرا على حمص لمعاوية رضى الله عنه ثم ليزيد فلما مات يزيد صـار زبيريا فقتله اهل حمص ايام مروان بعد وقعة مرج راهط وكان رضى الله عنه خطيبا شـاعرا وله شعر رقيق من جملته قوله يمدح الانصار

بَهاليلُ من اولاد قَيلة لم يجِد عليهم خَليطٌ فى مخالطة عَتبا من الطويل

مَساميحُ ابطالٌ يَراحُون للنَّدى يَرَوْن عليهم فعل آبائهم نَحبا

بهاليل جمع بهلول بالضم وهوالسيد الجامع لكل خير وقيلة هي بنت كاهل ابن عذرة بن سعد بن زيد بن ليث بن سود بن اسلم بن الحاف بن قضاعة وهي ام الاوس والخزرج ولم يجد اما بمعنى لم يصب وعتبا مفعوله وعليهم حال من عتبا اومتعلق به وقد مر جواز تقدم معمول المصدر عليه اذا كان جارا ومجرورا واما بمعنى لم يغضب من الموجدة بمعنى الغضب وعليهم متعلق به وعتبا مفعول مطلق لان العتب بالسكون هوالموجدة والغضب من الصديق والخليط المخالط يريد ان الذى يخالطهم ويصاحبهم لايغضب عليهم اصلالانهم بلغوا فى حسن العشرة غايته والمساميح جمع سمح ككتف وهوالجواد الكريم يقال رجل سمح ورجال مسامح كانه جمع مسماح وزيادة الياء فى مثل هذه الجموع كثيرة ويراحون من راح يراح للشيء اذانشط وسربه وقوله يرون عليهم فعل ابائهم نحبا النحب النذر يريد ان ابائهم كانوا كرماء موصوفين بالصفات المادحة وهم اقتدوا آثارهم بحيث لايتركونها فصارت كالنذر اللازم ايفاؤه كما قيل

بابه اقتدى عدي في الكرم ومن لم يشبه اباه فقد ظلم

وهذان البيتان للنعمان بن بشير رضى الله عنه مذكور ان في سيرة ابن هشام ومنها كتبتهما قال وهما فى قصيدة له ولم اجد اكثر من هذين البيتين في كتاب ما

## النَّمر بن تَولَب العُكْلى

### رضى الله عنه

في مدح الجود والترغيب عليه وحسن الظن والثقة بالله سبحانه وتعالى

### الترجمة

هوالنمر بن تولب بن زهير بن اقيش بن عبد كعب بن عوف بن الحرث بن

عوف بن وائل بن قيس بن عبد مناة بن ادبن طابخة بن الياس بن مضر وعوف هو عكل كذا في الاستيعاب وفي القاموس وعكل قبيلة فيهم غباوة اسمه عوف بن عبد مناه حضنته امة تدعى عكلا فلقب به انتهى وفد النمر رضي الله عنه على النبي عليه السلام مسلما وانشده شعرا يذكر في باب الراء انشاء الله وروى عنه عليه السلام حديث صوم شهر الصبر وثلثة ايام من كل شهر يذهبن وغر الصدر وكان عنده كتاب من رسول الله صلى الله عليه وسلم اعطاه له مكتوب فيه هذا كتاب من محمد رسول الله لبني زهير بن اقيش انكم ان اقمتم الصلاة و آتيتم الزكاة و اديتم خمس ماغنمتم الى رسول الله صلى الله عليه وسلم فانتم آمنون بامان الله عز وجل قال الاصمعي كان النمر بن تولب العكلي احد المخضرمين من الشعراء وكان ابو عمرو بن العلاء يسميه الكيس لجودة شعره ويشبه شعره بشعر حاتم بن عبدالله الطائي قال ابو عبيدة كان النمر شاعر الرّباب في الجاهلية ولم يمدح احدا ولا هجا ووفد على النبي صلى الله عليه وسلم مسلما وهو كبير السن انتهى والرباب هم عكل وتيم وثور وعدي بنو عبد مناة بن ادبن طابخة بن الياس بن مضر وقال ابو حاتم السجستاني في كتاب المعمرين عاش النمر بن تولب مأتي سنة وخرف والقي على لسانه انحروا للضيف اعطوا السائل اصبحوا الراكب اي اسقوه الصبوح انتهى وذلك لانه رضي الله عنه كان جوادا واسع العطاء كثير القرى وهابا لماله وخرفت امرأة من حي كرام فكانت تقول زوجوني قولوا لزوجي يدخل مهدوالى جانب زوجي فقال عمر بن الخطاب مالهج به النمر ابن تولب افخر واسرى واجمل مما لهجت به صاحبتكم ثم ترحم عليه

من الكامل

لا تَغْضَبَنَّ على امرئٍ في ماله ... وعلى كَرائِمِ صُلْبِ مالك فاغْضَبِ

واذا تُصِبْكَ خَصاصَةٌ فارجُ الغِنى ... والى الّذي يُعْطي الرَّغائبَ فارغَبِ

لا تغضبن بالنون المشددة وفي ماله اي لاجل ماله وكرائم المال نفائسه واحدتها كريمة وفي الحديث انه عليه السلام قال للمصدق اياك وكرائم اموالهم والصلب الشديد والقوة ايضا يريد اعز الاموال واحبها كما قال الله تعالى لن تنال البر حتى

تنفقوا مما تحبون وقوله فاغضب اي اخرجه من ملكك بان تنفقه فى سبل البر والخير واتى بلفظ الغضب للمشاكلة قوله واذا تصبك خصاصة الخ الخصاصة الفقر والرغائب جمع رغيبة وهو الامر المرغوب فيه والمحبوب والعطاء الكثير ويقال رغب اليه اي ابتهل و تضرع وسأل وفي حديث الدعاء رغبة و رهبة اليك اعمل رغبة ومفعول رهبة محذوف بالمقابلة اي منك كحذف العامل فى نحو متقلدا سيفا ورمحا يريد فارغب الى الله سبحانه وتعالى وسل منه والجزم باذا من باب الضرورة عند البصريين كما فى قول الآخر واذا تصبك خصاصة فتجمل وانشد فى الاغانى والاستيعاب وكثير من الكتب قول النمر واذا تصبك باذا والجزم ولكن قال في الاستيعاب ويروى ومتى تصبك قلت وكذلك اعني بلفظ متى انشده ابن قتيبة في كتاب الشعر والشعراء

## النمر بن تولب العكلى ايضا

## رضى الله عنه

في وصف الجود والحث على المبادرة به وتعريف حمد العاقبة فيه وذم البخل والردع عنه

من الطويل

اَعاذِلَ انْ يُصْبِحْ صَداىَ بِقَفْرَةٍ ... بَعيدا نَأْنى صاحبي و قريبي

تَرَى انَّ ما ابْقَيْتُ لم اكُ ربَّه ... وانَّ الذى انفقت كان نَصيبي

وذى ابلٍ يَسْعى ويَحْسَبُها لَه ... اخى نَصَبٍ فى رَعْيِها ودُؤُبِ

غَدَتْ وغدا ربٌّ سواه يَقودُها ... وبُدِّلَ احجارا وجالَ قَليب

قوله اعاذل الخ الهمزة للنداء وعاذل ترخيم عاذلة وترخيم مثله بحذف الآخر يخاطب امرأة تلومه وتعذله على الانفاق والبذل والصدى ههنا ما يبقى من الميت فى قبره

وهو جثته والقفرة الارض الخالية وقوله نأنى بمعنى نأى عني اي بعدوليس بمعنى ابعدني وان اردت هذ المعنى قلت انأنى هذا هو الاحسن ويجوز ان يكون نأنى بمعنى ابعدنى وليس بجسن انماجاء ذلك فى كلمات يقال غاض الماء وغضته ونزحت البئر ونزحتها وهبط الشيء و هبطته وبنو تميم يقولون اهبطته و احرف سوى هذه يسيرة كذا ذكر المبرد في الكامل و تري بسكون الياء و سقوط نون المخاطبة للجزم جزاء الشرط وقوله لست ربه اي مالكه قوله وذي ابل يسعى الح الواو بمعنى رب واخي نصب صفة ذي ابل والنصب التعب والدؤب كالدخول الاستمرار والدوام على الشيء وقوله و بدل احجارا وجال قليب الاحجار هي احجار القبر التى توضع عليه والجال الناحية يقال لكل ناحية من البئر والقبر وما اشبه ذلك والقليب ههنا القبر وهذا الشعر نظير قول حاتم الطائى

اماوي ان يصبح صداي بقفرة  من الارض لاماء لدي ولاخمر
ترى ان ماابقيت لم اك ربه  وان يدى مما بخلت به صفر

وقال الحرث بن حلزة اليشكري في هذا المعنى

قلت لعمرو حين ارسلته  وقد حبا من دوننا عالج
لاتكسع الشول باغبارها  انك لا تدرى من الناتج
واصبب لا ضيافك البانها  فان شر اللبن الوالج

قوله لاتكسع الشول باغباها فان العرب كانت تنضح على ضروعها الماء البارد لتكون اسمن لاولادها التى في بطونها والغبر بقية اللبن في الضرع فيقول لاتبق ذلك اللبن لسمن اولادها فانك لاتدرى من ينتجها فلعلك تموت فتكون ميراثا اويغار عليها والوالج مايجعله الرجل لبعض ولده فيتسامع الناس فينكفون عنه وروي عن رسول الله صلى الله عليه وسلم انه قال يقول بن آدم مالى مالى ومالك من مالك الا ما اكلت فافنيت اولبست فابليت او اعطيت فامضيت اي انفذت و لم تتوقف فيه على مافى النهاية وهذا الشعر للنمر بن تولب رضي الله عنه مسطور فى كتاب الكامل لابى العباس المبرد برد الله مضجعه ومنه كتبته

## النمر بن تولب العكلي ايضا

## رضي الله عنه

في كبره وشيخوخته

من البسيط

اودى الشباب وحب الخالة الخلبه ... وقد برئت فما بالصدر من قلبه

وقد تثلم انيابي وادركني ... قرن علي شديد فاحش الغلبه

وقدرمي بسراه اليوم معتمداً ... في المنكبين وفي الساقين والرقبه

اودى ذهب وهلك والخالة جمع خائل مثل بائع وباعة والخلبة جمع خالب يخبر انه شيخ ترك صحبة الشباب والفتيان وهم الخالة الخلبة الذين يختالون في مشيتهم ويخلبون النسأ اي يحبونهن ويخدعونهن ومنه يقال فلان خلب نساء اذا كان يحبهن ويحببنه وقدروي الخلبة كفرحة على انه مفرد ثم قال برئت اي برئ صدري من ودهم ومحبتهم فمابه قلبة من ودهم يقال للانسان وغيره من الحيوان مابه قلبة اي مابه وجع ومكروه واصله من القلاب بالضم قال الاصمعي القلاب ان تصيب الغدة القلب فاذا اصابته لم يلبث البعير ان تقتله وقوله وادركني قرن يعني الهرم وقوله وقدرمي بسراه فالسرى جمع سروة مثل رشوة ورشى وهو نصل السهم اذا كان مدورا مد ملكا لاعرض له يريد ان الهرم رمى بسهامه في جميع جسده كما قال في المنكبين وفي الساقين والرقبة وهذا الشعر للنمر بن تولب رضي الله عنه مسطور في الامالي لابي علي القالي رحمه الله ومنها كتبته وهو مذكور ايضا في كتاب المعمرين بنوع مغايرة

## باب قافية التاء

## ابو هريرة الدوسي اوتمثل

## رضي الله عنه

في اول اسلامه

## الترجمة

فد اختلف فى اسم ابى هريرة رضى الله عنه فى الجاهلية والاسلام اختلافا كثيرا وقد غلبت عليه كنيته كما غلبت على ابى طالب كنيته فهو كمن لا اسم له غيرها قال ابو عمر فى الاستيعاب بعد ماحكى الاقوال فى اسمه ومثل هذا الاختلاف والاضطراب لا يصح معه شئ الا ان عبدالله اوعبد الرحمن هوالذى سكن اليه القلب فى الاسلام واما فى الجاهلية فرواية الفضل بن موسى عن محمد بن عمرو عن ابى سلمة عنه فى عبد شمس صحيحة ورواية سفيان بن حصين عن الزهرى عن المحرز بن ابى هريرة فى عبد عمرو بن غنم صالحة وقد يمكن ان يكون له فى الجاهلية اسمان عبد شمس وعبد عمرو واما فى الاسلام فعبد الله او عبدالرحمن وقال ابو احمد اصح شى عندنا فى اسم ابى هريرة عبدالرحمن بن صخر ذكر ذلك فى كتابه فى الكنى انتهى واما تكنيته بابى هريرة فلما روى عنه انه قال وجدت هرة فجعلتها فى كمى فقيل لى ماهذه فقلت هريرة فقيل لى فانت ابوهريرة قال ابو عمر وقد روينا عنه انه قال كنت احمل هرة يوما فى كمى فرأنى رسول الله صلى الله عليه وسلم فقال لى ماهذه فقلت هرة فقال ياابا هريرة وهذا اشبه عندى ان يكون النبى صلى الله عليه وسلم كناه بذلك والله اعلم انتهى ولكن الظاهر مما فى صحيح البخارى من قوله عليه السلام يا اباهريرة هذا غلامك قد اتاك ولم يذكر قصة الهرة خلاف ذلك والله اعلم ونسب ابى هريرة رضي الله عنه على ماساقه فى الاصابة عن ابن الكلبى ومن تبعه ابوهريرة بن عامر بن ذى الشرى بن طريف ابن عتاب بن ابي صعب بن منبه بن سعد بن سليم بن فهم بن غنم بن دوس بن عدثان بن عبدالله بن زهران بن كعب انتهى وكعب هوالحرث بن كعب بن مالك بن نصر بن الازد بن الغوث اسلم ابوهريرة رضى الله عنه عام خيبر وشهدها مع النبي عليه السلام ثم لزمه وواظب عليه رغبة في العلم بشبع بطنه وكان يحضر ما لايحضر سائر المهاجرين والانصار وكانت يده مع يد رسول الله عليه السلام وكان يدور معه حيث دار وقد شهد له رسول الله عليه السلام بحرصه على العلم والحديث فقد اخرج البخاري فى الصحيح من طريق سعيد المقبرى عن ابي هريرة رضى الله عنه قلت يارسول الله من اسعد الناس بشفاعتك قال لقد ظننت ان لايسألنى عن هذا الحديث احداول منك لمارأيت من حرصك على الحديث وقال ابوهريرة رضى الله عنه يارسول الله اني سمعت منك حديثا كثيرا وانا اخشى ان

انسى فقال ابسط ردائك قال فبسطته فغرف بيده فيه ثم قال ضمه فضممته فما نسيت شيئا بعد وكان احفظ اصحاب رسول الله صلى الله عليه وسلم قال النووي في التقريب واكثرهم يعنى الصحابة حديثا ابوهريرة روي له خمسة آلاف وثلثمائة واربعة وسبعون حديثا انتهى وليس في الصحابة من بلغ حد المكثر وهو من روي له الف حديث فاكثر الا الستة بالاتفاق وهم ابو هريرة وعبدالله ابن عمر وانس بن مالك وعائشة وابن عباس وجابر رضوان الله تعالى عليهم وابوسعيد الخدري رضى الله عنه بالاختلاف وقد افاد ذلك الفاضل المنيني في شعره له نظمهم فيه بالترتيب على طبق مراتبهم في كثرة الرواية فقال

المكثرون احاديث الرسول لهم ... فضل ورب العرش جابرهم
ابوهريرة عبدالله مع انس ... صديقة وابن عباس وجابرهم
قد رتبوا في نظامي طبق كثرتهم ... وان يزد فيهم الخدري فسابعهم

واراد بعبدالله ابن عمر كما ذكر في شرح ارجوزته في اهل بدر وقال البخارى روى عن ابي هريرة رضى الله عنه اكثر من ثمانمائة رجل من بين صاحب وتابع وممن روى عنه من الصحابة ابن عباس وابن عمر وجابر بن عبدالله وواثلة بن الاسقع استعمله عمر رضى الله عنه على البحرين ثم عزله ثم اراده على العمل فابى عليه ولم يزل يسكن المدينة وبها كانت وفاته قيل سنة سبع وخمسين وقيل ثمان وخمسين وقيل تسع وخمسين وهو ابن ثمان وسبعين سنة وصلى عليه الوليد بن عتبه بن ابي سفيان وكان اميرا يومئذ على المدينة ومناقب ابي هريرة رضى الله عنه اكثر من ان تحصى ذكرنا شيئا منها ومن اراد الزياده فعليه بالاصابة اخرج الامام البخارى في صحيحه من طريق قيس بن ابي حازم عن ابي هريرة رضى الله عنه انه لما اقبل يريد الاسلام ومعه غلامه ضل كل واحد منهما عن صاحبه فاقبل بعد ذلك وابوهريرة جالس مع النبي عليه السلام فقال النبي عليه السلام ياابا هريرة هذا غلامك قد اتاك فقال اما انى اشهدك انه حر قال فهو حين يقول

يا ليلة من طولها وعنائها ... على انها من دارة الكفر نجت — من الكامل

انتهى مافي الصحيح العناء التعب والمشقة وعلى انها بمعنى مع انها ودارة الكفر دار الحرب تعجب من طول الليلة وماناله فيها من المشقة والتعب ثم حمد ذلك لما ترتب عليه من العاقبة الحميدة وقد قيل في المثل السائر عند الصباح يحمد القوم السرى والبيت مخروم والاصل فياليلة قال العينى في شرح البخارى فان قلت الشعر لمن قلت ظاهره انه لابى هريرة ولكنه غير مشهور بالشعر وحكى ابن التين انه لغلامه وحكى الفاكهي في كتاب مكة عن محمد بن حجاج السوائي ان البيت المذكور لابي مرثد الغنوي في قصيدة له فاذا كان كذلك يكون ابوهريرة قد تمثل به والله اعلم انتهى قلت قوله لكنه غير مشهور بالشعر غير واقع في محله لان عدم شهرته بالشعر لاينا في صدور بعض الشعر عنه ولعدم القطع بكون البيت لابي هريرة رضى الله عنه رددت فى العنوان فقلت اوتمثل وقد مر ان البيت فى صحيح البخارى ومنه كتبته

## جُنْدُبُ بن عَمّار الطّائىّ

## رضى الله عنه

فى يوم القادسية

### الترجمة

قال فى الاصابة جندب بن عمار بن نعيم بن شهاب بن لأم عمرو بن طريف الطائى ثم اللأمى هكذا نسبه ابن الكلبي وقال كان شاعرا شهد القادسية وذكره المرزبانى فى معجم الشعراء وقال انه وفد على النبي عليه السلام ثم شهد القادسية وهو القائل

من الكامل

زعم العواذلُ انّ ناقة جندبٍ ... بِلِوَى القُرَيَّةِ عُرِّيَتْ واُجِمَّتِ

كذب العواذل لورأين مُناخها ... بالقادسية قُلْنَ بَخٍّ وذَلَّتِ

لويضرب الطُّنْبورَ تحب جرانها ... رجلٌ اَجَشُّ اذا تَرَنَّمَ حَنَّتِ

قوله زعم العواذل الخ زعم بمعنى قال واراد بجندب نفسه واللوى مااستدق

من الرمل والقرية كسمية ثلاث محال ببغداد وقرية باليمامة وباليمن موضع لطيئ والظاهر ان المراد الاخير لان جندبا رضي الله عنه طائى كما عرف فى ترجمته وعريت على صيغة المجهول من التفعيل بمعنى تركت سدى واهملت لم يحمل عليها وكل شئ اهملته فقد عريته واجمت على بناء الفاعل اوالمفعول يقال اجم الفرس اذا ترك فلم يركب فعفا عن تعبه وذهب اعياؤه وكذا اجمه متعديا اذا تركه واجم الفرس على بناء المجهول اذا ترك ان يركب كما نقله الجوهرى والاحسن ان يكون على بناء المجهول لمناسبة عريت يريد ان العواذل عيرته بالاستراحة والاقامة فى وطنه وعدم السفر فرد ذلك عليهن فقال كذب العواذل الخ الماخ محل اناخة البعير والقادسية قرية قرب الكوفة وبها وقعت الواقعة المشهورة بين المسلمين والفرس فى خلافة عمر بن الخطاب رضى الله عنه سنة اربع عشرة وكان امير جيش الاسلام سعد بن ابى وقاص رضى الله عنه واميرجيش الفرس رستم وكان جميع من شهد وقعة القادسية من المسلمين بضعة وثلاثين الفا وجميع من قسم عليه فيئها نحوا من ثلاثين الفا وكان مع سعد رضى الله عنه تسعة وتسعون بدريا وثلثمائة وبضعة عشر ممن كانت له صحبة فيما بين بيعة الرضوان الى مافوق ذلك وثلثمائة ممن شهد الفتح وسبعمائة من ابناء الصحابة وكان رستم فى مائة الف وعشرين الفا معهم الفيلة وامتد القتال اياما لها اسماء معلومة كيوم ارماث ويوم اغواث ويوم عماس وليلة الهرير الى ان اظفر الله سبحانه عباده المسلمين على اعدائه المشركين فقتلوا فيهم مقتلة عظيمة وغنموا غنيمة لم ير مثلها وقتل رستم قتله هلال بن علفة التيمى من تيم الرباب واستشهد من المسلمين قبل ليلة الهرير ويوم القادسية وهو آخر ايام قتال القادسية الفان وخمسمائة واستشهد ليلة الهرير ويوم القادسية ستة الاف سميت ليلة الهرير لانهم تركوا الكلام انما كانوا يهرون هريرا وخص يومها باسم يوم القادسية هذا اجمال حرب القادسية التى اشار اليها جندب رضى الله عنه فى بيته قوله فان بخ هذه كلمة تقال عند المدح والرضى بالشئ وتكرر للمبالغة ورد فى الحديث انه لما نزل قوله تعالى وسارعوا الى معفرة من ربكم قال رجل بخ بخ وهى مبنية على السكون فان وصلت جررت ونونت وربما شددت كما فى هذا البيت وبخبخت الرجل اذا قلت له ذلك ومعناها تعظيم الامر وتفخيمه وقد كثر مجيئها فى الحديث كذا فى النهاية وقوله وذلت الضمير المستكن للعواذل وذلت خضعت وانقادت

يقـول ان العواذل لورأين حيث اناخت ناقتي اي بلغت واستقرت بالقادسـية لاعجبهن ذلك وبخبخن وامسـكن عن لومي وتعييري وقوله لو يضرب الطنبور الخ الطنبور بالضم آلة معروفة من الات اللهو وجران النـاقة باطن عنقهـا وقوله رجل اجش امابالراء والجيم ضدالمرأة وامابالزاي والجيم على وزن فرح من الزجـل بمعنى التطريب يقال زجل زجلا بالتحريك فهوزجل والاجش الغليظ الصـوت وحنت من الحنين وهوترجيع النائة صوتها لشوقها الى ولدها اوالى ماتحبه والابل تحب الصوت الحسن وتحن اليه فالظاهران مراد جندب رضى الله عنه مدح ناقته بان لهابقية قوة تحن الى الصوت الحسن وفى الدر النثير للجلال السيوطي عن الفائق للزمخشري بجبوب خبت مكان بلوى القرية قال وخبت علم لصحراء بين مكة والجار انتهى والجبوب الارض وهذا الشعر لجندب بن عمار رضى الله عنه كتبته من الاصابة عن المرزباني كما قدمت

## خُفاف بن نَضْلَةَ الثَّقَفي

## رضى الله عنه

في بيان وفوده على النبي عليه السلام ومبدأ اسلامه

### الترجمة

هوخفاف بن نضلة بن عمرو بن بهدلة الثقفى له وفادة وروى عنه ذابل بن الطفيل بن عمرو الدوسي وقال المرز بانى في معجم الشـعراء وفدخفاف بن نضلة على النبي عليه السلام فانشده من ابيات

من الكامل

أنّى أتَانى فى المنـام مُخَبِّرٌ ... مِن جِنِّ وَجْرَةَ فى الأُمورِ مُوَاتِ

يَدْعـو اليـك لَيـالِيًا ولَيـالِيًا ... ثُمّ احْزَأَلَّ وقال لَسْتُ بآتِ

فركبت ناجيةً اضربتنها جمرتحتٌ به على الاكمات

حتى وردتُ الى المدينة جاهدا كيما اراك فتفرج الكربات

مخبر من التفعيل ووجرة كتمرة موضع بين مكة والبصرة اربعون ميلا مافيها من منزل فهي مرت للوحش كذا في القاموس وقال السكرى وجرة دون مكة بثلاث ليال والمرت الخالى وقد اكثر الشعراء من ذكر وجرة ووحشها قال امرؤ القيس

تصدو تبدى عن اسيل وتتقى بناظرة من وحش وجرة مطفل

والمواتى المطاوع الموافق وفي الامور متعلق به قدم عليه والمواتاة لغة فى المواتاة وفي الحديث خير النساء المواتية لزوجها وليالبا بالصرف للضرورة وقوله ثم احزأل اي اجتمع وتقبض وفى النهاية وفى حديث زيد بن ثابت دعاني ابوبكر رضى الله عنه الى جمع القرأن وعمر رضى الله عنه محزئل في المجلس اي منضم بعضه الى بعض وقيل مستوفز ومنه احزألت الابل في السير اذا ارتفعت وقوله لست بات اي لاتيك بعد هذا كأنه قال غضبا عليه لعدم اسراعه في قبول قوله اولمنع الجن عن استراق السمع قوله فركبت ناجية الح الناجية الناقة السريعة السير والمتن القوة والجمر الحصا يريد ان الحصى اصابت رجلها وتحت بمعنى تسقط والباء في به للسببية والاكمات جمع اكمة با التحريك وهو التل من القف من حجارة قوله حتى وردت الى المدينة الخ جاهدا مجتهدا في السير وحاصل معنى الابيات انه كان له رئي من الجن مطاوع فاتاه ليالى كثيرة يأمره بالوفود على النبي عليه السلام والاسلام فكأنه غضب عليه لعدم مسارعته اواخبره ان الجن منعت عن استراق السمع فقال لاآتيك بعد هذا فركب ناقة سريعة السير وكان يجدبها السير حتى نكبت الحجارة ارجلها فكانت تسقط كل ذلك يفعل حرصا على لقاء النبي عليه السلام حتى ورد المدينة فالتقى مع الحبيب صلى الله عليه وسلم الذي تنفرج كل كربة عند رؤيته وهذا الشعر لخفاف بن نضلة مسطور في الاصابة نقلا عن المزربانى ومن الاصابة كتبته كما قدمت

## عبدالله بن رواحة الانصارى

## رضى الله عنه

فى غزوة مؤتة بعد ان استشهد جعفر بن ابى طالب بعد زيد بن حارثة رضي الله عنهما فاخذ اللواء وقاتل فاصيبت اصبعه وقد مرت ترجمته فى باب الهمزة

هل انتِ الا اصبعٌ دميتِ ... وفى سبيل الله ما لقيتِ

يا نفسِ الا تقتلي تموتى ... هذى حياضُ الموت قد صليتِ

وما تمنيتِ فقد لقيتِ ... ان تفعلي فعلهما هديتِ

في شرح القسطلانى على صحيح البخاري وقد ذكر ابن ابى الدنيا في محاسبة النفس ان جعفر بن ابى طالب لما قتل في غزوة مؤتة بعدما قتل زيد بن حارثة رضى الله عنه اخذ اللواء عبدالله بن رواحة فقاتل فاصيبت اصبعه فارتجز وجعل يقول وانشد الابيات الثلثة وقد تمثل النبي عليه السلام بالبيت الاول فقد اخرج الامام البخارى فى صحيحه من طريق جندب رضى الله عنه يقول بينما النبي عليه السلام يمشى اذ اصابه حجر فدميت اصبعه فقال هل انت الا اصبع دميت وفى سبيل الله ما لقيت قال في شرح القسطلانى والصحيح انه يجوز له عليه السلام ان يتمثل بالشعر وينشده حاكياله وقال في النهاية قال الحربى لم يبلغنى انه جرى على لسان النبي عليه السلام من ضروب الرجز الا ضربان المنهوك والمشطور ولم يعدهما الخليل شعرا فالمنهوك كقوله في رواية البراء انه رأى النبي عليه السلام على بغلة بيضاء يقول انا النبي لا كذب انا ابن عبدالمطلب والمشطور كقوله فى رواية جندب ان النبي عليه السلام دميت اصبعه فقال هل انت الا اصبع دميت و فى سبيل الله ما لقيت وروي ان العجاج انشد ابا هريرة رضي الله عنه ساقا بخنداة وكعبا ادرما فقال كان النبي عليه السلام يعجبه نحو هذا من الشعر قال الحربى فاما القصيدة فلم يبلغني انه انشد بيتا تاما على وزنه

انما كان ينشد الصدر او العجز فان انشده تاما لم يقمه على ما بني عليه انشد صدر بيت لبيد الا كل شيء ماخلا الله باطل وسكت عن عجزه وهو وكل نعيم لا محالة زائل وانشد عجز بيت طرفة و يأتيك بالاخبار من لم تزود وصدره ستبدى لك الايام ما كنت جاهلا وانشد ذات يوم اتجعل نهبي ونهب العبيد بين الاقرع وعيينة فقالوا انما هو بين عيينة والاقرع فاعادها بين الاقرع وعيينة فقام ابو بكر رضي الله عنه فقال اشهد انك رسول الله ثم قرأ وماعلمناه الشعر وماينبغي له والرجز ليس بشعر عند اكثرهم انتهى وما ذكر في النهاية ان العجاج انشده لابى هريرة رضي الله عنه انما هو عجز بيت وصدره قامت تريك خشية ان تصرما ثم نبدأ في شرح الابيات قوله هل انت الا اصبع دميت الاصبع مؤنث سماعي فالخطابات الثلثة في البيت بالكسر ويقال دمي الشيء يدمى كرضي يرضى اذا خرج منه الدم وفي سبيل الله خبر مقدم وما لقيت مبتدأ مؤخر والجملة حال من فاعل دميت يقول مسليا لاصبعه لما توجعت لم تهلكي انما دميت والحال ان ذلك لم يكن هدرا بل في سبيل الله ورضاه فتثبتي قوله يا نفس الا تقتلي تموتى الا اصله ان لا و تموتى اي حتف انفك و في معنى قول عبدالله رضي الله عنه قال آخر

يوشك من فر من منيته ... في بعض غراته يوافقها
من لم يمت عبطة يمت هرما ... للموت كأس فالمرء ذائقها
مارغبة النفس في الحياة وان ... عاشت قليلا فالموت لاحقها

قوله في بعض غراته اي غفلاته وقوله عبطة اي شابا يقال اعتبط الرجل اذا مات شابا من غير علة والعبيط الطري من كل شيء وقوله هذي حياض الموت قد صليت هذى مبتدأ وحياض الموت بدل او عطف بيان وخبر المبتدأ جملة قد صليت والعائد محذوف اي قد صليتها او هذي اشارة الى مواضع القتال وحياض الموت خبر وجملة قد صليت حال والعامل اسم الاشارة جعل مواضع القتال والموت كحياض الماء التى هي موارد الشاربة وقوله قد صليت من صلي بالامر اذا قاسى شدته وبلي به قال الراغب ومنه يصلى نارا حامية و سيصلون سعيرا اصلوها اليوم قوله و ما تمنيت فقد لقيت يعنى الذى تمنيته و هو مرتبة الشهادة فقد لقيته فهذا موضع الشهادة و كان يتمناها رضى الله عنه كما فهم من شعره السابق في باب الهمزة قوله ان تفعلي فعلهما هديت

يريد صاحبيه الذين استشهدا قبله وهما زيد بن حارثة وجعفر بن ابى طالب رضي الله عنهما ولم يذكر ابن هشام فى السيرة البيت الاول وذكر البيتين الاخرين الا انه ذكر مقام هذى حياض الموت هذا حمام الموت والحمام القضاء والقدر وذكر فى سيرة بن هشام ان عبدالله بن رواحة رضى الله عنه لما اخذ اللواء بعد قتل صاحبيه تقدم به وهو على فرسه فجعل يستنزل نفسه ويتردد ثم قال ابياتا ثلثة نذكرها فى باب النون انشاء الله ثم قال هذين البيتين ثم نزل فلما نزل اناه ابن عم له بعرق من لحم فقال شد بهذا ظهرك فانك قد لقيت فى ايامك هذه ما لقيت فاخذه من يده ثم انتهس منه نهسة ثم سمع الحطمة فى الناس وهى زحمتهم ودفع بعضهم بعضا فقال وانت فى الدنيا يريد نفسه ثم القاه من يده ثم اخذ سيفه وتقدم فقاتل حتى قتل رضي الله عنه وهذا الشعر لعبدالله بن رواحة رضي الله عنه مسطور فى شرح البخارى للقسطلانى عن ابن ابى الدنيا كما قدمنا ومن شرح القسطلانى كتبته

## عُرْوَة بن يد الخيل الطّائىّ

## رضى الله عنهما

فى يوم جلولاء ويوم نهاوند من ايام الاعاجم

### الترجمة

يعرف نسبه مما مر فى ترجمة اخيه المكنف بن زيد الخيل رضي الله عنهما ذكره صاحب الاصابة فى قسم الصحابة وقال ان اباه صحابى مشهور وقد شهد مع ابيه بعض الحروب فى الجاهلية فالظاهر انه اجتمع مع النبى صلى الله عليه وسلم قال المبرد فى الكامل يروى عن حماد الراوية عن ليلى بنت عروة بن زيد الخيل قالت قلت لابى انشد قول ابيك

بنى عامر هل تعرفون اذا غدا ابو مكنف قد شد عقد الدوابر

الابيات هل شهدت هذه الغزاة مع ابيك قال نعم قلت ابن كم كنت قال غلاما وروا ها ابو الفرج الاصفهانى من طريق حماد الراوية وزاد من وجه انه عاش الى خلافة على رضي الله عنه وشهد معه صفين انتهى وابيات زيد الخيل التى

اشار اليها صاحب الاصابة مذكورة فى اواخر الجزء الاول من كامل المبرد فراجع وقال ابو الفرج كان عروة بن زيد الخيل فارسا شاعرا فشهد القادسية فحسن بلاؤه فيها انتهى وشهد يوم جسر ابى عبيد ويوم البويب وغير ذلك من ايام الفرس على ماذكر فى تاريخ ابن الاثير وانشد له ابو حنيفة الدينورى فى كتابه الاخبار الطوال قوله من الطويل

الا طرقت رحلى وقد نام صحبتى ... بايوان شيرين المزخرف خلتى

ولو شهدت يومى جلولاء حربنا ... ويوم نهاوند المهول استهلت

اذا رأت ضرب امرئ غير خامل ... مجيد بطعن الرمح اروع مصلت

قوله الا طرقت رحلى الخ الطرق الاتيان ليلا ومنه الحديث اعوذ بك من طوارق الليل الا طارقا يطرق بخير والرحل المنزل والجمع رحال ومنه اذا ابتلت النعال فالصلاة فى الرحال والصحبة اسم جمع صاحب بمعنى الاصحاب وايوان شيرين هو موضع قريب من قرميسين بين همذان وحلوان فى طريق بغداد الى همذان ينسب الى شيرين امرأة كسرى ابرويز وفيه وقعت وقعة بين القعقاع بن عمرو التميمى وبين خشر سنوم الفارسى بعد وقعة جلولاء فغلب المسلمون واستولوا عند ذلك على حلوان والمزخرف المزين وكان قصر شيرين بنا أفى غاية الرصانة والاتقان كما ذكر فى معجم البلدان وخلتى فاعل طرقت والخلة بالضم الخليلة يريد انه رأها فى المنام وعادة اشعراء ان يخفوا ذلك فيصوروه كاليقظه قال الحطيئة

وانى اهتدت والدو بينى وبينها ... وماخلت سارى الليل بالدو يهتدى

وقال ابن قيس الرقيات

الا طرقت من اهل بيبة طارقة ... على انها معشوقة الدل عاشقة

تبيت وارض السوس بينى وبينها ... وسولاف رستاق حمته الازارقة

قوله ولو شهدت يومي جلولاء حربنا تثنية اليوم امالانه اراد ان يقول يومي جلولاء ونهاوند فاقحم اليوم المضاف الى نهاوند وامالانه اراد التكثير لاحقيقة

التثنية فان الحرب في جلولاء كانت اياما كثيرة وجلولاء قرية قرب حانقين بمرحلة لها وقعة مشهورة كانت للمسلمين على الفرس ايام عمر بن الخطاب رضى الله عنه سنة ست عشرة وذلك ان الفرس لما هربوا من المدائن تجمعوا بجلولاء وتحصنوا بالخنادق فاخبر سعد بن ابى وقاص رضى الله عنه اميرجيش الاسلام بالعراق عمر بن الخطاب رضى الله بذلك فامره ان يرسل هاشم بن عتبه رضي الله عنه اليهم باثنى عشر الفا وان يجعل على مقدمته القعقاع بن عمرو التميمى فقام هاشم في اثنى عشر الفا فيهم وجوه المهاجرين والانصار حتى قدموا جلولاء فحاصر وهم في خنادقهم وطاولهم الفرس وزاحفهم المسلمون نحوا من ثمانين مرة كل ذلك ينصر المسلمون عليهم وجعلت الامداد ترد الى جلولاء من يزدجر ملك الفرس وكان هرب الى حلوان بعد المدائن وامد سعد المسلمين وخرجت الفرس وقد اختلفوا فاقتتلوا فارسل الله عليهم الريح حتى اظلمت عليهم البلاد فتحاجزوا فسقط فرسانهم فى الخندق فجعلوا فيه طرقا مما يليهم يصعد منها خيلهم فافسدوا حصنهم وبلغ ذلك المسلمين فنهضوا اليهم وقتلوهم قتالا شديدا لم يقتتلوا مثله ولا ليلة الهرير الا انه كان اعجل وانتهى القعقاع بن عمرو من الوجه الذى زحف فيه الى باب خندقهم فاخذ به وامر مناديا فنادى يامعاشر المسلمين هذا اميركم قد دخل الخندق واخذ به فاقبلوا اليه ولا يمنعكم من بينكم وبينه من دخوله وانما امر بذلك ليقوي المسلمين فحملوا ولا يشكون بان هاشما فى الخندق فاذا هم بالقعقاع بن عمرو وقد اخذ به فانهزم المشركون عن المجال يمنة ويسرة فهلكوا فيما اعدوا من الحسك فعقرت دوابهم فعا دوا رجالة واتبعهم المسلمون فلم يفلت منهم الا من لا يعد وقتل منهم يومئذ مائة الف فجللت القتلى المجال وما بين يديه وما خلفه اي عمته فسميت جلولاء بما جللها من قتلاهم فهى جلولاء الوقيعة فسار القعقاع بن عمرو فى الطلب حتى بلغ حانقين وادرك فى اتباعه مهران قائد جيش الفرس بجلولاء فى حانقين فقتله فهذه حرب جلولاء اختصرتها بقدر الامكان واما يوم نهاوند فهو ايضا وقعة للمسلمين على الفرس قيل كانت سنة احدى وعشرين وقيل سنه تسع عشرة وقيل ثمانى عشرة على ما فى تاريخ ابن الاثير ونهاوند مثلثة النون والكسر اجود والواو مفتوحة بلدة من بلاد الجبل جنوبى همذان اصله نوح آوند لانه بناها اواصله اينها وند على ما فى القاموس وبيان وقعة نهاوند ان المسلمين لما خلصوا جند العلاء بن الحضرمى

رضى الله عنه الذى غزا الفرس من البحر بدون لذن عمر بن الخطاب فانه كان كان ينهى عن الغزو فى البحر فغزا العلاء بدون اذنه بجند من البحرين وكان واليا عليها فلما خرجوا الى الساحل قاتلوا الكفار فقتلوا فيهم مقتلة عظيمة ثم خرجوا يريدون البصرة فلم يجدوا الى البحر سبيلا واخذت الفرس طرقهم وامتنعوا فامر عمر رضى الله عنه عتبة بن غزوان اميرالبصرة فارسل جندا كثيفا من البصرة فخلصوا جند العلاء وفتحوا الاهواز كاتبت الفرس ملكهم وكان بمرو فحركوه

جواب لما في قوله لما خلصوا جند العلاء

وكاتب الملوك بين الباب والسند وخراسان وحلوان فتحركوا و تكاتبوا واجتمعوا الى نهاوند ولما وصلها اوائلهم بلغ الخبر سعد بن ابى وقاص رضي الله عنه فكتب الى عمر رضي الله عنه فدعاه الى المدينة لان قوما كانوا سعوا به الى عمر رضي الله عنه فقام سعد الى المدينة واستخلف على الكوفة عبدالله بن عبدالله بن عتبان فكان سبب نهاوند زمن سعد واما الوقعة فكانت زمن عبدالله فنفرت الاعاجم بكتاب يزدجرد ملكهم فاجتمعوا بنهاوند على الفيرزان فى خمسين الفا ومائة الف مقاتل فجمع عمر الناس فاستشارهم فعرض عليهم رأيه وكان رأيه ان يقوم بنفسه وينزل بين البصرة والكوفة ويستنفرا هل المصرين ويكون ردأ حتى يفتح الله فاشار بعضهم بالاقامة وبعضهم بالخروج وكان رأي على رضي الله عنه ان يقيم عمر رضي الله عنه بالمدينة ويرسل رجلا خبيرا بالحرب واحوالها يكون قائد جيش المسلمين فاتبع ذلك الرأي واستقر الامر عليه وقال عمر رضي الله عنه اشيروا علي برجل اوليه فقالوا انت اعلم بجندك فقال والله لاولين امرهم رجلا يكون اول الاسنة اذا لقيها غدا فقالوا من هو قال هو النعمان بن مقرن المزنى فقالوا هو لها وكان النعمان يومئذ معه جند من اهل الكوفة قد اقتحموا جندا بسابور والسوس فكتب عمر رضي الله عنه اليه يأمره بالمسير الى ماه ليجتمع الجيوش عليه فاذا اجتمعو اليه سار بهم الى الفيرزان ومن معه وكتب عمر رضي الله عنه الى عبدالله بن عبدالله بن عتبان ليستنفر الناس مع النعمان كذا وكذا ويجتمعوا عليه بماه فندب الناس فخرج الناس من الكوفة وعليهم حذيفة بن اليمان ومعه نعيم بن مقرن اخو النعمان حتى قدموا على النعمان و ارسل عمر رضي الله عنه الى الجيش الذين بالاهواز ليشغلوا فارسا عن المسلمين فاقاموا بتخوم اصبهان وفارس وقطعوا امداد فارس عن اهل

نهاوندو اجتمع الناس على النعمان و فيهم حذيفة بن اليمان و ابن عمر و جرير بن عبدالله البجلى والمغيرة بن شعبة وغيرهم فارسل النعمان طليحة بن خويلد وعمرو ابن معديكرب وعمرو بن ثُبَيّ وهو ابن ابى سلمى لياتوه بخبرهم فساروا يوما الى الليل فرجع عمرو بن ثبيي فقيل ما رجعك فقال لم اكن في ارض العجم وقتلت ارض جاهلها و قتل ارضا عالمها و مضى طليحة و عمرو بن معديكرب فلما كان آخر الليل رجع عمرو فقالوا ما رجعك قال سرنا يوما وليلة ولم نرشيئا فرجعت ومضى طليحة حتى انتهى الى نهاوند وبين موضع المسلمين الذي هم به ونهاوند بضعة وعشرون فرسخا فقال الناس ارتد طليحة الثانية فعلم كلام القوم ورجع فلما رأوه كبروا فقال ماشانكم فاعلموه بالذي خافوا عليه فقال والله لو لم يكن دين الاالعربى ما كنت لاحرز العجم الطماطم هذه العرب العادية فاعلم النعمان انه ليس بينه وبين نهاوند شيئ يكرهه ولا احد فرحل النعمان وعبى اصحابه وهم ثلاثون الفا فجعل على مقدمته نعيم بن مقرن وعلى مجنبتيه حذيفة بن اليمان واخاه سويد بن المقرن وعلى المجردة القعقاع بن عمرو التميمي وعلى الساقة مجاشع بن مسعود فانتهو الى اسبيذهان والفرس وقوف على تعبيتهم واميرهم الفيرزان وقدتوا فى اليهم الامداد بنهاوند كل من غاب عن القادسية ليسوا بدونهم فلما رأهم النعمان كبر وكبر معه الناس فتزلزلت الاعاجم وحطت العرب اثقالها وضرب فسطاط النعمان فابتدر اشراف الكوفة فضربوه منهم حذيفة بن اليمان وعقبة بن عامر والمغيرة بن شعبة وبشير بن الخصاصية وحنظلة الكاتب وجرير بن عبدالله البجلى والاشعث بن قيس الكندى وسعيد بن قيس الهمدانى ووائل بن حجر وغيرهم فلم يربّناء فسطاط بالعراق كهؤلاء وانشب النعمان القتال بعد حط الاثقال فاقتتلوا يوم الاربعاء ويوم الخميس والحرب بينهم سجال وانهم انحجزوا فى خنادقهم يوم الجمعة وحاصرهم المسلمون واقاموا عليهم ماشاء الله والفرس بالخيار لايخرجون الا اذا ارادوا الخروج والمسلمون خافوا ان يطول امرهم حتى اذا كان ذات يوم فى جمعة من الجمع اجتمع اهل الرأي من المسلمين وقالو نراهم علينا بالخيار فاتوا النعمان فى ذلك فوافوه يُرَوّي فى الذي رَوَّوا فيه فاخبروه فبعث الى من بقي من اهل النجدات والرأي فاحضرهم فتكلم النعمان فقال قد ترون المشركين و اعتصامهم بخنادقهم ومدنهم و انهم لايخرجون الينا الا اذا شاؤا ولا يقدر المسلمون على اخراجهم وقد ترون الذي فيه المسلمون من التضايق فما الرأي الذى به

نستخرجهم الى المناجزة وترك التطويل فتكلم عمرو بن ثبي وكان اكبر الناس وكانوا يتكلمون على الاسنان فقال التحسن عليهم اشد من المطاولة عليكم فدعهم وقاتل من اتاك منهم فردوا عليه رأيه فتكلم عمرو بن معديكرب فقال ناهدهم وكابدهم ولاتخنهم فردوا عليه جميعا رأيه وقال طليحة ارى ان نبعث خيلا لينشبوا القتال فاذا اختلطوا بهم رجعوا الينا استطرادا فانا لم نستطرد لهم فى طول ماقاتلناهم فاذا رأوا ذلك طمعوا فخرجوا فقاتلناهم حتى يقضى الله فينا وفيهم ماأحب فامر القعقاع بن عمرو وكان على المجردة فانشب القتال فاخرجهم من خنادقهم كانهم جبال حديد قد تواثقوا ان لايفروا وقد قرن بعضهم بعضا كل سبعة فى قران والقوا حسك الحديد خلفهم لئلا ينهزموا فلما خرجوا نكص ثم نكص قاغتنمها الاعاجم ففعلوا كما ظن طليحة وقالوا هي هي فلم يبق احد الا من يقوم على الابواب وركبوهم ولحق القعقاع بالناس وانقطع الفرس عن حصنهم بعض الانقطاع والمسلمون على تعبية فى يوم جمعة صدر النهار وقد عهد النعمان الى الناس عهده وامرهم ان يلزموا الارض ولايقاتلوا حتى يأذن لهم ففعلوا واستتروا بالحجف من الرمى واقبل المشركون عليهم يرمونهم حتى افشوا فيهم الجراح وشكا الناس الى النعمان وقالوا الاترى مانحن فيه فقتال رويدا رويدا وانتظر النعمان بالقتال احب الساعات كانت الى رسول الله عليه السلام ان يلقى العدو فيها وذلك عند لزوال فلما كان قريبا من تلك الساعة ركب فرسه وسار بالناس ووقف على كل راية يذكرهم ويحرضهم ويمنيهم الظفر وقال لهم انى مكبر ثلاثا فاذا كبرت الثالثة فانى حامل فاحملوا وان قتلت فالامير بعدى حذيفة فان قتل ففلان حتى عد سبعة آخرهم المغيرة ثم قال اللهم اعزز دينك وانصر عبادك واجعل النعمان اول شهيد اليوم على اعزاز دينك ونصر عبادك فبكى الناس ورجع الى موقفه فكبر ثلاثا والناس سامعون مطيعون مستعدون للقتال وحمل النعمان والناس معه وانقضّت رايته انقضاض العقاب والنعمان معلم ببياض القباء والقلنسوة فاقتتلوا قتالا شديدا لم يسمع السامعون بوقعة كانت اشد منها وماكان يسمع الاوقع الحديد وصبر لهم المسلمون صبرا عظيما وانهزم الاعاجم وقتل منهم مابين الزوال الى الاعتام ماطبق ارض المعركة دما يزلق الناس والدواب فلما اقر الله عين النعمان بالفتح استجاب له فقتل شهيدا زلق به فرسه فصرع وقيل بل رمي بسهم في حاصرته فقتله فسجاه اخوه نعيم بن مقرن بثوب واخذ الراية وناولها حذيفة فاخذها وتقدم

الى موضع النعمان وترك نعيما مكانه وقال لهم المغيرة اكتموا مصاب اميركم لئلا يهن الناس فاقتتلوا فلما اظلم الليل عليهم انهزم المشركون وذهبوا ولزمهم المسلمون وعمي عليهم قصدهم فتركوه واخذوا نحو اللهب الذي كانوا دونه فوقعوا فيه فكان الواحد منهم يقع عليه ستة منهم بعضهم على بعض في قياد واحد فيقتلون جميعا وجعل يعقرهم حسك الحديد فمات منهم في اللهب مائة الف اويزيدون سوى من قتل في المعركة ونجا الفيرزان من الصرعى فهرب نحو همذان فاتبعه نعيم بن مقرن وقدم القعقاع قدامه فادركه بثنية همذان وهي اذذاك مشحونة من بغال وحمير موقرة عسلا فحبسه الدواب على اجله فلما لم يجد طريقا نزل عن دابته وصعد في الجبل فتبعه القعقاع راجلا فادركه فقتله المسلمون على الثنية وقالوا ان لله جنودا منها العسل واستاقوا العسل ومامعه من الاحمال وسميت الثنية ثنية العسل ودخل المشركون همذان والمسلمون على اثارهم فنزلوا عليها واخذ واماحولها فلما رأى ذلك حشر سنوم استأمنهم ولما تم الظفر للمسلمين جعلوا يسألون عن اميرهم النعمان بن مقرن فقال لهم اخوه معقل هذا اميركم قداقر الله عينه بالفتح وختم له بالشهادة فاتبعوا حذيفة ودخل المسلمون نهاوند يوم الوقعة بعد الهزيمة واحتووا مافيها من الامتعة وغيرها وماحولها من الاسلاب والاثاث وجمعوا الى صاحب الاقباض السائب بن الاقرع وانتظر من بنهاوند مايأتيهم من اخوانهم الذين بهمذان مع القعقاع ونعيم فاتاهم الهربذ صاحب بيت النار على امان فابلغ حذيفة فقال اتؤمنني ومن شئت على ان اخرج لك ذخيرة لكسرى تركت لنوائب الدهر قال نعم فاحضر جوهرا نفيسا في سفطين فارسلهما مع الاخماس الى عمر رضي الله عنه وكان حذيفة قد نفل منها وارسل الباقي مع السائب بن الاقرع الثقفي وكان حاسبا ارسله عمر رضي الله عنه اليهم وقال له ان فتح الله عليكم فاقسم على المسلمين فيئهم وخذ الخمس وان هلك هذا الجيش فاذهب فبطن الارض خير لك من ظهرها قال السائب فلما فتح الله على المسلمين واحضر البارسي السفطين الذين اودعهما عنده النخير جان فاذا فيهما اللؤلؤ والزبرجد والياقوت فلما فرغت من القسمة احتملتهما معي وقدمت على عمر وكان قد قدر الوقعة فبات يتململ ويخرج ويتوقع الاخبار فبينما رجل من المسلمين خرج لبعض حوائجه فرجع الى المدينة ليلا فمر به راكب فسأله من اين اقبل فقال من نهاوند واخبره بالفتح وقتل النعمان فلما اصبح

الرجل تحدث بهذا بعد ثلاث من الوقعة فبلغ الخبر عمر فسأله فاخبره فقال ذلك بريد الجن ثم قدم البريد بعد ذلك فاخبره بما يسره ولم يخبره بقتل النعمان قال السائب فخرج عمر من الغد يتوقع الاخبار قال فاتيته فقال ما وراءك فقلت خير يا امير المؤمنين فتح الله عليك واعظم الفتح واستشهد النعمان بن مقرن فقال انا لله وانا اليه راجعون ثم بكى فنشج حتى بانت فروع كتفيه فوق كتده قال فلما رأيت ذلك وما لقيي قلت يا امير المؤمنين ما اصيب بعده رجل تعرف وجهه فقال اولئك المستضعفون من المسلمين ولكن الذي اكرمهم بالشهادة يعرف وجوههم وانسابهم ومايصنع اولئك بمعرفة عمر ثم اخبرته بالسفطين فقال ادخلهما بيت المال حتى ننظر في شانهما والحق بجندك قال ففعلت وخرجت سريعا الى الكوفة وبات عمر رضى الله عنه فلما اصبح بعث فى اثري رسولا فما ادركني حتى دخلت الكوفه فانخت بعيرى واناخ بعيره على عرقوبي بعيرى فقال الحق باميرالمؤمنين فقد بعثني في طلبك فلم اقدر عليك الا الان قال فركبت معه فقدمت على عمر فلما رأني قال الي ومالي وللسائب قلت ولما ذا قال ويحك والله ماهو الا ان نمت الليلة التى خرجت فيها فباتت الملئكة تسجنني الى السفطين تشتعلان نارا فيقولون لنكوينك بهما فاقول انى ساقسمهما بين المسلمين فخذهما عني فبعهما في اعطية المسلمين وارزاقهم قال فخرجت بهما فوضعتهما في مسجد الكوفة فابتاعهما مني عمرو بن حريث المخزومى بالفي الف درهم ثم خرج بهما الى ارض الاعاجم فباعهما باربعة الاف الف فمازال اكثر اهل الكوفة مالا وكان سهم الفارس بنهاوند ستة الاف وسهم الراجل الفين ولما قدم سبي نهاوند المدينة جعل ابولؤلؤة غلام المغيرة بن شعبة لايلقى منهم صغيرا الامسح رأسه وبكى وقال له اكل عمر كبدي وكان من نهاوند فاسرته الروم واسره المسلمون من الروم فنسب الى حيث سبي وكان المسلمون يسمون فتح نهاوند فتح الفتوح لانه لم يكن للفرس بعد ذلك اجتماع وملك المسلمون بلادهم انتهت وقعة نهاوند ثم نعود الى شرح الابيات قوله المهول صفة يوم نهاوند اي الذى فيه الهول لان هاله الامر متعد ومعناه افزعه وخوفه وفي الاساس امر هائل وقد هالني يهولني وهولني ثم قال ومن المجاز مكان مهول فيه هول وتقول هذا البلد لو لم يكن مهولا لكان مأهولا وهو عكس قولهم سيل مفعم انتهى وقوله استهلت اي رفعت صوتها بالبكاء من شدة هول ذلك اليوم اودمعت اي عينها فالنسبة مجازية

قوله اذا لرأت الخ الخامل ضد النبيه الذى اشتهر وارتفع شانه وسمع اسمه والمجيد اسم فاعل من اجاد بمعنى احسن والاروع مر معناه فى قصيدة لكعب بن مالك رضي الله عنه والمصلت بصيغة الالة الماضي في الامور وكذلك اَصْلَتي ومنصلت ومِصلات

ولمّا دعوا ياعروة بن مهلهل ضربتُ جموعَ الفرس حتى تولّت

دَفعتُ عليهم رجلتى وفوارسى وجَرّدت سيفى فيهمو ثُم التَّت

وكم من عدوّ اشوسٍ متمرّد عليه بخيلى فى الهياج اظلّت

وكم كُربة فرّجتُها وكَريهة شَددتُ لها ازرى الى ان تجلّت

انتسب الى جده مهلهل بن زيد قوله دفعت عليهم رجلتى الخ دفعت نحّيت وسقت ورجله بالفتح جمع راجل ضد راكب قال ابن مقبل

ورجلة يضربون البَيْض عن عرض ضربا تواصت به الابطال سجّينا

ووقع فى صحيح البخارى ورجلة يضربون البيض ضاحية قال ابو عمر وليس فى كلامهم فعلة جاءت جمعا غير رجلة جمع راجل وكماءة جمع كمأ ومعنى سجينا شديدا ويجوز ان يقرأ رجلتى بكسر الراء وهو ايضا جمع راجل على مافى القاموس والالة بالفتح وتشديد اللام الحربة ونظرت امرأة الى زوجها وهو يحد حربة يوم فتح مكة فقالت ماتصنع بهذه قال اعددتها لمحمد واصحابه فقالت والله ان اراه يقوم لمحمد واصحابه شيء فقال انى لارجو ان اخدمك بعضهم وانشأ يقول

ان تقبلوا اليوم فمابى علة هذا سلاح كامل والة

وذوغرارين سريع السّلة

الغرار ههنا الحد يعنى بذى غرارين السيف فلما لقيهم خالد رضي الله عنه بالخندمة انهزم الرجل فلامته امرأته فقال

انك لو شهدت يوم الخندمة  اذ فر صفوان وفر عكرمة

ولحقتنا بالسيوف المسلمة  يفلقن كل ساعد وجمجمة

ضربا ولا تسمع الا غمغمة  لهم نهيت حولنا وجمجمة

لم تنطق فى اللوم ادنى كلمة

كذا فى الكامل للمبرد وخالد هو ابن الوليد وصفوان هو ابن امية بن خلف الجمحى و عكرمة هو ابن ابى جهل المخزومى كانا يوم الفتح على خيل قريش بالخندمة فقاتلهما خالد بن الوليد رضى الله عنه فهربا قوله وكم من عدوا شوس فى القاموس الشوس بالتحريك النظر بمؤخر العين تكبرا وتغيظا كالتشاوس اوتصغير العين وضم الاجفان للنظر وقدشوس كفرح وشاس يشاس فهو اشوس من شُوس انتهى واشوس ههنا منصرف للضرورة والمتمرد المتعند المتمنع وقوله عليه متعلق باظلت قدم عليه وقوله بخيلى الظاهر ان الباء زائدة لاقامة الوزن وخيلى مبتداء كما زيدت اللام فى الفاعل فى قول حسان رضى الله عنه انما يدهن للقلب الحصر على مامر اواظلت خبره والجملة خبركم الخبرية وضمير اظلت للخيل ويمكن ان يقال ان ضمير اظلت للالة فى البيت السابق والباء فى بخيلى للملابسة قوله وكم كربة فرجتها الخ الكريهة الحرب او شدتها والازر بالضم معقد الازار وجمع الازار ويقال شد فلان مئزره للامر وازاره اذا تشمر له قال الفرزدق

فقلت لها الما تعرفينى  اذا شدت محافظتى الازارا

وتجلت انكشفت وفى حديث الكسوف وقد تجلت الشمس اي انكشفت وخرجت من الكسوف يقال تجلت وانجلت

وقد اضحت الدنيا لدى ذميمةً  وسليت عنها النفس حتى تسلت

واصبح همى فى الجهاد ونيتى  فلله نفس ادبرت وتولت

فلا ثروة الدنيا نريد اكتسابها  الا انها عن وفرها قد تجلت

وماذا أرجّى من كنوز جمعتها  وهذى المنايا شُرَّعاً قد أظلّت

قوله وقد اضحت الدنيا الخ اضحت صارت ويقال سلا الشيء وعنه نسيه واسليته عنه فتسلى قوله فالمه نفس الخ العادة عند مدح الشيء وتعظيمه ان ينسب الى الله تعالى فيقال لله ابوك فعلى هذا لله نفس يتعجب من حسن حالها فينسبها الى الله مع ان الكل منسوب اليه تعالى وقوله ادبرت اى عن الدنيا حيث تسلت عنها وتولت بمعناه قوله فلا ثروة الدنيا بالنصب على شريطة التفسير كما فى زيدا ضربت غلامه وهوالمختار كما فى قول جرير

فلا حسبا فخرت به لتيم  ولا جدا اذا ازدحم الجدود

اوثروة الدنيا مفعول لانريد قدم عليه وفصل بين لا ومدخولها به واكتسابها بدل اشتمال من ثروة الدنيا والوفر المال الكثير قوله وما ذا ارجي الخ ارجي من التفعيل بمعنى ارجو وقوله شرعا جمع شارع من شرع الرمح اذا تسدد وهو حال من المنايا لانه مفعول فى المعنى والعامل معنى الاشارة شبه المنايا بالرماح الشرع وقوله قد اظلت خبر عن اسم الاشارة هكذا هو بالظاء المعجمه فى النسخة التى كتبت منها ولم اجد غيرها فيكون ايطاء كما فى تولت وتجلت والايطاء اتفاق القافيتين فى اللفظ والمعنى كقول العجاج فى اثعبان المنجنون المرسل ثم قال مد الخليج فى الخليج المرسل وهو عيب فى الشعر الا اذا طال مابين البيتين ولو قرئ اطلت بالطاء المهملة لايكون ايطاء ومعنى اطلت اقامت ودامت وهذه القصيدة لعروة رضى الله عنه مسطورة فى كتاب الاخبار الطوال لابى حنيفة الدينوري رحمه الله كما قدمت

## عمرو بن معدى كرب الزبيدى

## رضى الله عنه

فى وصف حرب كانت بين قومه وجرم وبين بنى الحرث بن كعب ونهد وفرار قومه وجرم عنه

### الترجمة

هو عمرو بن معديكرب بن عبدالله بن عمرو بن زبيد الاصغر وهو منبه بن ربيعة بن سلمة بن مازن بن ربيعة بن منبه بن زبيد الاكبر بن الحرث بن صعب بن سعد العشيرة بن مذحج بن ادد الشاعر الفارس المشهور يكنى اباثور له وقائع مشهورة في الجاهلية وله بلاء حسن في حروب الاعاجم قدم على رسول الله عليه السلام في وفد زبيد سنة تسع وقيل عشر فاسلم واقام بالمدنية برهة ثم شهد عامة فتوح العراق شهد مع ابي عبيد الثقفي ثم شهد مع سعد القادسية قيل استشهد بالقادسية وقيل مات عطشا يومئذ وقيل بل مات بعدما شهدنها وندمع النعمان بن مقرن والصحيح انه مات في آخر خلافة عمر رضى الله عنه ودفن بروذة بين قم والري على ماذكر صاحب الاغانى ومن الناس من يقول انه استشهد بنها وندوكان عمرو رضى الله عنه جسيما طويلا وكان عمر بن الخطاب رضى الله عنه يقول اذا رأه الحمد لله الذي خلقنى وخلق عمرا لما يرى من الطول المعجب وروى الشعبي ان عمر فرض لعمرو بن معديكرب الفين فقال ياامير المؤمنين الف ههنا واومأ الى شق بطنه الايمن و الف ههنا واومأ الى شق بطنه الايسر فمايكون ههنا واومأ الى وسط بطنه فضحك عمر رضى الله عنه وزاده خمسمائة ومما يؤثر من قوة عمرو وشجاعته انه حمل هو وقيس بن المكشوح المرادي ومالك بن الحرث الاشتر يوم القادسية فكان عمرو آخرهم وكانت فرسه ضعيفة فطلب غيرها فاتي بفرس فاخذ بعكوة ذنبه واجلد به الى الارض فاقعى الفرس فرده ثم اتي بآخر ففعل مثل ذلك فتحلحل ولم يقع فقال هذا على كل حال اقوى من تلك فقال لاصحابه انى حامل فان اسرعتم مقدار جزر الجزور وجدتمونى وسيفى بيدى اقاتل به تلقاء وجهى وقد عقرنى القوم وانا قائم بينهم وقد قتلت وجردت وان ابطأتم وجدتمونى قتيلا بينهم وقد قُتلت وجُردت ثم انغمس فحمل في القوم فقال بعضهم يابنى زبيد تدعون صاحبكم والله مانرى ان تدركوه حيا فحملوا فانتهوا اليه وقد صرع عن فرسه وقد اخذ برجل فرس رجل من العجم فامسكها وان الفارس ليضرب الفرس فما تقدر ان تحرك من يده فلما غشوه رمى العجم بنفسه وخلى فرسه وركبه عمرو وقال انا ابوثور كدتم والله تفقدونى قالوا اين فرسك قال رمى بنشابة فصرعنى وعاراي هرب وروي ان رجلا جاء وعمرو بن معديكرب واقف بالكناسة على فرسه فقال لانظرن ما بقي من قوة ابى ثور فادخل يده بين ساقه وبين السرج ففطن عمرو فضمها

عليه وحرك فرسه فجعل الرجل يعدومع الفرس لايقدران ينزع يده حتى اذابلغ منه قال ياابن اخي مالك قال يدي تحت سافك فخلى عنه وقال ياابن اخي ازفي عمك لبقية وعمر عمرو عمرا طويلا فانه كانله من العمريوم شهد القادسية مائة وست سنين وقيل مائة وعشروله اشعار كثيرة اكثرهافي الجاهلية ذكرناشيأمنها لبلا غتها وحماستها قال رضى الله

من الطويل

ولمّا رأيتُ الخيلَ زُوراً كأنّها ... جَداولُ زرعٍ ارْسلَتْ فاسْبطرّتِ

فجـاشت الىّ النفسُ اوّلَ مرة ... فرُدّتْ على مكروهها فاستقرّتِ

علامَ تقولُ الرُّمحُ يثقِلُ عاتقى ... اذا انالم اطْعَنْ اذا الخيـلُ كرّتِ

قوله ولمارأيت الخيل زورا الخ زور جمع ازور وهوالمعوج اي مائلة من وقع الطعن فيها او للطعن والجداول جمع جدول وهو النهر الصغير يقول لما رايت الفرسان منحرفين للطعن وقد خلوا اعنة دوابهم وارسلوها كانها انهار زروع ارسلت مياهها فاسبطرت اي امتدت قوله فجاشت الى النفس الخ جاشت النفس حميت من انفزع وارتفعت مثل القدر تجيش فيرتفع مافيها قوله فردت على مكروهها اي فرددتها على شدة فثبتت قيل يفهم من هذا البيت اعتراف عمرو على نفسه بالجبن وليس الامرعلى ماتوهم لان ماذكره عمرو وغيره من جيش النفس ثم سكونها بيان حال النفس ونفس الشجاع والجبان على طريقة واحدة فيمايد همها عند الوهلة الاولى ثم تختلفان فالجبان يركب نفرته والشجاع يدفعها فتثبت كذاذكره المرزوقى وجواب لما محذوف اي طعنت وابليت على مايدل عليه قوله علام تقول الرمح يثقل عاتقى فحذف طعنت وابليت لان المراد مفهوم وهذا كماحذف جواب لوفى نحو لورأيت زيداوفى يده سيف وحذف الجواب في مثل هذا الموضع ابلغ وادل على المراد واحسن بدليل ان المولى اذا قال لعبده والله لئن قمت اليك وسكت جالت الافكارله بمالم تجل لواتى بالجواب ونص على مؤاخذته بنوع من العذاب ويجوز على مذهب الكوفيين وابى الحسن الاحفش ان تكون فجاشت جواب

لما فالفاء زائدة والمعنى ولمارأيت الخيل هكذا خافت نفسى وثارت كذافى شرح ديوان الحماسة للتبريزى وقال الفاضل البغدادى فى شرح شواهد الرضى بعدمانقل عن التبريزى ان الجواب محذوف وهذاتعسف نشأ من ابى تمام فانه حذف بيت الجواب اختصارا كعادته لكن كان على الشارح مراجعة الأصل اى ديوان عمرو بن معديكرب والجواب هوا لبيت الثالث المحذوف وهو

هتفت فجاءت من زبيد عصابة  اذا طردت فاءت قريبا فكرت

وفاءت بمعنى رجعت انتهى قوله ع لام تقول الرمح يروى نصب الرمح ورفعها اما النصب فعلى ان تقول بمعنى تظن وهم يجعلون القول بمعنى الظن عند الخطاب والكلام استفهام وعلى ذلك قوله متى تقول الدار تجمعنا واما الرفع فعلى ترك القول على بابه والرمح مبتدأ والكلام على الحكاية والعاتق موضع الرداء من المنكب وقيل ما بين المنكب والعنق قال التبريزى باي حجة احمل السلاح اذا لم اقاتل عند كر الخيل اي انما اتكلف مؤنة حمل السلاح للطعن به والافمامعنى حملى اياه وقوله اذا انالم اطعن اي لم يثقل ساعدى الرمح فى وقت تركى الطعن فى زمان كر الخيل فاذا الاول ظرف لقوله يثقل واذاالثانى ظرف لقوله لم اطعن

لحا الله جرمًا كلّما ذرّ شارقٌ  وجوهُ كلابٍ هارشت فازبأرّت

فلم تغنِ جرم نهدها اذ تلاقيا  ولكنّ جرما فى اللّقاء ابذعرّت

قوله لحا الله جرما الخ قدمر معنى لحى الله فى شعر حسان رضي الله عنه فى باب الهمزة وجرم بطن من قضاعة وهو عمرو بن علاف بن عمران بن حلوان بن الحاف بن قضاعة وكلما منصوب على الظرف والشارق الشمس وذرورها انتشارها وقوله وجوه كلاب بالنصب على الشتم ويجوز ان يكون بدلا من قوله جرما وهارشت من المهارشة وهى كالمحارشة اي واثبت يقال هارش بين الكلاب اي حرك بعضها على بعض وتهارشت الكلاب اي تواثبت وتقاتلت وازبأرت تهيأت للقتال وازبأر الرجل تهيأ للشر قوله فلم تغن جرم نهدها نهد بطن من قضاعة وهو نهد بن زيد

ابن سود بن اسلم بن الحاف بن قضاعة وكانت جرم ونهد فى بنى الحرث بن كعب فقتلت جرم رجلا من بنى الحرث بن كعب يقال له معاذ بن يزيد فارتحلت جرم فتحولوا الى بنى زبيد قوم عمرو بن معديكرب فجاءت بنو الحرث يطلبون بدم صاحبهم فعبى عمرو جرما لنهد وتعبى هو وقومه لبنى الحرث بن كعب فكرهت جرم دماء بنى نهد ففرت وانهزمت بنو زبيد فلامهم عمرو فمعنى قوله فلم تغن جرم نهدها اي لم تقاوم و لم تكف وابذعرت اي تفرقت واضاف نهدا الى ضمير جرم للملابسة فان جرما اعدت لمقاتلة نهد كما ان زبيدا اعدت لمقاتلة بنى الحرث

ظَلِلْتُ كأنّى للرّماح دَرِيَّةٌ  اُقاتل عن ابناء جرم و فرّتِ

فلوانّ قومي انطقتني رماحُهم  نَطقتُ ولكن الرّماح اَجَرَّتِ

قوله ظللت الخ اي بقيت نهارى منتصبا في وجوه الاعداء والطعن يأتيني من جوانبي اذب عن جرم وقد هربت والدرية حلقة يتعلم عليها الطعن شبه نفسه بها لما كان الطعن يأتيه من كل جانب ويجوز ان يكون المعنى كانى للرماح صيد فقد حكى ابو زيد انه يقال للصيد خاصة درية غير مهموز وقوله اقاتل فى موضع الحال ان جعلت قوله كانى للرماح خبر ظللت وان جعلت قوله كانى الحال فاقاتل في موضع الخبر لظللت حينئذ قوله فلوان قومى الخ اجرت من الاجرار واصله ان يشق لسان الفصيل لئلا يرضع امه ويجعل فيه عويد يقول لوان قومي ابلوا بلاء حسنا لمدحتهم وذكرت بلائهم ولكنهم قصروا فاجروا السانى فما انطق بمدحهم والافتخار بهم وجعل النعلين للرماح لان المراد معلوم في ان التقصير كان منهم لامنها وهذا الشعر لعمرو بن معديكرب رضي الله عنه مسطور فى ديوان الحماسة لابى تمام ومنه كتبته

## باب قافية الثاء المثلثة

### ابو بكر الصديق رضي الله عنه

في غزوة عبيدة بن الحرث بن المطلب بن عبد مناف يهدد المشركين ويوعدهم

## الترجمة

كان اسمه في الجاهلية عبد الكعبة فسماه رسول الله عليه السلام عبد الله هذا قول اهل النسب الزبيري وغيره كذا في الاستيعاب واسم ابيه عثمان ابو قحافة بن عامر بن عمرو بن كعب بن سعد بن تيم بن مرة بن كعب بن لؤي بن غالب بن فهر القرشي التيمي وامه ام الخير سلمى بنت صخر بن عامر قرشية تيمية ايضا ولد ابو بكر رضي الله عنه بعد الفيل بسنتين وستة اشهر وعاش ثلاثا وستين سنة فاستوفى بخلافته سن رسول الله عليه السلام وصحب النبي عليه السلام قبل البعثة وسبق الى الايمان به فكان اول من آمن به من الرجال الاحرار واستمر معه طول اقامته بمكة ورافقه في الهجرة وفي الغار وفي المشاهد كلها الى ان توفي وكانت الراية معه يوم تبوك وحج بالناس في حياة رسول الله عليه السلام سنة تسع واستقر خليفة في الارض بعده ولقبه المسلمون خليفة رسول الله عليه السلام وكانوا يقولون له قبل ذلك صاحب رسول الله عليه السلام وكان يقال له عتيق قال الليث بن سعد وجماعة انما قيل له عتيق لجماله وعتاقة وجهه وقيل لانه لم يكن شيئ في نسبه يعاب به وقيل لان النبي عليه السلام قال من سره ان ينظر الى عتيق من النار فلينظر الى ابي بكر اخرج ابن عبد البر في الاستيعاب بسند له عن عائشة رضي الله عنها انها قالت اني لفي بيت رسول الله عليه السلام واصحابه بالفناء بيني و بينهم الستر اذا قبل ابو بكر رضي الله عنه فقال رسول الله عليه السلام من سره ان ينظر الى عتيق من النار فلينظر الى هذا قالت وان اسمه الذي سماه اهله به لعبد الله بن عثمان بن عامر بن عمرو وعن هذا ذهب جماعة من اهل العلم ان اسمه في الجاهلية كان عبد الله على خلاف قول الزبيري ومن تبعه وقيل لان اخاله يسمى عتيقا مات فسمي باسمه وكان رضي الله عنه نحيفا خفيف العارضين اجنأ لا يستمسك ازرته تسترخي عن حقويه معروق الوجه غائر العينين ناتئ الجبهة عاري الاشاجع هكذا وصفته ابنته عائشة رضي الله عنها قولها اجنأ اي مائل الظهر ومعروق الوجه قليل لحمه مهزول وعاري الاشاجع الاشاجع مفاصل الاصابع اي كان اللحم عليها قليلا وقيل هو ظاهر عصبها وقال ابن اسحق في السيرة الكبرى وكان ابو بكر مؤلفا لقومه محببا سهلا وكان انسب قريش لقريش واعلمهم بما كان منها من خير وشر وكان تاجرا ذا خلق ومعروف وكانو يألفونه لعلمه وتجارته

وحسن مجالسته فجعل يدعو الى الاسلام من وثق به فاسلم على يده عثمان وطلحة والزبير وسعد وعبدالرحمن بن عوف وقال ابن اسحق ايضا وكان رسول الله عليه السلام يقول فيما بلغني مادعوت احدا الى الاسلام الا كانت عنده فيه كبوة ونظر وتردد الا ما كان من ابى بكر بن ابى قحافة ماعكم عنه حين ذكرته وماتردد قوله عكم اي تلبث وفى حديث هشام بن عروة عن ابيه قال اسلم ابوبكر وله اربعون الف درهم انفقها كلها على رسول الله عليه السلام فى سبيل الله وقال رسول الله عليه السلام مانفعنى مال مانفعنى مال ابى بكر واعتق ابو بكر رضي الله عنه سبعة كلهم يعذبون فى الله اعتق بلالا وعامر بن فُهيرة وزِنّيرة والنهدية وابنتها وجارية بنى المؤمل وام عُبيس وسمى الصديق لبداره الى تصديق رسول الله عليه السلام فى كل ماجاء به وقيل لخبر الاسراء وكان فى الجاهلية وجيها رئيسا من رؤساء قريش واليه كانت الاشناق فى الجاهلية فوصله بالاسلام والاشناق الديات كان اذا حمل شيئا قالت فيه قريش صدقوه وامضوا حمالته وحمالة من قام معه ابوبكر وان احتملها غيره خذلوه وروي عن اسماء بنت ابى بكر رضي الله عنهما انها سئلت ما اشد مارأيت المشركين بلغوا من رسول الله عليه السلام فقالت كان المشركون قعودا فى المسجد الحرام فتذاكروا رسول الله عليه السلام وما يقول فى آلهتهم فبينما هم كذلك اذ دخل رسول الله عليه السلام المسجد فقاموا اليه وكانوا اذا سألوه عن شى صدقهم فقالوا الست تقول فى آلهتنا كذا وكذا فقال بلى فنشبوا به باجمعهم فاتى الصريخ الى ابى بكر رضي الله عنه فقيل له ادرك صاحبك فخرج ابوبكر حتى دخل المسجد فوجد رسول الله عليه السلام والناس مجتمعون عليه فقال ويلكم اتقتلون رجلا ان يقول ربى الله وقد جاءكم بالبينات من ربكم قالت فلَهوا عن رسول الله عليه السلام واقبلوا على ابى بكر يضربونه قالت فرجع الينا ابوبكر رضي الله عنه فجعل لايمس شيئا من غدائره الاجاء معه وهو يقول تباركت ياذا الجلال والاكرام وعن ابى سعيد الخدري رضي الله عنه قال قال رسول الله عليه السلام ان من اَمَنّ الناس على فى صحبته وماله ابو بكر ولو كنت متخذا خليلا غير ربى لاتخذت ابابكر خليلا ولكن اخوة الاسلام لاتبقين فى المسجد خوخة الاخوخة ابى بكر هكذا وقع فى صحيح مسلم ابوبكر بالرفع ووقع فى صحيح البخاري ابابكر بالنصب وهو الظاهر لانه اسم ان ولعل وجه الرفع الواقع فى صحيح مسلم ان يكون من زائدة على مذهب الاخفش او يكون خبر

مبتداء محذوف كأنه عليه السلام قال ان من امن الناس على رجلا فقيل من هو قال ابوبكر كذا قاله النووى والاحسن ان يقال ان ابابكر رضى الله عنه لما كان مشهورا بكنيته ولم يشتهر اسمه كان كان ابوبكر اسمه فلا يتغير وقد ذكر ابن الاثير مثله فى حديث وائل بن حجر رضى الله عنه من محمد رسول الله الى المهاجر بن ابو امية قال كان حقه ان يقال ابن ابى امية ولكنه لاشتهاره بالكنية ولم يكن له اسم معروف غيره لم يجر كما قيل على بن ابوطالب انتهى ولابى بكر رضي الله عنه مناقب كثيرة جدا قد افردها جماعة بالتصنيف وترجمته فى تاريخ ابن عساكر قدر مجلدة من كتابه وكتابه قدر ثمانين مجلدا ومن اعظم مناقبه قول الله تعالى فى حقه الا تنصروه فقد نصره الله ثانى اثنين اذ هما فى الغار اذ يقول لصاحبه لاتحزن ان الله معنا فان المراد بصاحبه ابوبكر اذ لم يصحبه فى الغار غيره وثبت فى الصحيحين من حديث انس رضي الله عنه ان النبى عليه السلام قال لابى بكر فى الغار ماظنك باثنين الله ثالثهما والاحاديث فى كونه معه فى الغار كثيرة شهيرة فقد احرز هذه المنقبة دون غيره قال الشعبي عاتب الله بآية الا تنصروه جميع اهل الارض غير ابى بكر رضي الله عنه وقد جوزى بصحبة الغار الصحبة على الحوض كما فى حديث ابن عمر رضي الله عنه قال قال النبى عليه السلام لابى بكر رضي الله عنه انت صاحبى على الحوض وصاحبى فى الغار فيا نعم الجزاء ومن اعظم مناقبه ايضا ان ابن الدغنة وهو سيد القارة لما اجاره من قريش بمكة ثم رد ابوبكر رضي الله عنه جواره وصفه بنظير ماوصفت به خديجة رضي الله عنه النبي عليه السلام لما بعث فتواردا فيهما من غير ان يتواطئا فى ذلك وهذا غاية فى مدحه لان صفات النبى عليه السلام منذ نشأ كانت اكمل الصفات والحاصل انه لم يبلغ فضله احد بعد الانبياء عليهم السلام كيف وقد قال النبي عليه السلام في حقه ماقد منا مع قوله عليه السلام ما احد اعظم عندى يدا من ابى بكر واسانى بنفسه وماله وقوله عليه السلام ان اعظم الناس علينا منا ابوبكر زوجني ابنته وواسانى بماله وقوله عليه السلام ان الله قد بعثنى اليكم فقلتم كذبت وقال ابوبكر صدقت وواسانى بنفسه وماله فهل انتم تاركون لى صاحبي ومع مافعله عليه السلام من تقديمه في الامامة للصلاة بالناس ايام مرضه ولما توفى صلى الله عليه وسلم اجتمع الصحابة على ابى بكر فبايعوه فصار خليفة رسول الله عليه السلام بعدما ارادت الانصار ان يبايعوا سعد بن عبادة رضي الله عنه فاستكانوا لقول عمر

رضى الله عنه وبايعوا ابابكر رضى الله عنه قال فى الاستيعاب من حديث عبدالله بن مسعود رضى الله عنه قال كان رجوع الانصار يوم سقيفة بنى ساعدة بكلام قاله عمر ابن الخطاب رضى الله عنه انشدتكم الله هل تعلمون ان رسول الله عليه السلام امر ابابكر ان يصلى بالناس قالوا اللهم نعم قال فايكم يطيب نفسه ان يزيله عن مقام اقامة فيه رسول الله عليه السلام فقالوا كلنا لا تطيب نفسه ونستغفر الله واسلم والده ابو قحافة رضى الله عنه يوم الفتح واسلمت امه ام الخير ايضا ولما سمع ابو قحافة رضى الله عنه بمكة باستخلاف ابى بكر رضى الله عنه قال هل رضي بذلك بنو عبد مناف وبنو المغيرة قالوا نعم قال لا مانع لما اعطى الله ولا معطي لما منعه ومكث ابو بكر رضى الله في خلافته سنتين وثلاثة اشهر و اياما اختلف في مقدارها واختلف فى السبب الذى توفى منه فقيل انه اغتسل فى يوم بارد فحم فمرض خمسة عشر يوما وقيل كان به طرف من السل وقيل انه سم والله اعلم قال فى الاستيعاب واوصى بان تغسله اسماء بنت عميس زوجته فغسلته وصلى عليه عمر بن الخطاب رضى الله عنه ونزل في قبره عمر وعثمان وطلحة وعبد الرحمن بن ابي بكر رضى الله عنهم ودفن ليلا فى بيت عائشة رضى الله عنها مع النبي عليه السلام قال رضي الله عنه

من الطويل

أَمِنْ طيف ليلى بالبِطاح الدّمائث ... ارِقْتَ وامرٍ فى العشيرة حادثِ

ترى من لؤى فرقة لا يَصُدّها ... عن الكفر تذكيرٌ ولا بعثُ باعث

قوله امن طيف ليلى الطيف خيال النائم والبطاح جمع بحطاء وقدمر والدمائث جمع دميثة وهى الارض السهلة اللينة كالدمث ومنه قيل للرجل السهل الطليق الكريم دميث ودمث كفرح وفى صفته عليه السلام دمث ليس بالجافي ارادبه كان لين الخلق فى سهولة وارقت اى سهرت يقال ارق يارق كفرح يفرح ارقا بالتحريك فهو ارق كفرح وآرق وقوله وامر بالجر عطف على طيف وحادث صفة امر قوله ترى من لؤي الخ اراد بنى لؤي بن غالب ولا يصدها لا يمنعها ولا يصرفها وقوله ولا بعث باعث اي بعث الله رسولا اليهم وجملة ترى بيان وتفسير للامر الحادث

رَسولٌ اتاهم صادقٌ فتَكذّبوا  عليه وقالوا لَسْتَ فينا بماكثِ

اذا مادعوناهم الى الحق ادبرو  وهَرّوا هَريرَ المُحْجَرات اللّواهِث

قوله رسول اتاهم الخ اي هذا اى محمد عليه السلام رسول اتاهم فهو خبر مبتدأ محذوف والجملة استيناف كانه قيل كيف لا يصدهم فقيل هذا رسول الخ وقوله فتكذبوا عليه يقال تكذب فلانا وتكذب عليه زعم انه كاذب وهذا البيت مذكور في كتب اللغة شاهدا على هذا المعنى والماكث المقيم قوله اذا مادعوناهم الى الحق الخ يقال هر الكلب يهر هريرا والهرير صوته دون نباحه من قلة صبره على البرد و يستعمل فى النباح ايضا فيقال هر الكلب اذا نبح وكشر عن انيابه والمحجرات بتقديم الجيم على المهملة اوتأخيرها عنها كلاهما بمعنى الملجأت المضطرات وكلاهما رويا في بيت عمرو بن كلثوم

وذا البُرة الذي حُدِّثتَ عنه  به نُحْمى ونَحْمي المُحْجَرينا

اي الفقراء الملجئين الى الاستجارة بغيرهم واللواهث التى اخرجت السنتها عطشا اوتعبا اواعيا أ يريد اذا دعوناهم اعرضوا وابوا وصاحوا علينا من شدة ابائهم وتعندهم صياحا شبيها باصوات الكلاب الملجئة المضطرة المخرجة السنتها

فكم قد مَتَتْنا فيهمُو بقَرابةٍ  وتركُ التُّقى شيئٌ لهم غير كارث

فانْ يَرجعوا عن كفرهم وعُقوقهم  فما طَيِّباتُ الحِلِّ مِثْلُ الخَبائِثِ

وان يَرْكَبوا طغيانَهم وضلالَهم  فليس عذابُ الله عنهم بلابث

ونحن اُناس من ذُوأبة غالبٍ  لنا العزّ منها في الفُروع الأثائث

قوله فكم قدمتتنا الخ المت التوسل وكم خبرية ظرف اومصدر والمميز محذوف

كما في كم ضربت اي كم متة اوكم مرة متتنا والتقى مصدر كالهدى بمعنى الحذر والكارث الشديد من الامر من كرثه الامر اذا اشتد عليه يقول ان ترك الاتقاء والحذر من الله ليس بكبير عندهم ولا شديد عليهم قوله فان يرجعوا الخ العقوق الايذاء وقوله فما طيبات الحل مثل الخبائث طيبات الحل ما كانت العرب تستطيبه وتأكله والخبائث ما كانت تستقذره ولا تأكله مثل الافاعي والعقارب والبرص والخنافس والورلان والفأر وضربهما مثلا للمؤمن والكافر وقوله وان يركبوا طغيانهم الخ يركبوا يتبعوا في حديث ابي هريرة رضي الله عنه فركبني عمر اي تبعني ويقال ركب طريقته اي جاء على اثره واللابث المقيم المتوقف يقول ان عذاب الله لا يتوقف عنهم بل يلحقهم ويدركهم قوله ونحن اناس الخ يقال هم ذوأبة قومهم اي اشرافهم وغالب هو ابن فهر بن مالك ابن النضر بن كنانة والفروع جمع فرع وهو اعلى كل شيئ وفرع القوم شريفهم والاثائث جمع اثيث واثيثة والاثيث الطويل والكبير العظيم يقول نحن اشراف الاشراف

فاولي برب الراقصات عشية ... حراجيج تخدى في السريح الرثائث

كأدم ظباء حول مكة عكف ... يردن حياض الماء ذات النبائث

لئن لم يفيقوا عاجلا عن ضلالهم ... ولست اذا آليت قولا بحانث

لتبتدرنهم غارة ذات مصدق ... تحرم اظهار النساء الطوامث

تغادر قتلى تعصب الطير حولهم ... ولا نرأف الكفار رأف ابن حارث

قوله فاولى برب الراقصات الخ اولي من الايلاء وهو القسم اي اقسم والراقصات مر معناه في شعر مسلية رضي الله عنه في باب الباء وفي النهاية قدم وفد مذحج على حراجيج هو جمع حرجج وحرجوج وهي الناقة الطويلة وقيل الضامرة وقيل الحادة القلب وتخدي من خدا البعير والفرس يخدى اذا اسرع في مشيه والسريح

قال السهيلي شبه النعال تُلبَسُه اخفافُ الابل والرثائث البواليي وانما رثاثتها لطول السير قوله كادم ظباء الخ الادم جمع آدم وادماء من الادمة بالضم وهي في الظباء لون مشرب بياضا والاضافة من اضافة الصفة الى الموصوف اي كظبأ ادم وعكف جمع عاكف وهو الملازم للشيئ ومنه الاعتكاف الشرعي وقوله ذات النبائث صفة حياض الماء والنبائث جمع نبيثة وهو مايستخرج من تراب البئر والنهر والحوض عند الحفر قال ابود لامة

إن الناسُ غطّوني تغطيت عنهم  و ان بحثوني كان فيهم مباحث

و ان نبثوا بئرى نبثت بئارهم  فسوف ترى ماذا تردالنبائث

ولشعر ابى دلامة قصة ذكرها ابوالعباس في الكامل فراجع قوله لئن لم يفيقوا الخ اللام في لئن لم يفيقوا موطئة ومعينة لكون الجواب وهو لتبتدرنهم جوابا للقسم والشرط ملغى لتقدم القسم وهو أولي على الشرط كما في قول عروة بن حزام

حلفت برب الراكعين لربهم  خشوعا وفوق الراكعين رقيب

لئن كان برد الماء حرّان صاديا  اليّ حبيبا انها لحبيب

وقد تكون موطئة للقسم المقدر كما في قوله تعالى لئن اخرجوا لا يخرجون معكم و قوله ولست اذا آليت قولا بحانث اعتراض بين القسم و جوابه والقول ههنا اليمين والحانث الذي لا يبرّ يمينه قوله لتبتدرنهم غارة الخ تبتدرنهم بالنون الخفيفة جواب القسم و ذات مصدق صفة الغارة والمصدق الجد و قوله تحرم اطهار النساء الطوامث الطوامث جمع طامث و هي الحائض اي التي في سني الحيض يعني الشواب فلا ينافي ان لهن اطهارا و ان اردت ان لها دما في الحال قلت حائضة بالتاء فلا تتصف بالطهر اذاً ومعنى تحريم اطهارهن ان الغارة تمنع غشيانهن زمن استقامة غشيانهن وهو زمن اطهارهن والمراد تهويل الغارة بانها تشغلهم عن قربان النساء قوله تغادر قتلى الخ تغادر تترك والقتلى جمع قتيل بمعنى مقتول كجرحى و بريخ و تعصب الطير حولهم اي تطيف حولهم على عادتها في تطوافها حول الجيف قوله ولا ترأف الكفار رأف ابن حارث اي لا تتركهم غير مقتولين كما تركهم فذكر السبب و اراد المسبب و الا فليس لابن حارث رأفة

بالكفار لقوله تعالى اشداء على الكفار رحماء بينهم و قوله سبحانه و ليجدوا فيكم غلظة و ابن الحرث هو عبيدة بن الحرث بن المطلب بن عبد مناف بن قصي ارسله النبي صلى الله عليه وسلم في اواخر سنة الهجرة في ستين او ثمانين راكبا من المهاجرين و ليس فيهم احد من الانصار فسار فيهم حتى بلغ ماء بالحجاز باسفل ثنية المرار فلقي بها جمعاً عظيما من قريش فلم يكن بينهم قتال الا ان سعد بن ابي وقاص رضى الله عنه رمى يومئذ بسهم فكان اول سهم رُمي به في الاسلام ثم انصرف القوم عن القوم و للمسلمين حامية و شوكة وفر من بين المشركين الى المسلمين يومئذ المقداد بن عمرو البهراني حليف بني زهرة وهو الذي يقال له المقداد بن الاسود الكندي و عتبة بن غزوان بن جابر المازني حليف بني نوفل بن عبد مناف وكانا مسلمين و لكنهما خرجا ليتوصلا الى النبي صلى الله عليه و سلم وكانت سرية عبيدة رضي الله عنه اول سرية بعثها رسول الله صلى الله عليه و سلم و رايته اول راية عقدها على ما قال ابن اسحق وقال بعضهم ان اول راية عقدها النبي عليه السلام راية حمزة رضى الله عنه حين بعثه في ثلاثين راكباً الى سِيف البحر من ناحية العيص وكان ذلك على رأس سبعة اشهر من الهجرة وسرية عبيدة على رأس ثمانية اشهر و قيل انه عليه السلام عقد رايتيهما معا ثم تأخر خروج عبيدة رضي الله عنه الى راس السنة لحكمة اقتضته والله اعلم

فَأَبْلِغْ بَنِي سَهْمٍ لَدَيْكَ رِسَالَةً ... وكلّ كَفُورٍ يَبْتَغِي الشَّرَّ باحِثِ

فان تُشْعِثُوا عِرْضِي على سُوءِ رأيكم ... فَإِنِّي مِن اَعْرَاضِكم غير شاعِثِ

بنو سهم بن هصيص بن كعب بن لؤى بطن من قريش منهم عمرو بن العاص و عبدالله بن الزبعرى رضي الله عنهما وكان فيهم شعراء يهجون النبي صلى الله عليه و سلم و اصحابه فلذلك خصهم بالذكر و قوله باحث صفة كفور كيبتغى الشر والبحث التفتيش قوله فان تشعثوا عرضي الخ اصل الشعث الانتشار و التفرق و منه لم الله شعثه اي جمع ما تفرق من اموره وانتشر و رجل اشعث

الرأس اي منتشر شعره فهو فعل لازم و اماالمتعدي فلم يوجد في كتب اللغة الا من التفعيل و التفعل يقال شعث من عرضه تشعيتا غض منه وتنقصه وشعث عرضه اي طعن فيه وتشعثه الدهر اذا اخذه فلعله في البيت متعد بالهمزة مكان التضعيف فيقرأ من الافعال و اما الشاعث في المصراع الاخير فليس فيه الا ان يقال انه بمعنى المشعث و هذه القصيدة ذكرها ابن هشام عن ابن اسحق معزوة الى ابى بكر رضي الله عنه فكتبتها تبعا لابن اسحق مع ما فيها من الفصاحة و البلاغة و ان قال ابن هشام ان اكثر اهل العلم بالشعر ينكرها لابي بكر رضي الله عنه و قال بعضهم ان ابا بكر رضي الله عنه لم يقل شعرا في الاسلام يروى عن الزهري قال سألنى عبدالملك بن مروان فقال ارأيت هذه الابيات التى تروى لابى بكر رضي الله عنه فقلت له انه لم يقلها حدثنى عروة عن عائشة رضي الله عنها ان ابا بكر رضي الله عنه لم يقل بيت شعر في الاسلام حتى مات ذكر ذلك ابو عمر في الاستيعاب و لكن قد قدمنا في ترجمة على رضي الله عنه قول الشعبي و سعيد بن المسيب كان ابو بكر شاعرا و كان عمر شاعرا وكان علي اشعر الثلاثة و نسب ابن الرشيق في العمدة والفاضل الالوسي في تفسير سورة الشعرأ من تفسيره هذه القصيدة الى ابى بكر رضي الله عنه فليراجع والله اعلم

## طاهر بن ابى هالة

## رضى الله عنه

في قتال اهل الردة

### الترجمة

هو طاهر بن ابى هالة و اسم ابى هالة نماش او نباش بن زرارة بن وقدان ابن حبيب بن سلامة بن عُدَيّ بن جروة بن اسيد بن عمرو بن تميم التميمى الاسيدى و طاهر رضى الله عنه اخو هند و هالة و كل الثلثة اولاد خديجة الكبرى رضى الله عنها و عنهم من زوجها الاول ابى هالة التميمى المذكور والثلثة صحبوا رسول الله عليه السلام قال في الاصابة ذكر سيف في اوائل الردة من طريق ابي موسى الاشعرى قال بعثنى رسول الله عليه السلام خامس خمسة على مخاليف

اليمن انا و معاذ و طاهر بن ابي هالة و خالد بن سعيد و عكاشة بن ثور و قال ابن الاثير في تاريخه ان النبي عليه السلام استعمل طاهر بن ابي هالة على عك و الاشعريين فكانوا اول منتقض بعد النبي عليه السلام بتهامة فاجتمعوا بالاعلاب فسار اليهم الطاهر بن ابى هالة و معه مسروق بن الاجدع وقومه من عك ممن لم يرتد فالتقوا على الاعلاب فانهزمت عك ومن معهم و قُتلوا قتلا ذريعا وكان ذلك فتحا عظيما وورد كتاب ابي بكر رضي الله عنه على الطاهر يأمره بقتالهم و سماهم الاخابث و سمى طريقهم طريق الاخابث فبقي الاسم عليهم الى الآن انتهى و ذكر الفاضل ياقوت في معجم البلدان نحو قول ابن الاثير وانشد للطاهر بن ابي هالة قوله فى تلك الوقعه

من الطويل

فوا الله لولا الله لاشيء غيره ... لما فُضّ بالاجراع جمع العثاعث

فلم ترعيني مثل جمع رأيته ... بجنب مجاز فى جموع الاخابث

قتلنا هموما بين قنة خامر ... الى القيعة البيضاء ذات النبائث

وفئنا باموال الاخابث عنوة ... جهارا ولم نخفل بتلك الهثاهث

فُضّ على بناء المجهول من الفض وهو الكسر بالتفرقة يقال فضضتهم فانفضوا اي فرقتهم فتفرقوا و الاجراع جمع جرع بالتحريك و هو الرملة الطيبة المنبت لا وعوثة فيها او الارض ذات الحزونة و قيل غير ذلك فى معناه و العثاعث جمع عثعث و هو الفساد قوله فلم ترعيني الخ الجمع الذي رأه اما جمعه وعسكره فالمعنى ان جمعه وعسكره اشجع من رأه من الجموع فيكون مدحالهم بالذات واما جمع الاخابث فيكون مدحا لعسكره بالواسطة لانهم غلبوا مثل هذا الجمع و الجنب الناحية والمجاز موضع الجواز و المرور وهو الطريق قوله قتلناهم مابين قنة خامر الخ القنة رأس جبل شاهق و الخامر من الخمر بالتحريك وهو ماوارك

من شجر وغيره ومنه يقال اختفى الصيد فى خمر الوادى فالخامر جبل ذو خمر كالخمر بكسر الميم والقيعة الارض المستوية المطمئنة قد انفرجت عنها الجبال والآكام وجمعها قيعات كديمة وديمات وقيل هي جمع قاع ولا نظير لهما الاجار وجيرة ونار ونيرة ومعنى النبائث قدمر قريبا فى شعر ابى بكر رضي الله عنه يريد انهم قتلوهم فى الجبال والصحارى قوله وفئنا الخ الواو للعطف على قتلناهم وفئنا من فاء الغنيمة اذا اخذها قال فى القاموس فئت الغنيمة واستفأت وافاء الله علي وقوله باموال الاخابث اظهار فى موضع الاضمار يقول غنمنا اموالهم واستلبناها منهم قهرا ومجاهرة قوله ولم نحفل اي لم نبال يقال ماحفله وماحفل به يحفله بالكسر وما احتفل بهما بالى والهثاهث جمع الهثهثة وهو اختلاط الصوت فى حرب اوصخب كالهثهاث وهذا الشعر لطاهر بن ابى هالة كتبته من معجم البلدان للفاضل ياقوت الرومي كما قدمت

## باب قافية الجيم

### حسان بن ثابت الانصارى

### رضى الله عنه

فى يوم بدر بعير حكيم بن حزام الاسدي على فراره وكان يوم بدر مع المشركين فهرب

نَجّى حَكيماً يومَ بدرٍ شدُّه ... كنجاءِ مُهرٍ من بناتِ الأعوَجِ من الكامل

لمّا رأى بدرا يسيل جلاهُه ... بكتيبة خضراء من بالخزرج

لا ينكلون اذا لقوا اعداءهم ... يمشون عانِدةَ الطريقِ المنهجِ

كم فيهموا من ماجد ذى منعة ... بطل بمهلكة الجبان المحرجِ

ومسوّد يعطى الجزيل بكفّه  حمّال اثقال الديات متوّج

زين الندى معاود يوم الوغى  ضرب الكماة بكل ابيض ساجج

قولة نجى حكيما الخ اراد حكيم بن حزام بن خويلد بن اسد بن عبد العزى ابن قصي القرشي الاسدى ابن اخى خديجة ام المؤمنين رضى الله عنها كان مع المشركين يوم بدر فهرب ثم اسلم يوم الفتح هو وبنوه عبدالله وخالد ويحي وهشام وكلهم صحبوا النبي عليه السلام ولد حكيم رضى الله عنه فى الكعبة دخلت امه الكعبة فى نسوة من قريش وكانت حاملا فضربها المخاض فاتيت بنطع فولدت عليه حكيما وكان من اشراف قريش ووجوهها فى الجاهلية والاسلام كان مولده قبل الفيل بثلاث عشرة سنة وعاش فى الجاهلية ستين سنة وفى الاسلام ستين سنة وتوفى بالمدينة فى خلافة معاوية رضى الله عنه سنة اربع وخمسين وكان عاقلا فاضلا سيد اغنيا سخيا قال مصعب الزبيري جاء الاسلام ودار الندوة بيد حكيم بن حزام فباعها من معاوية رضى الله عنه بمأة الف درهم فقال له ابن الزبير بعت مكرمة قريش فقال له حكيم ذهبت المكارم الا التقوى وكان من المؤلفة قلوبهم وممن حسن اسلامه منهم وكان اذا اجتهد فى يمينه قال والذى نجانى يوم بدر والشد العدو وهو فاعل نجى من التنجية وقوله كنجاء مهر حال من الشد والنجاء السرعة والمهر بالضم ولد الفرس واعوج بلالام على مافى القاموس فرس لغنى بن اعصر ركب صغيرا فاعوج قوائمه كذا قال المبرد وفى وفيات الاعيان لابن خلكان انه سمى اعوج لانهم حملوه فى خرج وهرب به لنفاسته عندهم وهم فى غارة شنت عليهم فاعوج فى ذلك الخرج تنسب اليه الخيل الكرام فيقال خيل اعوجيات وفرس اعوجي وفرس من بنات اعوج وزاد حسان رضى الله عنه اللام فى اعوج للوزن قوله لما رأى بدرا الخ الجلاء جمع جلهة وهو طرف الوادي ويقال جلهمة بزيادة الميم كما زيدت في ستهم وزرقم للوطي وشديد الزرقة وفى النهاية ان رسول الله عليه السلام اخر اباسفيان فى الاذن عليه وادخل غيره من الناس فقال ما كدت تأذن لي حتى تأذن لحجارة الجلهمتين قبلى فقال رسول الله عليه السلام كل الصيد فى جوف الفرا قال ابو عبيد انما هو لحجارة الجلهتين والجلهة فم الوادي وقيل

جانبه زيد فيه الميم كما زيدت في ستهم وزرقم وابو عبيد يرويه بفتح الجيم والهاء وشمر يرويه بضمهما قال ولم اسمع الجلهة الا في هذا الحديث انتهى وقوله بكتيبة خضراء اي سوداء فان العرب تعبر عن السواد بالخضرة فيقولون للاسود الاخضر قال الفضل ابن عباس بن عتبة اللهبي

وانا الاخضر من يعرفني  اخضر الجلدة في بيت العرب

يريد بذلك خلوص نسبه وانه عربي محض لان الوان العرب السمرة وكانت كتيبته عليه السلام تسمى الخضراء لكثرتها وكثرة ما فيها من الحديد وقوله من بلخزرج اصله من بني الخزرج والعرب تحذف النون من بني اذا دخلت على اللام التي تظهر فيقولون بلحرث وبلعنبر وبلهجيم في بني الحرث وبني العنبر وبني الهجيم بخلاف ما اذا دخلت على اللام التي لا تظهر كما في بني النمير فانهم لا يحذفونها وهذا كحذفهم النون من كلمة من واللام من على الجارتين مع اللام الظاهرة فيقولون مِلماء وعَلماء في من الماء وعلى الماء روي في بيت حسان رضي الله عنه بكتيبة مِلأوس او ملخزرج اي من الاوس اومن الخزرج وقال ابن ميادة

وما انس مِلأشياء لا انس قولها  وادمعها يذرين حشو المكاحل

اى من الاشياء وقال عمر بن ابي ربيعة المخزومي

وما انس ملاشياء لا انس موقفا  لنا مرة منا بقرن المنازل

وقال النمرزدق

وما سبق القيسي من ضعف حيلة  ولكن طفت علماء تلفة خالد

اي على الماء قوله لاينكلون الخ لا ينكلون لا ينكصون على اعقابهم ولا يجبنون وعادة الطريق ما عدل عنه والمنهج الطريق الواضح يقول انهم يميلون عن الجادة يمنة ويسرة لطعن الاعداء وتمقيبهم هذا هو الظاهر قوله كم فيهمو من ماجد الخ يقال هو ذو منعة بالتحريك ويسكن فعلى تقدير التحريك يحتمل ان يكون جمع مانع

وان يكون مصدرا كالانفة والعظمة والعبدة كما صرح به الزمخشري فيكون معناه قوة تمنع من يريده بسوء وهو معناه على تقدير السكون وهو ساكن فى البيت قطعا وقوله بمهلكة الجبان المحرج الباء بمعنى في والمهلكة موضع الهلاك والمحرج المضيق عليه يقول هو شجاع بطل حيث يهلك الجبان المضيق عليه قوله ومسود يعطى الجزيل الخ المسود الذي جعلوه سيدا من السودد والمتوج الذي البس التاج وهو لبس الملوك قوله زين الندي الخ الزين مصدر زانه ضد الشين والندي كغني مجلس القوم ومتحدثهم اوالمجلس ماداموا فيه فاذا تفرقوا فليس نديا وكذلك النادي والمنتدى قال الأصمعي سمعت صبيا من الاعراب يقول لآخر وجهي زين ووجهك شين والمعاود البطل والكماة جمع كمي كغني وهو الشجاع وهو من قولهم كمي شهادته اذا كتمها لان الشجاع يستغني بافعاله عن دعواه فكانه يستر امره وشانه لوقت الحاجة ولانه اذا سكت دل بلاؤه على صفاته وقال ابو العلاء المعري الكماة في الحقيقة جمع كامٍ كما يقال غاز وغزاة وذلك من قولهم كمي نفسه في السلاح اذا توارى فيه واهل العلم يتجوزون في العبارة فيقولون الكماة جمع كمي وفعيل لا يجمع على هذا الوزن وانما استجازوا ذلك لان فاعلا وفعيلا يشتركان كثيرا فيقال عالم وعليم وشاهد وشهيد وحافظ وحفيظ وقوله بابيض سلجج الابيض السيف والسلجج الماضي الذي يقطع الضريبة بسهولة ذكره السهيلي في الروض وهذا الشعر لحسان رضي الله عنه مسطور فى سيرة ابن هشام ومنها كتبته

## كعب بن مالك الانصارى

### رضي الله عنه

يبكي حمزة بن عبد المطلب وقتلى احد من المسلمين رضوان الله تعالى عليهم

من المتقارب

نشجت وهل لك من منشجِ ... وكنت متى تذكر تلجج

تذكر قومٍ اتانى لهم ... احاديث فى الزمن الاعوج

فقلبك من ذكرهم خافق ... من الشوق والحزن المنضج

قوله نشجت الخ يقال نشج الباكى من الباب الثانى نشجا ونشيجا اذا غص بالبكاء فى حلقه من غير انتحاب ومن فى قوله من منشج استغراقية زيدت فى غير الموجب ومجرورها فى محل الرفع على الابتداء والظرف المقدم خبره يقول هل لك من سبب حامل على النشيج واذكره يذكره واذكره يذكره واذ ذكره بمعنى تذكره وتلجج من الباب الرابع والثانى واللجاج التمادى فى الامر والمعنى تمادى فى امراق الدموع قال ابو ذؤيب

فانى صبرت النفس بعد ابن عنبس وقد لج من ماء الشؤون لجوج

اراد لج دمع لجوج وقوله تذكر قوم الخ جواب للسائل اي منشجي تذكر قوم الخ والاحاديث جمع حديث بمعنى الخبر على خلاف القياس وقيل جمع احدوثة وقيل جمع احدثة جمع حديث ككثيب واكثبة والاعوج غير المستقيم يقول انه زمن اتى بما يسوءه قوله فقلبك من ذكرهم خافق الخ خافق من الخفقان وهو الاضطراب والحركة والحزن بالتحريك ههنا ويستعمل بالضم ايضا كالبخل والبخل ذكره البخاري فى صحيحه وبهما قرئ في قوله تعالى ليكون لهم عدوا وحزنا والمنضج على صيغة المفعول البالغ كماله ونهايته واصله من نضج الثمر وانضجته الشمس

وقتلا هموا فى جنان النعيم كريم المداخل والمخرج

بما صبروا تحت ظل اللواء لواء الرسول بذى الأضوج

غداة اجابت باسيافها جميعا بنو الاس والخزرج

واشياع احمد اذ شايعوا على الحق ذى النور والمنهج

يقال مدخل كريم اي حسن وقوله لواء الرسول بدل من اللواء والاضوج جمع ضوج وهو منعطف الوادي والاشياع جمع شيعة وهى اتباع الرجل وانصاره والظاهر انه اراد المهاجرين اوهو تعميم بعد التخصيص وشايعوا تابعوا يقال شايعه على امر اذا تبعه وقواه وقوله ذى النور اي الضياء يقال الحق ابلج والباطل لجلج

فما برحوا يضربون الكماة ويمضون فى القسطل المرهج

كذالك حتى دعاهم مليك الى جنة دوحة المولج

فكلهم ومات حر البلاء على ملة الله لم يحرج

القسطل والقسطال والقسطلان بالفتح فيهن وكزنبو الغبار كذا فى القاموس و فى قصة وقعة نهاوند لما التقى المسلمون والفرس غشيتهم قسطلانية اي كثرة الغبار بزيادة الالف والنون للمبالغة والمرهج اسم مفعول من ارهج الغبار اذا اثاره قوله كذلك اى فعلوا كذلك والدوحة الشجرة العظيمة والمولج المدخل يريد ذات اشجار فى داخلها وحر كل شئ احسنه والبلاء الاجتهاد فى الحرب يقان ابلى فلال اليوم بلاء حسنا ولم يحرج على بناء المجهول اي لم يضيق عليه اي لم يكن جبانا

كحمزة لما وفى صادقا بذى هبة صارم ساجج

فلاقاه عبد بنى نوفل يبربر كالجمل الادعج

فاوجره حربة كالشهاب تلهب فى اللهب الموهج

اراد بحمزة سيد الشهداء حمزة بن عبدالمطلب المستشهد باحد ويقال وفى واوفى بعهده ولغة القرأن اوفى واذا اوفى بعهده فقد صدق فقوله صادقا حال مؤكدة كولى مدابر فى تفسير البيضادى فى قوله تعالى من المؤمنين رجال صدقوا ماعاهدوا الله عليه من الثبات مع الرسول صلى الله عليه وسلم والمقاتلة لاعلاء الدين من صدقنى اذا قال لك الصدق فان العاهد اذا اوفى بعهد فقد صدق فيه فمنهم من قضى نحبه نذره بان قاتل حتى استشهد كحمزة ومصعب بن عمير وانس بن النضر رضوان الله تعالى عليهم انتهى وسيف ذوهبة بكسر الهاء وتشديد الموحدة المفتوحة مضاء فى الضريبة قال الشاعر

جلا القطر عن اطلال سلمى كأنما  جلا القين عن ذي هبة داثر الغمد

و نوفل ابن عبد مناف بن قصي و عبد بني نوفل وحشي بن حرب قاتل حمزة بن عبد المطلب وكان مولى لطعيمة بن عدى بن نوفل وقيل لجبير بن مطعم ابن عدى بن نوفل كذا قال ابن اسحاق واكثرهم وكان وحشي يومئذ كافرا ثم اسلم رضي الله عنه بعد اخذ الطائف وشهد اليمامة ورمى مسيلمة بحربته التي قتل بها حمزة رضي الله عنه وقتله وكان يقول قتلت بحربتي هذه خير الناس وشر الناس ذكر ابن اسحاق عن سليمان بن يسار انه قال سمعت ابن عمر رضي الله عنهما يقول سمعت قائلا يقول يوم اليمامة قتله العبد الاسود وكان وحشي من السودان والبربرة صوت المعزا ذانبّ وكثرة الكلام والصياح والتخليط في الكلام يقال بربر فهو بربار كثرثر فهو ثرثارو في حديث علي رضي الله عنه لما طلب اليه اهل الطائف ان يكتب لهم الامان على تحليل الزنا والخمر فامتنع قاموا ولهم تغذ مرو ببربرة وفي حديث احد فاخذ اللواء غلام اسود فنصبه و بربر والجمل الادعج الاسود قوله فاوجره حربة الخ يقال اوجره الرمح اذا طعنه به في فيه اوفي صدره قال الشاعر

اوجرته الرمح شزرا ثم قلت له  هذي المروءة لا لعب الزحاليق

و يستعمل في الطعن مطلقا ومنه بيت كعب رضي الله عنه فان حمزة رضي الله عنه لم يطعن في فيه ولا في صدره و انما طعن في ثنته بضم المثلثة وتشديد النون المفتوحة بعدها فوقية وهي العانة اوما بينها وبين السرة ففي صحيح البخاري في باب قتل حمزة من طريق جعفر بن عمرو بن امية الضمري رضي الله عنه ان وحشيا اخبره وعبيدَ الله بن عدي بن الخيار عن قتله حمزة رضي الله قال ان حمزة قتل طعيمة ابن عدي بن الخيار ببدر فقال لي مولاي جبير بن مطعم ان قتلت حمزة بعمي فانت حر قال فلما خرج الناس عام عَيْنَيْن وعينين جبل بحيال احد بينه وبينه وادخرجت مع الناس الى القتال فلما ان اصطفو للقتال خرج سباع فقال هل من مبارز قال فخرج اليه حمزة بن عبد المطلب فقال ياسباع يا ابن ام انمار مقطعة البظور اتحاد الله ورسوله صلى الله عليه وسلم ثم شد عليه فكان كامس الذاهب قال وكمنت لحمزة تحت صخرة فلما دنا مني رميته بحربتي فاضعها في ثنته حتى خرجت من بين

وركيه قال فكان ذاك العهد به فلما رجع الناس رجعت فاقمت بمكة حتى فشافيها الاسلام ثم خرجت الى الطائف فارسلو الى رسول الله عليه السلام رسولا فقيل لي انه لايهيج الرسل قال فخرجت معهم حتى قدمت على رسول الله عليه السلام فلما رأني قال آنت وحشي قلت نعم قال انت قتلت حمزة قلت قدكان من الامر ماقد بلغك قال فهل تستطيع ان تغيب وجهك عني قال فخرجت فلما قبض رسول الله عليه السلام فخرج مسيلمة الكذاب قلت لا خرجن الى مسيلمة لعلى اقتله فاكافئ به حمزة قال فخرجت مع الناس فكان من امره ماكان فاذا رجل قائم في ثلمة جدار كأنه جمل اورق ثائر الرأس قل فرميته بحربتي فاضعها بين ثدييه حتى خرجت من بين كتفيه قال ووثب اليه رجل من الانصار فضربه بالسيف على هامته قال عبدالله بن الفضل فاخبرني سليمان بن يسارانه سمع عبدالله بن عمر رضى الله عنهما يقول فقالت جارية على ظهر البيت وا امير المؤمنين قتله العبد الاسود انتهى ما فى الصحيح ولا علينا ان نشرح بعض ما فى هذا الخبر الواقع فى الصحيح فنقول قوله بحيال احد اي بنواحيه وسباع الذى خرج للمبارزة بكسر السين وتخفيف الموحدة ابن عبدالعزى الخزاعي حليف بنى زهرة بن كلاب وام انمار امة كانت مولاة لشريق بن عمرو الثقفي والد الاخنس والمقطعه على صيغة اسم الفاعل من التفعيل والبظور جمع بظر وهي اللحمة التى تقطع عند ختان المرأة وكانت ختانة تختن النساء بمكة فعيره بذلك قوله اتحاد الله من حاده اذا عانده وعاداه قوله وكمنت اي اختفيت قوله فرميته بحربتي هي آلة محددة دون الرمح كان يرمى بها رمي الحبشة وكان حبشياً فلا يكاد يخطئ قوله فارسلوا الى رسول الله رسولا اي وفداو الرسول يستوى فيه الواحد والاكثر قوله لايهيج الرسل بفتح حرف المضارعة اي لاينالهم منه مكروه قوله فكان من امره ماكان اي من المقاتلة الشديدة وقتل جمع من الصحابة والفتح للمسلمين قوله فى ثلمة جدار بفتح المثلثة اى خلل جدار قوله كأنه جمل اورق اسمر لونه كالرماد قوله ثائر الرأس اي منتشر شعره هذا قوله تلهب بحذف احدى التائين اى تتقد واللهب نار لادخان فيها والغبار الساطع وقد اشتهر تشبيه السيف ونحوه بالنار فى ظلام النقع والموهج على صيغة اسم المفعول بمعنى الموقد على الاول وبمعنى المثار على الثانى مجازا

وَ نعمانُ اوفى بميثاقه  و حنظلةُ الخَيْر لم يُحْنِج

عن الحق حتى غدت روحه  الى منزل فاخر الزِبْرِج

اولئك لامن ثوى منكمو  من النار في الدَّرَك المُرْتَج

نعمان هوا بن قوقل بن اصرم بن فهر بن ثعلبة بن غنم بن عمرو بن عوف ابن الخزرج و هو النعمان بن مالك و النعمان الاعرج ايضا شهد بدراواستشهد باحد وهو صاحب القول يوم احد حيث يقول اللهم اني اسألك لا تغيب الشمس حتى اطأ بعرجتى هذه خضر الجنة فقال رسول الله عليه السلام ظن بالله ظناً فوجده عند ظنه لقدر رأيته يطأ في خضرها و ما به عرج و اليه اشار كعب رضي الله عنه بقوله او فى بميثاقه وحنظلة الخير اما بالاضافة من باب حاتم الجود او برفع الخير على الصفة كما يقال رجل خير من رجال خيار و اخيار اراد حنظلة ابن ابى عامر الراهب و يقال له ابو عامر الفاسق الاوسي من بنى عمرو بن عوف وحنظلة هوالذى يعرف بغسيل الملئكة استشهد يوم احد قتله ابوسفيان بن حرب و قال حنظله بحنظلة يعنى بابنه حنظلة المقتول يوم بدر و ذكر اهل السيران حنظلة الغسيل كان قد الم باهله في خروجه الى احد ثم هجم عليه من الخروج في النفير ما انساه الغسل و اعجله عنه فلما قتل شهيدا اخبر رسول الله عليه السلام بان الملئكة غسلته و روى حماد بن سلمة عن هشام بن عروة عن ابيه ان رسول الله عليه السلام قال لامرأة حنظلة بن ابى عامر الانصاري ما كان شانه قالت كان جنبا و غسلت احد شقي رأسه فلما سمع الهيعة خرج فقتل فقال رسول الله عليه السلام لقد رأيت الملائكة تغسله الهيعة صوت تفزع منه وتخافه من عدو و قوله لم يحنج من احنج اذا مال ويقال من الثلاثى حنجه يتعدى الثلاثى ولا يتعدى الرباعي وهو من النوادر مثل كبه واكب وعرضه فاعرض وقشعت الريح السحاب فاقشع وحجمته عن الشئ فاحجم ونهجته الطريق فانهج وبشرته بمولود فابشر و لكن ذكروا انه يقال حنجته و احنجته ايضا فهو محنج و اسند الفعل المؤنث الى الروح لانه فى معنى النفس و هي لغة معروفة امر ذوالرمة ان يكتب على قبره

يا نازع الروح عن جسمى اذا قبضت  و فارج الكرب انقذنى من النار

فكان ذلك مكتوبا على قبره والزبرج الزينة و فى الخطبة الشقشقية المنسوبة الى على رضي الله عنه و لكن حليت الدنيا فى اعينهم و راقهم زبرجها اي زينتها وفاخر الزينة ظاهرها ذكره السهيلى قوله اولئك اشارة الى من ذكر من الشهداء وهو مبتداء والخبر محذوف اي خيار الناس اوالذين حمدامرهم اونحو ذلك وقوله لامن ثوى منكم اي اقام وفي الدرك ظرف لثوى ومن النار حال من ضمير المرتج الذي هو صفة للدرك والدرك اقصى قعر كل شيئ والجمع ادراك كذا في القاموس ويجمع على دركات ايضا وقال في البصائر الدرك اسم في مقابلة الدرج بمعنى ان الدرج مراتب باعتبار الصعود والدرك مراتب باعتبار الهبوط ولذا عبروا عن منازل الجنة بالدرجات وعن منازل جهنم بالدركات والمرتج على صيغة اسم المفعول بمعنى المغلق من ارتج الباب اذا اغلقه ومنه يقال ارتج عليه اذاحبس عن الكلام وهذه القصيدة لكعب بن مالك رضي الله عنه مسطورة فى سيرة ابن هشام ومنها كتبتها

## مازن بن الغضوبة الطائى

## رضى الله عنه

في وفوده على النبي صلى الله عليه وسلم واستشفاعه به يخاطبه

### الترجمة

هو مازن بن الغضوبة بن غراب بن بشر بن خطامة بن سعد بن ثعلبة بن نصر ابن سعد بن اسود بن نبهان بن عمرو بن الغوث بن طئ الطائى ثم النبهانى ثم الخطامي قال في الاستيعاب له صحبة وهو جد احمد بن حرب وعلي بن حرب الطائيين وخبره عجيب مخرج في اعلام النبوة من اخبار الكهان وفي خبره فقلت يارسول الله انى امرؤ من خطامة طئ وانى لمولع بالطرب واحب الخمر والنساء فيذهب مالى ولا احمد حالى فادع الله لى ان يذهب ذلك عني وليس لى ولد فادع الله ان يهب لى ولدا قال فدعالى فاذهب الله عني ما كنت اجد وتزوجت اربع حرائر فرزقت الولد وحفظت شطر القرأن وحججت حججا وانشد

من الطويل

اليك رسولَ الله خبّت مطيّتي ... تجوبُ الفيافي من عُمانَ الى العُرْجِ

لتشفع لي ياخير من وطئ الحصى ... فيغفر لي ربّي فأرجعَ بالفلجِ

الى معشر جانبت في الله دينهم ... فلا دينُهم ديني ولا شرجُهم شرجي

وكنت امرأ باللهو والخمر مُولَعا ... شبابي الى ان آذن الجسمُ بالنهجِ

فبدلني بالخمر خوفا وخشية ... وبالهجر احصاناً فحصّن لي فرجي

فاصبحتُ همّي في الجهاد ونيّتي ... فللّه ما صومي وللّه ما حجّي

قوله اليك رسول الله الخ اليك متعلق بخبت ورسول الله منادى وخبت من الخبب محركة وهو نوع من السرعة وتجوب تجوز وتمر والفيا في جمع فيفاء وهي المفازة لا ماء فيها وعمان كغراب بلد باليمن عند البحرين سمي بعمان بن نفثان بن سبا اخي عدن والعرج بالفتح بلد باليمن وواد بالحجاز ذو نخيل وموضع ببلاد هذيل ومنزل بطريق مكة منه عبدالله بن عمرو بن عثمان بن عفان العرجي الشاعر كذا في القاموس والظاهر ان المراد ههنا هو الذي بطريق مكة وقوله بالفلج هو بالفتح الفوز والظفر وقوله الى معشر الخ يريد كفار قومه وجانبت باعدت وقوله ولا شرجهم شرجي قال في النهاية وفي حديث مازن فلا رأيهم رأيي ولا شرجهم شرجي يقال ليس هو من شرجه اي من طبقته وشكله انتهى يقول لست منهم وليسوا مني قوله وكنت امرأ باللهو والخمر مولعا الخ المولع على صيغة اسم المفعول وهو الحريص على الشيء المبتلى به يقال ولع به كوجل ولعا بالتحريك وولوعا بالفتح واولعته واولع به بالضم فهو مولع به بالفتح كذا في القاموس وقوله شبابي مصدر اقيم مقام الظرف اي زمان شبابي وآذن اعلم يقال آذن الامر وآذن به وقوله بالنهج قال في النهاية اي بالبلى وقد نهج الثوب والجسم وانهج اذا بلي وانهجه

البلى اذا اخلقه ورواية ابن الاثير فى النهاية وكنت امرأ بالرغب بضم الراء وبالغين المعجمة قال اي بسعة البطن وكثرة الاكل ويروى بالزاي يعنى الجماع وفيه نظر انتهى قوله فبدلنى بالخمر الخ اي بدلني ربى وفى اسد الغابة امنا وخشية ولعل الامن بمعنى الرجاء فيكون بين الخوف والرجاء اوامنا من العذاب المخلد لان الامن منه بالايمان والعهر الزنا والتحصين الاعفاف قوله فلله ما صومى ولله ماحجى لله خبر مقدم وصومى مبتداء مؤخر وما زائدة للوزن كما ذكر ابو العباس المبرد فى الكامل فى قول الشاعر

مالدد مالدد ماله وقد انعمت ما باله

ان ما فى ما باله زائدة قال و يعنى بدد رجلا وكذا قال المرزوقى فى قوله

ان امس ما شيخا كبيرا فطالما عمرت ولكن لا ارى العمر ينفع

ان ما فى ان امس ما شيخا زائدة او لله خبر والمبدأ محذوف اي لله صومي ولله حجي عظمهما بنسبتهما الى الله ثم اكد ذلك بما الاستفهامية فقال ما صومي وماحجي اي هو شيء كبير عظيم نحو الحاقة ما الحاقة وهذا الشعر لمازن بن الغضوبة رضى الله عنه مسطور فى الاستيعاب ومنه كتبته

## النمر بن تولب العكلى

### رضى الله عنه

فى الاستعاذة من الحصر والعي والنفس وهواها والبراءة منها الى الله وتفويض الامر اليه

من الوافر

اعذنى رب من حصر وعى ومن نفس اعالجها علاجا

ومن حاجات نفسى فاعصمنى فان لمضمرات النفس حاجا

فانت وليها وبرئت منها اليك فماقضيت فلا خلاجا

اعذنى اجرنى واحفظنى والحصر بالتحريك العجز عن الكلام لسبب كالحجل

و نحوه و منه حصر الامام فى الصلاة والفعل منه حصر كفرح والعي بالكسر خلاف البيان يقال عيي كرضي و عيّ بالادغام و صاحب القاموس فسّر العي بالحصر والحصر بالعي قال الجاحظ فى اول كتاب البيان والتبيين و نعوذ بك من السلاطة والهذر كما نعوذ بك من العى والحصر و قديما ما تعوذوا بالله من شرهما و تضرعوا الى الله فى السلامة منهما ثم انشد هذا البيت الاول للنمر رضي الله عنه وقوله اعالجها علاجا يقال عالجه معالجة وعلاجا اذا زاوله ومارسه يقول اعذني من شر نفس اتعب فى اصلاحها و اقاسى الشدة فى ردها عن غيها وهواها قوله ومن حاجات نفسى فاعصمني اي من شهواتها وفاعصمني صيغة امر لحقتها نون التأكيد مع ضمير المتكلم ومضمرات النفس ماتضمرها وتكنها من الميل الى هواها والحاج جمع حاجة كالحاجات قوله فانت وليها اي صاحبها الذى يتولى امرها قوله وبرئت منها اليك يقال برئت من هذا الشيء اليك تركته لك دونى لامدخل ولاحق لى فيه قال جرير يهجو عرين بن يربوع

عَرِينٌ من عُرَيْنَةَ ليس منا  برئت الى عرينة من عرين

عرين بن يربوع بطن من تميم وعرينة من اليمن والنسبة الى عرين عرينى والى عرينة عرنى وقوله فلاخلاجا باشباع الالف اي لانزاع وفى الحديث انه عليه السلام صلى صلاة فجهر فيها بالقرأة وجهر خلفه قارئ فقال لقد ظننت ان بعضهم خالجنيها اي نازعنيها ويقال خالج قلبي امراي نازعنى فيه فكر وحاصل معنى البيت انه يكل نفسه الى الله ويطلب حفظها منه ويعترف بالعجز وبالرضا بقضاء الله سبحانه وهذا الشعر للنمر بن تولب رضي الله عنه مذكور فى الاغانى لابى الفرج الاصفهانى ومنه كتبته

## باب قافية الحاء المهملة

### حسان بن ثابت الانصارى

### رضى الله عنه

فى يوم بدر يهجو بنى اسد بن عبد العزّى من قريش

من الكامل

خابت بنو اسدٍ وآب غزيّهم ... يوم القليب بسوءةٍ وفضوح

منهم ابو العاصى تجدّل مقعصاً ... عن ظهر صادقة النجاء سبوح

حينا له من مانع بسلاحه ... لما ثوى بمقامه المذبوح

والمرء زمعة قد تركن ونحره ... يدمى بعاند معبط مسفوح

متوسدا حر الجبين معفراً ... قد عرمارن انفه بقيوح

ونجى ابن قيس فى بقية رهطه ... بشفى الرماق مولياً بجروح

قوله وآب غزيّهم الغزى اسم جمع الغازى ويوم القليب يوم بدر قيل له ذلك لما مر من القاء قتلى المشركين ذلك اليوم فى القليب قوله منهم ابو العاصى تجدل مقعصا الخ ابو العاصى الذى ذكره لم يظهر لى الآن من هو والذين قتلوا يوم بدر من كفار بنى اسد على ما ذكر ارباب السير هولاء زمعة بن الاسود بن المطلب بن اسد واخوه عقيل بن الاسود والحرث بن زمعة بن الاسود وابو البَخْتَرِيّ العاص بن هاشم ونوفل بن خويلد وعقبة بن زيد حليف لهم من اليمن وعمير مولى لهم وليس فيهم من اسمه ابو العاص كما ترى ولعلّه كنية واحد منهم لم يشتهر بها نعم لوارید بضمير منهم قريش على الاطلاق ففى قتلاهم ابو العاص بن قيس السهمى قتله على او النعمان بن قوقل او ابو دجانة رضوان الله عليهم قوله تجدل قدمر معناه فى شعر على رضي الله عنه والمقعص مر معناه ايضا وصادقة النجاء كاملة السرعة والصادق فى كل شيء الموفى اياه بتمامه وكماله يقال شجاع صادق الحملة اي الموفى حقها و فى هذا تعريض له بانه كان يركض فرسه اشد الركض فرارا من المسلمين قوله حيناله بالنصب على

المصدرية لفعل محذوف مثل تبالّه والحين بالفتح الهلاك وقوله من مانع بسلاحه تمييز بمن وقوله بمقامه المذبوح اي المقتول فيه قوله والمرء زمعة الخ المرء مفعول تركن وزمعة عطف بيان للمرء وهو زمعة بن الاسود المارّ ذكره وقوله تركن اي خيل بني اسد تركنه بحيث لم يلتفتوا اليه ولم يحفظوه والعاند الدم السائل جانبا والمعبط الطري والمسفوح المراق وفي كتب السيران قريشا ناحت على قتلى بدر ثم قالوا لاتفعلوا فيبلغ محمدا و اصحابه فيشمتوا بكم ولاتبعثوا في اسرائكم حتى تستأنوا بهم لايأرب عليكم محمد واصحابه في الفداء اي يشددوا عليكم فيه وكان الاسود بن المطلب قداصيب له ثلاثة من الولد زمعة وعقيل ابنا الاسود والحرث بن زمعة وكان يحب ان يبكي على بنيه فبينما هو كذلك اذ سمع نائحة من الليل فقال لغلام له وقد ذهب بصره انظر هل احل النحيب هل بكت قريش على قتلاها لعلي ابكي على ابي حكيمة يعني زمعة فان جوفي قد احترق فلما رجع اليه الغلام قال انما هي امرأة تبكي على بعير لها اضلته فذاك حين يقول الاسود

انبكي ان يضّل لها بعير ... ويمنعها من النوم السّهود
فلا تبكي على بكر ولكن ... على بدر تقاصرت الجدود
على بدر سراة بني هُصَيص ... ومخزوم ورهط ابي الوليد
وبكّي ان بكيت على عقيل ... وبكّي حارثا اسد الاسود
وبكيهم ولا تسمي جميعا ... فما لابي حكيمة من نديد
الا قد ساد بعد هم رجال ... ولولا يوم بدر لم يسودوا

وهذا الشعر فيه اقواء كما لا يخفى وابو الوليد عتبة بن ربيعة ورهطه بنو عبد شمس بن عبد مناف قوله متوسدا حر الجبين متوسدا متخذا الوسادة وحر الجبين حر الوجه وهو ما بدا منه من الوجنة اوما اقبل به عليك قال ابو الفتح البستي في نونيته المشهورة

صُنْ حرّ وجهك لاتهتك غلالته ... فكل حرّ لحرّ الوجه صوّان

والمعفر الساقط على وجه الارض وقدمرّ فى شعر العباس بن مرداس رضى الله عنه وعرّ من العرّ وهو بالفتح اوالضمّ الجرب ثم يستعمل فى الشر يقال عرّه اذا اصابه بشر ويقال لقيت منه شرّا وعرّا فعلى هذا يقرأ عرّ على بناء المجهول والقيوح جمع قيح قوله ونجى ابن قيس الخ لعل المراد بابن قيس عمرو بن عبدود ابن ابى قيس والعرب تنسب الى الجد كثيرا وقد تحذف لفظ الاب والابن فى الشعر وعمرو المزبور جرح يوم بدر فعيره حسان رضى الله عنه بقوله

ولقد لقيت غداة بدر عصبة ضربوك ضربا غير ضرب الحُسَّرَ

اصبحت لاتدعى ليوم عظيمة يا عمرو اولجسيم امر منكر

وسيجئ شرح هذين البيتين فى باب الراء انشاء الله تعالى والشفا بالقصر طرف كل شئ ويضرب به المثل فى القرب من الهلكة قال الله تعالى على شفا جرف هارو الرماق ضيق العيش الذى يمسك الرمق اعنى بقية الحياة وهذا الشعر لحسان رضي الله عنه مسطور فى سيرة ابن هشام ومنها كتبته

## سُوَيد بن الصّامِت الانصارىّ الخزرجىّ

## رضى الله عنه

فى دين كان قِدادَانه فطولب به فاستغاث فى قضائه بقومه فقصرو عنه

### الترجمة

هو سويد بن الصامت بن حارثة بن عدى بن قيس بن زيد بن مالك بن ثعلبة ابن كعب بن الخزرج قال ابن سعد والطبرانى شهد احدا كذا فى الاصابة وهو غير سويد بن الصامت الشاعر الذى لقى النبي عليه السلام بمكة فعرض عليه الاسلام وتلا عليه القرأن فلم يبعد وانصرف عنه فانه اوسى قتلته الخزرج قبل يوم بعاث وكان رجال من قومه يقولون انا لنراه مات وهو مسلم كما فى سيرة ابن هشام

وقال صاحب الاستيعاب وانا اشك فى اسلام سويد بن الصامت الاوسى كما شك فيه غيرى ممن الف فى هذا الشان والله اعلم قال صاحب الاصابة وان صح ماقال قومه فلا يعد من الصحابة لانه لم يلق النبى عليه السلام مؤمنا

واصبحت قد انكرت قومى كأننى ... جنيت لهم بالدين احدى الفضائح من الطويل

أدين وما دينى عليهم بمغرم ... ولكن على الجرد الجلاد القراوح

أدين على اثمارها واصولها ... لمولى قريب اولآخر نازح

قوله واصبحت قد انكرت قومي الخ يقال انكرته انكارا ضد عرفته اي كأن قومي ليسوا قومي الذين عرفتهم لعدم مساعدتهم اياي فى مطلوبى اوانكرت عليهم فعلهم بمعنى عبتهم وقوله كانني جنيت بهم متعلق بمقدر اي فعلوا بى مافعلوا كانني جنيت لهم اي جررت عليهم جريرة يقال جنى عليه وله وهو فى التعلق بمقدر كقول امرئ القيس

كأنى لم اركب جواد الغارة ... ولم اتبطن كاعبا ذات خلخال

فانه متعلق بمقدر يدل عليه الكلام اي تعيرينني خطاب لامرأة عيرته والفضائح جمع فضيحة يقول جعلونى كالجانى عليهم فهجرونى كما يهجر الجانى الجار على قومه جريرة وهم مخطئون فى ذلك قوله ادين على اثمارها الخ يقال دان واستدان وادان مشددا اذا اخذ الدين واقترض فاذا اعطى الدين يقال ادان مخففا والمغرم مصدر كالغرم بالضم وهو اداء شيئ لازم و يوضع موضع الاسم والجرد جمع جرداء كحمر و حمراء وهي النخلة الملسأ والجلاد ككتاب الصلاب الكبار من النخل واحدها جلدة والقراوح جمع قرواح و هي النخلة الطويلة الملساء والجمع فى الاصل قراويح بالياء فحذفها وقد يجوز مثله كعكسه وجعل المغرم على النخيل لان وفاء الدين منها والمولى الصديق والنازح البعيد يقول لاحق لقومي فى ظنهم والانكار علىّ فان الدين

ليس عليهم ادائه وانما هو علي وفى اثمار نخيلى واصولها وفاء له وهذا الشعر كتبته من الاصابة عن دعبل بن على الخزاعى

## علىّ بن ابى طالب

## رضى الله عنه او تمثّل

### فى كتمان السّر وعدم افشائه

من المتقارب

فلا تُفشِ سِرّك الاّ اليك ... فان لكل نصيح نصيحا

وانّى رأيت غُواة الرجا ... ل لا يتركون اديما صحيحا

قوله فلا تفش سرك الا اليك مبالغة فى النهي عن افشائه الى احد وقوله فان لكل نصيح نصيحا النصيح المحب الخالص الذى لا غشّ فيه يريد ان الذى تعدّه نصيحك قد يكون له نصيح يفشي سرك اليه وهو الى نصيح له فتتسع الدائرة حتى يبلغ الى غواة الرجال الذين لا يتركون اديما صحيحا والغواة جمع غاو من الغواية والاديم ههنا العرض وهذا الشعر مذكور فى الكامل لابى العباس المبرد قال فيه واحسن ماسمع فى هذا يعنى فى كتمان السّر قول على بن ابى طالب رضى الله عنه فانّ قائل يقول هوله ويقول آخرون قاله متمثلا ولم يختلف فى انه كان يكثر انشاده ثم انشد البيتين ولذلك قلت فى العنوان او تمثل

## النمر بن تولب العكلى

## رضى الله عنه

### فى الحث على الكسب ومدح المال والزجر عن القعود عن الكسب وذم الفقر

من الكامل

خاطِر بنفسك كى تُصيبَ رَغيبةً ... انّ القعود مع النّساء قبيح

فالمال فيه عزّة ومهابة  والفقر فيه مذلّة وفضوح

يقال خاطر بنفسه اشفاها على خطر اي اشراف على هلكة وفي الحديث الارجل يخاطر بنفسه وماله اي يلقيها في الهلكة بالجهاد والرغيبة مر معناها في بيت النمر رضي الله عنه في باب الباء وهذان البيتان للنمر رضي الله عنه مسطوران في كتاب بهجة المجالس للشيخ ابن عبدالبر ومنه كتبتهما

## باب قافية الدال المهملة

### ابو احمد بن جحش الاسدى

### رضي الله عنه

حبذا مكة من واد  بها اهلي واولادى  من الهزج

بها ترسخ او تادى  بها امشي بلاهاد

قدمرت ترجمة ابي احمد رضي الله عنه في باب الباء وكان بنو جحش حلفاء بني امية بن عبدشمس وكانت دارهم بمكة بالردم يسكنون بها وكان ابو احمد رضي الله عنه رجلا ضريرا وكان يطوف بمكة اعلاها و اسفلها بغير قائد و في ذلك يقول هذا الشعر وفي الاستيعاب ان الطفيل بن مالك رضي الله عنه قال طاف النبي عليه السلام و بين يديه ابو بكر وهو يرتجز بابيات ابي احمد بن جحش حبذا مكة من واد الابيات بتمامها وفي الاصابة مكان و اولادي وعوادي وهو جمع عائد بمعنى الزائر وهذا الشعر لابي احمد رضي الله عنه مسطور في الاصابة و منها كتبته غير لفظة و اولادي فانها من الاستيعاب وليس فيه مصراع بها ترسخ او تادى فكتبته من الاصابة تتميما للفائدة

# ابو الدرداء الانصارى الخزرجي

## رضى الله عنه

### فى فضل التقوى والنهي عن الاغترار بالدنيا والامر بالتزود للموت

### الترجمة

هو عويمر بن عامر بن قيس بن امية بن عامر بن عدي بن كعب بن الخزرج ابن الحرث بن الخزرج الانصاري الخزرجي رضى الله عنه هذا هو الصحيح فى نسبه وقد قيل غير ذلك فى اسم ابيه مشهور بكنيته و امه محبة بنت واقد بن عمرو بن الاطنابة تأخر اسلامه قليلا وكان آخر اهل داره اسلاما وكان فقيها عالما عاقلا حكيما آخى رسول الله عليه السلام بينه وبين سلمان رضى الله عنه روي عنه عليه السلام انه قال عويمر حكيم امتي شهد مابعد احد من المشاهد واختلف فى شهوده احدا روى منصور بن المعتمر عن ابى الضحى عن مسروق قال شافهت اصحاب محمد صلى الله عليه وسلم فوجدت علمهم انتهى الى ستة عمرو علي وعبدالله بن مسعود ومعاذ وابى الدرداء وزيد بن ثابت وعن عوف بن مالك انه رأى فى المنام قبة ادم في مرج اخضر وحول القبة غنم ربوض تجتر وتبعر العجوة قال فقلت لمن هذه القبة فقيل لعبدالرحمن بن عوف رضى الله عنه فانتظرناه حتى خرج فقال ياعوف هذا الذي اعطانا الله بالقرأن ولو اشرفت على هذه الثنية لرأيت بها مالم ترعينك ولم تسمع اذنك ولم يخطر على قلبك مثله اعده الله لابى الدرداء انه كان يدفع الدنيا بالراحتين والصدر وعن يزيد بن عميرة قال لما حضرت معاذ بن جبل الوفاة قالوا اوصنايا ابا عبدالرحمن فقال التمسوا العلم عند عويمر ابى الدرداء فانه من الذين اوتوا العلم وعن خالد بن معدان قال كان عبدالله بن عمر يقول حدثونا عن العالمين معاذ وابى الدرداء وولي القضاء لعمر رضى الله عنه بدمشق والصحيح انه مات فى خلافة عثمان رضى الله عنه و انما ولي القضاء لمعاوية فى خلافة عثمان رضى الله عنه قال ابوعمر له حكم مأثورة منها قوله اخبر تقله ووصف الدنيا فاحسن فمن قوله فيها الدنيا دار كدر لا ينجو منها الا الحذر و لله فيها علامات يسمعها الجاهلون

ويعتبر بها العالمون ومن علاماته فيها ان حفها بالشبهات فارتطم بها اهل الشهوات ثم اعقبها بالآفات فانتفع بذلك اهل العظات و مزج حلالها بالمؤنات وحرامها بالتبعات فالمثري فيها تعب والمقل منها نصب فى كلمات اكثر من هذا انتهى و فى بستان العارفين للفقيه ابى الليث السمرقندى رحمه الله قيل لابى الدرداء رضى الله عنه كل الانصار يقولون الشعر غيرك فقال و انا اقول ايضا الشعر فعند ذلك قال رضى الله عنه

يريد المرء ان يعطى مناه ... و يأبى الله الا ما ارادا — من الوافر

يقول المرء فائدتى ومالى ... وتقوى الله افضل ما استفادا

فلا تك يا ابن آدم فى غرور ... فقدم قام المنادى صاح نادى

بان الموت طالبكم فهيوا ... لهذا الموت راحلة وزادا

المنى جمع منية وهى ما يتمنى ويشتهى وقوله ويأبى الله الا ما ارادا باشباع الالف اي يمتنع الا عن ما اراد ولا يفعل غيره فلا يعطى المرء منية لم يردها الله كما قال الآخر

ما كل ما يتمنى المرء يدركه ... تجرى الرياح بما لا تشتهى السفن

قوله يقول المرء الخ اي فائدتى ومالى مطلوباي اومرغوباي اواحب وانزم فائدتى ومالى اونحو ذلك يعنى انه لا يزال يذكرهما ويسعى فى تحصيلهما والفائدة ما استفدته والمراد هنا المال فقوله ومالى تفسير لها قوله فهيو مخفف هيئوا من التهيئة بمعنى الاعداد

## ابان بن سعيد الاموى

## رضي الله عنه

يثنى على الجار ودالعبدى ورجال اخرين على حسن صنيعهم به ايام الردة

## الترجمة

هو ابان بن سعيد بن العاص بن امية بن عبد شمس بن عبد مناف القريشي الاموي رضى الله عنه قال البخاري وابو حاتم الرازي وابن حبان له صحبة وكان ابوه من اكابر قريش وكان له ثمانية بنين منهم ثلاثة ماتوا على الكفر وهم احيحة وبه كنى سعيد بن العاص قتل احيحة يوم الفجار والعاص وعبيدة قتلا يوم بدر وخمسة اسلموا وصحبوا النبي عليه السلام وهم خالد وعمرو وسعيد وابان وحكم فغير النبي عليه السلام اسم الحكم وسماه عبد الله اسلم منهم خالد وعمرو قديما وهاجرا الى الحبشة واستشهدا جميعا بأجنادين من ارض الشام فى خلافة الصديق رضى الله عنه وشهد ابان بدرا مشركا فنجا وبقى بمكة حتى اجار عثمان رضى الله عنه زمن الحديبية فبلغ رسالة رسول الله عليه السلام وقال له ابان

اقبل وادبر ولاتخف احدا  بنو سعيد اعزة الحرم

ثم قدم عمرو وخالد من ارض الحبشة فراسلا ابانا فتبعهما حتى قدموا جميعا على النبي عليه السلام فاسلم ابان ايام خيبر وشهدها مع النبي عليه السلام فارسله النبي عليه السلام فى سرية وولاه البحرين بعد ما عزل العلاء بن الحضرمى فلم يزل والياعليها الى ان توفى النبي عليه السلام فقدم ابان على ابى بكر رضى الله عنه ثم استشهد باجنادين كما تقدم على ماهو قول اكثر اهل النسب وقال ابن اسحق قتل يوم اليرموك وقيل قتل بمرج الصفر وقيل مات سنة سبع وعشرين فى خلافة عثمان رضى الله عنه واستشهد سعيد بن سعيد بن العاص يوم الطائف وكان اسلامه قبل فتح مكة بيسير واستشهد الحكم بن سعيد بن العاص قيل يوم مؤتة وقيل يوم اليمامة قال رضي الله عنه

من الرمل  جُزِى الجارود خيرا  عن ابان بن سعيد

وصباح واخوه  هَرِم خير عميد

الجارود هو المعلى العبدي من عبد قيس وفد على النبي عليه السلام فى رجال

من قومه وستأتى ترجمته عند ذكر شعر له رضى الله عنه وصباح بضم الصاد المهملة هو ابن العباس العبدي احد الوفد مع الجارود وهرم الذي ذكره لم اجد له ترجمة والعميد السيد كالعمود قال في الاصابة ذكر وثيمة في كتاب الردة ان صباحا شيع ابان بن سعيد لما بلغهم موت النبي عليه السلام حتى ورد على ابى بكر رضى الله عنه في ثلاثين من قومه وفي ذلك يقول ابان هذا الشعر ومن الاصابة كتبته

## ابو الهيثم بن التيهان الانصارى الاوسى

## رضي الله عنه

## الترجمة

هو مشهور بكنيته ذكره ابن اسحق فيمن شهد بدرا وقال فى الاستيعاب اسمه مالك واسم التيهان ايضا مالك بن عبيد بن عمرو بن الاعلم البلوي من بلي بن الحاف بن قضاعة ثم الانصاري حليف بني عبد الاشهل وقالت طائفة من اهل العلم انه انصاري من انفسهم من الاوس شهد بيعة العقبة الاولى والثانية وكان احد الستة الذين لقوا رسول الله عليه السلام قبل ذلك بالعقبة وهو اول من بايع رسول الله عليه السلام ليلة العقبة فيما زعم بنو عبد الاشهل و اما بنو النجار فزعموا ان اول من بايعه ليلة العقبة ابو امامة اسعد بن زرارة رضي الله عنه و زعم بنو سلمة انه كعب بن مالك رضى الله عنه و قيل اول من بايعه البراء بن معرور رضى الله عنه انتهى وقال الفاضل المنيني في ارجوزته في اهل بدر يذكر ابا الهيثم بن التيهان و اخاه عبيد بن التيهان

و بابى الهيثم نجل التيهان  وصنوه عبيد الثبت الجنان

وشهد ابو الهيثم بدرا واحدا وسائر المشاهد كلها وتوفي بالمدينة في خلافة عمر رضى الله عنه سنة عشرين او احدى و عشرين وقيل بل شهد صفين مع علي رضى الله عنه سنة سبع وثلاثين وقتل بها والله اعلم قال في الاستيعاب ومما قيل فى ابى بكر رضى الله عنه قول ابى الهيثم بن التيهان

من الطويل

وانّى لَأَرْجُوان يقوم بامرنا ... ويحفظه الصّديق والمرء من عدى

أُولاكَ خيار الخلق فهر بن مالك ... وانصار هذا الدين من كل معتدى

المرء من عدى هو عمر بن الخطاب رضى الله عنه لانه من بني عدي بن كعب ابن لؤي بن غالب بن فهر بن مالك واليه تنتسب بطون قريش فالمراد خيار قريش كلهم وفهر بالجر عطف بيان او بدل للخلق و قوله و انصار هذا الدين اما بالرفع على المعنى اللغوي فيكون عطفا على خيار الخلق و اما بالجر على المعنى الاصطلاحي فيكون عطفا على فهر بن مالك فيفيد انهما خير قريش والانصار جميعا والبيتان مسطوران في الاستيعاب ومنه كتبتهما

## الاصيد بن سلمة السلمى

## رضى الله عنه

### فى مدح النبي صلى الله عليه وسلم ودعوة ابيه سلمة الى الاسلام

### الترجمة

الاصيد بوزن احمد قال في اسد الغابة من طريق على بن ابى طالب رضى الله عنه قال بعث رسول الله عليه السلام سريّة فاسروا رجلا من بني سليم يقال له الاصيد بن سلمة فلّما رأه رسول الله عليه السلام رقّ له وعرض عليه الاسلام فاسلم و بلغ ذلك اباه وكان شيخا كبيرا فكتب اليه يقول

من راكب نحو المدينة سالما ... حتى يبلّغ ما اقول الاصيدا

ان البنين شرارهم امثالهم ... من عقّ والده و برّ الابعدا

اتركت دين ابيك والشّم الأولى ... أَوْدَوْا و تابعت الغداة محمدا

فَلاَيِّ امر يا بُنَيّ عققتني ... وتركتني شيخا كبيرا مُفْنِدا

اما النهار فدمع عيني ساكب ... و ابيت ليلى كالسليم مسهدا

فلعل ربا قد هداك لدينه فاشكر اياديه لعل ان ترشدا
واكتب اليّ بما اصبت من الهدى و بدينه لا تتركنّي موحدا
واعلم بانك ان قطعت قرابتي وعققتني لم ألفَ الاّ للعدى

فلما بلغ ابياته الى ابنه استأذن النبي عليه السلام ان يكتب اليه فاذن له فكتب اليه

من الكامل

ان الذي سمك السماء بقدرة حتى علا في ملكه فتوحدا
بعث الذي لا مثله فيما مضى يدعو لرحمته النبي محمدا
ضخم الدسيعة كالغزالة وجهه قرناً تأزر بالمكارم وارتدى
فدعا العباد لدينه فتتابعوا طوعاً وكرهاً مقبلين على الهدى
وتخوفوا النار التي من اجلها كان الشقي الخاسر المتلدّدا
واعلم بانك ميت ومحاسب فالى من هذي الضلالة والردى

قوله سمك رفع وقوله لامثله فيما مضى اي ولا فيما يأتي ولم يذكره لانه معلوم بالاولى وهذا يسمى بالاكتفاء نحو قوله تعالى سرابيل تقيكم الحراي والبرد وقوله النبي بدل من الذي قوله ضخم الدسيعة الدسيعة العطية الجزيلة قال الازهري يقال للجواد هو ضخم الدسيعة اي كثير العطية والغزالة الشمس ولا يقال غابت وهي اسمها الى مد النهار وانتفاخه يقال لقيته غزالة الضحى كذا في الاساس ومما ينسب الى القاضي عياض وكان الثلج نزل في غير ابانه

كأن كانون اهدى من ملابسه لشهر آزرا نواعا من الحلل
او الغزالة من طول المدى خرفت فما تفرق بين الجدي والحمل

آزر هو مارس والقرن بالفتح سيد القوم وقوله تأزر بالمكارم وارتدى اراد ان المكارم محيطة به من جميع جوانبه احاطة الازار والرداء بلابسهما والتلدد المتحير قوله فالى من هذى الضلالة اي توجه ومل الى هارب من هذى الضلالة والردى بالقصر الهلاك ولما بلغ هذا الشعر اباه اقبل الى النبي عليه السلام فاسلم وهو مذكور فى اسد الغابة ومنه كتبته

## الاعشى المازنى اوالحر مازى

### رضى الله عنه

يمدح الحكم بن المنذر بن الجارود العبدى وقدمرت ترجمة الاعشى فى باب الباء

من مشطور الهزج

يا حَكَمَ بنَ المنذرِ بنِ الجارود ... سرادقُ المجد عليك ممدود

انت الجوادُ بنُ الجوادِ المحمود ... نُبِّتَّ فى الجود وفى بيت الجود

والعودُ قد ينبتُ فى اصل العود

حكم هذا احد ولاة البصره لهشام بن عبد الملك وابوه المنذر بن الجارود ولد فى عهد النبي عليه السلام وامره على رضى الله عنه على اصطخر وكان شهد الجمل مع على رضى الله عنه وولاه عبيد الله بن زياد فى امرة يزيد بن معاوية السند فمات هناك فى اواخر سنة احدى وستين اوفى اثنتين وستين وقيل ولاه ابن زياد السند فى اثنتين وستين فمات هناك. والله اعلم والجارود العبدى مر ذكره فى شعر ابان بن سعيد رضى الله عنه والمختار فى حكم فى البيت البناء على الفتح اتباعا لحركة الابن لارالنعت والمنعوت كاسم ضم الى آخر مع كثرة استعمال هذا التركيب اعنى نداء العلم الموصوف بابن مضافا الى علم آخر وكون الفتح حركة الاصلية فى المنادى وهو مشبه فى الاتباع بقولهم ابنم وامرؤ حيث تتبع حركة النون والراء لحركة الميم والهمزة على ماينه سيبويه وهذا الرجز من شواهده وشواهد الكامل والضم فى حكم اقيس لانه اسم مفرد نعت بمضاف فقياسه ان يكون بمنزلة قولك يازيد ذا الجمة والسرادق الذى يمد فوق صحن البيت

والجمع سرادقات وقال ابن الاثير هو كل ما احاط بالشيء من حائط اومضرب اوخباء وفي التنزيل احاط بهم سرادقها قوله والعود قد ينبت في اصل العود يقول كما ان العود ينبت في اصل العود كذلك نشأت كريما من اباء كرام كما قال زهير

وهل ينبت الخطّى الاوشيجه  وتغرس الا في منابتها النخل

وهذا الشعر الاعشى رضى الله عنه مسطور في الاصابة ومنها كتبته

## بُجَير بن بَجْرَة الطّائى

## رضى الله عنه

يذكر تصديق الله سبحانه وتعالى قول رسول الله صلى عليه وسلم لخالد بن الوليد حين ارسله الى اكيدر دُومة انك ستجده يصيد البقر وماصنعت البقر تلك الليلة حتى استخرجته

### الترجمة

ذكره صاحب الاصابة في قسم الصحابة وقال ابن عبد البرّ له في قتال اهل الردة آثار واشعار ذكرها بن اسحق ولا اعلم له رواية عن النبي عليه السلام وفي سيرة ابن هشام في غزوة تبوك ان النبي عليه السلام دعا خالد بن الوليد فبعثه الى أُكَيدِر دُومة وهو اكيدر بن عبد الملك رجل من كندة كان ملكا عليها وكان نصرانيّا فقال رسول الله عليه السلام لخالد بن الوليد انك ستجده يصيد البقر فخرج خالد حتى اذا كان من حصنه بمنظر العين وفي ليلة مقمرة وهو على سطح له ومعه امرأته فباتت البقر تحك بقرونها باب القصر فقالت له امرأته هل رأيت مثل هذا قط قال لا والله قالت فمن يترك هذه قال لاحد فنزل فامر بفرسه فاسرج له وركب معه نفر من اهل بيته فيهم اخ له يقال له حسّان فركب وخرجوا معه بمطاردهم فلما خرجوا تلقتهم خيل رسول الله عليه السلام فاخذته وقتلوا اخاه وقد كان عليه اي على اكيدر قباء من ديباج مخوص بالذهب فاستلبه خالد فبعث به الى رسول الله عليه السلام قبل

قدومه به عليه فجعل المسلمون يلمسونه بايديهم ويتعجبون منه فقال رسول الله عليه السلام اتعجبون من هذا فوالذى نفسى بيده لمناديل سعد بن معاذ فى الجنة احسن من هذا ثم ان خالدا قدم باكيدر على رسول الله عليه السلام فحقن له دمه وصالحه على الجزية ثم خلّى سبيله فرجع الى قريته فقال بجير بن بجرة الطائى رضى الله عنه

من الوافر

تبارك سائق البقرات انّى ... رأيت الله يهدى كلّ هاد

فمن يك حائدا عن ذى تبوك ... فانا قد امرنا بالجهاد

تبارك بمعنى كثر خيره وبركته وسائق البقرات هو الله سبحانه وفيه تلميح الى القصة التى نقلناها عن سيرة ابن هشام والحائد المائل المعرض عن الشئ وقوله عن ذى تبوك يريد عن تبوك قال فى القاموس وهذا ذوزيداي هذا صاحب هذا الاسم انتهى فهو من اضافة المسمى الى الاسم وهكذا ذكر الرضي وقال ابن الاثير فى النهاية فى حديث يطلع عليكم رجل من ذى يمن عليه مسحة من ذى ملك كذا اورده ابو عمر الزاهد وقال ذى ههنا زائدة وقوله فانا قد امرنا بالجهاد من اقامة السبب مقام المسبب اي فانا لا نعرض لانا قد امرنا قال فى الاصابة ذكر سيف بن عمر فى الفتوح ان بجير بن بجرة رضى الله عنه استشهد بالقادسية وهذا الشعر مسطور فى سيرة ابن هشام كما قدمنا ومنها كتبته

## الحرث بن ابى وجزة الاموى

رضى الله عنه

فى كبر سنه وشيخوخته

### الترجمة

ذكره صاحب الاصابة فى القسم الاول من كتابه وقال لم ار للحارث هذا

فى كتب من صنف فى الصحابة ذكرا وهو على شرطهم فانه كان فى عهد النبي صلى الله عليه وسلم رجلا وعاش الى خلافة عمر رضى الله عنه ولم يبق بمكة بعد الفتح قرشي كافرا كما مر بل شهدوا حجة الوداع كلهم مع النبي صلى الله عليه وسلم كما صرح به ابن عبد البر انتهى ونسبه على ما فى سيرة ابن هشام الحرث بن ابى وجزة بن ابى عمرو بن امية بن عبد شمس الاموى قال ابن هشام ويقال ابن ابى وحرة قلت و هو الذى نقله الشريف المرتضى فى شرح القاموس عن الواقدى وكان الحرث هذا يوم بدر مع المشركين فاسره سعد بن ابى وقاص رضى الله عنه قال فى الاصابة وذكر البلاذرى ان عمر رضى الله عنه سمع الحرث بن ابى وجزة يمدح خالد بن الوليد فنهاه وقال ان حب الفخر مفسدة للدين

كبرت وابلتني الليالى ومن يعش ... كما عشت يصبح ذاوساوس مقعدا — من الطويل

وقصرى وان عمرت عشرين حجة ... فنأ ولا يبقى الزمان مخلدا

قدمر فى شعر عدي بن حاتم ان كبر يكبر من الباب الرابع فى السن وكبر يكبر من الباب الخامس فى العظم وقوله وابلتنى الليالى جعلتني بالياخلقا كما يبلى الثوب وقوله ذاوساوس كنى به عن العته قوله وقصرى و ان عمرت عشرين حجة يقال قصرك ان تفعل كذا وقصارك ويضم وقصاراك وقُصَيْراك بالضم فيهما اي جهدك وغايتك وحسبك وهو من القصر بمعنى الحبس لانك اذا بلغت الغاية حبستك وفى الحديث من شهد الجمعة فصلّى ولم يؤذ احدا بقصره ان لم تغفر له جمعته تلك ذنوبه كلها ان تكون كفارته في الجمعة التى تليها والباء زائدة دخلت على المبتدأ دخولها في قولهم بحسبك قول السوء وجمعته منصوب على الظرف وقال مُتَمِّم بن نويرة

وقصرك انى قد شهدت فلم اجد ... بكفّي عنه للمنية مَدفعا

والحجة بالكسر السنة يقول ان عاقبته الموت وهذان البيتان مسطوران فى الاصابة عن المرزبانى ومنها كتبتهما

## حسّان بن ثابت الانصارى

## رضى الله عنه

في هجرة النبي عليه السلام الى المدينة وخيبة قريش لخروجه من بينهم وسعادة الانصار لنزوله عليهم وتهنئة ابى بكر رضى الله عنه بشرف صحبته للنبي عليه السلام

من الطويل

لقد خاب قوم غاب عنهم نبيّهم ... وقُدّس من يسرى اليه ويغتدى

ترحّل عن قوم فضلّت عقولهم ... وحلّ على قوم بنور مجدّد

هداهم به بعد الضلالة ربّهم ... وارشدهم من يتبع الحق يرشد

وهل يستوى ضلّال قوم تسفّهوا ... عمى وهداة يهتدون بمهتد

وقد نزلت منه على اهل يثرب ... ركاب هدى حلّت عليهم باسعد

نبى يرى مالا يرى النّاس حوله ... ويتلو كتاب الله فى كلّ مشهد

وان قال فى يوم مقالة غائب ... فتصديقها فى اليوم اوفى ضحى غد

ليهن ابا بكر سعادة جدّه ... بصحبته من يسعد الله يسعد

ذكر فى سيرة ابن هشام فى حديث الهجرة عن اسماء بنت ابى بكر رضى الله عنه انها قالت لما خرج رسول الله عليه السلام وابوبكر اتانا نفر من قريش فيهم ابوجهل ابن هشام فوقفوا على باب ابى بكر فخرجت اليهم فقالوا اين ابوك يا بنت ابى بكر قالت فقلت لا ادري قالت فلطم ابوجهل خدي لطمة طرح منى قرطي قالت ثم

انصرفوا فمكثنا ثلث ليال وما ندرى اين توجه رسول الله عليه السلام حتى اقبل رجل من الجنّ من اسفل مكة يتغنى بابيات من شعر غناء العرب وان الناس ليتبعونه يسمعون صوته ولا يرونه حتى خرج من اعلى مكة وهو يقول

جزى الله رب الناس خير جزائه ... رفيقين حلاّ خيمتَيْ ام معبد

هما نزلا بالبّر ثم ترحّلا ... فافلح من امسى رفيق محمّد

ليهن بني كعب مكان فتاتهم ... و مقعدها للمؤمنين بمرصد

قلت وام معبد امرأة من خزاعة ثم من بنى كعب واسمها عاتكة بنت خالد بن منقذ على ما فى الاستيعاب وهى التى نزل رسول الله صلى الله عليه وسلم فى خيمتها وشرب من لبن شاتها وظهرت معجزته حين خرج مهاجرا نحو المدنية ومعه ابوبكر رضى الله عنه والقصة معروفة فى كتب السير ثم اسلمت ام معبد وصحبت رسول الله عليه السلام قال ابن هشام قال ابن اسحق قلت اسماء فلمّا سمعنا قول الجنى عرفنا حيث وجه رسول الله عليه السلام وان وجهه الى المدينة وانشد فى الاستيعاب زيادة على هذه الابيات الثلثة المذكورة فى السيرة ثم قال فى الاستيعاب فلما سمع حسّان بن ثابت رضى الله عنه ذلك جعل يجاوب الهاتف وهو يقول فانشد الابيات التى كتبنا هاهنا لحسان فلنبدأ فى شرحها قوله لقد خاب قوم الخ القوم قريش وقدس على بناء المجهول اي طهر عن الادناس ومن يسرى اليه ويغتدى هم الانصار وفاعل يسرى ويغتدى ضمير يرجع الى النبى عليه السلام وقوله وهل يستوى بمعنى لايستوى والضّلال جمع ضالّ وقوله تسفهوا رواه ابن الاثير فى النهاية تَسَكَّعوا وقال اي تحيروا والتسكع التمادى فى الباطل والهداة جمع هاد والركاب الرواحل من الابل والمرادر اكبوها واسعد جمع سعد بمعنى اليمن ضد النحس قوله نبى يرى الخ هذا كقول الاعشي فى قصيدته التى مدح بها النبى عليه السلام

نبى يرى مالا ترون وذكره ... لعمرىَ غار فى البلاد وانجدا

قوله وان قال فى يوم مقلة غائب اي مقالة فى الاخبار عن امر غائب وقوله

فتصديقها فى اليوم اوفى ضحى غد يريد به ان ما اخبر به من المغيبات يقع لامحالة فى اسرع اوقات الامكان قوله ليهن هذه الكلمة تقولها العرب عندالتهنئة كهنيئالك واصله هنأنى الطعام مهموز فقد تستعمل بالهمزة على اصله فقد تجيء بعدها اللام كما فى قول الاخطل

الى امام تفادينا فواضله  اظفره الله فليهنئ له الظفر

وقول الاعشى الباهلى فى مرثية اخيه المنتشر بن وهب وكان قتله هند بن اسماء

قتلت فى حرم منا اخا ثقة  هند بن اسماء لايهنئ لك الظفر

وقدلا تجيء كقول العرب لمن ولد له ابن ليهنئك الفارس وقد تخفف همزتها بقلبها ياء فتثبت فى الجزم لانها مبدلة من الهمزة كقول العرب ليهنيك الفارس بالياء كما قالوا بالهمزة كما تقدم آنفا ولايجوز ليهنك بدون الياء كما تقوله العامة كذاقيل لكن وردفى صحيح البخارى فى حديث كعب بن مالك لتهنك توبة الله عليك كما ضبطه الحافظ ابن حجر بكسر النون وزعم ابن التين انه بفتحها قال لانه من يهنأ بالفتح ومن هذا الباب قول حسان على مافى الاستيعاب وقديستعمل ماضى هذه الكلمة بقلب الهمزة الفا كقول الفرزدق

راحت بمسلمة البغال عشية  فارعَيْ فزارة لاهناكِ المرتع

والجد بالفتح الحظ وهذا الشعر مسطور فى الاستيعاب ومنه كتبته كما نبهت علية

## حسان بن ثابت الانصارى

### رضى الله عنه

يهجو مسافع بن عياض بن صخر بن عامر بن كعب بن سعد بن تيم بن مرة القرشي التيمى قال فى الاستيعاب له صحبة ولا احفظ له رواية وكان شاعرا محسنا فهجا حسانا بابيات فقال حسان

من البسيط  لوكنتَ من هاشمٍ اومن بنى اَسَد  اوعبد شمس اواصحاب اللوا الصيد

اومن بنى نوفل اورهط مُطّلب  لله درّك لم تهمم بتهديدى

اوفى الذؤابة من قوم ذوى حسب  لم تصبح اليوم نكساً ثانىَ الجيد

اومن بنى زُهرَة الاخيار قدعلموا  او من بنى جُمَح البيض المَناجيد

اوفى السَّرارة من تيم رَضيت بهم  اومن بنى خَلَف الخُضر الجَلاعيد

هاشم ابن عبد مناف بن قصي واسد ابن عبدالعزى بن قصي وعبد شمس ابن عبد مناف بن قصي واصحاب اللواء بنو عبدالدار بن قصي وينقل حركة همزة الاصحاب الى الواو السّاكنة قبله للوزن واللواء ممدود اذا اردت به لواء الامير ولكنه اضطر فقصره وقد بينا جواز ذلك اوهو لغة في الممدود على ماقيل والصيد جمع اصيد وقدمر معناه في قصيدة حسان ذكرت القروم الصيد فى باب الباء ونوفل والمطلب ابنا عبدمناف بن قصي والذؤابة الاشراف والنكس بالكسر الدنئ المقصر وقوله ثانى الجيد كناية عن المتكبر لان اصل الثانى المائل والجيد العنق كثانى عطفه وكما يقال لوى شدقه ونأى بجانبه وزهرة ابن كلاب بن مرة والاخيار جمع خير مخفف خير صفة مشبهة يقال رجل خير من رجال خيار واخيار ويروى عن رسول الله عليه السلام انه قال خلقت من خير حيّين هاشم وزهرة وذلك لان امّه آمنة بنت وهب بن عبد مناف بن زهرة وجمح ابن عمرو بن هصيص بن كعب بن لؤى بن غالب والمناجيد مفاعيل من النجدة والواحد منجاد وهو من اوزان المبالغة كما يقال رجل مطعان بالرمح ومطعام للطعام وقوله اوفى السرارة من تيم يقول في الصميم منهم والموضع المرضي واصل ذلك في التربة تقول العرب اذا غرست فاغرس فى سرارة الوادي ويقال فلان فى سر قومه ومنه الولد سرابيه والسُّرة مثل السر والسّرارة قال القرشي

هلا سألت عن الذين تبطحوا  كرم البطاح وخير سُرّة واد

و قوله او من بني خلف الخضر الجلاعيد بحذف التنوين من خلف والتنوين وان لم يكن حرف العلة التي تسقط بالتقاء الساكنين لكنه نون والنون تدغم في الياء والواو وتزاد كما تزاد حروف العلة و يبدل بعضها من بعض فتقول رايت زيدا فتبدل الالف من التنوين وتقول في النسبة الى صنعاء وبهراء صنعانى و بهرانى فتبدل النون من الف التأنيث فناسب النون بذلك حروف العلة فسقطت التنوين التي هي نون عند الالتقاء ومثل هذا من الشعر قول الشاعر

عمرو الذى هشم الثريد لقومه ورجال مكة مسنتون عجاف

بسقوط التنوين من عمرو وعمرو هذا هو هاشم بن عبد مناف كان يهشم الثريد لقومه كما قال الشاعر فلقب هاشما وخلف الذي ذكره هو ابن وهب بن حذافة بن جمح بن عمرو بن هصيص بن كعب بن لؤي والخضر قيل بمعنى السود يريد سواد جلدهم كناية عن كونهم من صميم العرب لغلبة السمرة فى الوانهم كما مر من شعر الفضل بن عباس بن عتبة فى قصيدة لحسان فى باب الجيم وقيل شبههم فى جودهم بالبحور والجلاعيد الشداد جمع جلعد وزاد الياء للحاجة وهذا جمع يجيء كثيرا وذلك انه موضع تلزمه الكسرة فتشبع فتصير ياء يقال في خاتم خواتيم وفي دانق دوانيق قال الفرزدق يصف ناقة

تنقي يداها الحصى في كل هاجرة نفى الدراهيم تنقاد الصياريف

فزاد الياء فى الدراهيم والصياريف والتنقاد مصدر كترداد وهو فاعل نفى الدراهيم

يا آل تيم الا تنهوا سفيهكم قبل القذاف بقول كالجلاميد

لولا الرسول فانى لست عاصيه حتى يغيبني فى الرمس ملحودى

وصاحب الغار انى سوف احفظه و طلحة بن عبيد الله ذى الجود

لقد رميت بها شنعاء فاضحة  يظل منها صحيح القوم كالمودى

الا فى الا تنهو للعرض ومعناها الحث على النهي وسقوط نون الاعراب فى المضارع بدون الناصب اوالجازم نادر نظما ونثرا اذا لم تكن مع نونى التأكيد وانشد الرضى

ابيت اسرى وتبيتي تدلكى  جلدك بالعنبر والمسك الذكى

حذفت النون من تبيتين وتدلكين قال ابن جني سألت ابا علي الفارسي عن هذا البيت وخضنا فيه فاستقر الامر على انه حذف النون من تبيتين كما حذفت الحركة للضرورة فى قول امرئ القيس

فاليوم اشربْ غير مستحقب  اثما من الله ولا واغل

حذفت الحركة من اشرب للضرورة كذا وجهته معه فقال لي فكيف تصنع بقوله تدلكي قلت نجعله بدلا من تبيتي او حالا فنحذف النون كما حذف من الاول فاستقر الامر على هذا وقد يجوز ان يكون تبيتي فى موضع النصب باضمار ان فى غير الجواب كما جاء فى بيت الاعشى

لنا هضبة لاينزل الذل وسطها  ويأوي اليها المستجير فيعصما

انتهى وانشد بعضهم قول ايمن بن خريم

واذ يغصبوا الناس اموالهم  اذا ملكوهم ولم يغصبوا

وجعله نظير فاليوم اشرب وروى فى الاستيعاب قول حسان رضى الله عنه يا آل تيم الا تنهون جاهلكم على الاصل وقوله قبل القذاف اي المقاذفة يريد المهاجاة والجلاميد جمع جلمود وهو الحجر العظيم الصلب وقوله لولا الرسول الخ يريد انه يمنعه عن ذلك كون مسافع من قريش قوم الرسول صلى الله عليه وسلم والرمس تراب القبر والقبر ايضا والملحود ويقال اللحد الشق يكون فى عرض القبر وصاحب الغار ابو بكر رضى الله عنه لانه صاحب النبي عليه السلام فى الغار زمن الهجرة وهو من تيم بن مرة قوم مسافع وطلحة بن عبيدالله احد العشرة المبشرة وهو من تيم بن مرة ايضا وصفه بالجود لكونه من اجود قريش وكان يقال له طلحة الطلحات وطلحة الخير وطلحة

الجود كذا قال المبرد فى الكامل وطلحة الطلحات يقال ايضا لطلحة بن عبيدالله ابن خلف الخزاعى كان واليا على سجستان وفيه يقول القائل

نضّر الله اعظماد فنوها بسجستان طلحة الطلحات

وذكر المبرد عن الاصمعى ان طلحة بن عبيدالله باع ضيعة له بخمسة عشر الف درهم فقسمها فى الاطباق وقال ايضا حدثنى العتبى فى اسناد ذكره قال دعا طلحة بن عبيدالله ابابكر وعمر وعثمان رضى الله عنهم فابطأ عنه الغلام بشيء اراده فقال طلحة ياغلام فقال الغلام لبيك فقال طلحة لاليبك فقال ابوبكر رضى الله عنه مايسرنى انى قلتها وان لى الدنيا وما فيها وقال عمر رضى الله عنه مايسرنى انى قلتها وان لى نصف الدنيا وقال عثمان رضى الله عنه مايسرنى انى قلتها وان لى حمر النعم قال وصمت عليها ابو محمد يعنى طلحة فلما خرجوا من عنده باع ضيعة بخمسة عشر الف درهم فتصدق بثمنها وقوله لقد رميت جواب لولا وضمير بها راجع الى القصيدة المفهومة من المقام وشنعاً بمعنى قبيحة وفاضحة مخزية والمودى الهالك من اودى اذا هلك قال ابو ذؤيب الهذلى

اودى بَنىّ واعقبونى حسرة والدهر ليس بمعتب من يجزع

واراد بالصحيح الذى لم يهجه من تيم بن مرة وبالمودى الذى هجاه يريد لولا الرسول وابوبكر وطلحة لكان يهجو مسافعا بحيث يعم الهجو قومه تيم بن مرة جميعا وهذه القصيدة لحسان رضى الله عنه مسطورة فى الكامل لابى العباس المبرد برد الله مضجعه ومنه كتبتها

## حسان بن ثابت الانصارى

## رضى الله عنه

فى تحريش المطيبين من قريش على الاحلاف منهم حين حدث بينهم شر فى مقتل ابى ازيهر الدوسي والمطيبون خمسة ابطن بنو عبد مناف قاطبة وهم بنو هاشم وبنو المطلب وبنو نوفل وبنو عبد شمس ابناء عبد مناف بن قصي وبنو اسد بن عبدالعزى بن قصي وبنو زهرة بن كلاب بن مرة وبنو تيم بن مرة وبنو الحرث بن فهر بن

مالك والاحلاف خمسة ابطن وهم لعقة الدم وهم بنو عبد الدار بن قصيّ وبنو مخزوم بن يقظة ابن مرة وبنو جمح بن عمرو بن هصيص بن كعب وبنو سهم بن عمرو بن هصيص ابن كعب وبنو عدي بن كعب

غدا اهل ضوجى ذي المجاز كليهما وجار ابن حرب بالمغمّس مايغدو من الطويل

كساك هشام بن الوليد ثيابه فأبلِ واخلق مثلها جُدداً بعدُ

قضى وطر امنه فاصبح ماجدا واصبحت رخوا ماتخبّ وماتعدو

فلو انّ اشياخا ببدر تشاهدوا لبلّ نعالَ القوم معتبط وردُ

ولم يمنع العيرَ الضروطُ ذمارَه وما منعت مخزاة والدها هندُ

لابد من بيان قصة ابي ازيهر حتى يفهم هذا الشعر فنقول ان ابا ازيهر بن انيس الدوسي كان حليفا لابي سفيان بن حرب وكان زوج ابنة له تسمى عاتكة اباسفيان وزوج ابنة اخرى له عتبة بن ربيعة وزوج اخرى الوليد بن المغيرة ابن عبدالله بن عمر بن مخزوم ثم امسكها عنه ولم يدخلها عليه حتى مات وكان بلغ ابا ازيهر بعد مازوجه واخذ المهر منه انه غليظ على النساء يضر بهن ويقال قدكانت هديت اليه فلما هديت اليه قال لها انا اشرف اوابوك قالت لابل ابي اشرف لان ابي سيد اهل السّراة والعرب يصدرون عن رأيه وانما انت سيد بني ابيك وفيهم من ينازعك الشرف فرفع يده فلطمها فهربت الى ابيها فحلف ان لايراها وامسك المهر فلما نزل الناس سوق ذي المجاز وهو سوق من اسواق العرب فنزل ابوازيهر على ابي سفيان فاتاه بنو الوليد فقتلوه ولي قتله هشام بن الوليد وكان ابوازيهر شريفا في قومه فقتله هشام بقبر الوليد الذي كان عنده لوصية الوليد اياه وكان قتله بعدما هاجر النبي عليه السلام الى المدينة وانقضى امر بدر وقتل من اشراف قريش

من قتل وان رسول الله عليه السلام دعا حسانا فقال ياحسان انه قد حدث بين المطيبين واحلافهم شر فقل فى مقتل ابى ازيهر شعرا تحرض به المطيبين على الاحلاف فقال حسان رضى الله عنه هذه القصيدة يعيّر ابا سفيان خفرته اي نقض عهده ويجبّنه فلما بلغ قوله يزيد بن ابى سفيان خرج فجمع بنى عبد مناف وصاح فى المطيبين وابوسفيان بذى المجاز وقال يزيد ايها الناس اخفر ابوسفيان فى جاره وصهره وهو ثائر به فتهيّأ يزيد واجتمعوا فبرز بهم فلما رأت ذلك الاحلاف اجتمعوا فعسكروا قريبا ووصل الخبر الى ابى سفيان بذى المجاز فدعا بفرسه فلقى عليه لبدا فاسرع حتى قدم مكة فوقف بين الجمعين وقد تهيأوا للقتال فنظر فاذا اللواء بيد ابنه يزيد وهو فى الحديد مع قومه المطيبين فنزع اللواء من يده فضرب به بيضته ضربة هده منها ثم قال قبحك الله اتريد ان تضرب قريشا بعضها ببعض فى رجل من دوس سنؤيتهم العقل اي الدية ان قبلوا ثم نادى باعلى صوته ايها الناس ان خلفنا عدوا شامتا يعنى النبى عليه السلام ومتى نفرغ مما بيننا وبينه ننظر فيما بيننا وبينكم فلينصرف كل انسان الى منزله فتفرقوا واصلح ذلك الامر ولمّا بلغ ابا سفيان قول حسان قال يريد حسان ان يضرب بعضنا ببعض فى رجل من دوس بئس والله ماظن ولم يكن فى ابى ازيهر تأر يعرف به حتى حجز الاسلام بين الناس الا ان ضرار بن الخطاب الفهرى خرج فى نفر من قريش الى ارض دوس فارادت دوس قتل ضرار فلاذ بامرأة تسمى ام جميل فمنعته وقدمرّ هذا فى ترجمة ضرار رضى الله عنه فى باب الهمزة واذقد عرفت قصة قتل ابى ازيهر يسهل فهم هذا الشعر فلنشرح شيأ منه قوله غدا اهل ضوجى ذي المجاز ضوجى تثنية ضوج وهو منعطف الوادى كما مر فى قصيدة كعب بن مالك فى باب الجيم وما حكى شارح القاموس فى تاج العرس عن الاساس الضوح بالحاء المهملة فقد سها فان عبارة الاساس بالجيم كما لا يخفى على من راجع الاساس ووقع فى نسخ الديوان صنع السكرى حضنى ذى المجاز تثنية حضن بالكسر قال فى الصحاح حضنا الشئ جانباه وذوالمجاز على فرسخ من عرفة بجانب كبكب على مافى القاموس والمغمس على صيغة اسم المفعول او اسم الفاعل من التفعيل موضع بطريق الطائف فيه قبر ابى رغال دليل ابرهة الى مكة يوم الفيل ويرجم يشير الى انه مقتل ابى ازيهر قوله كساك هشام بن الوليد

ثيابه يريد ما الحقه به من العار والذلة بقتل حليفه والخطاب لابى سفيان بن حرب وهشام بن الوليد اسلم وصحب النبي عليه السلام وهو الذى امره عمر رضى الله عنه ان يخرج النساء حين بكين على ابى بكر رضى الله عنه عند وفاته وفيهن فروة بنت ابى قحافة رضى الله عنه قوله فابل واخلق يقال ابلى الثوب اذا جعله باليا واخلقه اذا جعله خلقا بطول لبسه ويقال لمن لبس الجديد ابل واخلق وقد قال النبي عليه السلام لام خالد حين كساها ثوبا ابلي واخلقي ثم ان حسانا رضى الله عنه لما جعل ما لحق ابا سفيان من العار ثيابا قال له ما يقال لمن لبس الثوب الجديد والجدد بضمتين جمع جديد وحاصل كلامه انه يدعو عليه ان يلزمه مثل هذا العار ويستمر فيه قوله قضى وطرا الخ الوطر بالتحريك الحاجة او حاجة لك فيها هم وعناية فاذا بلغتها فقد قضيت وطرك ولا يبنى منه فعل ويقال فرس رخو رخو العنان اذا كان سلس القياد والخطاب لابى سفيان شبهه بالفرس الرخو فى الانقياد والاستكانة لما اريد به يعيره بذلك لقعوده عن القيام بالثأر وقوله ما تخب وما تعدو قد مضى معنى الخبب والعدو وهو ترشيح للتشبيه قوله فلو ان اشياخا ببدر الخ يريد الذين قتلوا منهم يوم بدر من صناديدهم وكبرائهم وقوله تشاهدو بمعنى شهدوا اي حضروا هذه الوقعة والمعتبط الدم الطري كالعبيط والورد الاحمر قوله ولم يمنع العير الضروط ذماره العير الحمار والضروط مبالغة ضارط اراد ابا سفيان شبهه به فى العجز وفى المثل اودى العير الاضرطا يضرب فى الرجل العاجز ويقال ايضا لم يبق منه الا ضراطه وقوله ذماره مفعول لم يمنع وقوله وما منعت مخزاة والدها هند هي امرأة ابى سفيان ووالدها عتبة بن ربيعة قتل يوم بدر يريد ان هذا عار على ابيها فى قبره وخزي له فكان عليها ان تغسل ذلك عنه او مخزانه قتله ببدر وان لم يكن له تعلق بهذه القصة وهذا الشعر لحسان رضى الله عنه مسطور فى سيرة ابن هشام ومنها كتبته

## حسان بن ثابت الانصارى

## رضي الله عنه

فى يوم بدر

من الوافر

لقد علمت قريش يوم بدر ... غداة الأسر والقتل الشديد

بانا حين تشتجر العوالى ... حماة الحرب يوم ابى الوليد

قتلنا ابني ربيعة يوم سارا ... الينا فى مضاعفة الحديد

وفرّ بها حكيم يوم جالت ... بنو النجار تخطر كالأسود

وولّت عندذاك جموع فهر ... واسلمها الحويرث من بعيد

لقد لاقيتم ذلاً وقتلاً ... جهيزاً نافذا تحت الوريد

وكلّ القوم قد ولّوا جميعا ... ولم يلووا على الحسب التليد

قوله بانا حين تشتجر العوالى الباء زائدة وتزاد كثيرا فى مفعول علم وتشتجر تشتبك والعوالى جمع عالية الرمح وهواعلاه وحماة جمع حام وحماة الحرب الذين يحمون اصحابهم ويوم ابى الوليد يوم بدر اضيف الى ابى الوليد عتبة بن ربيعة المقتول فيه وابنا ربيعة عتبة المذكور واخوه شيبة قتلا يوم بدر وقوله في مضاعفة الحديد اي درع منسوجة نسجين وحكيم الذى ذكره هو ابن خزام الاسدي المار ذكره وترجمته وجالت اي تحركت ودارت فى الميدان للقتال وقوله تخطر بمعنى تتبختر وولت ادبرت وجموع فهر اراد به قبائل قريش لانها تنتسب الى فهر بن مالك والحويرث تصغير الحارث يريد الحرث بن هشام المخزومي وقد مر ذكره فى قصيدة لحسان رضى الله عنه فى باب الباء وقوله جهيزا اى سريعا ونافذا ماضيا والوريد قيل عرق تحت اللسان وهو عرق جار فى بدن الانسان له اسماء باعتبار الاعضاء واذا قطع هذا العرق مات الانسان فهو تحت اللسان الوريد وفى العضد النفليق وفى البطن الوتين وفى الذراع الاكحل وفى ماتفرق فى ظهر الكف الاشاجع وفى بطن الذراع الرواهش

وقوله ولم يلووا من لوى على شئ اذا عطف عليه او انتطره اوتحبس عليه والتليد القديم يريد انهم ذووا احساب قديمة فكان ينبغى لهم ان ينظروا الى احسابهم فلا يرتكبوا عار الغرار يعيرهم بذلك ويعيبهم وهذه القصيدة لحسان رضى الله عنه مسطورة فى سيرة ابن هشام ومنها كتبتها

## حسان بن ثابت الانصارى

## رضى الله عنه

فى الثناء على الله سبحانه والتضرع اليه ومدح الرسول صلى الله عليه وسلم وعلى آله

من الطويل

أغرّ عليه للنبوّة خاتمٌ ... من الله من نور يلوح ويشهد

وضمّ الاله اسم النبى الى اسمه ... اذا قال فى الخمس المؤذن اشهد

وشقّ له من اسمه ليجلّه ... فذو العرش محمود وهذا محمد

نبىّ اتانا بعد ياس وفترة ... من الرسل والاوثان فى الارض تعبد

فامسى سراجا مستنيرا وهاديا ... يلوح كما لاح الصّقيل المهنّد

وانذرنا نارا وبشّر جنّة ... وعلّمنا الاسلام فالله نحمد

اغرّ اى ابيض مستنير وهو خبر لمبتدأ محذوف وهو ضمير راجع الى النبى عليه السلام وخاتم بفتح التاء بمعنى ما يختم به كالطابع بمعنى ما يطبع به وبكسرها بصيغة اسم الفاعل وبهما قرئ فى قوله تعالى وخاتم النبيين ومن الاولى ابتدائية والثانية بيان للخاتم جعله عين النور مبالغة ويلوح يضيئ ويشهد اي للنبوة وفى حليته صلى الله عليه وسلم

بين كتفيه خاتم النبوة قوله وضم الاله الخ يريد مقارنة اسمه صلى الله عليه وسلم لاسم الله عز وجل فى التأ ذينات الخمس روي ان بنتا لعثمان بن عفان رضى الله عنه فاخرت سكينة بنت الحسين رضى الله عنه فسكتت سكينة فلما اذن المؤذن قالت هذا اسم جدي اوجدك فقالت العثمانية لا افاخرك ابدا قوله وشق له من اسمه الخ مفعول شق محذوف اي اسما وضمير له للنبي عليه السلام واسم الله المشقوق منه محمود اي الذي حمد على كل حال فاراد الله ان يشرك نبيه فى اسم من هذا الوصف تعظيما له صلى الله عليه وسلم فسماه محمدا قوله نبي اتانا بعد يأس اى انقطاع امل عن بعث الرسل لبعد العهد عنهم وفترة اي انقطاع وجملة والاوثان في الارض تعبد حال و قوله يلوح يضيء والصقيل المصقول والموصوف محذوف للعلم به و هو السيف والمهند المنسوب الى الهند و قوله فالله نحمد لفظ الجلالة منصوب على المفعولية لنحمد قدم عليه للحصر

و انت اله العرش ربّى و خالقى  بذلك ما عمّرت فى النّاس اشهد

تعاليت رب النّاس عن قول من دعا  سواك الهاً انت اعلى وامجد

لك الحمد والنعماء والامر كلّه  فاياك نستهدى و اياك نعبد

لان ثواب الله كلّ موحّد  جنان من الفردوس فيها يخلّد

اله العرش منادى بحذف حرف النداء وربى خبر انت وبذلك متعلق باشهد المؤخر وما عمرت اي مدة عمري وهو ظرف لاشهد وتعاليت ترفعت وجللت والمتعالى فى اسماء الله تعالى الذي جل عن افتراء المفترين والفردوس البستان الذى يكون فيه كل ما يكون فى البساتين مذكر وقد يؤنث ومنه قوله تعالى يرثون الفردوس هم فيها خالدون قيل عربى مأخوذ من الفردسة بمعنى السعة يقال صدر مفردس اي واسع وقيل رومي اوسريانى نقل وهذا الشعر لحسان رضى الله عنه من قوله نبي اتانا الى آخر الابيات مسطور فى نسخ الديوان واما الابيات الثلثة التي قبل بيت

نبى اتانا فمذكورة فى المواهب وبيت وشق له من اسمه مذكور فى كثير من الكتب مشهور فجمعت ابيات الديوان والمواهب فكتبتها كلها

## حسان بن ثابت الانصارى

## رضى الله عنه

فى وقعة بئر معونة يحرّض بنى ابى براء عامر بن مالك على عامر بن الطفيل العامرى

من الوافر

بنى أمّ البنين الم يرعكم ... وانتم من ذوائب اهل نجد

يهكّمكم عامر بابى براء ... ليخفره وما خطأ كعمد

الا ابلغ ربيعة ذا المساعى ... فما احدثت فى الحدثان بعدى

ابوك ابو الحروب ابو براء ... وخالك ماجد حكم بن سعد

فى سيرة ابن هشام قدم ابو براء عامر بن مالك بن جعفر ملاعب الاسنّة على رسول الله عليه السلام المدينة فعرض عليه رسول الله عليه السلام الاسلام فلم يسلم ولم يبعد عن الاسلام وقال يا محمد لو ارسلت رجالا من اصحابك الى اهل نجد فدعوهم الى امرك رجوت ان يستجيبوا لك فقال رسول الله عليه السلام انى اخشى عليهم اهل نجد قال ابو براء انا جار لهم فابعثهم فليدعوا الناس الى امرك فبعث رسول الله عليه السلام المنذر بن عمرو السّاعدى المعنق ليموت فى اربعين رجلا من خيار اصحابه منهم الحرث بن الصمّة وحرام بن ملحان وعروة بن اسماء بن الصلت السّلمى ونافع بن بديل بن ورقاء الخزاعى وعامر بن فهيرة مولى ابى بكر رضى الله عنه فى رجال مسمّين من خيار المسلمين فساروا حتى نزلوا بئر معونة وهى بين ارض بنى عامر وحرة بنى سليم كلا البلدين منها قريب وهى الى حرة بنى سليم اقرب فلما نزلوها بعثوا حرام بن ملحان بكتاب رسول الله عليه السلام الى عدو الله عامر بن الطفيل فلما اتاه لم ينظر فى كتابه حتى عدا على الرجل

فقتله ثم استصرخ عليهم بنى عامر فابوا ان يجيبوه وقالوا لن نخفر ابراء وقد عقد لهم عقدا وجوارا فاستصرخ عليهم قبائل من سليم عصية ورعلا وذكوان فاجابوه فخرجوا حتى غشوا القوم فاحاطوا بهم فى رحالهم فلما رأوهم اخذوا سيوفهم ثم قاتلوهم حتى قتلوا من عند آخرهم رضى الله عنهم الا كعب بن زيد اخا بنى دينار بن النجار فانهم تركوه وبه رمق فارتث من بين القتلى فعاش حتى قتل يوم الخندق شهيدا وكان فى سرح القوم عمرو بن امية الضمري ورجل من الانصار وهو المنذر بن محمد بن عقبة بن احيحة ابن الجلاح فلم ينبئهما بمصاب القوم الا الطير تحوم حول العسكر فقالا والله ان لهذا الطير لشانا فاقبلا لينظرا فاذا القوم فى دمائهم واذا الخيل التى اصابتهم واقفة فقال الانصارى لعمرو بن امية ما ترى قال ارى ان نلحق برسول الله عليه السلام فنخبره الخبر فقال الانصارى لكنى ماكنت لارغب بنفسى عن موطن قتل فيه المنذر بن عمرو وماكنت لتخبرنى عنه الرجال ثم قاتل القوم حتى قتل واخذوا عمرو بن امية اسيرا فلما اخبرهم انه من مضر اطلقه عامر بن الطفيل وجز ناصيته واعتقه عن رقبة ظن انها كانت على امه فخرج عمرو بن امية حتى اذا كان بالقرقرة من صدر قناة اقبل رجلان من بنى عامر ثم من بنى كلاب وذكر ابو عمرو المدنى انهما من بنى سليم حتى نزلا معه فى ظل هو فيه وكان مع العامريين عقد من رسول الله عليه السلام وجوار لم يعلم به عمرو ابن امية وقد سألهما حين نزلا ممن انتما فقالا من بنى عامر فامهلهما حتى اذا ناما عدا عليهما فقتلهما وهو يرى انه قد اصاب ثؤرة من بنى عامر فيما اصابوا من اصحاب رسول الله عليه السلام فاخبره الخبر قال رسول الله عليه السلام لقد قتلت قتيلين لادينهما ثم قال رسول الله عليه السلام هذا عمل ابى براء قد كنت لهذا كارها متخوفا فبلغ ذلك ابا براء فشق عليه اخفار عامر اياه وما اصاب من اصحاب رسول الله عليه السلام بسببه وجواره فقال حسان رضى الله عنه بنى ام البنين الى آخر الشعر انتهى مافى السيرة وفى صحيح البخاري فى اكثر من موضع ان الذين بعثهم رسول الله عليه السلام كانوا سبعين رجلا وفى موضع سبعين او اربعين بالشك من انس رضى الله عنه فلنشرع فى شرح شعر حسان رضى الله عنه قوله بنى ام البنين الخ بنى منادى وام البنين ليلى بنت عمرو بن عامر بن ربيعة بن عامر بن صعصعة وهى

ام ابى براء عامر ملاعب الاسنة وطفيل فارس قرزل وربيعة المقترين وعبيدة الوضاح ومعاوية معود الحكماء وقوله تهكم الخ الاخفار كالخفر نقض العهد يقال خفر به واخفره اذا نقض عهده وقوله وما خطأ كعمد الظاهر ان فيه قلبا اي وما عمد كخطأ اي لا يستوي حكمهما يريد انه لو فعل خطأ لكان محل العفو لكنه فعل عمد اليحقرك فلا ينبغى ان يعنى عنه قوله الا ابلغ ربيعة ذا المساعى هو ربيعة بن ابى براء المذكور ذكره صاحب الاصابة فى قسم الصحابة و قال لم ار من ذكره فى الصحابة الا ما قرأت فى ديوان حسان بن ثابت رضى الله عنه صنع ابى سعيد السكّري عن ابن حبيب وقال حسان لربيعة بن عامر بن مالك وعامر هو ملاعب الاسنة يحرض ربيعة بن عامر على عامر بن الطفيل باخفاره ذمة ابى براء فانشد اربعة ابيات مثل ما انشدنا مع تغيير يسير ثم قال فلما بلغ ربيعة هذا الشعر جاء الى النبي عليه السلام فقال يا رسول الله هل تغسل عن ابى هذا العار ضربة اضرب بها عامر ابن الطفيل اوطعنة قال ثم فرجع ربيعة فضرب عامرا ضربة فاشواه اي اصاب شواه اي اطرافه لامقتله فوثب عليه قومه فقالوا يا عامر اقتص منه قال قد عفوت قلت فذكر غير واحد من اهل المغازي انه اهدى لرسول الله عليه السلام بغلة اوناقة و رأيت له رواية عن ابى الدرداء رضى الله عنه من طريق حبيب بن عبيد عنه فكأنه عمر فى الاسلام انتهى مافى الاصابة و قوله فما احدثت فى الحدثان بعدى الحدثان بالكسر او التحريك نوائب الدهر وحوادثه وقال بعضهم هو تثنية حدث وهو الليل والنهار كما يقال لهما الجديدان ولكنه ليس فى البيت تثنية والّا كان بالياء لانه فى حالة الجر يقول هل احدثت مايغسل العار عن ابيك قوله ابوك ابو الحروب الخ قد اشتهر من العرب انهم يسمّون كل من يزاول امرا ويشتهر فيه ابا ذلك الامر فيقولون للجاتم مثلا ابو الجود فعلى هذا ابو الحروب وحكم بن سعد من القين بن جسر من قضاعة وكان شريفا يريد انك شريف من طرفى الاب والام فلا ينبغى لمثلك قبول الضيم يحرضه بذلك على عامر بن الطفيل وهذا الشعر لحسان رضى الله عنه مسطور فى سيرة ابن هشام ومنها كتبته

## حسان بن ثابت الانصارى

### رضى الله عنه

يبكى اصحاب رسول الله صلى الله عليه وسلم الذين غدر بهم يوم الرجيع ويسميهم باسمائهم

من الطويل

الا ليتني فيها شهدت ابن طارق وزيدا وما تغني الامانى ومرثدا

فدافعت عن حبي خبيب وعاصم وكان شفاءً لو تداركت خالدا

هذه الاسماء كلها مضت فى قصيدة حسان رضى الله عنه فى باب الباء صلى الاله على الذين تتابعوا والضمير فى فيها للحرب وقوله وما تغنى الامانى اعتراض على التلهف والتحسر والامانى على افاعيل جمع امنية و يخفف للوزن فيبقى افاعي والحب بالكسر الحبيب وفى الحديث اسامة حب رسول الله عليه السلام ولو فى قوله لو تداركت خالدا مصدرية كما فى قول الاعشى على مافى المغني

وربما فات قوما جل امرهم من التأنى وكان الحزم لو عجلوا

المختار فى الحزم النصب والرفع ضعيف لحكمهم للمصدر المأول المعرف بحكم الضمير فيكون اعرف والمختار جعل الاعرف مسند اليه فلذلك قرئ فى السبعة ما كان حجتهم الا ان قالوا بنصب حجتهم و اما شفأ فبالنصب على الخبر لكونه نكرة ويقال تدارك القوم اذا تلاحقوا وتداركته ايضا اذا لحقته و ما فى البيت من الثانى والبيتان مسطوران فى الاستيعاب و منه كتبتهما

## حسان بن ثابت الانصارى

### رضى الله عنه

فى يوم بني قريظة يبكى سعد بن معاذ الانصاري سيد الاوس و يذكر حكمه فى بني قريظة

لقد سجمت من دمع عيني عبرة ... وحق لعيني ان تفيض على سعد من الطويل

قتيل ثوى في معرك فجعت به ... عيون ذوارى الدمع دائمة الوجد

على ملة الرحمن وارث جنة ... مع الشهداء وفدها اكرم الوفد

فان تك قد ودعتنا وتركتنا ... وامسيت في غبراء مظلمة اللحد

فانت الذي يا سعد ابت بمشهد ... كريم واثواب المكارم والمجد

بحكمك في حيي قريظة بالذي ... قضى الله فيهم ما قضيت على عمد

فوافق حكم الله حكمك فيهم ... ولم تعف اذ ذكرت ما كان من عهد

فان كان ريب الدهر امضاك في الاولى ... شروا هذه الدنيا بجناتها الخلد

فنعم مصير الصادقين اذا دعوا ... الى الله يوما للوجاهة والقصد

قوله سجمت الخ سجمت قطرت وقوله وحق لعيني على بناء الفاعل او المفعول يقال حق لك ان تفعل ذا على البنائين وحققت ان تفعله بمعنى وانت حقيق ومحقوق به وحق اي جدير وسعد هو ابن معاذ الانصاري الاوسي ثم احد بني عبد الاشهل بن جشم بن الحرث بن الخزرج بن النبيت وهو عمرو بن مالك بن الاوس يكنى ابا عمرو وامه كبشة بنت رافع لها صحبة اسلم سعد رضي الله عنه بالمدينة على يد مصعب بن عمير رضي الله عنه وشهد بدرا واحدا والخندق ورمي يوم الخندق بسهم فعاش شهرا ثم انتقض جرحه فمات وكان رسول الله عليه السلام امر بضرب فسطاط

فى المسجد لسعد رضى الله عنه وكان يعوده كل يوم ومدحه النبي عليه السلام فى احاديث منها قوله عليه السلام اهتز العرش لموت سعد بن معاذ وعن هذا قال رجل من الانصار هكذا ذكر القائل مبهما فى الاستيعاب و بينه المبرد فى الكامل فقال هو حسان بن ثابت رضى الله عنه

وما اهتزّ عرش الله من موت هالك  عامنا به الا لسعد ابى عمرو

ومنها قوله عليه السلام فى قباء اكيدر دومة لمناديل سعد بن معاذ فى الجنة خير من هذا وقد مرّ فى شعر بجير بن بجرة رضى الله عنه ومنها قوله عليه السلام لما خرجت جنازته فقال المنافقون ما اخفها ان الملئكة تحمله ويروى عن عائشة رضى الله عنها انها قالت كان فى بني عبدالاشهل ثلثة لم يكن بعد النبي عليه السلام احد افضل منهم سعد بن معاذ واسيد بن حضير و عباد بن بشر رضى الله عنه وفى الاستيعاب وفى سعد بن معاذ وسعد بن عبادة جاء الخبر المأثور ان قريشا سمعوا صائحا يصيح ليلا على ابى قبيس

فان يسلم السّعدان يصبح محمّد  بمكة لا يخشى خلاف مخالف

فظنت قريش انهما سعد بن زيد مناة بن تميم وسعد هذيم من قضاعة فلما كانت الليلة الثانية سمعوا صوتا على ابى قبيس

اياسعد سعدالاوس كن انت ناصرا  وياسعد سعدالخزرجين الغطارف

اجيبا الى داعي الهدى و تمنيا  على الله فى الفردوس منية عارف

فان ثواب الله للطالب الهدى  جنان من الفردوس ذات رفارف

فقالوا هذان والله سعد بن معاذ و سعد بن عبادة و مناقبه كثيرة جدا رضى الله عنه قوله قتيل ثوى فى معرك الخ المعرك موضع العراك اي القتال كالمعركة و قوله ذواري الدمع الذوارى جمع ذارية و هي التى تنصبّ دمعها و دائمة الوجد اي الحزن يريد ان سعدا ممن ينبغى ان تدوم بكاء البواكي عليه و حزنهن و قوله و فدها اكرم الوفد الوفد قوم يردون على الملوك والامراء

والكبراء للاسترفاد او لمصلحة مهمّة فجعل الشهداء و فدا مجـازا كما جعل الحاج كذلك فى حديث الحـاج و فدالله قوله بحكمك فى حيي قريظة الخ الاتيان بصيغة التثنية فى الحى لاقامة الوزن او للتغليب فان بعض بنى النضير كحيي بن اخطب كان مع قريظة وقد سـبق فى قصيدة كعب بن مالك رضى الله عنه لعمرى لقـد حكمت رحى الحرب ان قريظة قوم من اليهود و انه كان بينهم وبين رسـول الله عليه السـلام عهد فنقضوه يوم الخندق فلماتم امر الخندق غزاهم رسول الله عليه السلام فحاصرهم خمسا وعشرين ليلة فنزلوا على حكم سعد بن معاذ رضى الله عنه فارسـل اليه النبى عليه السـلام فجاء على حمار فقال النبى عليه السـلام قوموا الى سيدكم فحكم بان تقتل مقاتلتهم وتسبى نساؤهم وذراريهم فقال رسـول الله عليه السلام لقد حكمت بحكم الله وقوله ولم تعف اذ ذكرت ماكان من عهد اشارة الى ماروى ان قوم سعد رضى الله عنه وهم الاوس كانوا طلبوا منه ان يعفو عنهم ويذكرون له فى ذلك العهد القديم الذى كان بين الاوس وبين بني قريظـة فانهم كانوا حلفائهم كما ان بني النضير كانوا حلفاء الخزرج قوله فان كان ريب الدهر الخ ريب الدهر حوادثه والاولى مقصور بمعنى الدين والمصير المرجع والمآل والوجاهة مصدر وجه الرجل ككرم اذا كان ذاجاه وقدر ومحترما والقصد استقامة الطريق قال الله تعالى وعلى الله قصد السبيل اي تبيين الطريق المستقيم والقصد العدل ايضا وهذ القصيدة لحسان رضى الله عنه مسطورة فى سيرة ابن هشام رحمه الله ومنها كتبتها

## حسان بن ثابت الانصارى

## رضى الله عنه

فى يوم ذي قرد محركة ويقال ذات قرد وحكى السهيلى عن ابى على ضم القاف والرأ معـا موضع قرب المدينة على مافى القاموس و فى شرح البخـارى للفاضل القسطلانى ماء على نحو بريد مما يلى غطفان كانت لقاح رسول الله عليه السـلا ترعى بالغابة فاغارت عليها خيل غطفان سنة ست من الهجرة وكان مع اللقاح رجل من غفار وامرأته فقتلوا الرجل واحتملوا المرأة فى اللقاح وكان سلمة بن الاكوع رضى الله عنه قد غدا الى الغـابة ومعه غلام لطلحة بن عبيدالله رضى الله عنه معه

فرس له يقوده حتى اذا علا سلمة رضى الله عنه ثنية الوداع رأى بعض خيولهم فاشرف فى ناحية سلع ثم صرخ واصباحاه وكان صيّتا ثم جعل يشتد فى اثار القوم حتى لحق بهم فجعل يردهم بالنبل وكان راميا ويقول اذا رمى

خذها وانا ابن الاكوع  اليوم يوم الرّضّع

الرضع جمع راضع بمعنى اللئيم اي خذ الرميـة واليوم يوم هـلاك اللئام و بلغ رسول الله عليه السـلام صياح بن الاكوع فصرخ بالمدينة الفزع الفزع فترامت الخيول الى رسول الله عليه السلام وكان اول من انتهى الى رسول الله عليه السـلام المقداد بن الاسود ثم عباد بن بشر وسعد بن زيد واسيد بن ظهير و عكاشة بن محصن ومحرز بن نضلة و ابو قتادة و ابو عيـاش عبيد بن زيد بن الصـامت فلما اجتمعوا الى رسول الله عليه السلام امر عليهم سعد بن زيد ثم قال اخرج فى طلب القوم حتى الحقك فى الناس فخرج سعد رضى الله عنه مع اصحابه الفرسان فى طلب القوم حتى تلاحقوا فاستشهد محرز بن نضلة رضى الله عنه وكان اول من لحق القوم فلم يقتل من المسـلمين غيره وغير الوقاص بن مجزز المدلجي رضى الله عنه فيما ذكر غير واحد من اهل العلم وقتل ابو قتاده رجلا منهم وقتل عكاشة بن محصن رضى الله عنه رجلين انتظمهما جميعا بالرمح وكانا على بعير واحد واستنقذوا بعض اللقاح واقبل رسـول الله عليه السـلام فى المسـلمين واسـتعمل على المدينة ابن ام مكتوم رضى الله عنه و سـار رسول الله عليه السـلام حتى نزل بالخيل من ذي قرد واقام عليـه يوما و ليلة و قال له سـلمة بن الاكوع لو سرحتني فى مائة رجـل لاستنقذت بقية السرح و اخذت باعناق القوم فقال له رسـول الله عليه السـلام انهم الآن يغبقون فى ارض غطفان فقسم رسول الله عليه السلام فى اصحابه فى كل مائة رجل جزورا ثم رجع رسول الله عليه السـلام الى المدينة هذا بيان غزوة ذى قرد اختصارا وتلخيصا من سيرة ابن هشام وقد قدمنا فى شعر عبد الله بن رواحة رضى الله عنه فى باب الهمزة نجاة الغفارية المأسورة على ناقة رسول الله عليه السلام وفى صحيح البخارى فى غزوة ذى قرد وهى الغزوة التى اغاروا فيها على لقاح رسول الله عليه السلام قبل خيبر بثلاث ثم روى بسنده له عن سلمة بن الاكوع رضى الله عنه

قال خرجت قبل ان يؤذن بالاولى وكانت لقاح رسول الله عليه السلام ترعى بذى قرد قال فلقينى غلام لعبدالرحمن بن عوف رضى الله عنه فقال اخذت لقاح رسول الله عليه السلام قلت من اخذها قال غطفان قال فصرخت ثلث صرخات ياصباحاه فاسمعت مابين لابتى المدنية ثم اندفعت على وجهى حتى ادركتهم وقد اخذوا يستقون من الماء فجعلت ارميهم بنبلى وكنت راميا واقول انا ابن الاكوع اليوم يوم الرضع وارتجز حتى استنقذت اللقاح واستلبت منهم ثلاثين بردة قال وجاء النبى عليه السلام والناس فقلت يانبى الله قد حميت القوم الماء فهم عطاش فابعث اليهم الساعة فقال يا ابن الاكوع ملكت فاسجح ثم رجعنا ويردفنى رسول الله عليه السلام على ناقته حتى دخلنا المدينة انتهى مافى الصحيح ولايخفى مابين رواية السيرة ورواية الصحيح من المخالفة وقال الفاضل ياقوت فى معجم البلدان قال عياض القاضى ان ماجاء فى حديث الصحيح من ان سرح جمال رسول الله عليه السلام الذى اغارت عليه غطفان كان بذى قرد غلط انما كان بالغابة قرب المدينة قال وذو قرد حيث انتهى المسلمون آخر النهار وبه باتوا ومنه انصرفوا فسميت به الغزوة وقد بينه فى حديث سلمه بن الاكوع فى السير وقال بعض شيوخ مسلم فى آخر حديث تثبية فلحقهم بذى قرد ما يدل على ذلك لانهم لم يأخذوا السرح وبقيموا بمكانهم حتى لحق بهم الطلب قال الغساضى وبين ذى قرد والمدينة نحو يوم وقال محمد بن موسى الخوارزمي غزوة الغابة هي غزوة ذي قرد كانت فى سنة ست من الهجرة انتهى

قال رضى الله عنه

لولا الذى لاقت ومس نسورها ... بجنوب سايةَ امس بالتقواد

للقينكم يحمان كل مدجج ... حامي الحقيقة ماجد الاجداد

ولسر اولاد اللقيطة انا ... سلم غداة فوارس المقداد

من الكامل

كنّا ثمانيةً وكانوا جحفلاً  لجباً فشكّوا بالرّماح بدادِ

كنّا من القوم الذين يلونهم  ويقدّمون عنانَ كلّ جوادِ

قوله لولا الذي لاقت الخ فاعل لاقت يرجع الى الخيل وان لم يسبق ذكرها لفظا كما فى قوله تعالى ما ترك على ظهرها من دابة ومفعوله محذوف عائد الى الموصول ومس عطف على لاقت وفاعله المستتر عائد الى الموصول ونسورها مفعوله وهو جمع نسر الدابة وهي نكتة سوداء فى باطن الحافر يشبهها الشعراء بالنوى وجنوب جمع جنب بمعنى الناحية والطرف وساية اسم موضع بين الحرمين فى منازل بني لحيان جاء اليها رسول الله عليه السلام حين ذهب لغزو بني لحيان فوجدهم تمنعوا وتحصّنوا بالجبال فرجع الى المدينة فلم يلبث الا اياما قلائل حتى خرج الى غزوة ذي قرد وامس لم يرد به اليوم الذي قبل يومه انما اراد الزمان المتقدم القريب والتنمواد مصدر قاده يقوده وكانوا يركبون الابل ويقودون الخيل فاذا حاربوا ركبوا الخيل وحاصل معنى البيت لولا انّ نسور خيلنا اعتلّت من كثرة ماكانت تقاد فى مسافة بعيدة الى اطراف ساية للقينكم يحملن كلّ مدجج الخ المدجج على صيغة اسم الفاعل او اسم المفعول من التفعيل التّام السلاح ورجل حامى الحقيقة اي مانع لما يحق عليه منعه كالاهل والعشيرة قوله ولسّر اولاد اللقيطة الخ اللقيطة ام حصن ومالك ومعاوية وورد وشريك بني حذيفة بن بدر واسمها نضيرة بنت عصيم بن مروان بن وهب بن بغيض بن مالك بن سعد بن عدي بن فزارة وقيل لها اللقيطة لان اباها لم يكن له غيرها والعرب فى ذاك الدهر تئد الجوارى فرقّ لها ابوها وقال لامها استر ضعيها واخفيها من الناس فكان اول من فطن لها حمل بن بدر اخو حذيفة فقال لاخيه حذيفة قد التقطت لك لقيطة فتزوجها فقال من هى فقال هى نضيرة بنت عصيم فقال انت رسولى الى ابيها فخطبها من ابيها فزوجها من حذيفة وبهذا سميت اللقيطة واول ابيات الحماسة وهو

لو كنت من مازن لم تستبح ابلى  بنو اللّقيطة من ذهل بن شيبانا

محرف لان اللقيطة فزارية كما عرفت ولا اتصال لها بذهل بن شيبان لان فزارة من قيس وذهل بن شيبان من ربيعة بن نزار والرواية الصحيحة بنوا الشقيقة وهى بنت عباد بن زيد بن عوف بن ذهل بن شيبان ومن شرح بيت الحماسة بان اللقيطة نبز نبزهم الشاعر بان امهم ملقوطة فهو حقيق بالمثل السائر اول الدنّ دُردىّ وكان عيينة بن حصن قائد جيش غطفان يوم ذى قرد فلذلك ذكر حسان اولاد اللقيطة والسلم بالكسر المسالم وبه فسر فى قوله تعالى ورجلا سلما لرجل اى مسالما على قراءة من قرأ بالكسر قوله كنا ثمانية الخ قد تقدم اسماء الثمانية فى قصة غزوة ذى قرد والجحفل الجيش الكثير وكذلك اللجب بالكسر وقدم وقوله شكوا بالرماح على بناء المجهول من شكّه بالرمح اذا خزقه وانتظمه ويروى شلوا باللام من الشل وهو الطرد وقوله بداد صفة مؤنث بمعنى متبددة اى متفرقة كقطاط بمعنى قاطة اى كافية على ما ذكر الرضى فى قوله والخيل تعدو فى الصعيد بداد وهو حال مبنى على الكسر للعدل والتأنيث والصفة وانشد سيبويه قوله والخيل تعدو فى الصعيد بداد على ان بداد معدول عن مصدر مؤنث لا عن وصف فهو اذا فى موقع النصب على المصدرية قوله كنا من القوم الذين يلونهم اى يقربون منهم يعنى نسوقهم ونتبعهم وهم هاربون وقوله ويقدمون عطف على الصلة اى كنا من الذين يقدمون عنان كل جواد فى سوقنا وطردنا اياهم

كلا ورب الراقصات الى منى ... يقطعن عرض مخارم الاطواد

حتى نُبيل الخيل فى عرصاتكم ... ونثوب بالملكات والاولاد

رهوا بكل مقلص وطمرة ... فى كل معترك عطفن رواد

افنى دوابرها ولاح متونها ... يوم تقاد به ويوم طراد

قوله كلاّ ورب الراقصات الخ كلا بمعنى حقا كما فى قوله تعا كلا والقمر اذ لامعنى للردع والراقصات قدمر فى شعر مسلية بن هزان رضى الله عنه فى الباء والعرض بالضم سفح الجبل او ناحيته او هو بضمتين جمع عروض بالفتح وهو الطريق فى عرض الجبل فى مضيق فيسكن للوزن والمحارم جمع محرم كمجلس انف الجبل والاطواد جمع طود وهو الجبل او عظيمه وفى التنزيل فكان كالطود العظيم وجواب القسم محذوف لان المراد مفهوم اي لاندعكم ولانترككم او نحو ذلك قوله حتى نبيد الخيل فى عرصاتكم يقال ابال الخيل واستبالها اذا وقفها للبول ويقال كناية عن الاغارة والهجوم فى الديار لنبيدنّ الخيل فى عرصاتكم والعرصات جمع عرصة والملكات جمع ملكة بالتحريك بمعنى الملك يقال هذا ملك يمينى وملكته ويقال طال ملكه وملكته اي رقّه يريد حسان الغنيمة والسبي قوله رهوا بكل مقلص الخ الرهو السّير السّهل فهو منصوب على المصدرية بفعل محذوف اى نسير سيرا رهوا والمقلص على صيغة اسم الفاعل من التفعيل هو الفرس الطويل القوائم المنضم البطن والطّمرة بكسر الطاء والميم والراء المشددة المفتوحة الفرس الانثى الجواد او الطويلة القوائم او المستعدة للعدو وقوله فى كل معترك ظرف لعطفن المؤخر وعطفن بمعنى ملن صفة لكل مقلص والتأنيث بالنظر الى معنى الجموم لانه فى معنى جماعة الخيل وقوله رواد جمع راد كقاض من ردت الخيل واردتها انا فمعنى رواداي مسرعات بفرسانها وهو صفة بعد صفة لكل مقلص قوله افنى دوابرها الخ الدوابر جمع دابرة الحافر وهو ماحاذى مؤخر الرسغ قوله ولاح متونها اي اهزل ظهورها وقوله يوم تقاد يوم فاعل لاح والباء فى به بمعنى فى ويوم طراد اي مطاردة وقتال وقدمر انهم كانوا يقودون الخيل ويركبون الابل فاذا بدأت الحرب والقتال يركبون الخيل فهذا معنى يوم تقاد به ويوم طراد وحاصل معنى البيتين مدح خيولهم بانها مارست الحروب والمعارك ودخول المضائق فتدربت وتمرنت على الحرب وانها دائما تقاد اوتركب الى ان افنى ذاك دوابرها واهزل ظهورها

فَكَذَاكَ انّ جيادَنا مَلبونَةٌ  والحَربُ مُشعِلَةٌ بريحِ غَوادِ

وسيوفنا بيض الحدائد تختلى  جُنَنَ الحديد وهامة المُرتاد

اخذ الاله عليهم لحرامه  ولعزة الرحمن بالأسداد

كانو بدارنا عمين فبدّلوا  ايّامَ ذى قرد وجوه عباد

قوله فكذاك اي الامر والشان كما ذكرنا ثم استأنف الكلام فقال ان جيادنا ملبونة اي مغذاة باللبن يقال فرس ملبون وخيل ملبونة قال الشاعر

لا يحمل الفارس الّا الملبون  المحضَ من امامه اومن دون

قوله والحرب مشعلة بريح غوادي الغوادى جمع غادية وهي سحابة تنشأ غدوة اومطرة الغداة والريح يشبه بها الفرس فى السرعة قال المعري

بريح اعيرت حافرا من زبرجد  لها التبر جسم واللجين خلاخل

والرياح تكون مع السحب والامطار فشبه الخيل برياح السحب اوالامطار الغادية قوله وسيوفنا بيض الحدائد الخ الحدائد جمع حديدة واضافة البيض الى الحدائد لفظية اي بيض حدائدها وتختلي بالخاء المعجمة بمعنى تقطع وفى حديث تحريم مكة ولايختلى خلاها اي لا يقطع نباتها الرطب والجنن جمع جنة بالضم ماوقى به كالدرع والترس والهامة الرأس والمرتاد المطلوب قوله اخذ الاله عليهم الخ الاخذ الغلبة والقهر والعقوبة وقوله بالاسداد اي بتعمية الطرق والمذاهب يقال ضربت عليه الارض بالاسداد اي سدت عليه الطرق وعميت عليه مذاهبه وواحد الاسداد سد قال الاسود بن يعفر حين كف بصره

ومن البلية لا ابالك انني  ضربت على الارض بالاسداد

قوله كانوا بدارنا عمين اي كان بنو غطفان ناعمي العيش فبدلت ايام ذي قرد احوالهم الى الذل حتى صاروا كالعبيد وهذه القصيدة لحسان رضى الله عنه مسطورة فى سيرة ابن هشام ومنها كتبتها

## حسان بن ثابت الانصارى

## رضي الله عنه

فى مدح سعد بن زيد رضى الله عنه احد بنى كعب بن عبد الاشهل شهد بدرا وما بعدها من المشاهد وهو الذي هدم المنار الذي كان بالمشلل للاوس والخزرج وهو الذي امره النبي عليه السلام يوم ذى قرد

من مشطور الرجز

أذا اردت اللين الاشدا ... من الرجال فعليك سعدا

سعد بن زيد فاتخذه جندا ... ليس بخوار يهد هدا

ليس يرى من ضرب كبش بدا

قيل ان حسانا رضى الله عنه لما قال فى الابيات السابقة فى غزوة ذى قرد غداة فوارس المقداد غضب عليه سعد بن زيد رضى الله عنه وقال انا امير الجيش فكان ينبغى ان يضاف الى فاعتذر له حسان رضى الله عنه بان الروى اقتضى النسبة الى المقداد ومدح سعدا رضى الله عنه بهذا الشعر قوله اذا اردت اللين الاشدا يريد انه لين فى مواضع اللين شديد فى مواضع الشدة وقوله فعليك سعدا عليك اسم فعل بمعنى الزم وسعدا مفعوله اى الزم سعدا فانه الموصوف بتينك الصفتين ليس بخوار استيناف وجملة يهد تأكيد والخوار الضعيف من خار يخور وفى حديث عمر بن الخطاب رضى الله عنه لن تخور قوى مادام صاحبها ينزع فى القوس ويثب على الخيل وفى حديث ابى بكر رضى الله عنه انه قال لعمر رضى الله عنه اجبار فى الجاهلية وخوار فى الاسلام والهد الهدم الشديد والكبش كبش الكتيبة وهو البطل المحامى يقول ان ضرب الكبش صفة لازمة له وهذا الشعر مذكور فى ديوان حسان رضى الله عنه صنع ابى سعيد السكرى ومنه كتبته

## حسان بن ثابت الانصارى

### رضى الله عنه

فى مدح النبى صلى الله عليه وسلم وعلى آله

متى يبد فى الليل البهيم جبينه ... يلح مثل مصباح الدجى المتوقد من الطويل

فمن كان اومن قد يكون كاحمد ... نظام لحق او نكال لملحد

يبد يظهر والبهيم الشديد الظلمة وجبينه وجهه ويلح يضيء والدجى جمع دجية وهو الظلمة والمتوقد صفة المصباح فمن كان اى فيما مضى اومن قد يكون اى فى المستقبل واو للاضراب والترقى اى بل من قد يكون كما فى قول الشاعر

بدت مثل قرن الشمس فى رونق الضحى ... وصورتها اوانت فى العين املح

او للعموم لان المعنى على النفى او كلة او بمعنى الواو انكران يكون احد مثل النبى عليه السلام فى الماضى او المستقبل ونظام الشيء ملاك امره والنكال بفتح النون ما تنكل وتردع به غيرك قال الزجاج فى قوله تعالى فجعلناها نكالا لما بين يديها وما خلفها اى جعلنا هذه الفعلة عبرة ننكل ان يفعل مثلها فاعل فينا له ما نال اليهود المعتدين فى السبت جعل النبى عليه السلام عين النكال مبالغة فى كونه ناكلا والملحد المائل الحائد عن الحق وقوله نظام بالرفع اى هو صلى الله عليه وسلم نظام لحق ونكال لملحد قال فى الاستيعاب روينا عن عائشة رضي الله عنها انها وصفت رسول الله عليه السلام فقالت كان والله كما قال فيه شاعره حسان بن ثابت وانشدت البيتين ومن الاستيعاب كتبتهما

## حسان بن ثابت الانصارى

### رضي الله عنه

فى مرثية رسول الله صلى عليه وسلم وعلى آله

من الطويل

بطيبة رسم للرسول ومعهد ... منير وقد تعفو الرسوم وتهمد

ولا تمتحى الآيات من دار حرمة ... بها منبر الهادى الذى كان يصعد

و واضح آثار و باقى معالم ... وربع له فيه مصلى ومسجد

بها حجرات كان ينزل وسطها ... من الله نور يستضاء ويوقد

معارف لم تطمس على العهد آيها ... اتاها البلى فالاى منها تجدد

طيبة اسم للمدينة المنورة على صاحبها افضل التحية والرسم الاثر والمعهد المنزل المعهود به الشئ والذى كنت تعرف به هوى لك يقال استوقف الركب على عهد الاحبة ومعهدهم وتهمد تبلى وتتغير والامتحاء افتعال من المحو والمنبر على صيغة اسم الآلة من النبر بمعنى الارتفاع فقيل انه اسم آلة وقال العينى فى شرح البخارى انه اسم مكان وليس بالآلة لان الالة هى مايعالج به الفاعل المفعول كالمفتاح ونحوه والمنبر ليس كذلك وانما هو موضع العلو والارتفاع فالقياس فيه فتح الميم ولكنه جاء بالكسر على خلاف القياس انتهى وقوله وواضح اعلام وباقى معالم كلاهما من اضافة الصفة الى الموصوف اي آثار واضحة ومعالم باقية والمعالم جمع معلم وهو مظنة الشئ ومايستدل به عليه والربع بالفتح الدار والمنزل والمحلة والمصلى موضع صلاة العيد والجنائز من جهة البقيع قوله معارف لم تطمس على العهد آيها الخ المعارف جمع معرف وهو مايعرف به الشئ فهو كالمعالم ويقال طمس الشئ يطمس بالضم والكسر طموسا امحى وعفا اثره وطمسته طمسا محوته يتعدى ولايتعدى وعلى هذا يجوز ان يقرأ ههنا على بناء المعلوم والمجهول والعهد الزمان والآى جمع آية يعنى ان هذه المعالم والاثار وان طال الزمان تتجدد كونها آيا على النبى عليه السلام و مذكرا اياه

عرفت بها رسم الرسول وعهده وقبرا بها واراه فى الترب ملحد

ظللت بها ابكى الرسول فاسعدت عيون ومثلاها من الجن تسعد

يذكرن آلاء الرسول وماارى لها محصيا نفسى فنفسى تبلد

مفجعة قد شفها فقد احمد فظلت لالاء الرسول تعدد

ومابلغت من كل امر عشيره ولكن لنفسى بعدماقد توجد

قوله عرفت بها اى بطيبة وواراه ستره والترب والتربة التراب وملحد بالرفع خبر مبتدأ محذوف اى هو يعنى القبر ملحد ويقال قبر ملحود وملحد ولحدت القبر والحدته والملحد الشق يكون فى عرض القبر وقدمر قوله ظللت بها يقال ظللت اظلّ من الباب الرابع وقد يقال ظلت كلست وفى التنزيل فظلتم تفكهون وقد يقال ظلت كمانت وبه قرئ فى الاية وهو يكون لما يفعل فى النهار ويكون بمعنى صار وهو فى البيت من الثانى قوله فاسعدت اي اعانت ووافقت على البكاء وفى حديث بيعة النساء عن ام عطية رضى الله عنها ونهانا عن النياحة فقبضت امرأة يدها وقالت اسعدتنى فلانة اريدان اسعدها قال فى النهاية قال الخطّابى اما الاسعاد فخاصّ بهذا المعنى يعنى المعاونة على البكاء على الميت واما المساعدة فعامّة فى كل معونة يقال انّها من وضع الرجل يده على ساعد صاحبه اذا تماشيا فى حاجة انتهى قوله يذكرن آلاء الرسول الخ الآلاء النعم واحدها الى وألووالى والاوالى وقوله لها متعلق بمحصيا قدم عليه ومحصيا ونفسي مفعولا ارى القلبية وتذكير محصيا مع كون النفس مؤنثا لتأويلها بالروح كما قد يأول الروح بالنفس وقدمر فى شعر كعب بن مالك رضى الله عنه فى باب الجيم او بالانسان قال سيبويه ويقولون ثلاثة انفس يذكرونه لان النفس

عندهم انسان الاترى انهم يقولون نفس واحد فلا يدخلون الهاء وقوله تبلّد اصله تتبلد يقال تبلد اذا تحيّر يلتفت يمينا وشمالا قوله مفجعة قدشفها الخ مفجعة حال من ضمير تبلد الراجع الى النفس وقوله قدشفها يقال شفه الهم اهزله واضمره قال العرجي

انا امرؤ لجّ بى حبّ فاحرجني  حتى بَليت وحتى شفنى السّقم

قوله وما بلغت من كل امر عشيره اي من كل نوع من انواع الالاء والعشير كامير جزء من عشرة اجزاء كالعشر والمِعشار وجمع العشير اعشراء كنصيب وانصباء وفى الحديث تسعة اعشراء الرزق فى التجارة قوله ولكن لنفسى بعدما قد توجد اللام فى لنفسي لام الابتداء دخلت على المبتدأ والخبر جملة قد توجد وبعد ظرف لتوجد وما مصدرية او كافة حذفت الجملة بعدها والاصل ولكن لنفسي بعدما لم تبلغ من كل امر عشيره قد توجد وقد للتحقيق وتوجد مضارع من التوجّد بمعنى الحزن او الشكاية عمّا يؤلم يقال هم لايتوجدون سهر ليلهم اي ما مسّهم من مشقة يقول ان نفسى بعدما لم تبلغ من كل امر عشيره لها توجد وحزن باق على وفاته صلى الله عليه وسلم

اَطالتُ وُقوفا تَذْرِفُ العينُ جُهْدَها  على طَلَلِ القبر الذى فيه احمد

فَبورِكْت ياقبر الرّسول وبورَكَتْ  بِلادٌ ثَوى فيها الرّشيد المُسَدَّد

وبورِكَ لحدٌ منك ضُمِّنَ طَيِّبا  عليه بِناءٌ من صَيفح مُنَضَّد

تَهيلُ عليه التُّرْبَ اَيْدٍ واَعْيُنٌ  عليه وقد غارت بذلك اَسْعُد

لقد غَيَّبُوا حِلْماً وعلما ورحمة  عَشِيَّةَ عَلَّوْه الثَّرى لا يُوَسَّد

و راحوا بحزن ليس فيهم نبيهم  وقد وهنت منهم ظهور واعضد

يبكون من تبكى السموات يومه  ومن قد بكته الارض فالناس اكمد

وقوفا منعول اطالت وتنازعت اطالت وتذرف فى العين بالفاعلية وجملة تذرف حال وجهدها بضم الجيم اي طاقتها وهو من المعارف التي وقعت حالا مئولة بالنكرة عند سيبويه كارسلها العراك ومررت به وحده اي مجتهدة وقال ابو على ان هذه منصوبة على انها مفعولات مطلقة لاحوال مقدرة فمعنى افعله جهدك افعله مجتهدا جهدك كذا فى الرضى قوله فبوركت ياقبر الرسول الخ ثوى بمعنى اقام قوله وبورك لحد منك الخ ضمن على البناء للمجهول من التضمين وطيبا مفعوله ونائب الفاعل ضمير اللحد ولو قرئ ضمن منك طيب لجاز على معنى ضمّنه طيب فحذف المفعول لانه يقال ضمن القبر زيدا وضمّن القبر زيد كل صحيح فمن قال ضمن القبر زيدا فانما اراد جعل القبر ضمين زيد ومن قال ضمن زيد القبر فانما اراد جعل زيد فى ضمن القبر وينشد على وجهين بيت ابى حية النميرى

وما غائب من كان يرجى ايابه  ولكنّه من ضمن اللحد غائب

من روى من ضمن اللحد غائب برفع اللحد يريد من ضمنه اللحد فحذف الهاء من صلة من كما قلنا فى بيت حسان برفع طيب والصفيح والصفيحة واحد الصفائح وهى الحجارة العريضة وقوله منضد بالرفع صفة بناء اى مضموم بعضه الى بعض يقال نضدت اللبن على الميت او خبر ضمير محذوف راجع الى الصفيح وان جعل صفة صفيح يكون اقواء قوله تهيل عليه الترب الخ يقال هال عليه التراب يهيله هيلا و اهاله اي صبّه وارسله عليه قوله واعين عليه اى وتبكى اعين عليه حذف الفعل بالقرينة كما فى قولهم علفتها تبنا وماء باردا اي وسقيتها ماء وقوله غارت اي غربت والاسعد جمع سعد النجوم والمسمى بسعد من النجوم عشرة وتفصيلها فى القاموس يريد ان النجوم غارت بسبب وفاته عليه السلام وهو كناية عن شدّة الامر وتفاقم المصيبة كما يقال انهدت الجبال لكذا قال جرير

لمّا اتى خبر الزبير تواضعت  سور المدينة والجبال الخشع

قوله لقد غيبوا علما الخ علّوه الثرى جعلوا الثرى عاليا فوقه والثرى بالقصر التراب الندى قال الاصمعى تقول العرب شهر ثرى وشهر ترى وشهر مرعى اي تمطر اولا ثم يطلع النبات فتراه ثم يطول فترعاه النعم كذا فى الصحاح وقوله لا يوسّد مجهول من التوسيد يقال توسد الوسادة ووسّدتها اياه وعدم التوسيد يراد به الموت لان الميت لا يوسد قوله وراحو بحزن الخ راحوا ذهبوا ووهنت ضعفت ونسبة الوهن الى الظهور والاعضد لان القوة فيهما فالمعنى ضعفوا قوله يبكون من تبكى السموات الخ بكى الميت مخففا وبكّاه مشددا بمعنى بكى عليه ورثاه وقوله اكمد من الكمد وهو الحزن والغم

وهل عدلت يوما رزيّةُ هالك  رزيّةَ يوم مات فيه محمد

تقطّع فيه منزل الوحي عنهمو  وقد كان ذا نور يغور وينجد

يدلّ على الرحمن من يقتدى به  وينقذ من هول الخزايا ويرشد

امام لهم يهديهم الحقّ جاهد  معلّم صدق ان يطيعوه يسعدوا

عفوّ عن الزلّات يقبل عذرهم  وان يحسنوا فالله بالخير اجود

وان ناب امر لم يقوموا بحمله  فمن عنده تيسير ما يتشدّد

قوله وهل عدلت يوما الخ هل عدلت هل ساوت وقوله يوما اي وقتا ورزية هالك فاعل عدلت ورزية يوم مفعوله والرزية المصيبة يقول لم تساو مصيبة موت ميت من الاموات فى وقت من الاوقات مصيبة موت محمد صلى الله غليه وسلم وقد روى عن النبى عليه السلام انه قال لن تصابوا بمثلى ولما جاء للحجاج بن يوسف نعى

اخيه محمد من اليمن فى اليوم الذى مات فيه ابنه محمد قال من يقول شعرا يسلّينى به فقال الفرزدق

ان الرزية لارزية مثلهـا　　فقـدان مثل محمـد ومحمد

ملكان قد خلت المنابر عنهما　　اخذ الحمام عليهما بالمرصد

فقال الحجاج لوزدتنى فقال الفرزدق

انى لباك على ابنى يوسف جزعا　　ومثل فقد هما للدين يبكينى

ماسـدّ حى ولا ميت مسـدّ هما　　الاالخلائف من بعدالنبيئين

فقال له ما صنعت شيأ انما زدت فى حزنى فقال الفرزدق

لئن جزع الحجاج ما من مصيبة　　تكون لمحزون اجلّ واوجعا

من المصطفى والمصطفى من خيارهم　　جناحيه لمـا فارقاه فـودّعا

اخ كان اغنى ايمن الارض كلّه　　واغنى ابنه اهل العراقين اجمعا

جناحا عقـاب فارقاه كلا هما　　ولو نزعا من غيره لتضعضعا

فقال الحجاج الآن قوله تقطع فيه منزل الوحى تقطع بمعنى انقطع وانفصل ومنزل الوحى امابمعنى المنزل عليه وهو النبى عليه السلام واما مصدر بمعنى الانزال اي انزال الوحى قوله وقد كان ذانور الخ ضمير كان الى النبى عليه السلام ويغور ونجد صفتان للنور فهو فى معنى قوله الاعشى

نبي يرى مالا ترون وذكره　　لعمرى غارفى البلاد وانجدا

يريد نباهة شانه صلى الله عليه وسلم وارتفاع ذكره وشيوع صيته فى جميع البلاد غورها ونجدهـا والغورما انخفض من الارض والنجـدما ارتفع واما اسم فاعل فالمراد به جبريل عليه السلام وضمير كان ويغور ونجـد اليه ومعنى يغـور ونجـد ينزل من السماء ويعرج اليهـا قوله يدل على الرحمن فاعل يدل راجع الى النبى عليه السلام والخزايا جمع خزيان وهو الذليل المستحي من فعله والمفتضح والمؤنث خزيى وفى حديث الدعاء اللهم احشرنا غير خزايا ولانادمين وفى حديث وفد عبدالقيس مرحبـا بالوفد غير خزايا ولاندامى قوله عفو عن انزلات الخ يريد انه من كرم اخلاقه يعفو عنهم فيما اسـاؤا ويقبل

عذرهم وامافى ما احسنوا فيكلهم الى فضل المفضال الكريم الجواد فيتفضل عليهم الحسنة بعشر امثالها والحسنة بسبعمائة والله يضاعف لمن يشاء والله واسع عليم قوله وان تاب امر الخ لم يقو مواصفة امر وجزاء الشرط قوله فمن عنده الخ يقول ان وقعوا فى نائبة تنوبهم وعسر لايمكن لهم دفع ذلك فلا جرم يجد صلى الله عليه وسلم مخرجا لهم فيسهله عليهم

فبينا هم فى نعمة الله بينهم ... دليل بهنهج الطريقة مقصد

عزيز عليه ان يجوروا عن الهدى ... حريص على ان يستقيموا ويهتدوا

عطوف عليهم لايثنى جناحه ... الى كنف يحنو عليهم ويمهد

فبينا هم فى ذلك النور اذ غدا ... الى نورهم سهم من الموت مقصد

فاصبح محمودا الى الله راجعا ... يبكيه حق المرسلات ويحمد

وامست بلاد الحرم وحشا بقاعها ... لغيبة ماكانت من الوحى تعهد

فقفار أسوى معمورة اللحد ضافها ... فقيد يبكيه بلاط وغرقد

ومسجده فالموحشات لفقده ... خلاء له فيها مقام ومقعد

وبالجمرة الكبرى له ثم اوحشت ... ديار وعرصات وربع ومولد

قوله فبينا هم الخ اصل بينا وبينما بين فاشبعت الفتحة فصارت الفا فى بينا وزيدت ما فى بينما لتدل الالف التى هى علامة الوقف وما الكافة على ان اضافتهما كلا

اضافة فانهما ظرفا زمان بمعنى المفاجأة تضافان الى جملة بعدهما اسمية او فعلية والاضافة الى الجملة كلا اضافة ويحتاجان الى جواب يتم به المعنى والافصح ان لايكون فى الجواب اذواذا وقدجاء كثيرا تقول بينازيد جالس دخل عليه عمرو واذدخل عليه واذادخل عليه والاغلب مجيء اذفى جواب بينما واذافى جواب بينا وكلاهما للمفاجأة ولايجيء بعداذللمفاجأة الاالفعل والنهج الطريق الواضح قوله عزيز عليه ان يجوروا اى شديد شاق عليه ان يميلوا عن الهدى قوله عطوف عليهم قد عرفت معنى العطوف فى شعر عاتكة رضى الله عنها فى باب الباء وقوله لايثنى جناحه لايلوى جانبه عنهم الى كنف اي الى جهة يريد انه ليس متكبرا ويحنو اي يشفق عليهم ويمهداي يوطئى ويلين لهم جانبه كما يوطئ الفراش ويلين يريدانه متواضع وفى البيتين تلميح الى قوله تعالى لقدجاءكم رسول من انفسكم عزيز عليه ماعنتم حريص عليكم بالمؤمنين رؤف رحيم قوله فبينا هموفى ذلك النورالخ كررينا لطول الفصل بينها وبين الجواب وقوله مقصدعلى صيغة اسم الفاعل من اقصدهاذا قتله مكانه وقدمر ذلك قوله فاصبح محمودا الى الله الخاى صار راجعا الى الله حال كونه محمودا يريدانه وفى محموداوالمرسلات الملائكة وحق المرسلات مبالغة فى المدح قال ابن سيدة قال سيبويه ويقولون هذا عالم حق العالم يريدون به التناهى وانه قد بلغ الغاية فيما يتصف من الخصال وقال ابوطالب بن عبدالمطلب فى لاميته المشهورة

وبالبيت حق البيت من بطن مكة ... وبالله ان الله ليس بغافل

قوله وامست بلادالحرم الحرم فى الاصل بالتحريك حرم مكة والمدينة فاسكن للوزن والنسبة الى الحرم من الناس حُرْمِيّ بكسرالحاء وضمها وسكون الراءوان كان من غيرالناس فالنسبة على الاصل يقال رجل حِرْمي وحُرْمي وثوب حَرَمي قوله قفارا سوى معمورة اللحد الخ قفارا جمع قفر بمعنى الخالي وقدمر فى اول الكتاب فى قصيدة حسان عفت ذات الاصابع جواز بلاد تفر وتقفار وقوله سوى معمورة اللحد يريد قبره عليه السلام وضافها اي نزل عليها ضيفا يقال منه ضفته اضيفه ويقال ضيفته تضييفا واضفته اضافة اذا قبلته ضيفا قال ابوالهيثم وقوله تعالى فابوا ان يضيفوهما قال سألوهم الاضافة فلم يفعلوا ولو قرئت ان يضيفوهما كان صوابا اي من جهة العربية وقوله فقيد اي مفقود والبلاط بفتح الباء اصله ضرب

من الحجارة تفرش بها الارض ثم سمي المكان بلاطا اتساعا وهو موضع معروف بالمدينة كذا فى النهاية وهو موضع بين مسجد النبي عليه السلام والسوق مبلط على ما فى القاموس والغرقد اراد به بقيع الغرقد وهو مقبرة المدينة سميت بذلك لان الغرقد نوع من شجر العضاه وشجر الشوك كان منه شيء فى المقبرة فقطع وفى المحكم بقيع الغرقد مقابر المدينة وربما قيل الغرقد قال زهير

لمن الديار غشيتها بالغرقد  كالوحي فى حجر المسيل المخلد

ولله در حسان المحسن رضى الله عنه وارضاه حيث جعل قبر النبي عليه السلام معمورا به فما احسن موقع هذا القول و ما الطفه فجزاه الله خيرا عن امة محمد صلى الله عليه وسلم وجمعه وايانا معه فى دار النعيم قوله ومسجده معطوف على ماقبله اي ويبكيه مسجده قوله فالموحشات لفقده الخ الموحشات مبتدأ والخبر خلاء وقدمر فى قصيدة عفت ذات الاصابع ان لفظ خلاء بمعنى الخالى يستوى فيه المذكر والمؤنث والواحد والاكثر والموحشات من اوحش المنزل اي صار وحشا خاليا عن اهله يريد كأنه ليس بها داع ولا مجيب وقوله له فيها اي فى الخلاء التى هي الارضون الخالية غير الدور والمساكن والمقام والمقعد مصدران بمعنى القعود والقيام اي النهوض قوله و بالجمرة الكبرى الخ بالجمرة الكبرى متعلق با وحشت المؤخر والجمرة الكبرى جمرة العقبة و فى حديث ابن مسعود فى جمرة العقبة انه انتهى الى الجمرة الكبرى وجعل البيت عن يساره ومنى عن يمينه ورمى بسبع وقال هكذا رمى من انزلت عليه سورة البقرة وثم ظرف مكان بمعنى هنالك

فَبَكَّى رَسُولَ اللهِ ياعينِ عَبْرَةً  ولا اَعْرِفَنْكِ الدَّهْرَ دَمْعُكِ يَجْمُدُ

و مالكِ لاتبكين ذا النعمة التى  على النَّاس منها سابغ يَتَغَمَّدُ

فَجُودى عليه بالدُّموع واَعْوِلى  لفقد الذى لامِثْلَه الدهرَ يوجَدُ

ومافقد الماضون مثل محمد ولا مثله حتى القيمة يفقد

اعفّ واوفى ذمّةً بعد ذمّة واقرب منه نائلا لا ينكّد

وابذل منه للطّريف وتالد اذا ضنّ معطاء بما كان يتلد

واكرم صيتا فى البيوت اذا انتمى واكرم جدّا ابطحيّا يسوّد

وامنع ذروات واثبت فى العلى دعائم عزّ شاهقات تشيّد

رباه وليدا فاستتمّ تمامه على اكرم الخيرات رب ممجّد

قوله لا اعرفنك الدهر صيغة نهي مع نون التأكيد الخفيفة والمقصود نهي العين عن جمود دمعها بنهي لازمه وهو معرفته بجمودها كالنفي فى قوله تعالى ولما يعلم الله الذين جاهدوا منكم فان نفى اللازم يستلزم نفى الملزوم وكذا النهي عن اللازم يستلزم النهي عن الملزوم كما اذا قال المولى لعبده لا اراك حيث انهاك فان المعنى لا تكن حيث انهاك قوله على الناس منها سابغ يتغمد ضمير منها راجع الى النعمة والسابغ المتّسع التام يقال سبغت النعمة اذا اتسعت والحمد لله على سبوغ النعمة واسبغ عليكم نعمه ظاهرة وباطنة اتمها واكملها ويتغمد فى الاصل يستر يقال تغمده الله برحمته اى غمره بها وفى الحديث ان النبي عليه السلام قال ما احد يدخل الجنة بعمله قالوا ولا انت قال ولا انا الا ان يتغمدنى الله برحمته قوله واعولى اى ارفعى صوتك بالبكاء وقوله لا مثله الدهر يوجد الدهر بالنصب ظرف وقوله ولا مثله حتى القيمة يفقد على بناء المجهول والجمله معطوفة على جملة ومافقد الماضون مثل محمد ولعدم تعرف لفظ مثل صح انتصابه بلا التبرئة وقوله ذمة بعد ذمة اى عهدا بعد عهد يريد استغراق العهود قوله واقرب نائلا النائل العطاء ولا ينكد اى لا يمنع بل يعطى والطريف المال المستحدث

والتالد القديم وضن بمعنى بخل والمعطاء كثير العطاء وتلد المال يتلده اذا اتخذه يقول اذا منع الاسخياء لايمنع هو فهو اسخى الاسخياء والصيت الذكر الحسن والبيوت جمع بيت بمعنى الشرف ويسود على البناء للمجهول اى يجعل سيدا والذروات جمع ذروة وهى اعلى الشئ يقال فلان له حصن منيع فى قومه وفلان ممتنع باعلى الذروة يرادانه فى غاية العز والشرف لايوصل اليه والدعائم جمع دعامة والشاهقات المرتفعات والتشييد التطلية بالشيد وهو الجص ونحوه يقول انه عليه السلام فى اعلى درجات العزّ والشرف وأبتها واحكمها قوله رباه وليد الخ رباه اى احسن القيام عليه والوليد الصبى واستتم بمعنى اتمّ وتمامه مفعول استتم وتمام الشيئ ماتم به وكماله وربّ تنازع فيه ربا واستتم بالنما علية والممجّد على صيغة اسم المفعول بمعنى المعظم اى الذى مجّده عباده و فى حديث قراءة الفاتحة مجّدنى عبدى اى عظمنى و شرفنى يقول ان الله سبحانه وتعالى كما اصلحه واحسن القيام عليه فى صباه كذلك ابلغه الى منتهاه منقحا مهذبا من كل شين وعيب خلقا وخلقا كما قال القائل

خلقت مبرأ من كل عيب ... كانك قد خلقت كما تشاء

وقال الآخر

ولو صورت نفسك لم تزدها ... على مافيك من كرم الطباع

تناهت وصاة المسلمين بكفه ... فلا العلم محبوس ولا الرأى يفند

اقول ولا يلفى لقولى عائب ... من الناس الا عازب العقل مبعد

وليس هوائى نازعا عن ثنائه ... لعلى به فى جنة الخلد اخلد

مع المصطفى ارجو بذاك جوار • ... وفى نيل ذاك اليوم اسعى واجهد

قوله تناهت وصاة المسلمين الخ تناهت انتهت والوصاة اسم من الايصاء كالوصية

ويقال اوصاه ووصّاه توصية اذا عهد اليه قال الشاعر

الا من مبلغ عنّى يزيدا وصاة من اخى ثقة ودود

والمعنى ان ما يتواصى به المسلمون ممّا ينوبهم ومما يشكل عليهم دفعه آخر من يرجعون اليه فيه هو صلى الله عليه وسلم فليس ورائه من يرجع اليه فهو يدفع ويزيل ما اشكل عليهم كما قال فلا العلم محبوس ولا الرأي يفند المحبوس الممنوع ويفند من الفند وهو الخطأ فى الرأى وحاصل معنى البيت انهم اذا لم يجدوا عند احد مخلصا ومخرجا يرجعون اليه فيجدون عنده لا يحبس عنهم العلم بل يفتيهم و يعلمهم ويبين لهم رأيا صوابا قوله اقول ولا يلفى الخ اي اقول فى مدحه وثنائه صلى الله عليه وسلم ما اقول ولا يلفى اي لا يوجد لقولى من يعيبه من الناس الا عازب العقل قال فى الاساس يقال عزب عنه حلمه واعزب الله عقلك وفى حديث عاتكة فهن هواء والحلوم عوازب العوازب جمع عازب اي انها خالية بعيدة العقول كذا فى النهاية والمبعد الملعون المطرود قوله وليس هوائى نازعا الخ الهواء بالمد الجو والخالى وبالقصر العشق والمحبة للشيء قيل يكون فى الخير والشر وقيل ان مطلقه ينصرف الى المذموم فاذا اريد الخير ينعت بما يدل عليه كقولك هوى حسن وهوى موافق للصواب وهوى المؤمن للنبى عليه السلام واصحابه رضوان الله عليهم فقول حسان رضى الله عنه من باب مد المقصور للضرورة وقدر ما يتعلق به والمعنى ليس محبتى للنبى صلى الله عليه وسلم نازعا اي كافا عن مدحه وثنائه قال فى الاساس نزع عن الامر نزوعا كف عنه وقوله لعلى به اى بثنائه واخلد من الباب الاوّل اي ابقى وادوم وقوله مع المصطفى متعلق باخلد فى البيت السابق اللهم ارزقنا شفاعته صلى الله عليه وسلم وضاعف وأرب لحسّان المحسن حسناته وحقق امله ورجائه وهذه القصيدة لحسان رضى الله عنه مسطورة فى سيرة ابن هشام ومنها كتبتها

## حسان بن ثابت الانصارى

## رضى الله عنه

### فى مرثية النبي صلى الله عليه وعلى اله وسلم

من الكامل

مابال عينك لاتنام كأنما  كحلت مآقيها بكحل الأرمد

جزعا على المهدي اصبح ثاويا  ياخير من وطئ الحصى لاتبعد

وجهي يقيك الترب لهفي ليتني  غيبت قبلك في بقيع الغرقد

قوله مابال عينك الخ البال الحال والشان وجملة لاتنام حال من العين لانها فاعل في المعنى لان المعنى ماتصنع عينك فالبال هو العامل لما فيه من معنى الفعل ووقوع الحال بعدما بال اكثري وقد لاتقع نحو فما بال القرون الاولى والحال بعدها تكون مفردة وجملة فعلية واسمية وقوله كحلت على البناء للمجهول والمآقي جمع مأقي وهو طرف العين مما يلي الانف وهو مجرى الدموع وله لغات ابلغها في القاموس الى عشر والارمد من به رمد وهو هيجان العين وانتفاخها جرد شخصا عن نفسه يسأله ويتعجب من شان عينه حال كونها غير نائمة كانها مكحولة بكحل الارمد ثم اجاب فقال جزعا على المهدي الخ جزعا مفعول له لفعل مقدر اى ابكي جزعا فيمنعني عن النوم و اصبح ثاويا استيناف كانه قيل ماسبب جزعك عليه فقال اصبح ثاويا والثاوي الميت وقوله ياخير من وطئ الحصى اي ياخير كل الناس وقوله لاتبعد من الباب الرابع وهو دعاء اي لاتهلك وقدمر في شعر حميد بن ثور رضي الله عنه في باب الباء وقوله وجهي يقيك الترب اراد انا اقيك الترب اى اكون فداءلك ولا يريد الوجه بخصوصه والعرب قد تذكر بعض الشيء وتريد كله من ذلك قولهم رغم انفه و حيا الله وجهك اذ ليس المراد الانف والوجه دون سائر الجسم قال الاعشى

الواطئين على صدور نعالهم  يمشون في الدفي والأبراد

يريد السودد و النعمة ولم يخصص الصدور وانما اراد النعال كلها وقوله لهفي اي يا لهفي واللهف الحزن والتحسر يقال يا لهفه و يا لهفي عليك و يا لهفا بالالف

كقولهم يا ويلا والكل يتحسر به على فائت مثل يا حسرتى وقوله ليتنى غيبت الخ تمنى ان يكون موته قبل موته فلا يشهده ولا يصاب به

بأبى وأمي من شهدت وفاته ... في يوم الاثنين النبي المهتدى

فظللت بعد وفاته متبلدا ... متلددا ياليتنى لم أولد

أقيم بعدك بالمدينة بينهم ... ياليتنى صبحت سم الأسود

أوحل أمر الله فينا عاجلا ... فى روحة من يومنا او في غد

فتقوم ساعتنا فنلقى طيبا ... محضاً ضرائبه كريم المحتد

قوله بابى وامي الخ اي افدى بابى وامي ومن شهدت مفعول افدي المقدر وشهدت بمعنى حضرت ووفاته مفعوله والنبي بالنصب بدل من من والمهتدى صفة ذل الامام السهيلى فى الروض الانف واتفقوا انه عليه السلام توفى يوم الاثنين قالوا كلهم فى ربيع الاول غير انه قال كلهم او اكثرهم فى الثانى عشر من ربيع الاول ولا يصح ان يكون توفى عليه السلام يوم الاثنين الا فى الثانى من الشهر او الثالث عشر او الرابع عشر او الخامس عشر لاجتماع المسلمين على ان وقفة عرفة كانت فى حجة الوداع يوم الجمعة وهو التاسع من ذى الحجة فدخل ذو الحجة يوم الخميس فكان المحرم اما الجمعة واما السبت فان كان الجمعة فقد كان صفر اما السبت واما الاحد فان كان السبت فقد كان ربيع الاول الاحد او الاثنين وكيف مادارت الحال على هذا الحساب فلم يكن الثانى عشر من ربيع الاول يوم الاثنين بوجه فتدبره فانه برهان صحيح لم ار احدا تفطن له وذكر الطبري عن ابن الكلبي وابى مخنف انه توفى فى الثانى من ربيع الاول وهذا القول وان كان خلاف قول الجمهور فانه لا يبعد ان كانت الثلثة الاشهر التى قبله كلها من تسعة وعشرين فتدبره فانه صحيح ولم ار احدا تفطن له وقا

رأيت للخوارزمى انه توفى عليه السلام فى اول يوم من ربيع الاول وهذا اقرب للقياس مما ذكره الطبري عن ابن الكلبي وابى مخنف انتهى قوله فظللت بعد وفاته الخ المتبلد ضد المتجلد والمتحيّر والمتلهّف والمقلب كفيه والمتلدد المتحير يلتفت يمينا وشمالا وقوله سمّ الاسود السمّ يثلث والاسود جنس معروف من الحيّات والجمع الاساود وكذلك كل افعل اسمى كافكل وافاكل وابطح واباطح وكذلك اذا كان علما كاحمد واحامد واسلم واسالم واما افعل الوصفى فجمعه فُعل كاحمر وحمر يقول ليتنى لسعتنى حيّة فمتّ قوله اوحى امر الله فينا الخ اي مات الناس كلهم فى اقرب الاوقات فتقوم القيامة فنلقى الخ والضرائب جمع ضريبة بمعنى الطبيعة والسّجية وفى الحديث ان المسلم المسدد ليدرك درجة الصوّام بحسن ضريبته اي سجيته وطبيعته ويقال فلان كريم الضّريبة ومحض الضريبة اى حسنها والمحتد الاصل

يا بِكْرَ آمِنَةَ المُبارَكَ ذِكْرُه ... ولَدَتْه مُحْصِنَةً بِسَعْدِ الأَسْعَدِ

نورا اضاء على البَرِيَّةِ كُلِّها ... مَنْ يَهْدِ للنّورِ المُبارَكِ يَهْتَدِ

يا رَبِّ فاجْمَعْنا مَعا وَنَبِيَّنا ... فى جَنَّةٍ تُبْنى عُيونَ الحُسَّدِ

فى جَنَّةِ الفِردوسِ فاكْتُبْها لَنا ... يا ذا الجَلالِ وذا العُلى والسُّؤدُدِ

قوله يا بكر آمنة الخ البكر اول مولود الابوين ويقال اشد الناس بكرين بكرين اي اقواهم وآمنة بنت وهب بن عبد مناف بن زهرة بن كلاب بن مرّة ام النبى عليه السلام وقوله بسعد الاسعد السعد ضد النحس اضيف الى جمعه للمبالغة قوله نور ابدل من الضمير المنصوب فى ولدته اوحال منه اى مضيئا قوله تنبى عيون الحسد يقال نبا نبوا ونبيا ونبوة تجافى فلم ينظر و منه حديث الاحنف قدمنا على عمر رضى الله عنه فى وفد فنبت عيناه عنهم ووقعتا على كانه حترهم ولم يرفع اليهم راسا

والحسّد جمع حاسد فمعنى تنبي عيون الحسّد تجعلها نابية متجافية غير ناظرة لان الحاسد لايريد ان تقع عينه على نعمة المحسود غيظامنه وكراهة اوالكلام دعاء على الحسد بان لايروا الجنة اصلا والسودد بضم السين وفتح الدال وضمهاوبالهمز ايضا المجد والشرف وفى النهاية انه جاءه رجل فقال انت سيد قريش فقال السيد الله ففيه جواز اطلاق السّيّد على الله ووصفه بالسودد وان اشتبه على السهيلى فى قول حسان رضى الله عنه وجنود ربك سيد الارباب وقدمر هذا المصراع فى باب الباء

وَاللهِ اَسْمَعُ ما بَقِيتُ بِهالِكٍ ... اِلّا بكيتُ على النّبيّ محمد

ياوَيْحَ انصارِ النبيّ ورهطِه ... بعدَ المُغَيّب فى سَواء المَلْحَد

ضاقتِ بالاَنْصار البلادُ فاصبحوا ... سُوادًوجوهُهُم كلَوْنِ الاثمِد

ولقد وَلَدْناهُ وفينا قبرُه ... وفُضولَ نعمته بنالم نَجْحَد

واللهُ اَكْرَمَنا به وهدى به ... انصارَه فى كل ساعة مَشْهَد

قوله والله اسمع الخ اسمع جواب القسم بتقدير لا كما فى قوله تعالى تاالله تفتأ وهو كثير فى الشعر قال ابو طالب بن عبدالمطلب عم النبى عليه السلام

كذبتم وبيت الله نُبْزى محمدا ... ولمّا نطاعن دونه ونناضل

اى لانبزى ومابقيت مافيه مصدرية وهو فى تأويل المصدر ظرف لا اسمع اي مدة بقائى وقوله بهالك متعلق بلا اسمع وقوله الابكيت استثناء مفرغ حال وكثر فى مثله وقوع الماضى حالا مجردا عن قد والواو والمعنى لا اسمع بهالك مدة حياتى كائنا على حال الا باكيا على النبى محمد قوله ياويح انصار النبى الخ ويح كلمة ترحم وتوجع يقال لمن وقع فى هلكة يرحم ويدعى له بالتخلص منها وفى الحديث

انه عليه السلام قال ويح ابن سُمَيَّة يقتله الفئة الباغية وقوله فى سواء الملحد السواء ههنا بمعنى الوسط كما فى قوله تعالى فقد ضل سواء السبيل على بعض التفاسير والملحد قدمر انه القبر الذى اُلحد وهذا البيت من شواهد كامل المبّرد قوله ضاقت بالانصار البلاد الخ بنقل حركة همزة الانصار الى اللام الساكنة قبلها للوزن وضيق البلاد عليهم كناية عن شدّة حزنهم فان المحزون تضيق عليه الارض بما رحبت ولايقر قرارا وكذلك اسوداد الوجوه كما فى قوله تعلى ظلّ وجهه مسودا وهو كظيم قوله ولقد ولدناه الخ وذلك لان ام عبد المطلب جد النبى عليه السلام هى سلمى بنت زيد او بنت عمرو بن زيد من الخزرج من بنى عدى بن النجار وعن هذا سأل الانصار رسول الله عليه السلام يوم بدر ان يتركوا فداء ابن اختهم العباس بن عبد المطلب رضى الله عنه وفضول نعمته بالنصب مفعول لم نجحد المؤخر والفضول جمع فضل وهو الزيادة يريد نعمه الفاضلة الكثيرة قوله والله اكرمنا به الخ المشهد مجمع الناس ومحضرهم ولابدّ من تقدير لفظة كل قبل مشهد ليعم المشاهد اي فى كل ساعة كل مشهد كما فى قوله تعالى كذلك يطبع الله على كل قلب متكبر جبار اي على كل قلب كل متكبر جبار قوله صلى الا له الخ من يحف من يحيط وهم الملئكة الكرام قال الله تعالى وترى الملئكة حافين من حول العرش والطيبون الصالحون وهذه القصيدة لحسان رضى الله عنه مسطورة فى سيرة ابن هشام ومنها كتبتها

## حسان بن ثابت الانصارى

## رضى الله عنه

فى مرثية النبي صلى الله عليه وعلى اله وسلم

آلَيْتُ ما فى جميع النّاس مُجْتَهِداً ... مِنّى اَلِيَّةَ بِرٍ غَيْرِ اِفْنادِ

تالله ما حملت اُنْثى ولا وَضَعَتْ ... مثلَ الرّسول نبيِّ الاّمةِ الهادى

ولا بَرَا اللهُ خَلْقا مِنْ بَرِّيته  اَوْ فى بِذِمَّةِ جارٍ او بِمِيعاد

مِنَ الَّذى كانَ فينا يُسْتَضأ به  مبارَكَ الاَمْرِ ذا عَدْلٍ وارْشاد

يا افضلَ النّاسِ انى كُنْتُ فى نَهَرٍ  اصبحت منه كمثل المُفْرَدِ الصّادى

قوله اليت ما فى جميع الناس الخ آليت اقسمت ومجتهدا حال من ضمير المتكلم والاجتهاد فى الشيئ الجد فيه وصرف الطاقة والاليّة اليمين والبرّ بالكسر الصدق والافناد الكذب ومنّى حال من الالية وقوله مافى جميع الناس جواب القسم مع ماحذف وهو لفظ مثل النبى عليه السلام وانما حذفه اكتفاء بما سيذكره فى جواب القسم الذى بعده لانه فى معناه وهو نفى مثل له عليه السلام فى الخلق وحاصل المعنى اقسمت بجهد وجد قسم بر غير كذب صاد رامنيي مافى جميع الناس مثله عليه السلام قوله ولا برا الله خلقا الخ قدمر معنى البرية واصلها فى شعر قطن بن حارثة رضى الله عنه والميعاد وقت الوعد وموضعه والمراد ههنا الوعد يريد انه عليه السلام اوفى الناس كلهم بالعهود والوعود قوله يا افضل الناس انى كنت فى نهر الخ النهر بالتحريك والنهر بالفتح لغتان وفى كلام الله عز وجل ان الله مبتليكم بنهر ان المتقين فى جنات ونهر بالتحريك وهو فى البيت كذلك والمفرد ههنا ثور الوحش كما فى قول كعب بن زهير رضى الله عنه

ترمى الغيوب بعينيي مفرد لهق  اذا توقدت الحزان والميل

والصادي العطشان يريد انه بعد ما كان مستغرقا بالتمتع بجمال النبي عليه السلام والصحبة معه زال عنه ذلك بوفاته عليه السلام وحرم عنه بالكلية مع كمال شوقه اليه فحاله كحال المفرد الصادي وهذا الشعر لحسان رضى الله عنه مسطور فى سيرة ابن هشام ومنها كتبته

## حسان بن ثابت الانصارى

### رضى الله عنه

يفتخر بشجاعته وكرمه وشرفه وحسبه فى نفسه وفى قومه

الا ابلغ المستسمعين بوقعة ... تخف لها شمط النساء القواعد

وظنهم بى انني لعشيرتى ... على اى حال كان حام وذائد

فان لم احقق ظنهم بتيقن ... فلا سقت الاوصال منى الرواعد

قوله الا ابلغ المستسمعين الخ استمع واستسمع بمعنى والوقعة صدمة الحرب وتخف بمعنى تطرب والطرب قد يكون من الحزن وقد يكون من السرور والشمط جمع شمطاء والمذكر اشمط من الشمط وهو اختلاط بياض الشعر مع سوادها ويقال رجل اشيب وامرأة شمطاء ولايقال شيباء والقواعد جمع قاعد وهي المرأة التى قعدت عن الحيض وانقطع عنها قال ابن السكيت امرأة قاعد اذا قعدت عن الحيض فان اردت القعود ضدالقيام قلت قاعدة قوله وظنهم مبتدأ وجمله انى الخ خبر والظن ههنا اسم بمعنى مايظنّ اي مايظنون بى هذا وقوله لعشيرتى متعلق بحام المؤخر وقوله على اي حال كان على اىّ متعلّق بحام والحال ممّا يذكر ويؤنث وكان تامة وحام خبر ان وذائد بمعنى مانع وحاصل المعنى ان ظنهم الكائن فى حقّى هوانى حام وذائد لعشيرتى على كل حال ثابت قوله فان لم احقق الخ يقال حقّقت ظنه وحققته تحقيقا جعلته حقا اي امرا ثابتا فى نفس الامر بحيث لايسوغ انكاره ولاالشك فيه قوله فلاسقت الاوصال منّى الرواعد الاوصال جمع وصل وقدمر معناه فى شعر عبدالله بن رواحة فى باب الباء والرواعد جمع راعد وراعدة فى الاساس سحاب راعد و سحابة راعدة وقد عرف من عادة العرب انهم اذا ارادوا الدعاء

بالخير استعملوا السقى واذا ارادوا الشر استعملوا عدمه وان كان فيما لاينتفع بالسقى كالقبور والاوصال ونحو ذلك قال متمم بن نويرة فى مرثية اخيه مالك

سقى الله ارضا حلها قبر مالك ذهاب الغوادي المدجنات فامرعا

فقول حسان رضى الله عنه فلاسقت الاوصال عبارة عن تأكيد تحقيق الظن والمبالغة فى لزوم وقوعه فان الانسان لايدعو على نفسه

ويعلم اكفائى من الناس انّنى انا الذّائد الحامى الذّمار المُناجد

وان ليس للاعداء عندى غميزة ولاطاف لى منهم بوحشى صائد

وان لم يزل لى منذ ادركت كاشح عدو اقاسيه وآخر حاسد

فما منهما الاّ وانّى اكيله بمثل له مثلين او انا زائد

اكفائى امثالى والذائد المانع وقدمر معنى حامى الذمار فى قصيدة كعب بن مالك رضى الله عنه سائل قريشا فى باب الباء والمناجد المناقل والغميزة على وزن سفينة والمغمز كمسكن والغميز كمير ما يعاب به ويطعن وقوله وان ليس الخ معطوف على قوله انى انا الذائد وقوله ولاطاف لى منهم الخ وحشى بالاضافة الى ياء المتكلم المفتوحة يريدانهم لايقربون من وحشي فضلا عن ان يصيدوه وهو كناية عن كمال عزّه وامتناعه قوله وان لم يزل الخ الكاشح العدو الذى يضمر عداوته كانه يطوي عليها كشحه اي باطنه اوالذي يوليك كشحه والكشح الخصر والمقاساة المعاناة يقول انه ذو نعمة مغبوطة وكل ذى نعمة محسود ومامن سيد الاوله ودود يمدح وحسود يقدح قوله فما منهما الاوانى اكيله الخ اي فما منهما احد الاوانى اكيله فحذف لعلم المخاطب كما فى قول الشاعر

ومامنهما الايسرّ بنسبة تقربنى منه وان كان ذا نفر

و قل الله تعالى و ان من اهل الكتاب الا ليؤمنن به قبل موته اي و ان احد ومعنى ان معنى ما والمعنى الاوانى اقابله بضعف ما فعل لى او اكثرويجوز ان يكون او بمعنى بل كما قالوا فى قوله تعالى مأة الف اويزيدون فيكون ابلغ وقد اشتهر استعمال الكيل والمكايلة فى المقابلة قال ابوطالب بن عبدالمطلب فى رجلين من قريش عادياه

فان يُلفَيا اويُمكن الله منهما ... نَكِل لهما صاعا بصاع المكايل

فان تسألى الاقوام عنى فانّنى ... الى محتد تنمى اليه المحاتد

انا الزّائر الصّقر ابن سلمى وعنده ... ابى ونُعمان وعمرو وواقد

فاورثنا مجداً ومن يجن مثلها ... بحيث اجتناها ينقلب وهو حامد

وجدّى خطيب النّاس يوم سميحة ... وعمّى ابن هند مطعم الطير خالد

ومنّا قتيل الشّعب اوس بن ثابت ... شهيد اواسنى الذكر منّا المشاهد

و من جدّه الادنى ابى وابن امّه ... لام ابى ذاك الشهيد المجاهد

و فى كلّ دار ربّة خزرجيّة ... واوسيّة لى من ذراهن والد

قوله فان تسألى الخ عادة العرب ان يخاطبوا النساء فلذلك قال تسألى بالتأنيث وقوله فانّنى الى محتد اي منسوب الى محتد وهو الاصل والشرف و قوله تنمى اليه المحاتد اى تنتسب يقال نمى ينمى الى حسب و نما ينمو لغتان يقول ان اصله مجمع المحاتد و ملتقاها فهو الاوسط دار قوله انا الزائر الصقر ابن

سلمى الخ ابن سلمى النعمان بن المنذر من ملوك الحيرة نسب الى امه وأبي هو ابن كعب الانصارى الخزرجى من كبار الصحابة والنعمان هو ابن قوقل الانصارى الصحابى الجليل القدر وتوفى ابى بن كعب رضى الله عنه سنة عشرين او اثنتين وعشرين فى خلافة عمر رضى الله عنه اوسنة ثلاثين على اختلاف الاقوال فى ذلك وقدم فى شعر كعب بن مالك رضى الله عنه فى باب الجيم كيفية شهادة النعمان بن قوقل وماقال يوم احد وعمرو هو ابن الاطنابة الجاهلى الخزرجى وواقد ابنه وكان هؤلاء الاربعة محبوسين عند النعمان بن المنذر فوفد عليه حسان رضى الله عنه فاطلقهم له قوله فاورثنا مجدا الخ يجن من جنى الثمرة اذا اخذها من شجرتها وهو مستعار ههنا لاستفادة كمال وضمير مثلها للخصلة التى هى عفو النعمان عن المذكورين وتكريم حسان بذلك وقوله وهو حامداي يحمد امره ويسر بذلك اويكون ذاحمد يحمد الناس ويمدحه وحاصل المعنى ان مافعل النعمان كمال وخصلة حميدة اتصف بها ومن يفعل مثل مافعل لايزال حامدا امره اولايزال ذاحمد يحمده الناس يريد بذلك مدح النعمان قوله وجدّي خطيب الناس يوم سميحة على صيغة التصغير اسم بئر معروفة قرب المدينة لهاذكر فى كتب التفسير فى آية الغيبة وقع عندها حرب فى الجاهلية بين الاوس والخزرج ويوم سميحة من مشهور ايامهم وهي اول حرب وقعت بين الاوس والخزرج على ماقال ابن الاثير فى تاريخه ويقال لهذا اليوم يوم سمير ايضا وذلك لان رجلا من الاوس ثم من بنى عمرو بن عوف يقال له سمير قتل حليفا لمالك بن العجلان الخزرجى فارسل مالك الى بنى عمرو بن عوف ليرسلوا اليه سميرا فيقتله بحليفه فعرضوا عليه الدية فقبلها وكانت دية الحليف عندهم نصف دية الصريح فامتنع مالك ان يأخذ الاتمام الدية وامتنعوا من ذلك ولج الامر بينهم حتى ادى الى الحرب فاجتمعوا والتقوا واقتتلوا قتالا شديدا وافترقوا ودخل فيها سائر بطون الاوس والخزرج ثم التقوا مرة اخرى حتى حجز الليل بينهم وكان الظفر يومئذ للاوس فلما افترقوا ارسلت الاوس الى مالك يدعونه الى ان يحكم بينهم المنذر بن حرام جد حسان بن ثابت رضى الله عنه فاجابهم الى ذلك فاتوا المنذر فحكم بينهم بان يدوحليف مالك دية الصريح ثم يعودون الى سنتهم القديمة فرضوا بذلك وحملوا الدية وافترقوا وقدشبت البغضاء فى نفوسهم وتمكنت العداوة

بينهم فهذا يوم سميحة باختصار من تاريخ ابن الاثير وفى ديوان حسان رضى الله عنه صنع السكرى انهم حكموا اولا عمرو بن امرئ القيس احد بنى الحرث بن الخزرج جد عبدالله بن رواحة رضى الله عنه فحكم ان يدوا حليف مالك نصف دية الصريح وما اصاب الاوس من الخزرج فعليهم الدية مسلّمة الى الخزرج وما اصاب الخزرج من الاوس فعليهم الدية مسلمة الى الاوس فلم يرض مالك بذلك فاقتتلوا قتالا شديدا ثم تداعوا الى الصلح فحكموا المنذر بن حرام فقضى بينهم ان يدوا حليف مالك دية الصريح ثم يعودون الى سنتهم القديمة فرضى مالك بذلك ثم قال انظروا القتلى فاي الفريقين افضل على صاحبه وُدِىَ له الفضل فافضلت الاوس على الخزرج ثلثه نفر فودوهم لهم واصطلح القومان وقوله وعمى ابن هند مطعم الطير خالد قيل ان ابن هند هذا كان يطعم الطير وهى من اطعمة الملوك عند العرب لندرتها فيهم قوله ومنا قتيل الشعب اوس بن ثابت هذا اخو حسان بن ثابت وكان من فضلاء الصحابة وشهد بيعة العقبة وبدرا واستشهد باحد على ماذكر ابن اسحق وهو المعول عليه ويشهد له بيت حسان رضى الله عنه والشعب شعب احد قوله واسنى الذكر منا المشاهد اسنى من السناء ممدود وهو الشرف والمشاهد جمع مشهد بمعنى الشهادة يقول واعلى واشرف مايذكر به الرجل ويؤثر عنه هو الشهادة فى سبيل الله قوله ومن جده الادنى ابى قال فى الاصابة قال محمد بن حبيب يريد شداد بن اوس انتهى وهو ابن اخى حسان وكان رضى الله عنه من فضلاء الصحابة كان له بيان وحلم وكانت له عبادة واجتهاد فى العمل توفى سنة ثمان وخمسين وهو ابن خمس وسبعين قال ابو نعيم توفى بفلسطين وقال ابن حبان دفن ببيت المقدس سنة ثمان وخمسين وفيها ارخه غير واحد كذا فى الاصابة وقوله وابن امه لام ابى ذاك الشهيد المجاهد هذا الكلام فيه تعقيد كأنه لم يخرج من فم حسان ولم يتيسر لى فهمه الى الآن ولعل الله سبحانه ان يفتح علينا بفضله وكرمه انه المفضل الكريم قوله وفى كل دار ربة خزرجية الخ الربة هنا الضخمة اي الشريفة والذراجع ذروة يقول ان له فى بيوت الانصار الشريفة اوسهم وخزرجهم اصلا ينتمى اليه

فما احدٌ منّا بمهدٍ لجاره ... اذاةً ولا مُزرٍ به وهو عامد

لانانرى حق الجوار امانة ... ويحفظه منا الكريم المعاهد

فمهما اقل مما اعدد لم يزل ... على صدقه من كل قومى شاهد

قوله بمهد اي بموصل والجار هنها المستجير الملتجئ لقوله فيما بعد ويحفظه منا الكريم المعاهد والاذاة اسم من اذي كبقى اذى كالاذيّة وهو المكروه اليسير فان زاد فهو ضرر قوله ولامزربه اي مدخل عليه عيبا وضمير وهو عامد راجع الى احد قوويحفظه منا الكريم اي الذى عقد العهد مع الجار وهو سيد هم ولايكون الاكريما او يحفظه كل واحد منا وكلنا كريم قوله فمهما اقل الخ مهما بمعنى ما عند الجمهور يقول ان ما اعدده من الصفات المادحة يصدّق ذلك ويشهد به كل واحد من قومى بافعالهم واقوالهم

لكل اناس ميسم يعرفونه ... وميسمنا فينا القوا فى الاوابد

متى مانسم لاينكر الناس وسمنا ... ونعرف به المجهول ممن نكايد

تلوح به تعشو عليه وسومنا ... كما لاح فى سمر المتان الموارد

فيشفين من لايستطاع شفاؤه ... ويبقين ماتبقى الجبال الخوالد

ويشقين من يغتالنا بعداوة ... ويسعدن فى الدنيا بنا من نساعد

قوله لكل اناس ميسم الخ الميسم المكوى الذى يسمون به ابلهم والقوافى جمع قافية يريد الاشعار والاوابد جمع آبدة وهى الشوارد عن الفهم تشبيها بابد الوحش

يقال أبدالشاعر اذا اتى فى شعره بالعويص الذى لايعرف معناه فى بادى الرأى قال الفرزدق

لن تدركوا كرمى بلؤم ابيكمو  واو ابدى بتحلّ الاشعار

وقوله لاينكر الناس وسمنا اي لايردونه بان لايبالوبه بل يقبلونه ويمضونه وقوله ونعرف به المجهول ممّن نكايد نعرف من الافعال اي نجعله معروفا بوسمنا قوله تلوح به تعشو عليه وسومنا تلوح تظهر و تعشو تقصده ليلا وقد تنازع الفعلان بالفاعلية فى قوله وسومنا وهو جمع الوسم بمعنى السّمة والفعل الثانى حال من فاعل الاول اوبدل عنه قوله كمالاح فى سمر المتان الموارد السمر جمع اسمر والمتان بالكسر جمع متن وهو الارض الصلبة المرتفعة قال الحرث بن حلزة اليشكرى

أنّى اهتديت وكنت غير رجيلة  والقوم قد قطعوا متان السجسج

والموارد جمع مورد وهو الطريق الذى تلحبه السابلة يريدان وسومهم تظهر عليهم ظهور الطرق الملحوبة على الارضين السود المرتفعة قوله فيشفين من لايستطاع شفاؤه من شفاء المريض ويبقين اما من البقاء واما من الابقاء والاول انسب للفظ يشفين والثانى لمعناه يقول ان الرجل الساقط الوضيع اوالمطعون عرضه بحيث لايرجى ارتفاعه وتخلصه مما الحق به من العار نمدحه فيخلصه اشعارنا ويرفعه وان من هجوناه باشعارنا يبقى اثارها اوتُبْقى اثارها ابدالدهر لاينقض ذلك قوله ويشقين من يغتالنا يشقين من الاشقاء وهوالجعل شقيا ويغتالنا من الاغتيال وهوالقصد بالشر وفى الحديث واعوذ بك من ان أُغتال من تحتي اي ادهى من حيث لا اشعر وقوله ويسعدن من الاسعاد ونساعد نوافق يقول ان من نهجوه باشعارنا حظّه الشقوة و من نمدحه حظّه السعادة و بالجملة الاشقاء والاسعاد فى الدنيا بايدينا كما قال مجنون بني عامر لليلاه

و انت التى ان شئت اشقيت عيشتي  وانت التي ان شئت انعمت باليا

اذا ما كَرَرْنا رُمْحَ رايةِ شاعرٍ  يَجيشُ بِنا ما عِنْدَنا فنعاوِدُ

يكونُ اذا بُثَّ الهجاءُ لقومِه ... ولاحَ شهابٌ من سَنا الحربِ واقدِ

كاشقى ثمودٍ اذ تعاطى لحينِه ... خصيلةَ امِّ السَّقبِ والسَّقبُ وارِدُ

فولّى فاوفى عاقلاً رأسَ صخرةٍ ... نمى فرعُها واشتدَّ منها القواعدُ

فقالَ الا فاستمتعوا في دياركم ... فقد جاءكم ذكرٌ لكم ومواعدُ

ثلاثةَ ايّامٍ من الدهرِ لم يكن ... لهنَّ بتصديقِ الذى قالَ رائدُ

قوله اذا ما كسرنا الخ يريد اذا غلبنا على شاعر يجيش اي يهيج ويغلى من جاش البحر اذا تلاطمت امواجه وجاشت القدر اذا غلت و نعاود نفعل مرة بعد اخرى قوله يكون اذا بث الهجاء الخ اي يكون ذلك الشاعر اذا بث اى نشر والسنا بالقصر الضياء شبه المهاجاة مع الشاعر بالحرب المشبهة بالنار واثبت لها السنا والشهاب الواقد قوله كاشقى ثمود الخ كاشقى خبر يكون فى البيت السابق وثمود قوم صالح على نبينا وعليه السلام مصروف فى البيت للضرورة واشقاهم قُدارُ الذي عقر الناقة قال سبحانه اذ انبعث اشقاها وتعاطى تناول وخصيلة مفعول تعاطى وهي على وزن سفينة لحم الفخذين والعضدين والذراعين والساقين او عصبة عليها لحم غليظ وفى بعض النسخ عضيلة مكان خصيلة وهي بمعناها او قريب منه اراد بذلك ماروي انه ضربها على عرقوبها والسقب الفصيل وهو ولد الناقة وفهم هذه الابيات يتوقف على قصة ثمود وناقة صالح على نبينا وعليه السلام وهي ان قتل قدار بن سالف الذي هو اشقاهم ناقة صالح على نبينا وعليه السلام كان سبب هلاك ثمود كما روي ان صالحا على نبينا وعليه السلام قال لهم ان قتلتم الناقة هلكتم فلما اراد قدار قتلها ضربها على عرقوبها فهذا معنى خصيلة ام السقب ولما رأى فصيل الناقة امه على تلك الحالة قصد جبلا قصيرا يقال له القارة فصعده فاوحى الله الى الجبل فتطاول فهذا معنى قوله

فاوفى عاقلا اوفى اشرف والعاقل الجبل والصخرة الحجر العظيم ونمى ارتفع وتطاول وفرعها اي اعلاها واشتد اي تمكن واستقر والقواعد الاصول ثم ان صالحا على نبينا وعليه السلام اخبر بان الناقة عقرت فقال لهم انظروا هل تدركون فصيلها فان ادركتموه فعسى الله ان يرفع عنكم العذاب وكان الفصيل رقى ذروة الجبل المتطاول فلم يدركوه فدخل صالح على نبينا وعليه السلام القرية ولما رآه الفصيل بكى حتى سالت دموعه ثم استقبل صالحا على نبينا وعليه السلام فرغا ثلاث رغوات فقال صالح على نبينا وعليه السلام لكل رغوة اجل يوم تمتعوا فى داركم ثلاثة ايام ذلك وعد غير مكذوب فلما اصبحوا فى اليوم الرابع اتتهم صيحة من السماء فيها صوت كالصاعقة فتقطعت قلوبهم فى صدورهم فاصبحوا فى ديارهم جاثمين فهذا معنى قوله فقال اي السقب وهو رغاؤه الا فاستمتعوا قوله ثلاثة ايام ظرف لاستمتعوا والرائد الطالب يقول انهم هلكوا جميعا بحيث لم يبق منهم احد يطلب هل تحقق وصدق ما قال السقب من هلاكهم بعد ثلاثة ايام او لم يبق طالب يطلب من الناس هل صدق السقب لان طلب التصديق يكون فى الامر المشكوك وهذا معلوم متحقق وهذه القصيدة لحسان رضى الله عنه كتبتها من ديوانه صنع ابى سعيد السكري رحمه الله

## الخنساء الشاعرة

### رضى الله عنها

فى مرثية اخيها صخر بن عمرو بن الشريد وقدمرت ترجمتها فى باب الباء

من المتقارب

أَعينيَّ جُودا ولا تَجْمُدا ... ألا تَبكيان لصخر النَّدى

ألا تبكيان الجريءَ الجميل ... ألا تبكيان الفتى السَّيِّدا

طويلَ النِّجاد رفيع العماد ... ساد عشيرته امردا

اذا القوم مَدّوا بايديهم ... الى المجد مدّ اليه اليدا

فنال الذى فوق ايديهمو  من المجد ثم مضى مُصعِدا

يُكلِّفُه القومُ ماعالَهم  وان كان اصغرهم مولدا

ترى الحمد يَهوِى الى بيته  يرى افضلَ الكسب ان يُحمَدا

قوله اعينيّ الخ الهمزة للنداء والاضافة فى صخر الندى للمبالغة كما فى حاتم الجود والندى الجود قولها طويل النجاد النجاد حمائل السيف والمراد طول القامة وهذا مما يمدح به الشريف قال جرير

فانّى لارضى عبد شمس وما قضت  وارضى الطِّوال البيض من آل هاشم

وقال مروان بن ابى حفصة يمدح المهديّ

قصرت حمائله عليه فقاصت  ولقد تأنّق قينها فأطالها

و قولها رفيع العماد انما تريد ذاك اعني الطول يقال رجل معمّد اي طويل ومنه قوله تعالى ارم ذات العماد اي الطوال كذا فى الكامل للمبرد وفى الاساس فلان رفيع العماد اي شريف لرفعة عماد خباء الشريف منهم قال الاعشى

طويل النجاد رفيع العماد  يحمى المضاف ويعطى الفقيرا

وفى النهاية فى حديث امّ زرع زوجي رفيع العماد ارادت عماد بيت شرفه والعرب تضع البيت موضع الشرف فى النسب والحسب والعماد والعمود الخشبة التى يقوم عليها البيت وقولها ماعالهم اي ما نابهم تقول العرب ما عالك فهو عائلي اي ما نابك فهو نائبي و هذا الشعر للخنساء رضى الله عنها مذكور فى الكامل لابى العباس المبرد بردّ الله مضجعه ومنه كتبته

# زيد الخيل بن مهلهل الطائى

## رضي الله عنه

لمّا احسّ بالموت عائدا من المدينة الى وطنه فلما بلغ الى ماء بنجد يقال له فردة مات

### الترجمة

قدذكر نسبه فى نسب ابنه مكنف فى باب الباء وانه كان يكنى به فيقال له ابو مكنف وكان زيد الخيل رضى الله عنه فارسا شجاعا مغوارا مظفرا بعيد الصوت فى الجاهلية وادرك الاسلام ووفد على النبي عليه السلام سنة تسع فى وفد طيئ واسلم وسر به رسول الله عليه السلام وسمّاه زيد الخير وقال له ماوصف لى احد فى الجاهلية فرأيته فى الاسلام الا رأيته دون الصفة غيرك (استطراد) ذكر فى تاريخ ابن خلكان فى ترجمة الشريف ابى السعادات ابن الشجرى نقلا عن كتاب مناقب الادباء لابى البركات عبد الرحمن بن الانبارى النحوي قال ان العلّامة الزمخشري لما قدم بغداد قاصدا الحج فى بعض اسفاره مضى الى زيارة شيخنا ابى السعادات ابن الشجري فمضينا معه اليه فلما اجتمع به انشده الشيخ قول المتنبي

واستكبر الاخبار قبل لقائه ... فلما التقينا صغر الخبرَ الخبرْ

ثم انشده بعد ذلك

كانت مسائلة الركبان تخبرنا ... عن جعفر بن فلاح احسن الخبر

حتى التقينا فلا والله ما سمعت ... اذنى باحسن مما قد رأى بصرى

فقال الزمخشرى روى عن النبى عليه السلام انه لما قدم عليه زيد الخيل قال له يازيد ماوصف لى احد فى الجاهلية فرأيته فى الاسلام الا رأيته دون ماوصف لى غيرك قال ابن الانبارى فخرجنا من عنده ونحن نعجب كيف يستشهد الشريف بالشعر والزمخشرى بالحديث و هو رجل اعجمى انتهى اقول ولاينقضى العجب من عجبهم رجعنا الى ترجمة زيد الخيل رضى الله عنه قال فى الاغانى وانما سمى زيد

الخيل لكثرة خيله وانه لم يكن لاحد من قومه ولا لكثير من العرب الا الفرس والفرسان وكانت له خيل كثيرة منها المسماة المعروفة التى ذكرها فى شعره وهى ستة ذكرها باسمائها واشعارها فى الاغانى ولما اسلم زيد الخيل اقطعه رسول الله عليه السلام ارضين فى ناحيته فلما ولى من عند النبى عليه السلام قال النبى عليه السلام اى رجل ان سلم من آطام المدينة فاخذته الحمى فمكث سبعا بالمدينة ثم اشتدت الحمى به فخرج فقال لاصحابه جنبونى بلاد قيس فقد كانت بيننا حماسات فى الجاهلية ولا والله لا اقاتل مسلما حتى القى الله مسلما فلما انتهى الى بلد نجد الى ماء يقال له فردة اشتدت به الحمى فلما احس بالموت انشأ يقول

من الطويل

امر تحل قومى المشارق غدوة ... واتركك فى بيت بفردة منجد

سقى الله ما بين القفيل فطابة ... فما دون ارمام فما فوق منشد

هنالك لو انى مرضت لعادنى ... عوائد من لم يشف منهن يجهد

فليت اللواتى عدننى لم يعدننى ... وليت اللواتى غبن عنى عودى

امر تحل قومى اذاهب قومى والمشارق مفعول مرتحل بنزع الخافض وغدوة ظرف بمعنى بكرة اوما بين صلاة الفجر الى طلوع الشمس وهى غير منصرفة عند بعضهم اردت غدوة معينة اولا للعلمية الجنسية وعند بعضهم اذا اريدت غدوة معينة لم تنصرف واذا لم ترد تنصرف وكذلك بكرة وهى منونة فى البيت وفردة اسم لماء بنجد كما عرفت ومنجد صفة للبيت بمعنى الكائن فى نجد قوله سقى الله مابين القفيل الخ القفيل كامير جبل ببلاد طئ وطابة موضع فى ارض طئ كذا فى معجم البلدان وارمام وادبين الحاجر وفيد وفيد فلاة اقطعها النبى عليه السلام لزيد الخيل رضى الله عنه ويوم ارمام من ايام العرب ومنشد كمحسن موضع فى جبال

طئ قوله هنالك لوانى مرضت الخ هنالك اشارة الى الا ماكن السابقة فى بلاد طئ وقوله لعادنى اى لزارنى من عيادة المريض وعوائد جمع عائدة بمعنى زائرة ولم يشف من شفا المريض اذا ابرأه ويجهد بمعنى يجتهد والتذكير فى يشف ويجهد على لفظ من يريد انه لوكان مرض فى بلاده لعادته عوائد من نساء قومه يتطببن له ويخدمنه ولايقصرن جهدا فى خدمته ومعالجته شفين اولا قوله فليت اللواتى عدنى الخ يريد انه مرض فى الغربة فى غير قومه فعادته الغريبات الاجنبيات وغابت عنه نساء الحى فتمنى خلاف ذلك والمراد تمنى لازمه وهو عدم مرضه فى بلاد الغربة ويروى مكان لم يشف لم يبرمن من البرء اوالابراء وخلاصة الابيات اظهار التوجع والحزن على مرضه وموته فى الغربة ومات رضى الله عنه بفردة وكان معه كتاب رسول الله عليه السلام لبنى نهان وكتابه بقطع ارضين له واقام عليه قبيصة بن الاسود المناحة سبعا ثم بعث راحلته ورحله فلما نظرت امرأة زيد الخيل وكانت على الشرك الى راحلته ليس هو عليها ضربتها بالنار فاحرقت ماعليها من كتب رسول الله صلى الله عليه وسلم وهذا الشعر لزيد الخيل رضى الله عنه مسطور فى كتاب الاغانى لابى الفرج الاصفهانى رحمه الله ومنه كتبته

## سواد بن قارب

## رضى الله عنه

يرثى النبي عليه السلام ويثبت قومه على الاسلام بعد وفاة النبي عليه السلام وقد مرت ترجمته

من الكامل

جَلَّت مُصيبتُك الغداةَ سَوادُ ... وَارى المصيبةَ بعدها تَزدادُ

ابقى لنا فقدُ النبيِّ محمّدٍ ... صلّى الاله عليه ما يَعتادُ

حُزناً لعمرك فى الفؤاد مُخامرا ... أم هل لمن فقد النبي فؤاد

كنا نحل به جنابا ممرعاً  جف الجناب فاجدب الرواد

قال الامام السهيلي في الروض الانف ولسواد بن قارب رضي الله عنه متمم حميد في دوس حين بلغهم وفاة النبي عليه السلام فقام حينئذ سواد رضي الله عنه فقال يامعشر دوس ان من سعادة القوم ان يتعظوا بغيرهم ومن شقا وتهم ان لايتعظوا الابانفسهم وان من لم تنفعه التجارب ضرته ومن لم يسعه الحق لم يسعه الباطل وانما تسلمون اليوم بما اسلمتم به امس وقد علمتم ان نبي الله عليه السلام قد تناول قوما ابعد منكم فظفر بهم واوعد اكثر منكم فاخافهم ولم يمنعه منكم عدة ولاعدد وكل بلاء منسي الامايبقى اثره في الناس ولاينبغي لاهل البلاء الا ان يكونوا اذكر من اهل العافية للعافية وانما كف نبي الله عنكم ما كفكم عنه فلم تزالوا خارجين عن اهل العافية حتى قدم على رسول الله عليه السلام خطيبكم فعبر الخطيب عن الشاهد ونقب النقيب عن الغائب ولست ادري لعله تكون للناس جولة فان تكن فالسلامة منها الاناة والله يحبها فاحبوها فاجابه القوم وسمعوا قوله فقال سواد في ذلك جلت مصيبتك الغداة سواد الابيات انتهى كلام السهيلي قوله جلت اي عظمت وسواد بحذف حرف النداء يريد نفسه وقوله بعدها اي بعد الغداة وقوله مايعتاداي ماجعله عادة له وقوله حزنا مفعول ابقى ومخامر امخالطا او مستترا قوله كنا نحل به الخ الجناب الناحية والممرع على صيغة الفاعل المخصب وجف يبس واجدب الرواداي قحطوا والرواد جمع رائد من الرود بمعنى الطلب يريد طالبي النجعة والمرعى شبه حالهم في حياة النبي عليه السلام وبعد وفاته بحال قوم نزلوا واديا مخصبا كثير المرعى مدة ثم جف نبات الوادي فاجدبوا في الانتقال من النعمة وحسن الحال الى البؤس والشدة

فبكت عليه ارضنا وسماؤنا  وتصدعت وجداً به الاكباد

قل المتاع به وكان عيانه  حلما تضمن سكرتيه رقاد

ان العيان هو الطريف وحزنه  باق لعمرك في الفؤاد تلاد

انّ النبيّ وفاتُه كحياته  الحقُّ حقٌّ والجهادُ جهادُ

تصدعت تقطعت ووجد احزنا والاكباد جمع كبدوالمتاع التمتع وهوالتنعم والعيان المعاينة والحلم بضمتين وبسكون اللام مايراه النائم فى نومه وقوله تضمن سكرتيه رقاد السكرة الشدة يقال سكرة الموت وسكرة النوم وتضمن على بناء المعلوم صفة حلما والعائد محذوف ويجوز حذفه فى الشعر وسكرتيه ظرف لتضمن والضمير المجرور راجع الى رقاد المؤخر لفظا المقدم رتبة لانه فاعل تضمن ومثله جائز اتفاقا كما فى قوله

شرّيوميها واخزاه لها  ركبت هند بحِدْج جملا

اي ركبت هند بحدج جملا فى شريوميها والرقاد النوم والمعنى ان عيانه عليه السلام كان كالحلم الذى تضمنه الرقاد فيمابين سكراته اوسكرتيه مفعول تضمن والضمير المجرور للحلم والمعنى تضمن الرقاد شدائد الحلم والوجه الاول احسن لشيوع استعمال السكرات فى النوم بخلافه فى الحلم وقوله ان العيان هوالطريف الخ الطريف الجديد والتلاد القديم يقول ان معاينته وشهوده عليه السلام كشيء جديد حدث ولم يمتد بعدوالحزن عليه وان كان جديدا فى نفسه كشيء قديم ممتد زمانه قوله ان النبى الخ يريدان دين الاسلام لايتغير بعدوفاته عليه السلام فهو باق بعد وفاته عليه السلام على ماكان عليه فى حياته من كونه حقا والجهاد المأمور به المأجور عليه فى حياته عليه السلام هوكذلك بعدوفاته عليه السلام اراد بذلك تثبيت قومه على الاسلام

لوقيل تَفْدون النبيّ محمّدا  بُذِلَتْ له الاموالُ والاولاد

وتسارعَتْ فيه النفوسُ ببذلها  هذا له الاغيابُ والاشهاد

هذا وهذا لايرد نبيّنا  لوكان يفديه فداه سَواد

بدلت بصيغة المجهول اي جعلت بدلا قال ابو عبيدة هذا باب المبدول من الحروف والمحول فذكر لفظ مدهته اي مدحته قال الازهرى وهذا يدل على ان بدلت متعد وقوله هذا له الاغياب والاشهاد الاغياب والاشهاد جمعا الغيب والشَّهْد الجمعين للغائب والشاهد وهذا اشارة الى النبي عليه السلام اي يفدى له من غاب ومن شهد اوهذا اشارة الى التسارع المفهوم من تسارعت او الى البدل اي يتسارع فى فدائه من غاب ومن شهد وقوله هذا وهذا لايرد نبينا يريد به استغراق الاشارة اي اشرت الى مااشرت لايرده شيئ مما اشرت اليه ولايفديه لوكان شيئ يفديه لفداه سواد ولم يضنّ فى هذا بنفسه

اِنّى اُحاذِرُ والحَوادِثُ جَمَّةٌ  اَمْراً لِعاصِفِ ريحه اِرْعاد

اِنْ جَلَّ منه مايُخاف فَاَنْتُمُوا  لِلاَرْض اِنْ رَجَفَتْ بِنا اَوْتاد

لوزادقوم فوق مُنْيَةِ صاحب  زِدْتم وليس لِمُنْيَةٍ مُزْداد

احاذر احذر واخاف قوله والحوادث جمة اي كثيرة وهو اعتراض بين الفعل ومفعوله وهو امرا وقوله لعاصف ريحه من اضافة الصفة الى موصوفها اي ريحه العاصف وهي الشديدة المهبة وقوله ارعاد اي صوت كصوت الرعد فى الشدة والهيبة والامر الذى كان يخافه هو الافتنان فى الدين والردة فشبه مايقع فى الافتنان والردة من شدة التهايج وظهور انواع المشكلات والمخافات بريح عاصف قوله ان جل منه مايخاف الخ اي ان عظم الامر المخوف منه واستفحل وبدأت مقدمات سرايته الى اوطاننا التي هي كارجاف الارض الذي هو مقدمة الهلاك والفناء فانتم محافظون ومانعون كالاوتاد المانعة عن الانهدام قوله لوزاد قوم الخ يريد بهذا البيت بيان حصول امنيته منهم وشكره على ما نال منهم من قبولهم نصحه وانه ليس له فوق ذلك مطلوب ومنية فقد نال تمام ماتمنى و هذا معنى قوله وليس لمنية مزداد اي زيادة وهذه القصيدة لسواد بن قارب رضى الله عنه مسطورة فى الروض الانف للسهيلى

رحمه الله كما قدمنا ومنه كتبتها

## الشّيماء بنت الحرث السّعديّة اخت النبي عليه السلام رضاعا

## رضى الله عنها

ترقّصه صلى الله عليه وسلّم فى صغر سنّه

### الترجمة

هي الشيماء اوالشّماء بنت الحرث بن عبدالعزّى بن رفاعة من بني سعد بن بكر من هو ازن و اسمها حذافة غلب عليها اسم الشيماء قال فى الاستيعاب اغارت خيل رسول الله عليه السلام على هوازن فاخذوها فيما اخذوا من السّبي فقالت لهم انا اخت صاحبكم من الرضاعة فلما قدموا بها قالت يامحمد انا اختك وعرفته بعلامة عرفها فرحب بها وبسط لها رداءه فاجلسها عليه ودمعت عيناه وقال لها ان احببت فاقيمي مكرمة محبّة وان احببت ان ترجعي الى قومك اوصلتك فقالت بل ارجع الى قومي فاعطاها نعما وشاء انتهى والعلامة التى عرّفته عليه السلام بها هي على ما روى ابن اسحق عضة عضّها فى ظهرها و هي متوركة اياه و كانت تحضنه مع امّها حليمة السعدية رضى الله عنها قال فى الاصابة وذكر محمد بن المعلّى الازدي فى كتاب الترفيص قال وقالت الشيماء ترقص النبي عليه السلام وهو صغير

من مشطور الرجز

يارَبَّنا اَبْقِ لَنا محمدا  حتّى اَراهُ يافعاً و امْرَدا

ثُمَّ اَراه سَيِّداً مسوَّدا  وَاكْبِتْ اَعاديه مَعاً وَالْحُسَّدا

وَاَعْطِهِ عِزّاً يَدوم ابدا

قال فكان ابوعروة الازدي يقول اذا انشد هذا ما احسن هذا اجاب الله

دعائها انتهى ما فى الاصابة يقال غلام يافع ويَفَعَة ويَفَع متر عرع والمسوّد من السودد اي الذي جعل سيدا وكبته يكبته صرعه و اخزاه وكبت العدوّ ردّه بغيظه و اذلّه وفى التنزيل كبتوا كما كبت الذين من قبلهم و فيه ايضا او يكبتهم فينقلبوا خائبين قال الزجاج كبتوا اخذو بالعذاب بان غلبوا كما نزل بمن كان قبلهم ممن حادّ الله وقال الفراء اغيظوا واحزنوا يوم الخندق كما كبت من قاتل الانبياء من قبلهم

## الطُفَيل بن عمرو الدّوسيّ ذوالنور

## رضي الله عنه

يخاطب قريشا وكانوا هددوه لما اسلم

## الترجمة

هو الطفيل بن عمرو بن طريف بن العاص بن ثعلبة بن سليم بن فهم بن غنم بن دوس الدوسي قدم مكة وحذرته قريش عن رسول الله عليه السلام وقالو انك رجل مطاع فى قومك شاعروا ناقد خشينا ان يلقاك هذا الرجل فيصيبك ببعض حديثه فانما حديثه كالسحر فقصد ان لايسمع من رسول الله عليه السلام فعمد الى اذنيه فحشا هما كر سفا ثم غدا الى المسجد فوجد رسول الله عليه السلام فى المسجد فقام قريبا منه وابى الله الا ان يسمعه بعض قوله فقال فى نفسه والله ان هذا لمفخر وانا رجل ثَبْت لايخفى علي من الامور حسنها ولا قبيحها والله لاستمعن منه فان كان امره رشدا اخذت منه وان كان غير ذلك اجتنبته فاخرج الكرسنة من اذنيه فاستمع لقوله عليه السلام قال فلم اسمع كلاما قط احسن من كلام يتكلم به ثم انتظر رسول الله عليه السلام حتى انصرف فتبعه فدخل معه بيته ثم قال يامحمد ان قومك جاؤنى فقالوا لى كذا وكذا و قد ابى الله الا ان اسمع منك ما تقول و قد وقع فى نفسي انه حق فاعرض علي دينك و ما تأمر به وما تنهى عنه فعرض عليه رسول الله عليه السلام الاسلام فاسلم ثم قال يا رسول الله انى ارجع الى دوس وانا مطاع فيهم وانا داعيهم الى الاسلام لعل الله ان يهديهم فادع الله ان يجعل لى آية تكون لى عونا عليهم فيما ادعوهم اليه فقال اللهم اجعل له آية تعينه على ماينوي

من الخير قال فخرجت حتى اشرفت على ثنيّة اهلى التى تهبطنى على حاضر دوس قال وابى هناك شيخ كبير و امرأتى ووالدتى قال فلما علوت الثنية وضع الله بين عيني نورا يتراآه الحاضر فى ظلمة الليل و انا منهبط من الثنية فقلت اللهم فى غير وجهي فانى اخاف ان يظنوا انه مُثْلة لفراق دينهم فتحول فى رأس سوطي فلقد رأيتني اسير على بعيري اليهم و انه على رأس سوطي كانه قنديل معلق فيه حتى قدمت قال فاتانى ابى فقلت اليك عني فلست منك ولست مني قال وما ذاك قال قلت اسلمت واتبعت دين محمد فقال أَيْ بُنَيَّ فان ديني دينك قال فاسلم وحسن اسلامه قال ثم اتتني صاحبتي فقلت اليك عني فلست منك ولست مني قالت و باذاك بابى وامي انت قلت اسلمت واتبعت دين محمد فلست تحلّين لى ولست احلّ لك قالت فدينى دينك قلت فاعمدي الى هذه المياه فاغتسلى منها وتطهري وتعالى قال ففعلت ثم جاءت فاسلمت وحسن اسلامها ثم انه دعا دوسا الى الاسلام فابت عليه وتعاصت ثم قدم على رسول الله عليه السلام مكة فقال يا رسول الله غلب على دوس الزنا والربا فادع الله عليهم فقال اللهم اهد دوسا ثم رجع طفيل رضى الله عنه اليهم وهاجر رسول الله عليه السلام الى المدينة فاقام بين ظهر انيهم يدعوهم الى الاسلام حتى استجاب له من استجاب منهم وسبقه بدر واحد والخندق مع رسول الله عليه السلام ثم قدم على رسول الله عليه السلام بثمانين اوتسعين اهل بيت من دوس الى المدينة فكان مع رسول الله عليه السلام حتى فتح الله مكة ثم استأذن من رسول الله عليه السلام ان يبعثه الى ذى الكُفَيْن صنم عمر وبن حُمَمَةَ الدوسي المعمّر حتى يحرقه فاذن له فخرج حتى حرقه وله فى ذلك شعر نذكره فى باب الكاف ان شاء الله ثم قدم على رسول الله عليه السلام فاقام معه حتى قبض رسول الله عليه السلام فلما بعث ابو بكر رضى الله عنه بعثه الى مسيلمة خرج ومعه ابنه عمر وبن الطفيل فى البعث حتى اذا كانوا ببعض الطريق رأى رؤيا فقال لاصحابه انى رايت رؤيا فعبروها قالوا وما رايت قال رأيت رأسى حلق وانه خرج من فمي طائر وان امرأة لقيتنى وادخلتنى فى فرجها وكان ابنى يطلبنى طلبا حثيثا فحيل بينى وبينه قالوا خيرا فقال اما انا والله فقد اولتها اما حلق رأسى فقطعه واما الطائر فروحى واما المرأة التى ادخلتنى فرجها فالارض تحفر لى فادفن فيها فقدر جوت ان اقتل شهيدا واما طلب ابنى فلا اراه الا سيغ وعلى

طلب الشهادة ولا اراه يلحق فى سفرنا هذا فقتل الطفيل شهيدا يوم اليمامة وجرح ابنه ثم قتل باليرموك شهيدا والطفيل رضى الله عنه يلقب بذى النور للقصة التى قدمناها من ظهور النور على سوطه وترجمته رضى الله عنه على ما كتبنا ملخص ما فى الاستعاب وفى كثير من الكتب ان الطفيل رضى الله عنه سأل رسول الله عليه السلام ان يحول نوره من وجهه لئلا يظنوا انه مثلة فدعا رسول الله عليه السلام فجعله الله فى سوطه وذكر ابو العباس المبرد فى اواخر الكامل فى باب اذواء اليمن ان ذا النور عبد الله بن الطفيل وان قصة النور له وكذا ذكر ابن الاثير فى تاريخه قال فى الاصابة وانشد المرزبانى فى معجمه للطفيل بن عمرو رضى الله عنه يخاطب قريشا ويقول

من الوافر

اَلا اَبْلِغْ لديك بَنى لُؤَىّ ... على الشَّنَأَنِ والغضب المُرِدِّ

بِانّ الله رَبُّ النّاسِ فَرْد ... تَعالى جَدُّه عن كلّ نِدّ

وان محمدا عبد رسول ... دليل هُدىً ومُوضِحُ كلّ رشد

وان الله جَلَّلَهُ بَهاءً ... وَاَعْلى جَدَّه فى كلّ جَدّ

الشنأن كالنزوان بمعنى البغض مصدر شنأه كمنعه وسمعه اي ابغضه ومنه ولا يجرمنكم شنأن قوم وان شانئك هو الابتر وعلى بمعنى مع والمردّ على صيغة اسم الفاعل فى الاصل الرجل الشديد الغضب فوصف به الغضب للمبالغة كشعر شاعر وجد جده وقوله تعالى جده اي علا وجل جلاله وعظمته ومنه فى التنزيل وانه تعالى جد ربنا وفى الدعأ وتعالى جدك والند المثل المناوى وجلله بهاء اي عمّه ومنه سحاب مجلّل كأنه يعمّها بالمطر وفى دعاء الاستسقاء مجللا سحا والبهاء الحسن وقوله واعلى جده فى كل جد ضمير اعلى الى الله سبحانه وجده بالنصب مفعول اعلى والجد ههنا السّعادة وقد قدمنا ان هذا الشعر من الاصابة عن المرزبانى

## عاتكة بنت زيد بن عمرو بن نُفَيْل العَدَوِيّة

## رضى الله عنها

ترثى زوجها الزبير بن العوام احد العشرة المبشرة رضوان الله تعالى عليهم

من الكامل

غَدرا بنُ جُرْموزٍ بفارس بُهْمَةٍ ... يوم اللِّقاء وكان غيرَ مُعَرِّدِ

يا عَمْرو لو نَبَّهْتَه لوجدتَه ... لاطائشا رَعِشَ الجَنان ولا اليد

كم غَمْرَةٍ قد خاضَها لم يَثْنِه ... عنها طِرادُكَ يا ابنَ فَقْعِ القَرْدَدِ

ثَكِلَتْكَ اُمُّك ان ظَفِرت بمثله ... فيما مضى ممّن يروح ويغتدى

واللهِ رَبِّك انْ قَتلتَ لَمُسْلِماً ... وجَبَتْ عليك عقوبةُ المتعمد

قد سبقت ترجمة عاتكة رضى الله عنها فى باب الباء قولها غدرا بن جرموز الخ ابن جرموز هو عمرو بن جرموز التميمي ثم احد بني مجاشع بن دارم رهط الفرزدق قاتل الزبير بن العوام رضى الله عنه قتله بوادي السباع منصرفه من وقعة الجمل وفارس بهمة تريد به الزبير رضى الله عنه والبهمة بضم الباء ههنا الجيش يقال فلان فارس بهمة وليث غابة قال متمم بن نويرة

وللشَّرب فابكى مالكا ولبُهْمَةَ ... شديد نواحيها على من تشجّعا

والمعرّد على صيغة اسم الفاعل من عرّد اذا فرّ وانهزم قولها يا عمرو لو نبهته الخ لو نبهته اي لوا علمته بانك تريد قتله ذكر فى تاريخ ابن الاثير ان ابن جرموز لما التقى مع الزبير قال له الزبير ما وراءك قال انما اريد ان اسألك فقال ابن جرموز الصلاة فقال الزبير رضى الله عنه الصلاة فلما نزلا استدبره ابن جرموز فطعنه فى جِرِبّان

درعه اي جيبه فقتله والطائش من الطيش وهو الخفة التي هي ضد الوقار والسكينة وهو مذموم والرعش ككتف المرتعد والجنان بفتح الجيم القلب تريد لوجدته غير جبان قولها كم غمرة قد خاضها الخ كم خبرية والغمرة الشدة وخاضها دخل فيها ولم يثنه لم يصرفه والطراد مصدر طارد يطارد اذا اجرى خيله في الميدان ومعنى فقع القردد سبق في شعر ضرار بن الخطاب الفهري رضى الله عنه في باب الباء قولها ثكلتك امك الخ ثكلتك فقدتك من الثكل وهو فقدان المرأة ولدها ويقال امرأة ثاكل و ثكلى و هذا دعاء عليه وقولها ان ظفرت بمثله ان نافية اي لم تظفر بمثله فيما مضى قولها والله ربك ان قتلت لمسلما ان مخففة من المثقلة دخلت على غير نواسخ المبتدأ والخبر وهو شاذ عند البصريين و لمسلما مفعول قتلت واللام لام الابتداء الفارقة واما عند الكوفيين النافين لان المخففة فان نافية واللام بمعنى الا هذا وجملة ان قتلت جواب القسم وجملة وجبت عليك عقوبة المتعمد استيناف كانه قيل ماشان حكمي في قتل مسلم ووقع في بعض الروايات صدر البيت هكذا شلت يمينك ان قتلت لمسلما وهو الذي اثبته العيني في شرح شواهد الالفية ويروى ايضا هبلتك امك وهو في معنى ثكلتك امك و هذه الابيات لعاتكة رضى الله عنها مسطورة في الاستيعاب ومنه كتبتها وفي شرح شواهد الرضى للفاضل البغدادي زيادة بيت وهو

ان الزبير لذو بلاء صادق  سمح سجيته كريم المشهد

## عاتكة بنت زيد بن عمرو بن نفيل العدوية

## رضى الله عنها

ترثي زوجها عمر بن الخطاب رضى الله عنه

من الرمل

مَن لعينٍ عادَها احزانُها  ولعينٍ شفَّها طولُ السهد

جسدٌ لُفَّ في اكفانه  رحمة الله على ذاك الجسد

فيه تفجيع لمولى غارم  لم يدعه الله يمشي بسبد

عادها جاءها قالوا والعود بمعنى الابتداء قد يستعمل وفى التنزيل وما يكون لنا ان نعود فيها وشفها اضرّبها ونقصها والسهد بضم السين وسكون الهاء الارَق ولكنه يقرأ ههنا بضم الهاء للوزن وجسد خبر لمبتدأ محذوف اي هذا تعني المرثىّ جسد وجملة لفف صفة للجسد وجمله رحمة الله على ذاك الجسد اعتراض بين الصفات لان قولها فيه تفجيع لمولى غارم صفة ايضا لجسد والغارم الذي لحقه الغرامة وجملة لم يدعه الله صفة مولى والمولى الصديق والقريب والسبد الشعر يقولون ماله سبد ولا لبد واللبد الصوف فمعنى لم يدعه الله يمشى بسبد افقره فلم يبق شيئا والكلام تحسر وتلهف تقول رحم الله جسداجهز بما يجهز به الموتى وفجع به مواليه الذين كانوا يعيشون فى فنائه واذالحق احدهم غرم احتمل عنهم وهذا الشعر لعاتكة رضى الله عنها مسطور فى باب المراثى من ديوان الحماسة لابى تمام الطائى ومنه كتبته

## عاصم بن ثابت الانصارى

### رضى الله عنه

فى يوم الرجيع حين قتل شهيدا فى سبيل الله

### الترجمة

هو عاصم بن ثابت بن ابى الافلح واسمه قيس بن عصمة بن النعمان بن مالك بن امية بن ضبيعة بن زيد بن مالك بن عوف بن عمرو بن عوف بن مالك بن اوس الانصارى الاسى رضى الله عنه من السابقين الاولين من الانصار شهد بدرا واحدا مع رسول الله عليه السلام واستشهد يوم الرجيع وقدمرت قصة غزوة الرجيع وكيفية شهادة عاصم بن ثابت رضى الله عنه فى باب الباء فى شعر حسان رضى عنه صلى الاله على الذين تتابعوا وهوجد عاصم بن عمر بن الخطاب رضى الله عنه لامه ومن ولد عاصم بن ثابت الاحوص الشاعر واسمه عبدالله بن محمد بن عاصم بن ثابت

قال رضى الله عنه

من مشطور الرجز

ابو سليمان و ريش المقعد  وضالة مثل الجحيم الموقد

اذا النواحي افترشت لم ارعد  ومجنأ من جلد ثور اجرد

ومؤمن بما على محمد

ابوسليمان كنية عاصم بن ثابت رضى الله عنه والريش ريش السهام والمقعد ويروى المعقد هو اسم رجل كان يريش لهم السهام والمعنى انا ابو سليمان ومعى سهام راشها المقعداو المعقد فما عذرى فى ان لا اقاتل وقيل المقعدفرخ النسرو ريشه اجود والضالة من شجر السدر البرى وما كان على شطوط الانهار يسمى عبريا قال الشاعر

قطعت اذا تخوفت العواطى  ضروب السدر عبريا وضالا

تخوفت تنقصت ومنه قوله تعالى اويأخذهم على تخوف اى تنقص والعواطى المواشى يريد انه قطع الصحراء زمان تعاطى المواشى اى تنا ولها اوراق السدر وذلك انما يكون فى الصيف والضال يعمل منه السهام والجحيم من اسماء النار والمعنى ومعى سهام قداحهـا من الضال وشبهها بالجمر لتوقدها وقوله اذا النواحى افترشت لم ارعد افترشت على بناء المجهول اى صارت فرشا للقتلى من افترش ثوبا اوترابا تحته وتقول كنت افترش الرمل واتوسد الحجر ولم ارعد لم اجبن والمجنأ الترس سمى به لاحد يدابه واصل الجنأ الاحديداب وقوله ومؤمن بما على محمد اي بما انزل على محمد عليه السلام اوبما وجب عليه تبليغه على الناس والمأل واحد وحاصل معنى شعره انه يقول انا الرجل المعروف بالشجاعة و سلاحى كامل وانا مؤمن بما انزل على محمد عليه السلام فاعرف فضل القتال والصبر فيه وفضل الشهادة فما عذرى فى ان لا اقاتل رضى الله عن عاصم فلقد صدق وابقى له ذكرا فى الآخرين والله سبحانه وتعالى يبوئه اعلى عليين وهذا الشعر لعاصم بن ثابت رضى الله عنه مسطور فى سيرة ابن هشام ومنها كتبته

# عبد الله بن أنيس الجهنى

## رضى الله عنه

### فى قتله خالد بن سفيان الهذلى

### الترجمة

قال فى الاصابة عبدالله بن انيس الجهنى ابو يحيى المدنى حليف بنى سلمة من الانصار وقال ابن الكلبى والواقدى هو من ولد البرك بن وبرة اخى كلب بن وبرة من قضاعة قال ابن الكلبى اسم جده اسعد بن حرام بن خبيب بن مالك بن غنم بن كعب بن تيم وقد دخل البرك فى جهينة فقيل له الجهني والقضاعي والانصاري والسلمي بفتحتين لذلك انتهى قلت وجهينة ابن زيد بن ليث ابن سود بن اسلم بن الحاف بن قضاعة وكان عبدالله ابن انيس رضى الله عنه من فضلاء الصحابة قال ابن الكلبي كان مهاجريا انصاريا عقبيا شهد احدا وما بعدها وذكره ابن اسحق فيمن كسر آلهة بني سلمة قال والذين كسروا آلهة بني سلمة معاذ بن جبل وعبدالله بن انيس وثعلبة بن غنمة وعبدالله بن انيس هذا هو الذي رحل اليه جابر بن عبدالله رضى الله عنه مسيرة شهر فى حديث واحد كما ذكر البخارى فى كتاب العلم من الصحيح قال فى الاستيعاب توفى عبدالله بن انيس رضى الله عنه سنة اربع وخمسين قال فى الاصابة والمعروف انه مات بالشام سنة اربع وخمسين فما ذكر الامام السهيلى فى اواخر الروض الانف ان عبدالله بن انيس لم يزل يهزل ويضنى بعد النبي عليه السلام حتى مات كمدا فلعله غيره فان فى الصحابة من يسمى بعبدالله بن انيس غيره وفى سيرة ابن هشام ان النبى صلى الله عليه وسلم بلغه ان خالد بن سفيان بن نبيح الهذلى يجمع له الناس ليغزوه وهو بنخلة او بعرنة فامر عبدالله بن انيس ان يأتيه فيقتله فخرج عبدالله فوجده فى ظعن يرتاد لهن منزلا وكان دخل وقت العصر فخاف عبدالله ان تكون بينهما محاولة تشغله عن صلاة العصر فصلى العصر اولا ثم مشى نحوه يؤمي اليه برأسه فلما انتهى اليه قال من الرجل فقال عبدالله رجل من العرب سمع بك وبجمعك لهذا الرجل فجاءك لذلك قال اجل انى لفى ذلك فمشى معه عبدالله حتى اذا امكنه حمل عليه بالسيف فقتله ثم خرج وترك ظعائنه منكبات عليه فلما

قدم على رسول الله عليه السلام فرأه قال افلح الوجه فقال قتلته يا رسول الله فقال صدقت ثم قام فادخله بيته واعطاه عصا وامره ان يمسكها عنده فخرج بها على الناس فقالوا له الا ترجع الى رسول الله صلى الله عليه وسلم فتسأله لم ذلك فرجع فسأله فقال آية بيني وبينك يوم القيامة ان اقل الناس المتخصرون يومئذ فقرنها عبدالله رضى الله عنه بسيفه فلم تزل معه حتى مات ثم امر بها فضمت ثم دفنا جميعا قال ابن هشام فقال عبدالله بن انيس رضى الله عنه فى قتله خالد بن سفيان الهذلى

تَرَكْتُ ابْنَ ثَوْر كالحُوار وحولَه ... نَوائِحُ تَفْرى كلّ حَبْيب مُقَدَّدِ — من الطويل

تناوَلْتُه والظُّعْنُ خَلْفى وخلفَه ... بابيضَ من ماء الحديد مهنّد

عَجُومٍ لِهامِ الدّار عينَ كأنّه ... شهاب غَضاً من مَلْهب مُتَوَقِّد

اقول له والسيف يَعْجُم رأسَه ... انا ابن انيس فارساً غير قُعْدُد

انا ابن الذى لم يُنْزِلِ الدَّهرَ قِدْرَه ... رحيبُ فِناءِ الدّارِ غيرُ مُزَنَّد

وقلتُ له خُذْها بضَرْبَة ماجد ... حنيف على دين النبي محمد

وكنت اذا هَمَّ النبيُّ بكافر ... سَبقتُ اليه باللسان وباليد

قوله تركت ابن ثور الخ لعلّ ثورا كان احد ابائه فنسبه اليه والحوار ولد الناقة حين يولد والتشبيه فى العجز اوفى التلطّخ بالدم والنوائح جمع نائحة وتفرى تشق يقال فراه يفريه كفرّاه وافراه كذا فى القاموس والمقدد المقطع المشقوق يريد ما كانت النوائح تفعل من شق الجيوب قوله تناولته والظعن الخ الظعن بالضم جمع ظعينة وهى فى

الاصل الهودج ثم قيل للمراة فى الهودج ثم قيل للمراة مطلقا قوله عجوم لهام الدارعين الخ عجوم فعول من عجمه عجما اذا عضه ومضغه قال النابغة يصف قتال كلب لثور وحشى

فظلّ يعجم اعلى الرَّوْق منقبضا  فى حالك اللون صدق غير ذى عوج

اي يعضّ ويمضغ اعلى قَرْنه وهو يقاتله ثم يستعمل العجم فى اصابة السيف والهام جمع هامة بمعنى الرأس والدارع لابس الدرع والغضا شجر معروف قوله اقول له الخ فارسا حال مؤكدة جاءت لتقرير مضمون الخبر ومضمونه ههنا الفخر كما فى قول ابن دارة

انا ابن دارة مشهورا بها نسبى  وهل بدارة يا للناس من عار

دارة اسم ام الشاعر ويقال انا حاتم جوادا والقعدد بضم القاف والدال وبفتح الدال ايضا الجبان اللئيم القاعد عن الحرب والمكارم والخامل قوله انا ابن الذى لم ينزل الدهر قدره الخ لم ينزل من الانزال والدهر بالنصب على الظرفية وقدره مفعول لم ينزل والقدر بالكسر مايطبخ فيه الطعام وهو كناية عن كونه ابن رجل كريم مضياف وكذا قوله رحيب فناء الدار اى واسعه ينزل فيه الاضياف ويربطون دوابّهم وقوله غير مزند المزند البخيل المضيق قوله وقلت له خذها الخ كان من عادتهم اذا رموا اوطعنوا اوضربوا ان يقولوا خذها وانا ابن فلان كما مر من قول سلمة بن الاكوع رضى الله عنه خذها وانا ابن الاكوع فضمير خذها فى مثله راجع الى الرمية اوالطعنة اوالضربة والبأ فى قوله بضربة ماجد للتجريد واصلها الملابسة والمصاحبة يريد ان ضربته ضربة ماجد فانتزع منها ضربة ماجد مبالغة قوله وكنت اذا هم النبى بكافر الخ اى اذا قصد ايقاع ضرر بكافر عجلت اليه بالهجوم باللسان وبالقتال وهذه القصيدة لعبدالله بن انيس رضى الله عنه مسطورة فى سيرة ابن هشام ومنها كتبتها

## عبدالله بن جَحْش الأَسَدّى المُجَدَّع فى الله

## رضى الله عنه

فى سريّته الى بطن نخلة

## الترجمة

يعرف نسبه من نسب اخيه ابى احمد بن جحش المذكور فى باب الباء وهو صهر رسول الله عليه السلام واخو زينب بنت جحش ام المؤمنين رضى الله عنها وهو حليف بنى عبد شمس واسلم قديما بمكة قبل دخول النبى عليه السلام دار الارقم بن ابى الارقم وكان من المهاجرين الاولين هاجر الى الحبشة ثم هاجر الى المدينة وشهد بدرا واستشهد باحد ويعرف بالمجدع فى الله لانه مثل به يوم احد وقطع انفه قال فى الاستيعاب روى ابن وهب قال اخبرنى ابو صخر عن ابن قسيط عن اسحق بن سعد بن ابى وقاص رضى الله عنه عن ابيه ان عبد الله بن جحش رضى الله عنه قال له يوم احد الا تأتى فندعو الله فجلسا ناحية فدعا سعد وقال يارب اذا لقيت العدو غدا فلقنى رجلا شديدا بأسه شديدا حرده اقاتله فيك ويقاتلنى ثم ارزقنى عليه الظفر حتى اقتله وآخذ سلبه فامّن عبد الله بن جحش رضى الله عنه ثم قال اللهم ارزقنى غدا رجلا شديدا بأسه شديدا حرده اقاتله فيك ويقاتلنى ثم يأخذنى فيجدع انفى واذنى فاذا لقيتك غدا قلت ياعبد الله فيم جدع انفك واذنك فاقول فيك وفى رسولك فتقول صدقت قال سعد كانت دعوة عبد الله بن جحش خيرا من دعوتى لقد رأيته آخر النهار وان اذنه وانفه معلقان جميعا فى خيط وقال الزبير فى الموفقيات ان عبد الله بن جحش رضى الله عنه انقطع سيفه يوم احد فاعطاه رسول الله عليه السلام عرجون نخلة فصار فى يده سيفا يقال ان قائمته منه كان يسمى العرجون ولم يزل يتناول حتى بيع من بغا التركى بمائتى دينار ويقولون انه قتله يوم احد ابو الحكم بن الاخنس بن شريق الثقفى وهو يوم قتل ابن نيف واربعين سنة وعقد رسول الله عليه السلام لواء لعبد الله بن جحش رضى الله عنه وامره على ثمانية رهط من المهاجرين فروى عاصم الاحول عن الشعبى ان اول لواء عقده رسول الله عليه السلام فلعبد الله بن جحش وقال بن اسحق بل لواء عبيدة بن الحرث وقال المدائنى بل لواء حمزة بن عبد المطلب وذكر فى سيرة ابن هشام ان رسول الله عليه السلام لما امر عبد الله بن جحش على السرية اعطى له كتابا وامره ان لاينظر فيه حتى يسير يومين ثم ينظر فيه فيمضى لما امره به ولا يستكره احدا من اصحابه وكان اصحابه اباحذيفة بن عتبة بن

ربيعة وعكاشة بن محصن الاسدي وعتبة بن غزوان وسعد بن ابى وقاص وعامر بن ربيعة و واقد بن عبدالله التميمي و خالد بن البكير و سهيل بن بيضاء رضوان الله تعالى عليهم فلما سار عبدالله يومين فتح الكتاب فاذا فيه اذا نظرت فى كتابى هذا فامض حتى تنزل نخلة بين مكة والطائف فترصد بها قريشا وتعلم لنا من اخبارهم فلما نظر عبدالله رضى الله عنه فى الكتاب قال سمعا وطاعة ثم قال لاصحابه قد امرنى رسول الله عليه السلام ان امضي الى نخلة ارصد بها قريشا حتى آتيه منهم بخبر وقد نهانى ان استكره احدا منكم فمن كان يريد الشهادة ويرغب فيها فلينطلق ومن كره ذلك فليرجع فاما انا فماض لامر رسول الله عليه السلام فمضى ومضى معه اصحابه لم يتخلف منهم احد وسلك على الحجاز حتى اذا كان بمعدن فوق الفرع يقال له بحران اضل سعد بن ابى وقاص وعتبة بن غزوان بعيرا لهما كانا يعتقبانه فتخلفا عليه فى طلبه ومضى عبدالله وبقية اصحابه حتى نزل نخلة فمرت به عير لقريش تحمل زبيبا وادما وتجارة من تجارة قريش فيها عمرو بن الحضرمي وعثمان بن عبدالله بن المغيرة واخوه نوفل بن عبدالله المخزوميان والحكم بن كيسان مولى هشام بن المغيرة فلما رأهم القوم هابوا وقد نزلوا قريبا منهم فاشرف لهم عكاشة ابن محصن وكان قد حلق رأسه فلما رأوه امنوا وقالوا عُمّار لابأس عليكم منهم وتشاور القوم فيهم وذلك فى آخر يوم من رجب فقال القوم والله لئن تركتم القوم الليلة ليدخلن الحرم فليمتنعن به منكم ولئن قتلتموهم لتقتلنهم فى الشهر الحرام فتردد القوم وهابوا الاقدام عليهم ثم شجعوا انفسهم عليهم واجمعوا على قتل من قدروا منهم واخذما معهم فرمى واقد بن عبدالله التميمي عمرو بن الحضرمي بسهم فقتله واستأسر عثمان بن عبدالله والحكم بن كيسان وافلت القوم نوفل بن عبدالله فاعجزهم واقبل عبدالله بن جحش و اصحابه بالعير وبالاسيرين حتى قدموا المدينة وقد ذكر بعض آل عبدالله بن جحش انه قال لاصحابه ان لرسول الله عليه السلام الخمس مما غنمنا وذلك قبل ان يفرض الله الخمس من المغانم فعزل لرسول الله عليه السلام خمس العير وقسم سائر ها بين اصحابه فلما قدموا على رسول الله عليه السلام قال ما امرتكم بقتال فى الشهر الحرام فوقف العير والاسيرين وابى ان يأخذ من ذلك شيئا فلما قال ذلك رسول الله عليه السلام سُقط فى ايدي القوم وظنوا انهم قد هلكوا وعنفهم

اخوانهم من المسلمين فيما صنعوا وقالت قريش قداستحل محمد واصحابه الشهر الحرام وسفكوا فيه الدم واخذوا فيه الاموال واسروا فيه الرجال وقال من يرد عليهم من المسلمين ممن كان بمكة انما اصابو ما اصابوا فى شعبان فلما اكثر الناس فى ذلك انزل الله تعالى على رسوله عليه السلام يسئلونك عن الشهر الحرام قتال فيه قل قتال فيه كبير وصدّ عن سبيل الله وكفر به والمسجد الحرام واخراج اهله منه اكبر عندالله والفتنة اكبر من القتل اي قد كانوا يفتنون المسلم فى دينه حتى يردوه الى الكفر بعد ايمانه فذلك اكبر عندالله من القتل ولايزالون يقاتلونكم حتى يردوكم عن دينكم ان استطاعوا اي ثم هم مقيمون على اخبث ذلك واعظمه غير تائبين ولا نازعين فلما نزل القرأن بهذا من الامر وفرج الله عن المسلمين ما كانوا فيه من الشفق قبض رسول الله عليه السلام العير والاسيرين وبعثت اليه قريش فى فداء عثمان بن عبدالله والحكم بن كيسان فقال رسول الله عليه السلام لا نفديكموهما حتى يقدم صاحبانا يعني سعد بن ابى وقاص و عتبة بن غزوان رضى الله عنهما فانا نخشاكم عليهما فان تقتلوهما نقتل صاحبيكم فقدم عتبة وسعد ففداهما رسول الله عليه السلام منهم فاما الحكم بن كيسان فاسلم فحسن اسلامه واقام عند رسول الله عليه السلام حتى قتل يوم بئرمعونة شهيدا رضى الله عنه واما عثمان بن عبدالله فلحق بمكة فمات بها كافرا قال ابن هشام وغنيمة عبدالله بن جحش رضى الله عنه اول غنيمة غنمها المسلمون وعمرو بن الحضرمى اول من قتله المسلمون وعثمان بن عبدالله والحكم بن كيسان اول من اسر المسلمون فقال عبدالله بن جحش رضى الله عنه فى هذه الغزوة على ماقال ابن هشام رحمه الله

من الطويل

تَعُدّون قتلا فى الحرام عظيمةً ... واعظمُ منه لو يَرى الرُّشدَ راشدُ

صُدودُكمُو عمّا يقولُ محمدٌ ... وكفرٌ به والله راءٍ وشاهد

واخراجُكم من مسجد الله اهلَه ... لئلّا يُرى لله فى البيت ساجد

فانّا وانْ عيّرتمونا بقتله وارجف بالاسلام باغٍ وحاسد

سقينا من ابن الحضرمي رماحنا بنخلة لمّا اوقد الحرب واقد

قوله تعدون قتلا فى الحرام الخ تعدون تحسبون وفى الحرام فى الشهر الحرام وهو رجب وعظيمة اى امرا عظيما من عظائم الامور وقوله فانا وان عيرتمونا الخ التعيير التعييب وضمير بقتله الى ابن الحضرمى وهو على التقديم والتأخير فلا يكون اضمار قبل الذكر رتبة واصل الكلام فانا سقينا من ابن الحضرمي رماحنا وان عيرتمونا بقتله وهذا كما ذكر ابو العباس المبرد فى الكامل فى قول مرّة بن محكان السعدى

ولست وان كانت الى حبيبة بباك على الدنيا اذا ماتولت

قال ارادولست بباك على الدنيا وان كانت الى حبيبة فضمير كانت وان تقدم لفظا على مرجعه الذى هو الدنيا لكنه مؤخر رتبة وقدمر مثله فى قوله

شر يوميها واخزاه لها ركبت هند بحدج جملا

كانوا سبوها فحملوها فى حدج وهو مركب من مراكب النساء ولاطفوها بالقول والفعل فقالت هذا شر يومى حين اكرم للسباء فقال شاعرهم هذا البيت وقوله وارجف بالاسلام باغ وحاسد يقال ارجف القوم فى الشئ وبه ارجافا اكثروا من الاخبار السيئة واختلاق الاقوال الكاذبة حتى يضطرب الناس منها وعليه قوله تعالى والمرجفون فى المدينة يريد عبدالله رضى الله عنه ماكان قاله الكفار ان محمدا واصحابه استحلوا الشهر الحرام وغير ذلك من الاكاذيب ونخلة اسم لموضع بين مكة والطائف كما مرّ ويقال بطن نخلة ايضا قال حسان رضى الله عنه

وان التى بالسد من بطن نخلة ومن دانها فل من الخير معزل

يريد العزى والسد بالضم الوادى وبالفتح الجبل ومن دانها من اطاعها اوتدين بها والفل بالكسر الارض الخالية عن النبات استعمل فى الخالى عن الخير

وقال امرؤ القيس

فريقان منهم سالك بطن نخلة و آخر منهم جازع نجد كبكب

قوله لما اوقد الحرب وانما اوقدها الواقد بن عبدالله التميمى كما مر ولايخفى مابين اوقدوواقد من الجناس وقوله دمامنعول ثان لسقينا وابن عبدالله بالرفع على الابتداء اوبالنصب على الاضمار على شريطة التفسير اى ينازع بن عبدالله والمنازعة الملاصقة والملابسة والغل بالضم جامعة من حديد توضع على العنق واليد والقدسير من جلد كانو يربطون به الاسير والعاند المائل يعنى يميل فيميله ويجذبه يريد انهم اسروا عثمان بن عبدالله فربطوه كما يربط الاسير وجرّوه وهذه القصيدة قال ابن اسحق انها لابى بكر قال ويقال لعبدالله بن جحش وقال ابن هشام هى لعبدالله بن جحش ومن سيرة ابن هشام كتبتها

## عبدالله بن حذافة السهمى

## رضى الله عنه

فى رسالته بكتاب رسول الله صلى الله عليه وسلم الى كسرى

### الترجمة

هو عبدالله بن حذافة بن قيس بن عدىّ بن سعد بن سهم القرشى السهمى يكنى اباحذافة كان من السابقين الاولين فقد ذكر ابو الفرج الاصفهانى فى الاغانى ان العباس ابن عبدالمطلب واباسفيان بن حرب كانا فى تجارة باليمن فورد على ابى سفيان كتاب من ابنه حنظلة يكتب فيه اخبرك ان محمدا قام بالابطح غدوة فقال انا رسول الله ادعوكم الى الله واخرج ابو سفيان هذا الكتاب الى العباس فاراه اياه قال العباس فما كان بعد ذلك الا ليال حتى قدم عبدالله بن حذافة السهمى بالخبر وهو مؤمن فنشا ذلك فى مجالس اهل اليمن يتحدث به فيها انتهى يقال شهد بدرا ولم يذكره موسى ابن عقبة ولا ابن اسحق ولاغيرهما من اصحاب المغازى هاجر الى ارض الحبشة الهجرة الثانية مع اخيه قيس بن حذافة فى قول ابن اسحاق ولم يذكره موسى وابومعشر وهو اخو ابى الاخنس بن حذافة وخنيس بن حذافة الذى كان زوج حفصة قبل النبى صلى الله عليه وسلم وعبدالله بن حذافة هو الذى سأل رسول الله عليه السلام حين قال سلونى عمّا شئتم من ابى فقال ابوك حذافة بن قيس فقالت له امّه ماسمعت بابن

اعقّ منك امنت ان تكون امك قارفت ماتقارف نساء اهل الجاهلية فتفضحها على اعين الناس فقال والله لو الحقنى بعبد اسود للحقت به وكان فى عبدالله بن حذافة رضى الله عنه دعابة معروفة وفى الصحيح عن ابن عباس رضى الله عنهما ان النبى صلى الله عليه وسلم امّره على سرية فامرهم ان يوقدوا نارا فيدخلوا فيها فهموا ان يفعلوا ثم كفوا فبلغ النبى عليه السلام فقال انما الطاعة فى المعروف وشهد عبدالله رضى الله عنه فتح مصروا سرته الروم سنة تسع عشرة فى زمن عمر بن الخطاب رضى الله عنه فانجاه الله منهم اخرج الامام البيهقى من طريق ضرار بن عمرو عن ابى رافع قال وجّه عمر رضى الله عنه جيشا الى الروم فيهم عبدالله بن حذافة فاسروه فقال له ملك الروم تنصّرا شركك فى ملكى فابى فامر به فصلب وامر برميه بالسّهام فلم يجزع فانزل وامر بقدر فصبّ فيها الماء واغلى عليه وامر بالقاء اسير فيها فاذا عظامه تلوح فامر بالفائه ان لم يتنصر فلما ذهبوا به بكى قال ردّوه فقال لم بكيت قال تمنيت ان لى مائة نفس هذا فى الله فعجب فقال قبّل رأسى وانا اخلّى عنك فقال وعن جميع اسارى المسلمين قال نعم فقبل رأسه فخلّى بينهم فقدم بهم على عمر رضى الله عنه فقام عمر رضى الله عنه فقبل رأسه وكان عبدالله بن حذافة رسول رسول الله عليه السلام الى كسرى بكتابه يدعوه الى الاسلام فمزق كسرى الكتاب فقال رسول الله عليه السلام اللهم مزق ملكه وقال اذا مات كسرى فلا كسرى بعده قال الواقدى فسلط الله على كسرى ابنه شيرويه فقتله ليلة الثلثاء لعشر مضين من جمادى سنة سبع ففى ذلك يقول عبدالله رضى الله عنه على مافى الروض الانف

من الطويل

أبَى اللهُ الاّ انّ كسرى فريسةٌ ... لاوّلِ داعٍ بالعراق محمّدا

تقاذف فى فحش الجواب مصغّرا ... لامر العريب الخائضين له الرّدى

فقلت له ارود فانّك داخل ... من اليوم فى البلوى ومنتهب غدا

فاقبل وادبر حيث شئت فاننا لنا الملك فابسط للمسالمة اليدا

والا فامسك قارعا سن نادم اقر بذل الخرج اومت موحدا

سفهت بتمزيق الكتاب وهذه بتمزيق ملك الفرس كفى مبددا

قوله ابى الله الان كسرى الخ معنى ابى الله قدمر فى شعر ابى الدرداء رضى الله عنه والفريسة مايفرسه السبع والتاء للنقل كما فى ذبيحة واكيلة يقال فرس وافترس السبع الشئ اخذه فدق عنقه ثم يقال لكل قتل فرس والفريس القتيل وحاصل معنى البيت ان كسرى هالك على يدى اول جيش يدعو وينوّه باسم محمد صلى الله عليه وسلم بارض العراق قوله تقاذف فى فحش الجواب الخ تقاذف بمعنى اسرع من قولهم فرس متقاذف اي سريع الركض وسير متقاذف اى سريع ومصغرا على صيغة اسم الفاعل والعريب تصغير العرب وهو تصغير تعظيم كما فى قول الحباب بن المنذر رضى الله عنه يوم سقيفة بنى ساعدة انا جذيلها المحكّك وعذيقها المرجّب ويقال ان تصغير العرب بدون التاء نادر وقد وقع فى اشعار العرب والخائضين له بمعنى الموردين به والردى مفعوله وهو الهلاك وهو من خاض بفرسه اذا اورده الماء يعني ان هلاكه يكون على ايديهم حكى السهيلى عن وثيمة قال لما قام عبدالله بن حذافة على كسرى قال يا معشر الفرس انكم عشتم باحلامكم لمدّة ايامكم بغير نبي ولا كتاب ولا تملك من الارض الا ما فى يديك و مالا تملك منها اكثر وقد ملك الارض قبلك ملوك دنيا وملوك آخرة فاخذ اهل الاخرة بحظّهم من الدنيا وضيع اهل الدنيا حظهم من الآخرة فاختلفوا فى سعي الدنيا واستووا فى عدل الآخرة وقد صغر هذا الامر عندك انا ابيناك به وقد والله جاءك من حيث خفت وما تصغيرك اياه بالذى يدفعه عنك ولا تكذيبك بالذى يخرجك منه وفى وقعة ذي قار على ذلك دليل فاخذ الكتاب فمزقه ثم قال لى ملك هنيئ ولا اخشى ان اغلب عليه ولا اشارك فيه وقد ملك فرعون بنى اسرائيل ولستم بخير منهم فما يمنعني ان املككم وانا خير

منه فاما هذا الملك فقد علمنا انه يصير الى الكلاب وانتم اولئك تشبع بطونكم وتأبى عيونكم فاما وقعة ذي قار فهي بوقعة الشام فانصرف عنه عبدالله رضى الله عنه انتهى فجواب كسرى هذا هو ما اراده عبدالله رضى الله عنه بقوله تقاذف في فحش الجواب الخ قوله فقلت له ارود الخ ارود بمعنى ارفق في الكلام ومنتهب على صيغة المفعول اي ينهب ملكك واراد بالغد الزمان المستقبل القريب قوله فاقبل وادبر اي تقدم وتأخر او تفكر كيف شئت فلاشك ان الملك لنا ثم قال ناصحاله فابسط للمسالة اليدا والمسالمة المصافاة اي بايعنا واقبل ما نريد منك قوله والّا فامسك الخ اي ان لم تبايعنا وقد عرف من حال الادم انه يقرع سنه و قوله اقر بذل الخرج اومت موحدا اقرّ امر من الاقرار بمعنى السكون ازالانقياد والخرج هو الخراج والجزية يقول ليس لك الّا الاسلام او اعطاء الجزية والخراج صاغرا ذليلا قوله سفهت بتمزيق الكتاب الخ قدمر انه مزق كتاب رسول الله عليه السلام و قوله وهذه بتمزيق ملك الفرس كفي مبددا هذه مبتدأ وكفي خبر وبتمزيق ظرف حال من كفي لانه مفعول معنى والعامل معنى الاشارة ومبدّدا على صيغة اسم المفعول حال مؤكدة من الملك لانه مفعول المصدر اضيف اليه والتمزيق والتبديد بمعنى والمعنى وهذه كفيّ حال كونها ضامنة ومعاهدة بتمزيق ملك الفرس حال كونه مبددا اي مقطعا ممزقا فهو كقوله تعالى ولوا مدبرين فى كونه حالا مؤكدة و شعر عبدالله رضى الله عنه كتبناه من الروض الانف

## عبدالله بن الحرث السهمي المبرق او حسان بن ثابت رضى الله عنهما

### فى يوم بدر يمدح رسول الله عليه السلام واصحابه رضوان الله عليهم

### الترجمة

قدسبقت ترجمة حسان رضى الله عنه وعبدالله ابن الحرث بن قيس بن عدي بن سعيد بن سعد بن سهم القرشي السهمي و لم يذكر ابن الكلبي فى نسبه سعيدا

المصغر ذكر ابن اسحق وغيره عبدالله رضى الله عنه فيمن هاجر الى الحبشة وذكر ابن اسحق والزبير بن بكار انه استشهد بالطّائف وقال ابن سعد والمرزبانى انه استشهد باليمامة وكان شاعرا ولقب بالمبرق لقوله

فان انا لم أُبرِق فلا يسعنّي  من الارض برّذو فضاء ولا بحر

وهذا البيت فى ابيات له تأتى فى باب الراء ان شاء الله تعالى  قال رضى الله عنه

مستشعرى حلق الماذى يقدمهم  جلد النحيزة ماض غير رعديد  من البسيط

اعني رسول اله الخلق فضّله  على البريّة بالتقوى وبالجود

وقد زعمتم بان تحمو ذمار كمو  وماء بدر زعمتم غير مورود

ثمّ وردناه ولم نسمع لقولكمو  حتّى شربنا رواء غير تصريد

مستعصمين بحبل غير منجذم  مستحكم من حبال الله ممدود

فينا الرّسول وفينا الحقّ نتبعه  حتّى الممات ونصر غير محدود

واف وماض شهاب يستضأ به  بدر اَنار على كلّ الاَماجيد

قوله مستشعرى حلق الماذي الخ مستشعرى منصوب بامدح المقدر والحلق بالتحريك جمع حلقة بمعنى الدرع والمستشعر اللابس والماذيّ خالص الحديد وجيّده والنّحيزة الطبيعة والرعديد بالكسر الجبان كالرعشيش وقوله وماء بدر زعمتم غير مورود يجوز اعمال زعمتم والغاؤها لتوسّطها بين معموليها والرواء بالفتح الماء

الكثير المروي والتصريد التقليل وهو في السقي دون الري يقال شراب مصرّد اي مقلّل وفي شعر عمر رضى الله عنه يرثي عروة بن مسعود الثقفي رضى الله عنه يستقون فيها شرابا غير تصريد فقوله غير تصريد صفة كاشفة لقوله رواء وغير منجذم غير منقطع ومستحكم صفة بعد صفة لحبل وكذا من حبال الله وممدود والممدود المرسل المبسوط وقوله ونصر بالرفع اي وفينا نصر وغير محدود اي غير ممنوع من الظفر اولاحد له ولا نهاية وانار اضاء والاماجيد جمع امجد زيد فيه الياء للوزن كما مر في قول الشاعر تنفاء الدراهيم الصيارين وهذه القصيدة مسطورة في سيرة ابن هشام عن ابن اسحق قال ابن هشام فيها وقال ابن اسحق وقال حسان بن ثابت ثم قال ويقال بل قالها عبدالله بن الحرث السهمي ولذلك رددت في العنوان

## عبدالله بن رواحة الانصاري

## رضى الله عنه

حين ودّع اصحاب رسول الله صلى الله عليه وسلم عند خروجه الى غزوة مؤتة

من البسيط

لكنّني اسأل الرحمن مغفرةً ... وضربةً ذات فرغ تقذف الزبدا

او طعنةً بيدي حرّان مجهزةً ... بحربة تنفذ الاحشاء والكبدا

حتى يقال اذا مرّوا على جدثي ... ارشده الله من غاز وقد رشدا

قال في سيرة ابن هشام في غزوة مؤتة فلما حضر خروج جيش موتة ودّع الناس امراء رسول الله عليه السلام يعني زيد بن حارثة وجعفر بن ابي طالب وعبدالله بن رواحة رضوان الله عليهم فلما ودع عبدالله بن رواحة بكى فقالوا مايبكيك يا ابن رواحة فقال والله مابي حب الدنيا ولاصبابة بكم ولكني سمعت رسول الله صلى الله عليه وسلم يقرأ آية من كتاب الله عزوجل يذكر فيها النار وان منكم الاواردها كان

على ربك حتما مقضيا فلست ادرى كيف لى بالصدر بعد الورود فقال المسلمون صحبكم الله ودفع عنكم وردّكم الينا سالمين فقال عبدالله بن رواحة رضى الله عنه هذه الابيات الثلثة قوله وضربة ذات فرغ تقذف الزبدا الفرغ مخرج الماء من الدلو يريد ضربة يكون اثرها كالفرغ فى السّعة ففيه استعارة الفرغ للجرح وتقذف ترمى والزبد الرغوة قوله اوطعنة بيدى حران مجهزة الحرّان العطشان والمؤنث حرّى ومن دعائهم رماه الله بالحرة والقرة اي العطش والبرد يريد عبدالله رضى الله عنه عدوا حريصا على دمه حرص العطشان على الماء والمجهزة المسرعة المتمّمة يقال اجهز على الجريح اذا اماته وقوله تنفذ الاحشاء والكبدا تنفذ من الانفاذ اى تخرّقهما والاحشاء جمع حشى بالقصر وهو ما فى البطن قوله حتى يقال اذا مرّوا على جدثى الجدث القبر وفى التنزيل فاذاهم من الاجداث الى ربهم ينسلون وقوله ارشده الله من غازو قد رشدا مقول القول ومن غاز تمييز بمن مثل وقال عزّ من قائل وقوله وقد رشدا تقرير من القائل لقوله ارشده الله فانه اذا ارشده فقد رشد والشعر كتبناه من سيرة ابن هشام

## عبدالله بن رواحة او حسان بن ثابت رضى الله عنهما

يبكى نافع بن بديل بن ورقاء الخزاعى رضى الله عنهما وكان نافع وابوه واخوته من فضلاء الصحابة وجلّهم رضوان الله تعالى عليهم وكان نافع رضى الله عنه قديم الاسلام استشهد ببئر معونة مع المنذر بن عمرو وعامر بن فهيرة وغيرهما فبكاه عبدالله ابن رواحة او حسان بن ثابت فقال

رحم الله نافعَ بن بُدَيلٍ ... رحمةَ المبتغى ثوابَ الجهاد — من الخفيف

صابر صادق وفىٌّ اذا ما ... اكثرَ القومُ قال قولَ السّداد

الوفيّ فعيل من وفى بعهده واكثرالقوم كثركلامهم والسّداد بالفتح الصواب وينسب البيتان لحسان بن ثابت رضى الله عنه واوردهما السكرى فى ديوانه مع بيت ثالث بعدهما وهو

كنت قبل اللقاء منه بجهل فقد امسيت قد اصاب فؤادي

واما ابن هشام فلم يذكر الا البيتين وعزاهما الى عبدالله بن رواحة ولذلك رددت فى العنوان وكتبت ما اتفق عليه فى المتن وما اختلف فيه فى الشرح

## عبدالله بن مالك الارجبي

## رضى الله عنه

يثبت همدان على الاسلام ايام الردّة

### الترجمه

ارحب بطن من همدان وهو ارحب بن دعام بن مالك بن معاوية بن صعب بن رومان بن بكيل بن جشم بن ضيران بن نوف بن همدان قال فى الاصابة فى ترجمة عبدالله بن مالك الارجبي ذكر وثيمة فى كتاب الردة ان له صحبة وانشد له شعرا فى ذلك قال ابن اسحق لما همت همدان بالردة قام فيهم عبدالله بن مالك الارجبي وكان من اصحاب رسول الله عليه السلام له هجرة وفضل فى دينه فاجتمعت اليه همدان فقال يا معشر همدان انكم لم تعبدوا محمدا عليه السلام انما عبدتم رب محمد عليه السلام وهو الحي الذي لايموت غير انكم اطعتم رسوله بطاعة الله واعلموا انه استنقذكم من النار ولم يكن الله ليجمع اصحابه على ضلالة وذكر له خطبة طويلة يقول فيها

من الطويل

لعمرى لئن مات النبيّ محمد لمامات يا ابن القيل ربّ محمد

دعاه اليه ربّه فاجابه فيا خيرَ غوريّ ويا خير منجد

القيل واحد الاقيال وهم ملوك اليمن وهمدان من اليمن قوله فيا خير غوري

ويا خير منجد يريد النبي عليه السلام والغوري المنسوب الى غور الارض وهو ما انخفض منها والمنجد المنسوب الى نجد الارض وهو ما ارتفع منها وحاصله يا خير الناس كلهم

## عبدالرحمن بن ذى الاجرة الثّمالى

## رضي الله عنه

### فى قتل الاسود العنسي

### الترجمة

ذكره صاحب التجريد وصاحب الاصابة ولم ينسباه قال فى التجريد ممن شاد لقتل الاسود العنسى له شعر وقال صاحب الاصابة ذكره وثيمة فى كتاب الرّدة وروى ابن اسحق انه ذكر فى الرهط الذين امرهم رسول الله عليه السلام بقتال الاسود العنسى فنهضوا لذلك منهم عبدالرحمن واخوه يزيد والثمالى منسوب الى ثمالة بضم المثلثة ابى بطن من الازد منهم الامام المبرّد محمد بن يزيد النحوى وفيه قال عبدالصّمد بن المعذل يهجوه وقومه على مافى الامالى لابى علىّ القالى

سألنا عن ثمالة كل حى ... فقال القائلون ومن ثمالة

فقلت محمد بن يزيد منهم ... فقالوا الآن زدت بهم جهالة

وما فى شرح القاموس للسيد المرتضى ان ابن خلكان ضبط ثمالة فى ترجمة المبرد بفتح الثاء وهو غلط ظاهر فقد راجعنا ترجمة المبرد فى تاريخ ابن خلكان فوجدنا هذه العبارة والثمالى بضم الثاء وفتح الميم وبعد الالف لام هذه النسبة الى ثماله ولم يذكر غير هذا

لعمرى وما عمرى على بهين ... لقد جزعت عنس لقتل الاسود — من الطويل

وقال رسول الله سيروا لقتله ... على خير موعود وأسعد أسعد

من مشطور الرجز

فسرنا اليه فى فوارس بهمة ... على حين امر من وصاة محمد

قوله وما عمرى على بهين اى ماقسمى بعمرى بهين حتى لايتهم متهم بانى حلفت كاذبا وهو اعتراض بين القسم وجوابه ذكر ذلك ابن هشام فى قول النابغة

لعمرى وماعمر على بهين ... لقد نطقت بطلا على الاقارع

وعنس قبيلة وهم بنو عنس وهو زيد بن مالك بن ادد ومالك هو مذحج منهم عمار بن ياسر رضى الله عنه وهو من بنى يام بن عنس والاسود العنسى سود الله وجهه واسمه عيهلة بن كعب كذاب من بنى سعد الاكبر بن عنس تنبأ فى اواخر عهد النبى عليه السلام واتبعه خلق كثير وقتل قبل وفاة النبى عليه السلام قتله فيروز الديلمى رضى الله عنه واخبر النبى عليه السلام بقتله ليلة قتل واتى رسل فيروز و اصحابه بقتل الاسود بعد وفاة النبى عليه السلام وقال الشيخ ابن عبد البر والصحيح انه قتل قبل وفاة النبى عليه السلام و اتاه خبره وهو مريض مرضه الذي توفى منه قوله اسعد اسعد الاول افعل التفضيل والثانى جمع سعد بمعنى اليمن ضد النحس وقدمر فى شعر عاتكة رضى الله عنها فى هذا الباب معنى البهمة والوصاة اسم من الايصاء كالوصية وهذه الابيات مسطورة فى الاصابة للحافظ ابن حجر رحمه الله ومنها كتبتها

## على بن ابى طالب اوتمثل رضى الله عنه

فى بناء مسجد رسول الله صلى الله عليه وسلم عمل رسول الله عليه السلام بنفسه فى بناء مسجده فعمل فيه المهاجرون والانصار ودأبوا فيه فقال قائل من المسلمين

لئن قعدنا والنبى يعمل ... لذاك منا العمل المضلل

فارتجز المسلمون وهم يبنونه وارتجز على رضى الله عنه بهذا الرجز

لايستوى من يعمر المساجدا ... يدأب فيها قائما و قاعدا

## ومن يرى عن الغبار حائدا

دأب يدأب فى عمله دأبا بسكون الهمزة وبالتحريك اذا جدّ وتعب والحائد المائل يقول لايستوي العامل وغيره قال ابن هشام بعد ماذكر ان عليّا رضى الله عنه ارتجز بهذا الرجز سألت غير واحد من اهل العلم بالشعر عن هذا الرجز فقالوا بلغنا ان على بن ابى طالب رضى الله عنه ارتجز به فلا يدرى اهو قائله اوغيره فلذلك قلت فى العنوان او تمثل

## عمرو بن سالم الخزاعيّ

## رضي الله عنه

يشكو غدر قريش بخزاعة ويستنصر من النبي صلى الله عليه وعلى آله وصحبه وسلم

### الترجمه

هو عمرو بن سالم بن حصين بن سالم بن كاثوم الخزاعي من بني مليح مصغر ابن عمرو بن ربيعة بن كعب بن عمرو بن لحيّ مصغر واسمه ربيعة بن حارثة بن عمرو مزيقيا بن عامر ماء السما فعمرو بن لحي ابو خزاعة وسبب انشاء عمرو بن سالم الشعر الآتى انه لما كان صلح الحديبية بين رسول الله عليه السلام وبين قريش كان فيما شرطوا لرسول الله عليه السلام وشرط لهم انه من احب ان يدخل فى عقد رسول الله عليه السلام وعهده فليدخل فيه ومن شاء ان يدخل فى عقد قريش وعهدهم فليدخل فيه فدخل بنو بكر بن عبد مناة بن كنانة فى عقد قريش وعهدهم ودخلت خزاعة فى عقد رسول الله عليه السلام وعهده فلما كانت الهدنة بيّت بنو بكر بعض رجال خزاعة بالوتير فاصابوا منهم رجلا وتحاوزوا واقتتلوا واعانت قريش بنى بكر بالسلاح وقاتل معهم من قريش من قاتل مستخفيا بالليل حتى حاوزوا خزاعة الى الحرم فلما دخلت خزاعة مكة لجأوا الى دار بديل بن ورقاء الخزاعي ودار مولى لهم فلما تظاهرت بنو بكر وقريش على خزاعة واصابوا منهم ما اصابوا ونقضوا ما كان بينهم وبين رسول الله عليه السلام من العهد والميثاق بما استحلوا

من خزاعة وكانوا فى عقده وعهده خرج عمرو بن سالم الخزاعي ثم احد بنى كعب حتى قدم على رسول الله صلى الله عليه وسلم المدينة وكان ذلك مما هاج فتح مكة فوقف عليه وهو جالس فى المسجد بين ظهر انى الناس فقال رضى الله عنه

من مشطور الرجز

يا ربّ انّى ناشد محمدا ... حلف ابيه وابينا الأتلدا

انّ قريشا اخلفتك الموعدا ... ونقضوا ميثاقك المؤكّدا

وزعموا انّ لست تدعو احدا ... وهم اذلّ واقلّ عددا

وجعلوا لى فى كداء رصدا ... فادع عباد الله يأتوا مددا

فيهم رسول الله قد تجردا ... ابيض مثل البدر ينمو صعدا

ان سيم خسفاً وجهه تربّدا ... فى فيلق كالبحر يجرى مزبدا

قد قتّلونا بالصّعيد هجّداً ... ونتلو القرآن ركّعاً وسجّداً

وولدا كنّا وكنت الولدا ... ثمّت اسلمنا ولم ننزع يدا

فانصر رسول الله نصراً اعتدا

قال فى سيرة ابن هشام عن ابن اسحق فقال رسول الله عليه السلام نصرت يا عمرو بن سالم وقال فى الاستيعاب فقال رسول الله عليه السلام لا نصرنى الله ان لم انصر بنى كعب قوله يارب انى ناشد محمدا الخ فى المصباح نشدتك الله ونشدتك بالله

ذكرت به واستعطفتك اوسألتك به مقسما عليك فالمعنى انى مذكر ومستعطف محمدا بالحلف اوسائله به مقسما عليه قوله حلف ابيه وابينا الاتلدا الاتلد الاقدم يريد الحلف الذى كان بين عبد المطلب بن هاشم جدّ النبى عليه السلام وبين خزاعة وسبب ذلك ان السقاية التى كانت فى عبد مناف انتقلت بعد وفاته الى ابنه هاشم ثم بعد وفاة هاشم الى اخيه المطلب بن عبد مناف ثم لما كبر عبد المطلب بن هاشم فوّض عمّه المطلب السقاية اليه فلما مات المطلب وثب اخوه نوفل بن عبد مناف على ابن اخيه عبد المطلب بن هاشم واغتصبه اركاحا اي افنية ودورا فسأل عبد المطلب رجالا من قومه النصرة على عمه نوفل فابوا وقالوا لا ندخل بينك وبين عمك فكتب عبد المطلب الى اخواله بنى النجّار بالمدينة بما فعله به عمه نوفل فلما وقف خاله ابو سعد بن عدي النجاري على كتابه بكى وسار فى ثمانين راكبا حتى قدم مكة ونزل بالابطح فتلقاه عبد المطلب وقال له المنزل ياخال فقال لا والله حتى القى نوفلا فقال تركته فى الحجر جالسا فى مشايخ قريش فاقبل ابو سعد حتى وقف عليهم فقام نوفل قائما وقال يا اباسعد انعم صباحا فقال له ابو سعد لا انعم الله لك صباحا وسل سيفه وقال ورب هذه البنية لئن لم ترد على ابن اختى اركاحه لاملأنّ منك هذا السيف فقال قد رددتها عليه فاشهد عليه مشايخ قريش ثم نزل على عبد المطلب فاقام عنده ثلاثا ثم اعتمر ورجع الى المدينة وبعد ان جرى ذلك حالف نوفل وبنوه بنى اخيه عبد شمس على بنى هاشم وحالف بنو هاشم بنى المطلب وخزاعة على بنى نوفل وبنى عبد شمس وقالت خزاعة نحن اولى بنصرة عبد المطلب ان ام عبد مناف حبّى بنت حُلَيل الخزاعى فهلمّ فلنحالفك فدخلوا دار الندوة وتحالفوا وتعاقدوا وكتبوا بينهم كتابا باسمك اللهم هذا ماتحالف عليه بنو هاشم ورجالات عمرو بن ربيعة من خزاعة على النصرة والمواساة مابلّ بحر صوفة وما اشرقت الشمس على ثبير وهبّ اي اقام بفلاة بعير وما اقام الاخشبان واعتمر بمكة انسان يريدون التأبيد فهذا هو الحلف الذى اراده عمرو بن سالم رضى الله عنه قوله وزعموا ان لست تدعوا احدا اي زعموا انك عاجز فليس لك احد ينصرك فتدعوه او انك لا تنصرنا ولا تدعو احدا الى نصرتنا وقوله وهم اذل واقل عددا اي هم ذليلون

قليل عددهم وقوله وقد جملولى فى كداء رصدا الرصد بالتحريك اسم جمع الراصد يقال قوم رَصْد كحَرَس وخَدَم اي راصدون و يقال فلان يخاف رصدا من قدامه وطلبا من ورائه اي عدوّا يرصده اي ينتظره وقد تهيأ له وفى التنزيل فانه يسلك من بين يديه ومن خلفه رصدا قوله يأتوا مددا انجزم المضارع فى جواب الامر اي ان دعوتهم يأتو قوله فيهم رسول الله قد تجردا الالف للاشباع و يقال تجرد الرجل لامر اذا جدّ فيه قوله يمرو صعدا اي يزيد صعودا وارتفاعا قوله ان سيم خسفا وجهه تربّدا سيم مجهول سامه الشيئ يسومه اي كلّفه والزمه وفى التنزيل يسومونكم سوء العذاب والخسف الذلّ والهوان وفى خطبة لعلى رضى الله عنه الجهاد باب من ابواب الجنة فمن تركه رغبة عنه البسه الله الذل وسيم الخسف وتربّد تغيّر من الغضب يريد انه صلى الله عليه وسلم لايقبل الذل والهوان على نفسه النفيسة فهو ابّاء للضيم قوله فى فيلق كالبحر يجري مزبدا الفيلق الجيش ومزبدا حال من فاعل يجري الراجع الى البحر يقال ازبد البحر اذا قذف بزبده عند هياج امواجه وزباه مايعلوه من الرغوة شبه الجيش بالبحر المزبد قوله قدقتلونا بالصّعيد هجّدا بناء التفعيل فى قتلونا للتكثير والصعيد وجه الارض والهجّد جمع هاجد و هو المصلى بالليل وفيه اشارة الى انهم بيتوهم ليلا قوله نتلوالقران ركعا وسجدا القران بالتخفيف بلاهمز وهي قراءة ابن كثير من السبع وقفا ووصلا حيثما جاء فى التنزيل قوله و والدا كنا وكنت الولدا اشارة الى ماقدمنا من ان ام عبد مناف خزاعية وكذلك ام قصيّ فاطمة بنت سعد خزاعية ايضا ذكره السهيلي فى الروض الانف قوله ثمت اسلمنا ولم ننزع يدا ثمة بالتاء اللاحقة عاطفة كما فى قول امرئ القيس

ولقد امرّ على اللئيم يسبنى فمضيت ثمة قلت لايعنينى

وهي مع التاء مختصة بعطف الجمل ومعناها ههنا الانتقال من اسلوب الى اسلوب آخر فان ماقبله كان توسلا بالحلف والقرابة وهذا توسل بالاسلام والطاعة والثبات فقوله لم ننزع يدا لم نخرج من الطاعة قال فى الاساس ونزع يده من الطاعة وخرج فلان عاصيا نازع يد يريد انقتل ونحن مسلمون مطيعون قال فى الاصابة وقد طعن

السهيلي فى صحبة هذا الراجز و قال قوله ثمت اسلمنا اراد اسلموا من السلم لامن الاسلام لانهم لم يكونوا مسلمين بعد ثم قال صاحب الاصابة ورد يعني السهيلي بقوله ركعا وسجدا انتهى وفيه ان السهيلي لم يتلفظ بعدم صحبة الراجز انما قال ان اسلمنا من السلم لامن الاسلام وانهم لم يكونوا مسلمين بعد فيمكن انه اراد لم يسلم اكثرهم يدل عليه قوله بعد قوله لم يكونوا مسلمين بعد غير ان قوله ركعاً وسجدا يدل على انه كان منهم من صلى لله فقتل فهو يثبت اسلام بعض القوم لكن لما كان اكثرهم لم يسلموا جعله من السلم وقوله نصرا اعتدا الاعتد الحاضر

## عمر بن الخطاب

## رضى الله عنه

فى يوم فتح مكة

### الترجمة

هو عمر بن الخطاب بن نفيل بن عبدالعزى بن رياح بكسر الراء و تحتانية ابن عبدالله بن قرط بن رزاح بن عدي بن كعب القرشي العدوي رضى الله عنه كنيته ابوحفص يجتمع مع النبي عليه السلام فى كعب بن لؤي امه حنتمه بنت هاشم بن المغيرة بن عبدالله بن عمر بن مخزوم ومن قال فى ام عمر حنتمة بنت هشام بن المغيرة فقد اخطأ ولو كانت كذلك كانت اخت ابى جهل بن هشام والحرث بن هشام و ليس كذلك و انما هي ابنة عمهما فان هاشم بن المغيرة وهشام بن المغيرة اخوان فهاشم والد حنتمه ام عمر رضى الله عنه وهشام والد الحرث وابى جهل وهاشم بن المغيرة هذا جد عمر رضى الله كان يقال له ذوالرمحين ولد عمر رضى الله عنه بعد الفيل بثلاث عشرة سنة وكان من اشراف قريش واليه كانت السفارة فى الجاهلية وذلك ان قريشا اذا وقعت بينهم حرب او بينهم و بين غيرهم بعثوه سفيرا وان نافرهم منافر اوفاخرهم مفاخر بعثوه منافرا ومفاخرا ورضوا به اسلم بعد رجال سبقوه وكانوا اربعين رجلا واحدى عشرة امرأة فكان اسلامه عزا ظهر به الاسلام بدعوة النبي عليه السلام فقد روي انه عليه السلام قال اللهم اعز الاسلام بابى جهل بن هشام او بعمر بن الخطاب وفى بعض الروايات باحب الرجلين اليك بعمر بن الخطاب

او بابي جهل بن هشام وكان احبهما اليه عمر بن الخطاب رضى الله عنه وقال ابن مسعود رضى الله عنه مازلنا اعزة منذ اسلم عمر رضى الله عنه وهاجر الى المدينة قبل النبي عليه السلام فهو من المهاجرين الاولين ففى صحيح البخاري عن البراء بن عازب رضى الله عنه قال اول من قدم علينا مصعب بن عمير وابن ام مكتوم وكانا يقرأن الناس فقدم بلال وسعد وعمار بن ياسر ثم قدم عمر بن الخطاب فى عشرين من اصحاب النبي عليه السلام وشهد بدرا وبيعة الرضوان وكل مشهد شهده رسول الله عليه السلام وتوفى رسول الله عليه السلام وهو عنه راض وولى الخلافة بعد ابى بكر رضى الله عنه بويع له بها يوم مات ابو بكر رضى الله عنه باستخلافه اياه سنة ثلاث عشرة فسار باحسن سيرة وانزل نفسه من مال الله بمنزلة رجل من الناس وفتح الله له الفتوح بالشام والعراق ومصر وهو الذي دوّن الدّواوين فى العطاء ورتب الناس فيه على سوابقهم وكان لايخاف فى الله لومة لائم وهو الذي نوّر شهر الصوم بصلاة الاشفاع فيه وارخ التاريخ من الهجرة الذي بايدي الناس الى اليوم وهو اول من سمي بامير المؤمنين اما لما ذكر الزبير انه لما ولى عمر بن الخطاب رضى الله عنه قال كان ابو بكر رضى الله عنه يقال له خليفة رسول الله عليه السلام فكيف يقال لى خليفة خليفة يطول هذا فقال له المغيرة بن شعبة انت اميرنا ونحن المؤمنون فانت امير المؤمنين قل فذاك اذن واما لما روى ابن عبد البر فى الاستيعاب بسند عن الزهري ان عمر بن عبد العزيز سأل ابا بكر بن سليمان بن ابى حيثمة لاي شيئ كان ابو بكر يكتب من خليفة رسول الله وكان عمر يكتب من خليفة ابى بكر ومَن اول من كتب عبد الله امير المؤمنين فقال حدثتنى الشّفاء وكانت من المهاجرات الاول ان عمر رضى الله عنه كتب الى عامل العراق ان ارسل الىّ برجلين جلدين نبيلين اسألهما عن العراق واهله فبعث اليه لبيد بن ربيعة العامري وعدي بن حاتم الطائى فلما قدما المدينة فانا خا راحلتيهما عند المسجد ثم دخلا المسجد فاذا هما بعمرو بن العاص رضى الله عنه فقالا له استأذن لنا على امير المؤمنين يا عمرو فقال عمرو انتما والله اصبتما اسمه نحن المؤمنون وهو اميرنا فوثب عمرو فدخل على عمر رضى الله عنه فقال السلام عليك يا امير المؤمنين فقال عمر رضى الله عنه ما بدالك فى هذا الامر يعلم الله لتخرجن من هذا الامر اولا فعلّن قال ان لبيد بن ربيعة وعدي بن حاتم

قدما فاناخا راحلتيهما بفناء المسجد ثم دخلا المسجد فقالا لى استأذن لنا على امير المؤمنين فهما والله اصابا اسمك انت الامير ونحن المؤمنون قال فجرى الكتاب من يومئذ قال ابن عبدالبر هذه الرواية اعلى من الاولى وهذه الرواية اخرجها البخارى ايضا فى الادب المفرد وفيه حدثتنى جدّتى الشفأ وكان عمر رضى الله عنه آدم شديد الادمة طُوالا كثّ اللحية اصلع اعسر يسر وهو الذى يعمل بكلتا يديه فان عمل بالشمال خاصة فهو اعسر وروى عن عوف بن مالك الاشجعى رضى الله عنه انه رأى فى المنام كأن الناس جمعوا فاذا فيهم رجل فرعهم اي فاقهم طولا فهو فوقهم بثنية اذرع فقلت من هذا فقالوا عمر بن الخطاب فقلت لم قالوا ان فيه ثلاث خصال انه لايخاف فى الله لومة لائم وانه خليفة مستخلف وشهيد مستشهد فاتى الى ابى بكر رضى الله عنه فقصّها عليه فارسل الى عمر رضى الله عنه ليبشره قال فجاء عمر رضى الله عنه فقال لى ابو بكر رضى الله عنه اقصص رؤياك قال فلما بلغت خليفة مستخلف زبرنى عمر رضى الله عنه وانتهرنى وقال اسكت اتقول هذا وابو بكر حيّ قال فلما كان بعد و ولي عمر رضى الله عنه مررت بالمسجد وهو على المنبر فدعانى فقال اقصص رؤياك فقصصتها فلما قلت انه لايخاف فى الله لومة لائم قال انى لارجوان يجعلنى الله منهم قال فلما قلت خليفة مستخلف قال قد استخلفنى الله فسله ان يعينني على ماولانى فلما ذكرت شهيد مستشهد قال أنّى لى بالشهادة و انا بين اظهركم تغزون ولا اغزو ثم قال بلى يأتى الله بها ان شاء الله وكان عمر رضى الله عنه كثير الاعتناء بالشعر يستنشد الشعراء ويبحث عن اقوالهم ويستشهد بالشعر ويتمثل به ذكر الشيخ عبد القاهر الجرجانى فى اوائل دلائل الاعجاز عن المرزبانى ذكر فى كتابه باسناده عن عبدالملك بن عمير انه قال اتى عمر رضى الله عنه بحلل من اليمن فاتاه محمد بن جعفر بن ابى طالب ومحمد بن ابى بكر الصديق رضى الله عنه ومحمد بن طلحة بن عبيدالله ومحمد بن حاطب فدخل عليه زيد بن ثابت رضى الله عنه فقال ياامير المؤمنين هؤلاء المحمدون بالباب يطلبون الكسوة فقال ائذن لهم ياغلام فدعا بحلل فاخذ زيد اجودها وقال هذه لمحمد بن حاطب وكانت امه عنده و هو من بنى لؤي فقال عمر أيهات ايهات وتمثل بشعر عمارة بن الوليد

اسرّك ان قد صرع القوم نشوة  خروجى منها سالما غير غانم
بريئاً كأنى قبل لم اك منهمو  وليس الخداع مرتضىً فى التنادم

ردّها ثم قال ائتنى بثوب فالقه على هذه الحال فقال ادخل يدك فخذ حلة وانت لا تراها فاعطهم قال عبدالملك فلم ارقسمة اعدل منها وعمارة هذا هو عمارة بن الوليد بن المغيرة خطب امرأة من قومه فقالت لا انزوجك اوتترك الشراب فابى ثم اشتد وجده بها فحلف لها ان لا يشرب ثم مرّ بخمار عنده شَرْب يشربون فدعوه فدخل عليهم وقد انفدوا ما عندهم فنحر لهم ناقته وسقاهم ببرديه ومكثوا اياما ثم خرج فاتى اهله فلما راته امرأته قالت الم تحلف ان لا تشرب فقال

ولسنا بشرب أمّ عمرو اذا انتشوا  ثياب الندامى عندهم كالمغانم
و لكننا يا امّ عمرو نديمنا  بمنزلة الريّان ليس بعائم

اسرك البيتين انتهى العائم ذو العيمة وهى شهوة اللبن مع فقده ولعمر رضى الله عنه فى مرثية عروة بن مسعود الثقفى شعر لم اظفر منه الى الآن الا ببيت واحد ذكره فى النهاية حيث قال فى مادة شزب وفى حديث عمر رضى الله عنه يرثى عروة بن مسعود الثقفى وفى مادة زور وفى شعر عمر رضى الله عنه

بالخيل عابسة زورا منا كبها  تعدو شوازب بالشعث الصناديد

ولعل الله سبحانه ان يطلعنى عليه وروى عن عمر رضى الله عنه انه قال فى انصرافه عن حجته التى لم يحج بعدها الحمد لله ولا اله الا الله يعطى من يشاء مايشاء لقد كنت بهذا الوادى يعنى ضجنان ارعى ابلا للخطاب وكان فظا غليظا يتعبنى اذا عملت ويضربنى اذا قصرت وقد اصبحت وامسيت وليس بينى وبين الله احد اخشاه ثم تمثل

لا شئ مما ترى تبقى بشاشته  يبقى الاله ويُودى المال والولد
لم تغن عن هرمز يوما خزائنه  والخلدَ قد حاولت عادفما خلدوا
ولا سليمان اذ تجرى الرياح له  و الانس والجن فيما بينها تَرِد
اين الملوك التى كانت لعزّتها  من كل اوب اليها واف يفد

حوض هنالك مورود بلا كذب  لا بد من ورده يوما كما وردوا

وهذه الابيات لورقة بن نوفل ذكر فى الاغانى الثلثة الاول منها وانشد له قبلها

لقد نصحت لاقوام وقلت لهم  انا النذير فلا يغرر كمو احد
لا تعبدون الها غير خالقكم  فان دعوكم فقولوا بيننا جدد
سبحان ذى العرش سبحانا نعوذ به  وقبل قد سبّح الجودىّ والجمد
مسخّر كل ما تحت السّماء له  لا ينبغى ان يناوى ملكه احد

وقال ابن عبدالبر وروينا من وجوه ان عمر بن الخطاب رضى الله عنه كان يرمى الجمرة فاتاه جمر فوقع على صلعته فادماه وثمة رجل من بنى لهب فقال اشعر امير المؤمنين لايحج بعدها قال ثم جاء الى الجمرة الثانية فصاح رجل يا خليفة رسول الله فقال لايحج امير المؤمنين بعد عامه هذا فقتل عمر رضى الله عنه بعد رجوعه من الحج قال محمد بن حبيب لهب مكسورة قبيلة من الازد تعرف فيها العيافة والزجر انتهى قلت لهب ابن ابجر بن كعب بن الحرث بن كعب بن عبدالله ابن مالك بن نصر بن الازد وهم اعيف كل حىّ فى العرب والعيافة زجر الطير وغيرها من السوانح ولبنى لهب يقول كثير عزّة

تيممت لهبا ابتغى العلم عنده  وقد ردّ علم العائفين الى لهب

وروى عن ام كلثوم بنت ابى بكر رضى الله عنه ان عائشة رضى الله عنها حدثتها ان عمر رضى الله عنه اذن لازواج النبى عليه السلام ان يحججن فى آخر حجّة حجّها عمر رضى الله عنه قالت فلما ارتحل من الحصبة اقبل رجل متلثم فقال وانا اسمع اين كان منزل امير المؤمنين فقال قائل وانا اسمع هذا كان منزله فاناخ فى منزل عمر رضى الله عنه ثم رفع عقيرته يتغنى

عليك سلام من امير وباركت  يد الله فى ذاك الاديم الممزّق
فمن يجر او يسبق جناحىّ نعامة  ليدرك ما قدمت بالامس يسبق
قضيت امورا ثم غادرت بعدها  بوائق من اكما مها لم تفتق

قالت عائشة رضى الله عنها فقلت لبعض اهلى اعلمونى هذا الرجل فذهبوا فلم يجدوا فى مناخه احدا قالت عائشة رضى الله عنها فوالله انى لاحسبه من الجنّ فلما قتل عمر رضى الله عنه قالوا هذه الابيات للشمّاخ بن ضرار اولاخيه مزرّدوروى عروة عن عائشة رضى الله عنها قالت ناحت الجن على عمر رضى الله عنه قبل ان يقتل بثلاث فذكرت الابيات الثلثة المتقدمة وبيتا قبلها وهو

ابعد قتيل بالمدينة اصبحت ... له الارض تهتز العضاه باسوق

وبيتا آخر بعدها وهو

فما كنت اخشى ان يكون وفاته ... بكفّى سبنتى ازرق العين مطرق

والسبنتى النمر الجرئ وقد تمّد وقتل عمر رضى الله عنه لثلاث اوار بع بقين من ذى الحجة سنة ثلاث وعشرين طعنه ابو لؤلؤة فيروز المجوسى او النصرانى غلام المغيرة بن شعبة وطعن معه ثلاثة عشر رجلا مات منهم سبعة فرمى عليه رجل من المسلمين برنسا ثم برك عليه فلما رأى العلج ذلك وجأ نفسه فقتلها وقصّة قتل عمر رضى الله عنه مذكورة تفصيلا فى صحيح البخارى فى باب قصة البيعة والاتفاق على عثمان بن عفان رضى الله عنه وكانت خلافة عمر رضى الله عنه عشر سنين وستة اشهر وكان نقش خاتمه كفى بالموت واعظايا عمر واختلف فى سنّه يوم وفاته فقيل توفى وهو ابن ثلاث وستين سنة كسنّ النبى عليه السلام وسنّ ابى بكر رضى الله عنه حين توفيا وقيل توفى وهو ابن بضع وخمسين سنة ومما يعزى اليه من الشعر قوله فى يوم فتح مكة

من الطويل ... الم تر انّ الله اظهر دينه ... على كلّ دين قبل ذلك حائد

واسلم من اهل مكة بعدما ... تداعوا الى امر من الغىّ فاسد

غداة اجال الخيل فى عرصاتها ... مسومة بين الزبير و خالد

فامسى رسول الله قد عز نصره  وامسى عداه من قتيل وشارد

اظهر دينه اى اعلاه وجعله ظاهرا غالبا وقوله حائد اى مائل عن الحق يعنى الباطل واسلبه بمعنى سلبه ورفعه وهو من باب سبحان من كبر جسم الفيل وصغر جسم البعوض وقوله تداعوا دعا بعضهم بعضا واتفقوا يقال تداعوا الى الصلح اوتداعوا بمعنى اعتدوا وتهيأوا والامر الفاسد مخالفتهم للنبي عليه السلام والقيام عليه واجال الخيل جعلها جائلة مترددة دائرة والخيل المسوّمة المرسلة عليها ركبانها او المعلمة بالغرّ والتحجيل اوالمطهمة اى التامّة الحسنة والزبير هو ابن العوام احد العشرة المبشرة رضى الله عنه وخالد هو ابن الوليد سيف الله وسيف رسوله عليه السلام قال فى سيرة ابن هشام ان رسول الله عليه السلام لما فرق جيشه من ذى طوى حين اراد ان يدخل مكة يوم الفتح امر الزبير رضى الله عنه ان يدخل مع بعض الناس من كُدا وكان على المجنبة اليسرى وامر سعد بن عبادة رضى الله عنه ان يدخل فى بعض الناس من كداء وامر خالد بن الوليد ان يدخل من اللّيط اسفل مكة فى بعض الناس وكان على المجنبة اليمنى وفيها اسلم غفار وسليم ومزينة وجهينة وقبائل من قبائل العرب وقال ايضا ان صفوان بن امية و عكرمة بن ابى جهل وسهيل بن عمرو كانوا قد جمعوا ناسا بالخندمة ليقاتلوا فلما لقيهم المسلمون من اصحاب خالد قتل من المشركين قريب من اثنى عشرا وثلثة عشر رجلا فانهزموا فلذلك قال مسومة بين الزبير وخالد لان زبيرا وخالدا كلاهما دخلا من اسفل مكة والقتال كان فى جانبيهما وقوله من قتيل وشارد الشارد الفارّ اى بعضهم مقتول وبعضهم منهزم فارّ وهذا الشعر لعمر رضى الله عنه مسطور فى زهر الآداب لابى اسحق الحُصرى القَيْرَوانى ومنه كتبته

## عُمَيْر بن الحُمام بن الجَموح الانصارى

رضى الله عنه

حين قتل شهيدا يوم بدر

## الترجمة

هو عمير بن الحمام بضم المهملة وتخفيف الميم ابن الجموح بن زيد بن حرام بن كعب بن سلمة الانصارى الخزرجى السَّلَمِىّ رضى الله عنه كذا ساق نسبه فى الاصابة شهد بدرا وقتل بها شهيدا وكان رسول الله عليه السلام آخى بينه وبين عبيدة بن الحرث بن المطلب فقتلا ببدر جميعا وقيل انه اول قتيل قتل من الانصار فى الاسلام قال فى الاستيعاب قال ابن اسحق فى خبره عن يوم بدر قال ثم خرج رسول الله عليه السلام الى الناس فحرضهم ونفل كل امرئ ما اصاب وقال والذى نفس محمد بيده لايقاتلهم اليوم رجل فيقتل صابرا محتسبا مقبلا غير مدبر الا ادخله الله الجنة فقال عمير بن الحمام احدبنى سلمة وفى يده تمرات يأكلهنّ بخ بخ انما بينى وبين ان أدخل الجنة الا ان يقتلنى هؤلاء قال فقذف التمر من يده واخذ السيف فقاتل حتّى قتل وهو يقول

من مشطور الرجز

رَكْضاً الى الله بغير زاد ... الّا التّقى وعملَ المعاد

والصبرَ فى الله على الجهاد ... وكلّ زاد عرضة النفاد

## غير التقى وعمل المعاد

انتهى مافى الاستيعاب قوله ركضا مفعول مطلق لفعل محذوف اى اركض ركضا والركض العَدْوُ والعرضة المعروض يقال فلان عرضة لكذا اى معروض له فيصيبه والنفاد الزوال

## قرة بن هبيرة العامرى ثم القشيرى

## رضى الله عنه

فى وفوده على النبى صلى الله عليه وسلم وعلى آله

## الترجمة

هو قرة بن هبيرة بن عامر بن سلمة الحيز بن قشير بن كعب بن ربيعة بن عامر بن صعصعة العامرى ثم القشيرى وفد على رسول الله عليه السلام وقال يا رسول الله الحمد لله انا كنا نعبد الآلهة لا تنفعنا ولا تضرنا فقال رسول الله عليه السلام نعم ذا عقلا وقرة هذا هو جد الصمة القشيرى الشاعر واحد الوجوه الوفود من العرب على النبى عليه السلام كذا فى الاستيعاب وقال فى الاصابة قال البخارى وابن ابى حاتم وابن حبان وابن السكن وابن منده له صحبة وروى ابن ابى عاصم وابن شاهين من طريق عبدالرحمن بن يزيد بن جابر حدثنا شيخ بالساحل عن رجل من بنى قشير يقال له قرة بن هبيرة انه اتى النبى عليه السلام فقال انه كان لنا ربات وارباب نعبدهن من دون الله فبعثك الله فدعونا هن فلم يجبن وسألناهن فلم يعطين وجئناك فهد انا الله بك فقال رسول الله عليه السلام افلح من رزق لبا فقال يا رسول الله اكسنى ثوبين قد لبستهما فكساه فلما كان بالموقف من عرفات قال له رسول الله عليه السلام اعد على ما قلت فاعاد عليه فقال افلح من رزق لبا مرتين فى اسناده هذا الشيخ الذى لم يسم وقد علقه البخارى بوجه آخر عن زيد بن يزيد بن جابر اخبرنى رجل بالساحل من بنى قشير يقال له قرة بن هبيرة انتهى وذكر المرزبانى انه شهد يوم شعب جبلة قال وكان قبل مولد النبى عليه السلام بسبع عشرة سنة وعاش الى ان وفد على النبى عليه السلام وانشده كذا فى الاصابة وفى العقد الفريد للشيخ ابن عبدربه ان يوم شعب جبلة كان قبل مبعث النبى عليه السلام باربعين سنة وهو عام ولد النبى عليه السلام وفى الاغانى انه كان قبل مولد النبى عليه السلام بتسع عشرة سنة والله اعلم قال رضى الله عنه

حباها رسول الله اذ نزلت به ... فامكنها من نائل غير مفقد — من الطويل

فاضحت بروض الخضر وهى حثيثة ... وقد انجحت حاجاتها من محمد

عليها بنى لا يردف الدم رحله ... تروك لامر العاجز المتردد

قوله حباها رسول الله الخ يقال حبا فلانا اذا اعطاه بالاجزاء ولا من والضمير للعطية المفهومة لكونه وافداله راحلة وكذلك سائر الضمائر المؤنثة فى هذه الابيات ويقال امكنه من الشئ ومكنه تمكينا اذا اظفره به والنائل العطاء وقوله غير مفتقد بمعنى غير معدم يقول انه لما وفد على رسول الله عليه السلام حباه حباء جزيلا واناله نائلا جليلا بحيث لا يمكن ان يفقد ويستهلك واضاف الحباء الى العطية لانها تحمل النائل قوله فاضحت بروض الخضر الخ اضحت صارت والروض جمع روضة والخضر جمع اخضر فهو من اضافة الموصوف الى صفتها والعرب تستعمل الروضة فى طيب الحال وحسنها يقال انا عندك فى روضة وغدير ومجلسك روضة من رياض الجنة ولعل هذا المعنى هو المراد ههنا اوالروض الخضر على الحقيقة وفى معجم البلدان فى باب رياض العرب روضة الخضر جمع اخضر من الالوان قال قرة بن هبيرة يصف ناقة ولها خبر ثم انشد شعر قرة فهذا يدل على انه اسم موضع ولم ار هذا لغيره والمعنى انها رجعت ملابسة بروض الخضر فى طريقها وهى حثيثة اى سريعة ويقال نجحت الحاجة وانجحت اذا قضيت وانجحها اذا قضاها فعلى هذا يجوز ان يقرأ انجحت فى البيت على صيغة المعلوم والمجهول قوله عليها بنى الخ بنى بالكسر والقصر الجسم كالبناء بالمد ولا يردف من ردفه بمعنى تبعه من باب علم ونصر وفى التنزيل عسى ان يكون ردف لكم يقول انه لا يولى دبره لعدوه حتى يجرح من خلفه فيردف الدم رحل مطيته اى يكون وراءه تابعاله فهو فى معنى قول كعب بن زهير رضى الله عنه فى مدح المهاجرين

لا يقع الطعن الا فى نحورهم ومالهم عن حياض الموت تهليل

وقوله تروك لامر العاجز المتردد اى ليس امره وفعله امر العاجز المتردد اصلا بل امره امر المقتدر الماضى فى الامور يمدح بذلك نفسه وهذا الشعر لقرة بن هبيرة رضى الله عنه مسطور فى الاصابة نقلا عن معجم الشعراء للمرزبانى ومن الاصابة كتبته

## فيس بن عاصم المنقرى سيد اهل الوبر رضى الله عنه

فى كونه مضيافا وفضل القرى واكرام الضيف

## الترجمة

هو قيس بن عاصم بن سنان بن منقر بن خالد بن عبدالله بن مقاعس وهو الحرث بن عمرو بن كعب بن سعد بن زيد مناة بن تميم التميمى المنقرى يكنى ابا على وقيل ابا طلحة وقيل ابا قبيصة والاول اشهر وبه جزم البخارى وقال له صحبة وقال فى الاغانى وهو شاعر فارس شجاع حليم كثير الغارات مظفر فى غزواته ادرك الجاهلية والاسلام وساد فيهما واسلم وحسن اسلامه واتى النبى عليه السلام وصحبه فى حياته وعمر بعده زمانا وروى عنه عدة احاديث انتهى ولما وفد قيس بن عاصم على رسول الله عليه السلام قال له هذا سيّد اهل الوبر وسئل الاحنف بن قيس ممن تعلمت الحلم فقال من قيس بن عاصم المنقرى رايته يوما قاعدا بفناء داره محتبيا بحمائل سيفه يحدث قومه اذ أتى برجل مكتوف وآخر مقتول فقيل له هذا ابن اخيك قتل ابنك قال فوالله ماحلّ حبوته ولاقطع كلامه فلما اتمّه التفت الى ابن اخيه فقال يا ابن اخى بئس مافعلت اثمت بربّك وقطعت رحمك ورميت نفسك بسهمك ثم قال لابن له آخر قم يا بُنىّ فوارا خاك وحل كتاف ابن عمك وسق الى امك مائة ناقة دية ابنها فانها غريبة وكان قيس بن عاصم رضى الله عنه سخياً جوادا قيل له بم سدت قومك قال ببذل المال وكفّ الاذى ونصر المولى وكان يقول لولده اياكم والبغى فما بغى قوم قط الاذلّوا وقلّوا فكان بعض بنيه يلطمه قومه اوغيره فينهى اخوته عن ان ينصروه قال صاحب الاغانى اخبرنى عبيدالله بن محمد الرازى قال حدثنى الحرث عن المدائنى عن ابن جعدبة ان قيس بن عاصم قال اتيت رسول الله عليه السلام فرحب بى وادنانى فقلت يا رسول الله المال الذى لايكون على فيه تبعة ماترى فى امساكه لضيف ان طرقنى وعيال ان كثروا علىّ فقال نعم المال الاربعون والاكثر الستون وويل لاصحاب المئين ثلاثا الا من اعطى من رسلها واطرق فحلها وافقر ظهرها ومنح غزيرتها واطعم القانع والمعترّ فقلت له يارسول الله ما اكرم هذه الاخلاق انه لايحل بالواد الذى انافيه من كثرتها قال فكيف تصنع بالاطراق قلت يغدو الناس فمن شاء ان يأخذ برأس بعير ذهب به قال فكيف تصنع بالافقار فقلت انى لافقر الناب المدبرة والضرع الصغيرة قال

فكيف تصنع بالمنيحة قلت انى لا منح فى السنة المائة قال انمالك من مالك ما اكلت فافنيت اولبست فابليت اوتصدّقت فابقيت الرسل بالكسر اللبن واطراق الفحل اعارته للضّراب و افقار الظهر الاعارة للركوب ومنحة الغزيرة اللبن اي كثيرته اعطائها لينتفع بلبنها زمانا وتردّ وروي ان ابابكر رضى الله عنه قال لقيس بن عاصم صف لنا نفسك فقال اما فى الجاهلية فما هممت بملامة ولا حَمَيْت على تهمة و لم اُرَ الّا فى خيل معزّة اونادي عشيرة اوحامى حريرة و اما فى الاسلام فقد قال الله تعالى فلا تزكّوا انفسكم فاعجب ابو بكر رضى الله عنه بذلك ونزل قيس بن عاصم البصرة ومات بها فرثاه عَبْدَة بن الطبيب فقال

عليك سلام الله قيس بن عاصم ... و رحمته ما شاء ان يترحما

تحيّة من اوليته منك نعمة ... اذا زار عن شحط بلادك سلما

فما كان قيس هلكه هلك واحد ... و لكنه بنيان قوم تهدّما

قال رضى الله عنه

من الطويل

ايا ابنةَ عبدالله و ابنةَ مالك ... و يا ابنة ذى البُرْدَيْن والفرس الوَرْدِ

اذا ما اَصَبْتِ الزّادَ فالتَمِسى له ... اَكيلاً فانى لستُ آكِلُه وَحْدى

قَصِيّاً كريما او قريبا فانّني ... اخاف مَذَمّاتِ الاحاديثِ من بعدى

وانّى لَعبدُ الضّيف مادام ثاويا ... و ما من خِلالى غَيْرَها شيمةُ العبد

قد اختلف فى قائل هذه الابيات فنسبها ابوالعباس المبرد فى الكامل الى قيس بن عاصم ونسبها التبريزى فى شرح الحماسة لحاتم بن عبدالله الطائى و عزاها ابن جنى فى اعراب الحماسة الى ابى الجوّاس الحارثى و اسندها فى موضع آخر الى عروة بن الورد و عزاها ابوالفرج الاصفهانى فى الاغانى الى قيس بن عاصم كالمبرد و قال

تزوج قيس بن عاصم المنقري منفوسة بنت زيد الفوارس الضبيّ فاتته في الليلة الثانية من بنائه بها بطعام فقال فاين اكيلي فلم تعلم ما يريده فانشأ يقول ايا ابنة عبد الله الابيات فارسلت جارية لها مليحة فطلبت له اكيلا وانشأت تقول له

ابى المرء قيس ان يذوق طعامه ... بغير اكيل انه لكريم

فبوركت حيّايا اخا الجود والندى ... وبوركت ميتا فدحوتك رجوم

انتهى الرجوم ههنا القبور واستشكل مخاطبة قيس امرأته الضَّبيَّة بالبيت الاول لان نسب ابيها زيد الفوارس بن حصين بن ضرار بن عمرو بن مالك وهذا النسب وان كان فيه اسم مالك لكنه ليس فيه عبد الله ولا ذو البردين فاما عبد الله فيمكن انه اسم واحد من اجداده المذكورين فان الرجل قد يكون له اكثر من اسم واحد ولكنّ من يسمّى بذي البردين رجلان لا غير احدهما تميمي احتلف فيه فقيل هو احيمر بن خلف بن بهدلة بن عوف بن كعب بن سعد بن زيد مناة بن تميم وسبب تلقيبه بذي البردين ان المنذر بن ماء السماء قال يوما وعنده وفود العرب وقد دعا ببردي محرّق فقال ليلبسهما اكرم العرب و اشرفهم فاحجم الناس فقام الاحيمر فأتزر باحدهما وارتدى بالآخر فقال له المنذر وما حجتك فيما ادعيت فقال الشرف في نزار كلها في مضر ثم في تميم في سعد ثم في كعب ثم في بهدلة قال هذا انت في اصلك فكيف انت في عشيرتك فقال انا ابو عشره وعم عشرة واخو عشرة وخال عشرة قال فهذا انت في عشيرتك فكيف انت في نفسك فقال شاهد العين شاهدي ثم قام فوضع قدمه على الارض وقال من ازالها فله مائة من الابل فلم يقم اليه احد ولا تعاطى ذلك ففيه يقول الفرزدق

فما تمّ في سعد ولا آل مالك ... غلام اذا ما قيل لم يتبهدل

لهم وهب النعمان بردي محرق ... بمجد معدّ والعديد المحصل

وقيل ان هذه القصة لعامر بن احيمر وان الملقب بذي البردين هو عامر لا ابوه الاحيمر واليه ذهب صاحب القاموس و ثانيهما ربيعة بن رياح الهلالي جواد معروف وليس واحد منهما ضبّيا فلا يمكن ان تكون امرأة قيس بن عاصم الضبية

بنت ذي البردين الا ان يكون احدهما جدها لامها ويمكن ان يقال ان عبدالله هو عبدالله بن دارم بن مالك بن حنظلة التميمي و ان مالكا هو مالك بن حنظلة و ذوالبردين الاحيمر او ابنه عامر وهولاء كلهم اشراف تميم وكبرائهم ومشاهير العرب فاراد على المجاز يا ابنة رجال مشهورين كهؤلاء و حسن تكرير لفظ الابنة و ان كان المراد واحدة لاختلاف المضاف اليه والقصد الى تفخيم امرها والذي يدل على ان المراد واحدة قوله اذا ما اصبت الزاد الخ والورد من الخيل هو مايكون بين الاشقر والكميت قوله اذا ما اصبت الزاد اصبت بمعنى و جدت او اردت بتقدير المضاف اي تقديم الزاد اليّ فى الاساس ومن المجاز اصاب الشيئ وجده واصابه ايضا اراده والزاد الطعام وقوله فالتمسي له اكيلا اللام فى له تعليلية متعلقة بالتمسي اي اطلبي لاجله اكيلا والاكيل المؤاكل و قوله فانى لست آكله وحدي آكله يحتمل ان يقرأ على صيغة اسم الفاعل وعلى صيغة المضارع المتكلم ورواية الاغانى والحماسة اذا ما صنعت الزاد مكان اصبت قال شارح الحماسة اي اذا فرغت من اتخاذ الزاد و اعداده فاطلبي من اجله من يؤاكلني فانى لم اعوّد نفسي الاكل وحدي قوله قصيّا كريما او قريبا بدل من اكيلا بدل مفصل من مجمل والقصيّ البعيد اي غير النسيب والقريب النسيب قال ابوالعباس المبرد فى الكامل قوله قصيا كريما من طريف المعانى وذلك انه لم يحتج الى ان يشترط فى نسبته الكرم لانه قد ضمن ذلك واشترط فى القصى ان يكون كريما لانه كره ان يكون مؤاكله غير كريم والمذمات جمع مذمة بالفتح وهى الذم ورواية الاغانى والحماسة اخاطارقا اوجاريت مكان قصيا الخ قوله وانى لعبد الضعيف الخ يريد انه يخدمه بنفسه وقوله مادام ثاويا اى مقيما عندى يريد انّ كونه كالعبد للضيف انما هو لكونه ضيفاله مقيما عنده فهو من قبيل الكرم وقوله وما من خلالى غيرها شيمة العبد مانافية والخلال جمع خلّة بمعنى الخصلة وشيمة العبد مبتدأ ومن خلالى خبرمقدم والشيمة الخلق وغيرها بالنصب على الاستثناء من شيمة العبد وهو واجب النصب على الاستثناء لكونه مقدما على المستثنى منه وفى حماسة الاعلم زيادة بيتين وهما

وكيف يسيغ المرء زادا وجاره ... خفيف المعى بادى الخصاصة والجهد

و للموت خير من زيارة باخل ... بلا خط اطراف الاكيل على عمد

وهذا الشعر لقيس بن عاصم رضى الله عنه مسطور فى الكامل لابى العباس المبرد ومنه كتبته

## قيس بن عاصم المنقرى ايضا

## رضى الله عنه

فى نصح بنيه عند قرب وفاته

قال فى الاغانى بسند جمع قيس بن عاصم ولده حين حضرته الوفاة وقال يابَنىّ اذامتّ فسوّدوا كباركم ولاتسوّدوا صغاركم فيسفّه الناس كباركم وعليكم باصلاح المال فانه مَنْبَهَةَ للكريم ويُسْتغنى به عن اللئيم واذامت فادفنونى فى الثياب التى كنت اصلى فيها واصوم واياكم والمسئله فانها اَخِرمكاسب العبد وان امرألم يسئل الاترك مكسبه واذا دفنتمونى فاخفوا قبرى عن هذا الحى من بكر بن وائل فقد كانت بيننا حماسات فى الجاهلية ثم جمع ثلاثين سهما فربطها بوتر ثم قال اكسروها فلم يستطيعوا ثم قال فرّقوا ففرّقوا فقال اكسروها سهما سهما فكسروها فقال هكذا انتم فى الاجتماع والفرقة ثم قال

انّما المجدُ ما بَنى والدُ الصِّدْ ... قِ واَحْيا فَعالَه المَوْلودُ — من الخفيف

وتَمامُ الفضلِ الشّجاعةُ والحِلْمُ اذا زانَهُ عَفافٌ وجودُ

وثلاثون يا بَنِىَّ اذا ما ... جَمَعَتْهُمْ فى النّائبات العُهود

كثلاثين من قِداحٍ اذا ما ... شَدَّها للزّمان عَقْدٌ شَديد

لم تُكَسَّرْ وانْ تَفَرَّقَتِ الاَسْهُمُ اَوْدى بجَمْعِها التَّبْديدُ

وذوو الحلم والاكابر اولى ان يرى منكم لهم تسويد

وعليكم حفظ الاصاغر حتى يبلغ الخنث الاصغر المجهود

قوله انما المجد مابنى الخ العرب تضيف كل مافيه خير وصلاح الى الصدق فيقولون رجل صدق اى نعم الرجل ومنه قوله تعالى ان لهم قدم صدق عند ربهم فمعنى والد الصدق والد خير وكريم والفعال بفتح الفاء اسم لفعل الحسن والكرم يقول ان المجد التام مافعله الولد من الحسن والكرم بعد والده الكريم ويجوز ان يكون الفعال بالكسر جمع فعل يعنى الافعال الحسنة قوله وثلاثون يابنى الخ بنى جمع سالم للفظ ابن سقط نونه للاضافة الى ياء المتكلم فادغم ياء الجمع فى ياء المتكلم والعهود جمع عهد وهو فاعل جمعت قوله كثلاثين من قداح الخ كثلاثين خبر ثلاثون والقداح جمع قدح بالكسر وهو السهم الذى يرمى به عن القوس يقال للسهم اول مايطلع قطع ثم نجت ويبرى فيسمى بريا ثم يقوم فيسمى قدحا ثم يراش فيسمى سهما كذا فى النهاية وقوله اذا ماشدها من الشد بمعنى الربط وضم البعض الى البعض وقوله عقد اى شد وقوله شديد من الشدة وقوله اودى بجمعها التبديداى اهلك جميعها على ان الباء للتعدية و التبديد التفريق وهو فاعل اودى يقول ان ثلاثين من الرجال اذا اجتمعوا على امر وتعاهدوا عليه لاينقض ذلك الامر مع ان واحدا اي واحد كان لايغنى شيأ كثلاثين من السهام المشدودة المجموعة لايمكن كسرها مع ان كل سهم على حدة يسهل كسره قوله وذوو الحلم الخ الظاهر ان الحلم ههنا بمعنى العقل كما فى قوله تع ام تأمرهم احلامهم اى عقولهم والاكابر جمع اكبر والتسويد الجعل سيدا قوله وعليكم حفظ الاصاغر الخ عليكم اسم فعل بمعنى الزموا وحفظ الاصاغر بالنصب مفعول عليكم مثل قوله تعالى عليكم انفسكم وحتى يبلغ الخنث حتى يبلغ مبلغ الرجال ويجرى عليه القلم فيكتب عليه الخنث وهو الاثم وفى التنزيل العزيز وكانوا يصرون على الخنث العظيم وفى الحديث من مات له ثلاثة من الولد لم يبلغوا الخنث دخل من اى ابواب الجنة شاء وقال الجوهرى بلغ الغلام الخنث اى المعصية والطاعة وقوله المجهود صفة الاصغر من قولهم

جهدت فلانا اذا بلغت مشقته وهولازم الصغير فان الصغير مغلوب مجهود اذا لم يحفظ وهذا الشعر لقيس بن عاصم رضى الله عنه مذكور فى الاغانى لابى الفرج الاصفهانى ومنه كتبته كما قدمت

## كعب بن مالك الانصارى

## رضى الله عنه

فى يوم الخندق

من الوافر

الا ابلغ قريشا ان سلعاً ... وما بين العريض الى الصماد

نواضح فى الحروث مدربات ... وخوص ثقبت من عهد عاد

روا كد يزخر المرار فيها ... فليست بالجمام ولا الثماد

كأن الغاب والبردى فيها ... اجش اذا تبقع للحصاد

ولم نجعل تجارتنا اشتراء الحمير لارض دوس او مراد

بلاد لم تثر الا لكيما ... نجالد ان نشطتم للجلاد

ابرنا سكة الانباط فيها ... فلم نر مثلها جلهات واد

قوله الا ابلغ الخ سلع جبل معروف بالمدينة المنورة و عريض كزبير واد بالمدينة والصماد بالكسر جمع صمد وهو ما ارتفع من الارض وغلظ وفى معجم البلدان الصماد اسم جبل قوله نواضح فى الحروث الخ قال السهيلى يريد حدائق نخل تسقى بالنضح انتهى وقوله مدربات اى مألوفات متعودات وقوله وخوص قال السهيلى

اراد بالخوص الابار وانما جعل الابار خوصا لان الخوصاء هى العين الغائرة وجمعها خوص فعيون الابار فى الابار كذلك غائرة انشد ابو عبيدة فى وصف الابل

مخيسة بزلا كان عيونها عيون الركايا انكرتها المواتح

قوله رواكد يزخر المرار فيها الرواكد جمع راكدة بمعنى الثابتة ويقال زخر البحر اذا طمى وتملأ والمرار كشداد قال السهيلى اسم نهر وقوله فليست بالجمام ولا الثماد الجمام جمع جم وهو الماء الكثير يقال جمت البئر اذا كثر ماؤها والثماد بالكسر جمع ثمد بالفتح او التحريك وهو الماء القليل الذى لامادة له والمعنى لا افراط ولا تفريط قوله كأن الغاب والبردي فيها الغاب جمع غابة والبردي وزان المنسوب الى البردنبات يعمل منه الحصير والاجش افعل من الجشة بالضم وهو شدة الصوت يقال رعد اجش اي شديد الصوت ويقال رجل اجش واج من البحة بالضم وهو شدة الصوت يريد صوت حفيف الريح فيها كصوت الاجش وقد يوصف النبات ايضا بالغنة من اجل حفيف الريح يقال روضة غناء وقوله اذا تبقع للحصاد اى صارت فيه بقع بيض من اليبس يقال للزرع اذا كان كذلك ارقاط واسحام واسحار كذا قال السهيلى والبقع جمع بقعة وهو موضع يخالف لونه لون مايليه وفى صحيح البخارى من حديث عائشة رضى الله عنه كنت اغسل الجنابة من ثوب النبى عليه السلام فيخرج الى الصلاة وان بُقَعَ الماء فى ثوبه قوله ولم نجعل تجارتنا اشتراء الحمير الاشتراء من الاضداد كالشرا ودوس قبيله من اليمن وقد مر فى ترجمة ابى هريرة رضى الله عنه فى باب التاء ومراد كغراب قبيلة من اليمن من مذحج وهو مراد بن مالك بن ادد بن زيد بن كهلان ومالك هو مذحج منهم فروة بن مسيك المرادى الصحابى رضى الله عنه و اويس القرنى رحمه الله وابن ملجم قاتله الله قوله بلاد لم تثر الخ البلاد جمع بلد وهو قطعة مستخرزة من الارض و قيل الارض مطلقا و لم تثرلم تحرث قوله ابرنا سكة الانباط الخ ابرنا لقحنا يقال ابرت النخل بالتخفيف وابرتها بالتشديد فهى مابورة ومؤبرة والاسم الابار بالكسر والسكة الطائفة المصطفة من النخل ومنها يقال للازقة السكك لاصطفاف الدور فيها وفى الحديث خير المال مهرة مأمورة وسكة مأبورة المأمورة الكثيرة النسل والانباط جمع نبط كجيل

جيل من الناس ويقال النبيط ايضا كانوا ينزلون بالبطائح بين العراقين وكانوا اهل حذق ومهارة فى عمارة الارضين وفى حديث عمر رضى الله عنه تمعددوا ولا تستنبطوا اى تشبهوا بمعد ولا تشبهوا بالنبط وفى حديثه الآخر ولا تنبطوا فى المدائن اى لا تشبهوا بالنبط فى سكنا هاواتخاذ العقار والملك فمراد كعب رضى الله عنه اناحرثناها وغرسنا ها كما يفعل الانباط فى ارضها وامصارها لانخاف كيد كائد وجلهات جمع جلهة وهو فم الوادى اوجانبه وقدمر فى شعر حسان رضى الله عنه فى باب الجيم و انما فخرت الانصار فى اشعارها بنخيلها و آطامها اشارة الى عزها ومنعتهما وانها لم تغلب على بلادها على قديم الدهر كما اجليت اكثر العرب عن محالّها وازعجها الخوف عن مواطنها وهذا المعنى اراد حسان رضى الله عنه فى آل جفنة فى قوله

اولاد جفنة حول قبرابيهم  قبرا بن مارية الكريم المفضل

لان اقامتهم حول قبور ابائهم واجدادهم دليل على منعتهم و ان لا مغلب لهم على ما تخيروه من بقاع الارض و آثروه عند ارتيادهم

قصرنا كل ذى حضر و طول  على الغايات مقتدر جواد

اجيبونا الى ما نجتديكم  من القول المبين والسداد

والّا فاصبروا لجلاد يوم  لكم منّا الى شطر المذاد

نصبحكم بكل اخى حروب  وكل مطهم سلس القياد

وكل طمرة خفق حشاها  تدف دفيف صفراء الجراد

وكل مقانص الآراب نهد  تميم الخلق من اخرو هاد

خُيولٌ لا تُضاعُ اذا اُضيعت  خُيولُ النّاس فى السّنة الجَماد

يُنازِعُ عن الاعِنّة مُصغِياتٍ  اذا نادى الى الفَزَع المُنادى

قوله قصرنا كل ذى حضر الخ قصرنا بمعنى حبسنا يقال قصر الفرس اذا حبسه وصانه فى البيت ومنه يقال فرس قصير اى مقربة لاتترك ان ترود المرعى لنفاستها قال الشاعر يصف فرسه وانها تصان لكرامتها وتبذل اذا نزلت شدّة

تراها عند قبتنا قصيرا  وتبذلها اذا بافت بثوق

البثوق الداهية والحضر بالضم ارتفاع الفرس فى عدوه كالاحضار والفرس محضير لاحضار ذكره فى القاموس وقوله على الغايات متعلق بمقتدر والغايات جمع غاية وهى المدى والمنتهى وفى الحديث سابق بين الخيل فجعل غاية المضمّرة كذا قوله اجيبونا الى مانجتديكم الخ يقال اجتداء اذا طلب منه حاجته وقوله من القول المبين بيان لما نجتديكم والمبين على صيغة اسم الفاعل من بين بمعنى ظهر ووضح اوعلى صيغة اسم المفعول من بينه بمعنى اوضحه والقول المبين هو الاسلام قوله والا فاصبروا الخ الشطر الجهة قال الله تعالى فولوا وجوهكم شطره والمذاد كسحاب موضع بالمدينة وهو الذى حفر فيه رسول الله عليه السلام الخندق اووادبين سلع والخندق قوله نصبحكم بكل اخى حروب الخ المطهّم التام الخَلق البارع الجمال يقال رجل مطهم وفرس مطهم واماما ورد فى حلية النبى عليه السلام ليس بالمطهم فهو بمعنى المنتفخ الوجه اوالفاحش السمن او النحيف الجسم قال ابن الاثيرهو من الاضداد وسلس ككتف قال فى الاساس وفرس سلِس القياد وفيه سلَس وان فلانا لسلِس القياد ومسلاس القياد والسلاسة اللين فمعنى سلس القياد انه منقاد لصاحبه مدرّب قوله وكل طمرّة الخ الطمرة بكسر الطاء والميم والراء المشددة المنتوحة فرس انثى رائعة اوالطويلة القوائم الخفيفة اوالمستعدّة للعدو والمذكر طمر وفرس خفق الحشا بمعنى ضامر البطن خميصه قوله تدف دفيف صفراء الجراد تدف اى تسير سيرا لينا والدفيف مصدر كالدبيب وفى الحديث ان فى الجنة لنجائب تدف

بركبانها قال ابن الاثير اى تسير سير الينا وصفراء الجراد هى الخيفانة منها وهى التى القت بيضها وهى اخف طيرانا والعرب تشبه الفرس بالخيفانة فى خفتها قال امرؤ القيس

واركب فى الروع خيفانة  لها ذنب حلفها مسبطر

وقال عنترة

فغدوت تحمل شكتى خيفانة  مرط الجراء لها تميم اتلع

وفى القاموس والصفراء الجرادة اذا خلت من البيض إنتهى قال الشاعر ملغزا

فما صفراء تكنى ام عوف  كأن رجليتها منجلان

قوله وكل مقلّص الاراب نهد الخ قدمر معنى المقلص فى شعر حسان فى غزوة ذى قرد والنهد المرتفع وتميم الخلق تامه ووثيقه والاخر بضمتين المؤخر كما فى المصباح والهادى المقدم وقدمر فى شعر حسان تطاول بالخمان ليلى فى باب الباء قوله خيول لاتضاع الخ فى الاساس سنة جماد وارض جماد لاحيا فيها والحيا بالقصر المطر قوله ينازعن الاعنة الخ الاعنة جمع عنان الدابة ومعنى منازعتها الاعنة مغالبتها بحيث لاتكاد تضبط بها والمصغيات المائلات المنخرفات للطعن وقوله اذا نادى الى الفزع المنادى الفزع ههنا الاغاثة والمنادى المستغيث

اذا قالت لنا النذر استعدوا  توكلنا على رب العباد

وقلنا لن يفرج ما لقينا  سوى ضرب القوانس والجهاد

فلم نر عصبة فيما لقينا  من الاقوام من قار وباد

اشد بسالة منا اذا ما  اردناه والين فى الوداد

النذر بضمتين جمع نذير بمعنى المنذر المحذر فعيل بمعنى المفعل كاليم بمعنى

المؤلم ومنه قوله تعالى كذبت ثمود بالنذر قال الزجاج النذر جمع نذير والقوانس جمع قونس وهو اعلى بيضة الحديد كالقونوس اواعلى الرأس كالقنس بالكسر وقوله والجهاد عطف على ضرب القوانس والقارى الساكن فى القرية والبادى الساكن فى البادية والبسالة الشجاعة وضمير اردناه راجع الى مافى قوله فيما لقينا اي اذا اردنا مقاتلة مالقينا من الاقوام وقوله والين فى الوداد اى السلم يريد انا اشجع الناس فى الحرب والينهم فى السلم

اذا ما نحن اشرجنا عليها ... جياد الجدل فى الارب الشداد

قذفنا فى السوابغ كل صقر ... كريم غير معتلث الزناد

اشم كأنه اسد عبوس ... غداة غدا ببطن الجزع غاد

يغشى هامة البطل الذكى ... صبى السيف مسترخى النجاد

لنظهر دينك اللهم انا ... بكفك فاهدنا سبل الرشاد

اشرجت العيبة وشرجتها اذا شددتها بالشرج وهو العرى والجدل بالفتح احكام فتل الحبل وضمير عليها للخيول المستفادة من السياق فالمعنى اذا شددنا الحبال الجيدة الفتل على الخيول يريد اذا هيأناها للحرب والارب بالكسر جمع اربة وهي الشر والغائلة والشداد جمع شديدة صفة الارب قوله قذفنا فى السوابغ الخ قذفنا رمينا والسوابغ جمع سابغة وهى الدرع الطويلة الواسعة وقوله غير معتلث الزناد قال فى الاساس فلان غير معتلث الزناد اذا كان متخير المنكخ يقال اعتلث الزند اذا لم يتنوق فى اختياره انتهى ومعنى لم يتنوق لم يتجود ولم يبالغ فى اختياره يقال تنوق وتنيق فى مطعمه وملبسه اى تجود وبالغ يريد صاحب الاساس ان هذا الزناد لم يؤخذ من شجرة طيبة كالمرخ وقال السهيلى الزناد المعتلث الذى لايدرى من اى عود اخذ واصل الاعتلاث

الاختلاط يقال علث الطعام اذا خلط البر بالشعير والعلاثة الزناد الذى لايورى نارا وحاصل مراد كعب رضى الله عنه انه خالص النسب غير مخلوط من امهات كرائم قوله اشم كأنه الخ اشم افعل من الشمم وهو ارتفاع قصبة الانف واستواء اعلاها واشراف الارنبة قليلا هذا اصله ثم يستعمل فى العلو والشرف كما فى قول كعب بن زهير رضى الله عنه

شم العرانين ابطال لبوسهم  من نسج داود فى الهيجا سرابيل

والجزع الوادى وغاد فاعل غدا يقول اذا مشى ماش اى ماش كان فان الاسد يتعبس اذا رأه قوله ينشى هامة البطل الخ يقال غشيه الامر وتغشاه اتاه اتيان ماغشيه اى ستره واغشيته اياه وغشيته وفى التنزيل فغشيهم من اليم ماغشيهم وفيه ايضا يغشى الليل النهار واذ يغشيكم النعاس والهامة الرأس وصبى السيف حده اوغيره الناتئ فى وسطه وهو بالنصب مفعول ثان ليغشى ومسترخى النجاد فى معنى طويل النجاد قوله انا بكفك قد ورد اطلاق الكف مضافا الى الله فى حديث الصدقة كانما يضعها فى كف الرحمن وفى حديث عمر رضى الله عنه ان الله ان شاء ادخل خلقه الجنة بكف واحدة فقال النبى عليه السلام صدق عمر ومذهب السلف فى امثال ذلك التوقف ومذهب الخلف التأويل بمعنى يليق بكبريائه تعالى فمعنى الكف ههنا على مذهب الخلف القدرة وهذه القصيدة الطنانة لكعب رضى الله عنه مسطورة فى سيرة ابن هشام رحمه الله ومنها كتبتها

## كعب بن مالك الانصارى

## رضى الله عنه

فى غزوة خيبر

ونحن وردنا خيبراً وفروضه  بكل فتى عارى الاشاجع مذود  من الطويل

جواد لدى الغايات لاواهن القوى  جرئ على الاعداء فى كل مشهد

عظيم رماد القدر فى كل شتوة ضروب بنصل المشرفى المهند

يرى القتل مجداً ان اصاب شهادة من الله يرجوها وفوزاً باحمد

يذود ويحمى عن ذمار محمد ويدفع عنه باللسان وباليد

وينصره من كل امر يريبه يجود بنفس دون نفس محمد

يصدق بالانباء بالغيب مخلصا يريد بذلك الفوز والعز فى غد

قوله ونحن وردنا خيبرا وفروضه الخ الفروض جمع فرض بمعنى الترس فاراد بالفروض الحصون لانه يمنع بها والاشاجع جمع اشجع كاحمد وقيل كاصبع قال فى النهاية فى صفة ابى بكر عارى الاشاجع هى مفاصل الاصابع اى كان اللحم عليها قليلا وقيل هو ظاهر عصبها انتهى ويقال للذئب والاسد عارى الاشاجع فاما ان يراد هنا المعنى الاول فيكون مدحا لهم بالخفة لان كثرة اللحم مذمومة واما ان يراد المعنى الثانى على التشبيه والمذود على صيغة الآلة مبالغة الذائد بمعنى الحامى قوله جواد لدى الغايات الخ اى سباق الغايات كالفرس الجواد قوله عظيم رماد القدر الخ عظيم رماد القدر من مشهور الكناية عن المضياف والشتوة بمعنى الشتاء احد فصول السنة قوله وينصره من كل امر يريبه اى من كل امر يحزنه ويقلقه يقال رابنى الامر وارابنى وقدمر قوله يجود بنفس دون نفس محمد اى يموت دافعا عن محمد عليه السلام ولقد صدق كعب رضى الله عنه فكم من نفوس للانصار رضوان الله تعالى عليهم جادوا بها دونه صلى الله عليه وسلم حتى نساؤهم كن يجدن بنفوسهن دونه فلينظر الناظر الى ماورد فى قصة غزوة احد وهو انه لما اقترب المشركون من رسول الله عليه السلام جاء زياد بن السكن او عمارة بن يزيد ابن السكن فى خمسة نفر من الانصار فقاتلوا دون رسول الله عليه السلام حتى قتلوا رجلا رجلا وكان آخرهم قتلا زياد او عمارة قاتل حتى اثبتته الجراح ثم فاءت فئة من المسلمين فاجهضوهم عنه فقال رسول الله عليه السلام ادنوه منى

يعنى زيادا او عمارة فادنوه منه فوسّده قدمه فمات وخدّه على قدم رسول الله عليه السلام وقاتلت ام عُمارة نَسيبَة بنت كعب المازنية يوم احد قالت خرجت اول النهار وانا انظر مايصنع الناس ومعى سقاء فيه ماء فانتهيت الى رسول الله عليه السلام والدولة والريح للمسلمين فلما انهزم المسلمون انحزت الى رسول الله عليه السلام فقمت اباشر القتال واذبّ عنه بالسيف وارمى عن القوس حتى خلصت الجراح الىّ قالت ام سعد بنت سعد بن الربيع الانصاري رضى الله عنه رأيت على عاتقها جرحا اجوف له غور فقلت من اصابك بهذا قالت ابن قمئة اقمأه الله اقبل حتى جاء قريبا من رسول الله عليه السلام وهو يقول دلّونى على محمد لانجوت ان نجا فاعترضت له انا ومصعب ابن عمير رضى الله عنه واناس ممن ثبت مع رسول الله عليه السلام فضربنى هذه الضربة ولكن فلقد ضربته على ذلك ضربات ولكن عدو الله كانت عليه درعان وترّس دون رسول الله عليه السلام ابودجانة الانصارى رضى الله عنه بنفسه يقع النبل فى ظهره وهو منحن عليه حتى كثر فيه النبل فهذه مشاهد انصار دين الله مع رسوله عليه السلام فقد حق لهم كل فخر رضى الله عنهم اللهم ثبت قلبى على حبهم ولاتحرمنى شفاعتهم وهذه القصيدة كتبتها من سيرة ابن هشام

## كعب بن مالك الانصارى

## رضى الله عنه

يرثى حمزة بن عبدالمطلب رضى الله عنه عم النبى صلى الله عليه وعلى آله وسلم

طَرَقَتْ هُمومُكَ فالرُّقادُ مُسَهَّدُ ... وجَزِعْتَ انْ سَلِخَ الشَّبابُ الاغْيَدُ

من الكامل

وَدَعَتْ فُؤادَكَ لِلْهَوى ضَمْرِيَّةٌ ... فَهَواكَ غَوْرِىٌّ وصَحْوُكَ مُنْجِدُ

فَدَعِ التَّمادِىَ فى الغَوايَةِ سادِرا ... قد كُنْتَ فى طلب الغواية تُقْنِدُ

ولقد أنى لك أن تناهى طائعاً  او تستفيق اذا نهاك المرشد

قوله طرقت همومك الخ الطروق الاتيان ليلا وهمومك فاعل طرقت والرقاد النوم ويقال سهّده الهم واسهده فهومسهّد وسهد كفرح قليل النوم فقوله مسهد على المجازاى صاحبه وسلخ على بناء المجهول اى نزع وازيل والاغيد المتثنّى المائل فتوصيف الشباب مجاز كما فى قول الشاعر

وليل هديت به فتية  سقوا بصباب الكرى الاغيد

فانه اراد الكرى الذى يعود منه الركب غيدا وذلك لميلانهم على الرحال من نشوة الكرى طورا كذا وطورا كذا لالان الكرى نفسه اغيدلان الغيد انما يكون فى الاجسام قوله و دعت فؤادك للهوى الخ النسبة فى ضمرية للمبالغة كما فى احمرى يقال امرأة ضمرة وهى الهضيمة البطن اللطيفة الجسم والرجل ضمر وقوله فهواك غورى وصحوك منجد الصحو ذهاب السكر ويستعمل فى السلو عن الحب والغورى المنسوب الى الغور وهى الارض المنخفضة والمنجد المنسوب الى النجد وهى الارض المرتفعة ولم يتسر لى فهم المراد من هذا التركيب وعسى الله ان يفتح علينا قوله فدع التمادى الخ الغواية الضلالة والانهماك فى الباطل والسادر التائه واللاهى والذى لايهتمّ ولايبالى ماصنع قال فى النهاية وفى كلام على رضى الله نفر مستكبرا وخبط سادرا اى لاهيا وفى الاساس وانه سادر فى الغىّ تائه وتكلّم سادرا غير متثبّت فى كلامه وقوله تفند من افند الرجل اذا هرم والفند فى الاصل الكذب وافند تكلم بالفند ثم قالوا للشيخ اذا هرم افند لانه يتكلم بالمخرف من الكلام كذا فى النهاية يقول تماديت فى الغواية حتى كدت ان تهرم فيه فابرزه فى صورة القطع للمبالغة فى تماديه على مرالسنين قوله ولقد انى لك الخ انى الشئ انيا من باب رمى دنا وقرب وحضر وانى لك ان تفعل كذا والمعنى هذا وقته فبادر اليه قال تعالى الم يأن للذين آمنوا ان تخشع قلوبهم لذكر الله وفى حديث فتح مكة ان النبى عليه السلام قال لابى سفيان لما اتى به العباس رضى الله عنه الم يأن لك ان تشهد ان لااله الاالله وانى رسول الله وقد قالوا آن لك ان تفعل أينا من باب باع بمعناه وهو مقلوب كذا فى

المصباح وتنامى بحذف احدى التائين من المضارع وتستفيق بمعنى تفيق والمعنى بنفسك او بنصح ناصح

ولقد هددت لفقد حمزة هدة ... ظلت بنات الجوف منها ترعد

ولو انه فجعت حراء بمثله ... لرأيت رأسى صخرها يتبدد

قرم تمكن فى ذؤابة هاشم ... حيث النبوة والندى والسودد

والعاقر الكوم الجلاد اذا غدت ... ريح يكاد الماء فيها يجمد

والتارك القرن الكمي مجدلاً ... يوم الكريهة والقنا يتقصد

وتراه يرفل فى الحديد كأنه ... ذو لبدة شثن البراثن اربد

عم النبي محمد وصفيه ... ورد الحمام فطاب ذاك المورد

واتى المنية معلما فى اسرة ... نصروا النبي ومنهم المستشهد

قوله ولقد هددت على بناء المجهول من هده الامر وهد ركنه اذا بلغ منه وكسره وعن بعضهم ماهدنى موت احد ماهدنى موت الاقران وهدته المصيبة اوهنت ركنه وبنات الجوف لم اجد هذا التركيب فى كتب اللغة والظاهر ان المراد طوائف القلب كبنات القلب وبنات الحشا وقد ورد بنات القلب فى شعر ابى ذؤيب وبنات الحشا فى شعر حسان رضي الله تعالى قوله ولو انه فجعت حراء الخ بنقل

حركة همزة لوانه الى الواو والساكنة قبلها للوزن ورأسا الصخرة طرفاها اى بدايتها ونهايتها والمراد كلّها ويتبدد اى يتقطع ويتفرق كل منهما يعنى لشدة الامر وتفاقم المصيبة قوله قرم تمكن الخ قدمر معنى القرم فى شعر حسان رضى الله عنه فى باب الباء وتمكن تأصل واستقر وقوله حيث النبوة والندى والسود حيث ظرف مكان مضاف الى جملة اسمية حذف خبرها اى حيث النبوة موجودة قال الرضى وحذف خبر المبتدأ الذى بعد حيث غير قليل وليس حيث مضافا الى مفرد لانه مع قلته يلزم منه الاقواء فى الشعر لان الندى والسودد يكونان حينئذ معطوفين على النبوة فيلزم الجر فيهما والقوا فى على الرفع قوله والعاقر الكوم الخ الكوم جمع اكوم وكوماء يقال ناقة كوماء وهى العظيمة السنام وبعير اكوم والجلاد الابل الغزيرات اللبن كالمجاليد اوالتى لا لبن لها ولا نتاج وهنّ اسمن وقوله اذا غدت ريح الخ يريد ايام الشتاء قوله والتارك القرن الخ قدمر معنى القرن والكمى والمجدل وقوله وانقنا يتقصداى يتكسّر من شدة الطعن قوله وتراه يرفل الخ يقال رفل وارفل تبختر قال ابوالفتح البستى

يا رافلا فى الثياب الوجف منتشيا ... من كأسه هل اصاب الرشد نشوان

واللبدة الشعر المتراكب بين كتفى الاسد والجمع لبد كقربة وقرب وذولبدة لقب الاسد وشثن البراثن خشنها وهى جمع برثن كقنفذ بمعنى مخلب الاسد اوهو للسبع كالاصبع للانسان والاربد بمعنى المتربد وهو العبوس والمتغير اللون من الغضب والاربد ايضا من اسماء الاسد قوله عم النبى الخ الصفى الحبيب الذى يصافيك الاخاء قوله واتى المنية معلما قدمر معنى المعلم فى شعر عائكة رضى الله عنها فى باب الباء والاسرة من الرجل الرهط الادنون وعشيرته

ولقد اخال بذاك هندا بشرت ... لتميت داخل غصة لا تبرد

مما صبحنا بالعقنقل قومها ... يوما تغيب فيه عنها الاسعد

وببئر بدر اذ يرد وجوههم ... جبريل تحت لوائنا ومحمد

حتى رأيت لدى النبي سراتهم  قسمين نقتل من نشأ ونطرد

فاقام بالعطن المعطن منهمو  سبعون عتبة منهمو والاسود

وابن المغيرة قد ضربنا ضربة  فوق الوريد لها رشاش مزبد

واميطة الجحيي قوم ميله  عضب بايدى المؤمنين مهند

فاتاك قل المشركين كأنهم  والخيل تقفهم نعام شرد

شتان من هو في جهنم ثاويا  ابدا و من هو في الجنان مخلد

قوله ولقد اخال بذاك الخ من المشهور ان همزة اخال تقرأ بالكسر وهى بمعنى اظن وهندا مفعول اول لها وجملة بشرت مفعولها الثانى و بذاك متعلق ببشرت قدم عليه وهندهى بنت عتبة بن ربيعة امرأة ابى سفيان استبشرت بقتل حمزة رضى الله عنه وفعلت مافعلت مما هو مذكور فى كتب السير وقدمر انها اسلمت يوم الفتح وحسن اسلامها وعفا الله عمّا سلف قوله لتميت داخل غصة اى لتفنى بذلك غصّتها اى حزنها الداخل فى جوفها ولاتبرد اى لاتسكن ولاتفتر وفى حديث عمر رضى الله عنه انه شرب النبيذ بعدما برد اى سكن و فتر قوله مما صبحنا الخ من للسببية وما مصدرية ومدخولها فى تاويل المصدر مجرور بمن والجار مع المجرور صفة غصة فى البيت السابق اى غصة ثابتة من اجل صبحنا قومها اى اغارتنا عليهم والعقنقل قال الزوزنى فى قول امرئ القيس

فلما اجزنا ساحة الحى وانتحى  بنا بطن خبت ذى حقاف عقنقل

العقنقل الرمل المتلبّد المتعقّد واصله من العقل وهو الشدّ وفى القاموس هو الوادى

العظيم المتسع والكثيب المتراكم والمراد ههنا على مافى سيرة ابن هشام هو الكثيب الذى نزلت خلفه قريش يوم بدر بالعدوة القصوى من الوادى و بطن الوادى هو يَلْيَلَ وكان اصحاب رسول الله عليه السلام بالعدوة الدنيا اى القربى الى المدينة والعدوة شط الوادى والاسعد جمع سعد بمعنى اليمن قوله وببئر بدر اذ يرد وجوههم الخ ببئر بدر عطف على قوله بالعقنقل وفى البيت دليل على ان الملائكة قاتلت يوم بدر قوله حتى رأيت لدى النبى سراتهم الخ السّراة جمع سرىّ على ما ذكره الجوهرى من السرو وهو الشرف قال وهو جمع عزيز ان يجمع فعيل على فَعَلَة وفى المصباح السرى الرئيس والجمع سراة وهو جمع عزيز لايكاد يوجد له نظير انتهى وهو اسم جمع عند سيبويه وقوله ونطرد اى ونطرد من نشاء ونأسر من نشاء قوله فاقام بالعطن المعطن الخ العطن محركة مبرك الابل عند الحوض والمعطن من عطن تعطينا اذا اتخذ عطنا كما يقال عشّش الطائر اى اتخذ عشّا والعطن اما على الحقيقة فان ببدر آبارا اوشبه مصارعهم بمبارك الابل وفى البيت دليل على ان قتلى المشركين يوم بدر كانوا سبعين قال ابن هشام فى السيرة حدثنى ابو عبيد عن ابى عمرو ان قتلى بدر من المشركين كانوا سبعين رجلا وهو قول ابن عباس وسعيد بن المسيب وفى كتاب الله عزوجل اولما اصابتكم مصيبة قد اصبتم مثليها يقوله لاصحاب احد وكان من استشهد منهم سبعين رجلا يقول قد اصبتم يوم بدر مثلى من استشهد منكم يوم احد سبعين قتيلا وسبعين اسيرا وانشدنى ابوزيد الانصارى لكعب بن مالك رضى الله عنه فاقام بالعطن البيت انتهى وعتبة المذكور فى البيت هو عتبة بن ربيعه بن عبد شمس والاسود هو الاسود بن عبد الاسد بن هلال المخزومى اخو ابى سلمة رضى الله عنه زوج ام سلمة رضى الله عنها قبل النبى عليه السلام واسود هذا اول من قتل من المشركين يوم بدر وكان رجلا شَرِساً سَيِّئَ الخلق فقال اعاهد الله لَاَشْرَبَنّ من حوضهم يعنى حوض المسلمين الذى بَنَوْه ببدر على ماهو مذكور فى قصة بدر اولا هدمنّه اولاموتنّ دونه فلما خرج خرج اليه حمزة بن عبد المطلب رضى الله عنه فلما التقيا ضربه حمزة ضربة اطن بها قدمه بنصف ساقه وهو دون الحوض فوقع على ظهره تشخب رجله دما نحو اصحابه ثم حبا الى الحوض حتى اقتحم فيه يريد زعم ان تَبَرّ يمينه واتبعه حمزة

رضى الله عنه فضربه حتى قتله فى الحوض قوله وابن المغيرة قد ضربنا الخ ابن المغيرة هو ابوجهل بن هشام بن المغيرة المخزومى وقدمر ان عتبة وابا جهل قتلا يوم بدر وكيف قتلا ومن قتلهما فى شعر لحسان رضى الله عنه فى باب الباْ قوله وامية الجمحى قوم ميله اميّة بالرفع على الابتداء وبالنصب على الاضمار على شريطة التفسير وتقويم الميل يريد به الاذلال لان ميل الجانب علامة الكبر يقال نأى بجانبه وثنى عطفه ولوى شدقه كناية عن التكبر فتقويم الميل هوازالة الكبر بالتوضيع والاذلال فتقويم الميل بالعضب هواذلاله بالقتل به اوتقويم الميل عبارة عن اخذ الثأر كما حكى ابوعلى القالى فى الامالى عن ابى بكر بن دريد انه قال فى بيت ابى كبير الهذلى

نضع السّيوف على طوائف منهمو  فنقيم منهم ميل ما لم يعـدل

قوله ميل ما لم يعدل ميله فضله وزيادته وانما يريد ان هؤلاء القوم كانوا قد غزوهم فقتلوهم فكأن ذلك القتل ميل على هؤلاء القوم ثم ان هؤلاء القوم المقتولين غزوهم بعد فقتلوهم فكأن قتلهم لهم قيام للميل وهذا كقول ابن الزّبَعْرى واقمنا ميل بدر فاعتدل يقولها فى يوم احـد يقول اعتدل يوم بدر اذ قتلنا منهم يوم احد وامية هذا هوابن خلف من بنى جمح بن عمرو بن هصيص بن كعب بن لؤى كان كثير الايذاء للمسمين بمكة وكان يقال له رأس الكفر قتله بلال المؤذن باعانة رجال من الانصار يوم بدر وسـيأتى كيفية قتله عند ذكر شعر لبلال رضى الله عنه فى باب اللام انشـاء الله قوله فاتاك فل المشركين الخ الظاهر ان الخطـاب لهند والفل بالفتح المنهزم يستوى فيه الواحد والجمع يقال قوم فلّ اى منهزمون وتثقفهم من خدى نصروضرب والنعام اسم جنس النعامة الطائر المعروف كحمام وحمامة والشرّد جمع شـارد من شرد اذا نفر وقد ضربت العرب المثل بالنعامة فقالوا اشرد من نعامة واجبن من نعامة واعدى من نعامة قوله شتان من هوفى جهنم ثاويا اى مقيما وهو حال وقوله فى الجنان ظرف لمخلد الذى هو خبر هو وقد مر معنى شتان فى آخر قصيدة كعب رضى الله عنه سائل قريشا فى باب الباء وهذه القصيدة لكعب رضى الله عنه كتبتها من سيرة ابن هشام

## لبيد ربيعة العامرى

## رضى الله عنه

### فى السآمة من طول العمر وفى غلبة الدهر على المرء

### الترجمة

هو لبيد بن ربيعة بن مالك بن جعفر بن كلاب بن ربيعة بن عامر بن صعصعة بن معاوية بن بكر بن هوازن بن منصور بن عكرمة بن خصفة بن قيس عيلان بن مضر بن نزار وكنيته ابو عقيل وامه تاصرة بنت زنباع العبسية وهو احد شعراء الجاهلية المدونين فيها والمخضرمين ممن ادرك الاسلام وهو من اشراف الشعراء المجيدين الفرسان القراء المعمرين يقال انه عمر مائة وخمسا واربعين سنة قدم على النبى عليه السلام فى وفد قومه بعد موت اخيه اربد وعامر بن الطفيل فاسلم وهاجر وحسن اسلامه ونزل الكوفة ايام عمر بن الخطاب رضى الله عنه فاقام بها ومات هناك فى آخر خلافة معاوية فكان عمره مائة وخمسا واربعين سنة منها تسعون فى الجاهلية وبقيتها فى الاسلام كذا فى الاغانى وقوله من القراء فى وصف لبيد لم يوجد فى بعض النسخ والظاهر انه جمع قارمن قرى الضيف لاجمع قارئ من قرألان لبيدا قد اشتهر بالقرى والضيافة وقال ابو العباس المبرد فى الكامل وكان لبيد بن ربيعة شريفا فى الجاهلية والاسلام قدنذر ان لاتهب الصبا الانحر واطعم حتى تنقضى فهبت بالاسلام وهوبالكوفة مقتر مملق فعلم بذلك الوليد بن ابى معيط وكان واليها لعثمان بن عفان رضى الله عنه وكان اخاه لامه وامهما اروى بنت كريز بن حبيب بن ربيعة بن عبد شمس وام اروى البيضاء بنت عبدالمطلب فخطب الناس وقال انكم قدعرفتم نذر ابى عقيل وما وكّد على نفسه فاعينوا اخاكم ثم نزل فبعث اليه بمائة ناقة وبعث الناس فقضى نذره ففى ذلك تقول ابنة لبيد رضى الله عنه

اذا هبت رياح ابى عقيل ... دعونا عند هبتها الوليدا

وذكر غير ابى العباس ان الوليد بعث اليه مائة ناقة وابياتا يقول فيها

ارى الجزّار تشحذ مدْيَتاه  اذا هبت رياح ابى عقيل
طويل الباع ابيض جعفرى  كريم المجد كالسيف الصقيل
وَفى ابنُ الجعفرىّ بمالديه  على العلاّت والمال القليل

فلما انته قال جزى الله الامير خيرا قد عرف الاميرانى لااقول شعرا ولكن اخرجى يا بُنَيَّتى فخرجت خماسية وهى التى بلغ طولها خمسة اشبار فقال لها اجيبى الامير فاقبلت وادبرت ثم انشأت تقول

اذا هبت رياح ابى عقيل  دعونا عند هبتها الوليدا
طويل الباع ابيض عبشميا  اعان على مروّته لبيدا
بامثال الهضاب كأن ركبا  عليها من بنى حام قعودا
اباوهب جزاك الله خيرا  نحرناها واطعمنا الثّريدا
فَعُدْنَ الكريم له مَعاد  وظنى بابن اروى ان يعودا

فقال لها لبيد احسنت يابنيتى لولا انك سألت فقالت ان الملوك لايستحى من مسئلهم فقال لها يا بنيتى وانت فى هذا اشعر وقول صاحب الاغانى فى عمر لبيد انه عاش مائة وخمساً واربعين سنة تسعون منها فى الجاهلية وبقيتها فى الاسلام لايلتئم مع قوله ان لبيدا اسلم بعد موت اخيه اربد وانه مات فى آخر خلافة معاوية رضى الله عنه لان وفود اربد وعامر بن الطفيل على النبى عليه السلام كان سنة الوفود وهى السنة التاسعة من الهجرة ووفاة معاوية رضى الله عنه سنة تسع وخمسين اوسنة ستين فلا يمكن ان يكون من اسلام لبيد الى وفاة معاوية رضى الله عنه اكثر من اثنتين وخمسين سنة ثم هذا يوافق ماقال ابو عمر فى الاستيعاب وقال مالك بن انس بلغنى ان لبيد بن ربيعة مات وهو ابن مائة واربعين سنة ونقل صاحب الاصابة عن المرزبانى انه مات سنة احدى واربعين من الهجرة يوم دخل معاوية الكوفة ثم نقل عن العسكرى انه قال وكان عمره مائة وخمسا واربعين سنة منها خمس وخمسون فى الاسلام وتسعون فى الجاهلية ثم قال صاحب الاصابة المدة التى ذكرها فى الاسلام وَهم والصواب ثلاثون وزيادة سنة اوسنتين الا ان يكون ذلك مبينا على ان سن

وفاته كانت سنة نيف وستين وهو احد الاقوال قلت وتخطئة صاحب الاصابة للعسكرى مبنية على رواية المرزبانى وقيل انه مات بالكوفة فى ايام الوليد بن عقبة فى خلافة عثمان رضى الله عنه قال ابو عمر وهذا اصح وشعر لبيد فى الجاهلية كثير ذكر فى الاستيعاب عن عائشة رضى الله عنه انها قالت رويت للبيد اثنى عشر الف بيت واما شعره فى الاسلام فقليل حتى قيل انه لم يقل الا بيتا واحدا وهو قوله

ماعاتب المرء الكريم كنفسه  والمرء يصلحه القرين الصالح

قال له عمر بن الخطاب رضى الله عنه يوما يا ابا عقيل انشدنى شيأ من شعرك قال ما كنت لاقول الشعر بعد ان علمنى الله البقرة وآل عمران فزاده عمر رضى الله عنه فى عطائه خمسمأته وكان انفين فلما كان فى زمن معاوية رضى الله عنه قال له معاوية رضى الله عنه هذان الفودان فما بال العلاوة يعنى بالفودين الالفين وبالعلاوة الخمسمائة واراد ان يحطها فقال اموت الآن فتبقى لك العلاوة والفودان فرق له وترك عطائه بحاله فمات بعد ذلك بيسير قال فى الاغانى فمات ولم يقبضه وقد ذكر فى كثير من الكتب المشهورة ابيات له فى او اخر عمره منها ما ذكر فى الاغانى انه لما جاوز مائة وعشرا من السنين قال

من الكامل  ولقد سئمت من الحياة وطولها  وسؤال هذا الناس كيف لبيد

غلب الرجال وكان غير مغلب  دهر طويل دائم ممدود

يوما ارى يأتى على وليلة  وكلاهما بعد المضاء يعود

واراه يأتى مثل يوم لقيته  لم ينتقص وضعفت وهو شديد

يقال سئمت الشيء ومنه سأما وسأمة وسأما بمعنى مللت قوله غلب الرجال الخ تنازع غلب وكان فى دهر بالفاعلية والمغلب على صيغة المفعول من التفعيل المغلوب قوله يوما ارى الخ توسطت ارى بين مفعوليها وليلة معطوف على يوما وافراد الضمير.

فى يعود بالنظر الى لفظ كلا وكذلك يجوز فى كلتا قال تعالى كلتا الجنتين آتت اكلها ويجوز التثنية نظرا الى معناهما وهو قليل وقد اجتمعا فى قوله

كلاهما حين جدالسير بينهما  قد اقلعا وكلا انفيهما رابى

ويتعين مراعاة اللفظ فى نحو كلاهما محب لصاحبه لان معناه كل منهما وكذا فى قوله

كلانا غنى عن اخيه حياته  ونحن اذا متنا اشد تغانيا

كذ افى المغنى قوله و اراه يأتى الخ يقول ان الزمان دائما على حالة واحدة من تعاقب الملوين و تكرر الجديدين لا يهرم ولا يضعف بخلاف الانسان فانه لايدوم على حالة واحدة ويهرم ويضعف وهذا الشعر كتبته من الاغانى كما قدمت وفى كتاب المعمرين لابى حاتم السجستانى انه قال البيت الاول بعد مابلغ مائة واربعين سنة والله اعلم

## مالك بن عوف النصرى

### رضي الله عنه

### فى مدح النبى صلى الله عليه وسلم لما جاء اليه واسلم

### الترجمه

هو مالك بن عوف بن سعد بن يربوع بن واثلة بالمثلثة عند ابى عمر وبالمثناة التحتانية عند ابن سعد ابن دهمان بن نصر بن معاوية بن بكر بن هوازن ابوعلى النصرى رضى الله عنه كان رئيس المشركين يوم حنين ثم اسلم و كان من المؤلفة قلوبهم وصحب ثم شهد القادسية وفتح دمشق واستعمله رسول الله عليه السلام على من اسلم من قومه ومن تلك القبائل من ثمالة وسلمة وفهم فكان يقاتل ثقيفا فلا يخرج لهم سرح الا اغار عليه حتى يصيبه وقال دعبل لمالك بن عوف اشعار جياد وقال ابن اسحق لما انهزم المشركون يوم حنين لحق مالك بن عوف بالطائف فقال رسول الله عليه السلام لواتانى مسلما لرددت عليه اهله وماله فبلغه ذلك فلحق

به وقد خرج من الجعرانة فاسلم واعطاه اهله وماله واعطاه مائة من الابل فقال مالك بن عوف يخاطب النبى عليه السلام من قصيدة

ما ان رأيت ولا سمعت بواحد ... فى الناس كلهم كمثل محمد

اوفى واعطى للجزيل لمجتدى ... ومتى تشا يخبرك عما فى غد

واذا الكتيبة عردت انيابها ... بالسمهرى وضرب كل مهند

فكأنه ليث على اشباله ... وسط الهباءة خادر فى مرصد

ان فى ما ان رأيت زائدة لتأكيد النفى والمجتدى طالب الجدوى وقوله متى تشا بحذف الهمزة يريد بذلك كثرة اخباره بالمغيبات معجزة من الله تعالى قوله واذا الكتيبة عردت الخ يقال عردت انياب الابل اذا غلظت واشتدت يريد اذا اشتعلت الحرب واشتدت وقوله بالسمهري اى بطعن السمهرى وهو الرمح الصلب قيل نسب الى سمهر اسم رجل وهو زوج ردينة التى ينسب اليها الردينى وكانا مثقفين قوله فكأنه ليث الخ الاشبال جمع شبل وهو ولد الاسد والاسد اشجع مايكون اذا كان عند اشباله يحميها والهباءة كسحابة ارض لغطفان ويوم الهباءة من ايام داحس والغبراء كان لبنى على ذبيان ونزارة وقوله خادر بالرفع صفة ليث والخادر المقيم فى خدره وهو عرينه و مسكنه وفى قصيد كعب بن زهير رضى الله عنه

من خادر من ليوث الاسد مسكنه ... من بطن عثر غيل دونه غيل

والمرصد موضع الرصد اي الترقب والرصيد الاسد الذي يرصد ليثب وخلاصة البيتين مدحه عليه السلام بكمال الشجاعة عند احتدام الوقيعة وهذا الشعر لمالك بن عوف رضى الله عنه مسطور فى سيرة ابن هشام رحمه الله تعالى ومنها كتبته

## مالك بن نَمَط الهَمْدانى ثم الخارِفى وقيل اليامى ذو المِشعار رضى الله عنه

### فى مدح النبي عليه السلام عند وفوده عليه فى رجال من قومه

### الترجمة

نمط محركة والهمدانى بسكون الميم نسبة الى همدان ابو قبيلة باليمن واسمه اوسلة بن مالك بن زيد بن ربيعة بن اوسلة بن الخيار بن مالك بن زيد بن كهلان بن سبا هكذا نسبه ابن هشام والخارفى منسوب الى خارف وهو لقب مالك بن عبدالله بن كثير ابى قبيلة من همدان واليامى منسوب الى يام بن احى ابى قبيلة من همدان وربما زيد فى اوله همزة مكسورة فيقال الايامى وكنية مالك بن نمط رضى الله عنه ابو ثور وذو المشعار لقبه وفد على رسول الله عليه السلام مع وفد همدان فلقوا رسول الله عليه السلام مرجعه من تبوك وعليهم مقطّعات الحبرات والعمائم العدنية على الرواحل المهريّة ومالك بن نمط يرتجز بين يدي النبي عليه السلام برجز يأتى فى باب الفاء ان شاء الله تعالى فقام مالك بن نمط فقال يا رسول الله نَصِيَّةٌ من همدان من كل حاضر وباد اتوك على قلص نواج متصلة بحبائل الاسلام لا تأخذهم فى الله لومة لائم من مخلاف خارف ويام وشاكر اهل السود والقود اجابوا دعوة الرسول عليه السلام وفارقوا آلهات الانصاب عهدهم لا ينقض ما اقامت لعلع وماجرى اليعفور بصلع فكتب لهم رسول الله عليه السلام كتابا فيه بسم الله الرحمن الرحيم هذا كتاب من رسول الله محمد صلى الله عليه وسلم لمخلاف خارف واهل جناب الهضب وحقاف الرمل من همدان مع وافدها ذي المشعار مالك بن نمط على ان لهم فراعها ووهاطها وعزازها يأكلون علافها ويرعون عفائها لنا من دفئهم وصرامهم ما سلّموا بالميثاق والامانة ولهم من الصدقة الثلب والناب والفصيل والفارض والداجن والكبش الحَوَري وعليهم فيها الصالغ والقارح شرح ما تضمنت هذة الترجمة من اللغات الغريبة فى حديث رسول الله عليه السلام وقول مالك بن نمط وغير ذلك المقطعات

الثياب القصار اوالثياب التى تفصل و تخاط من القمص و غيرها وما لايقطع منها كالازر والاردية والظاهر ان المراد المعنى الثانى اذ لا معنى للقصر فى مثل هذا المقام والحبرات بكسر الحاء وفتح الباء جمع حبرة كعنبة ضرب من برود اليمن وفى حديث انس رضى الله عنه انه سئل اي الثياب كان احب الى رسول الله عليه السلام قال الحبرة والمهرية المنسوبة الى مهرة بن حيدان حيّ من قضاعة والنصبّة على فعيلة من ينتمى من القوم اي يختار من نواصيهم وهم الاشراف والرؤس ويقال للرؤساء نواص كما يقال للاتباع اذناب وقلص بضمتين جمع قلوص وهي الناقة الشابّة ونواج جمع ناجية اي سريعة السير والمخلاف قال ابن الاثير هو فى اليمن كالرستاق فى العراق وفى القاموس المخلاف الكورة ومنه مخاليف اليمن و خارف ويام وشاكر قبائل من همدان ولعلع بالام جبل وفى شعر الشيخ ابن الفارض رحمه الله

وهل لعلع الرعد الهتون بلعلع　　وهل جادها صوب من المزن هامع

قال ابن الاثير فى قوله ما انامت لعلع وانثه لانه جعله اسما للبقعة التى حول الجبل واليعفور قال ابن الاثير هو الخشف وولد البقرة الوحشية وقيل تيس الظباء وملّع بضم الصاد وتشديد اللام المتوحة الارض التى لانبات فيها ويقال لها الصلعاء ايضا وقوله عليه السلام واهل جناب النضب قال فى النهاية النضبة الرابية والجمع هضب وهضبات وهضاب والجناب بالكسر اسم موضع والنزاع بالكسر ماعلا من الارض وارتفع والوهاط بالكسر المواضع المطمئنة من الارض و احدها وهط وبه سمى الوهط وهو مال كان لعمرو بن العاص بالطّائف والنزاز بالفتح ماصلب من الارض واشتدّ وخشن وانما يكون فى اطرافها وفى الحديث نهى عن البول فى العزاز اى حذرا عن الرشاش ومنه قول عبيدالله بن عبدالله بن عتبة بن مسعود للزهرى بعد خدمته مدة مديدة زاعما انه بلغ الغاية ووصل النهاية انك فى العزاز اى فى الاطراف من العلم لم تتوسطه بعد والعلاف بالكسر جمع علف وهو ما تأكله الماشية مثل جمل وجمال والعفاء كسماء ويروى بالكسر ماليس لاحد فيه ملك من عفا الشئ يعفو اذا صفا وخلص والدفئ فى الاصل مايستدفأ به والمراد ههنا الانعام سماها دفئا لانها تتخذ من اصوافها واوبارها و اشعارها مايستدفأ به من

الاكسية وغيرها والصرام بالكسر النخل وما سلّموا بتشديد اللام المفتوحة وما مصدريّة اى مدّة انقيادهم واطاعتهم لنا وقوله عليه السلام ولهم من الصدقة اى من الاموال التى تجب عليهم فيها الصدقة والثاب بالكسر الهَرِم من ذكور الابل والناب المسنّة من اناثها والفصيل مافصل عن امّه وفطم عنها من اولاد الابل والمراد صغارها والفارض المسنّ من الابل والداجن مايألف البيوت ولايرسل الى المرعى والحَوَرىّ بفتحتين منسوب الى الحور وهى جلود حمر يتخذ من جلود الضأن وهو احد ماجاء على اصله ولم يُعَلَّ كما أُعِلَّ باب وروى الحوارى اى الابيض والمعنى لايؤخذ منهم فى هذه الاشياء التى خصّوا بها وقيل المعنى لاتؤخذ منهم هذه الاشياء اما لنفاستها كالحورى واما لخساستها كغيره بل يؤخذ العدل الوسط والصالغ بالصاد المهمله والغين المعجمة وكسر اللام من البقر والغنم الذى كمل وانتهى سنه و يقال بالسين والقارح من الخيل مادخل فى السة الخامسة وكان مالك بن غط رضى الله عنه شاعرا مجيدا فقال فى وفوده

ذَكَرْتُ رسولَ الله فى فَحْمَتِهِ الدُّجى ... ونحن بأعلى رَحْرَحانَ وصَلْدَدِ

وهُنَّ بنا خُوصٌ طَلائحُ تَعْتَلى ... بِرُكْبانِها فى لاحِبٍ مُتَمَدِّدِ

على كلّ فَتْلاءِ الذِّراعَيْنِ جَسْرَةٍ ... تَمُرُّ بنا مَرَّ الهِجَفِّ الخَفَيْدَدِ

حَلَفْتُ بربّ الرّاقصات الى مِنًى ... صَوادِرَ بالرُّكْبانِ من هَضْبِ قَرْدَدِ

بان رسول الله فينا مصدَّق ... رسولٌ أتى من عند ذى العرش مُهْتَدِ

فما حَمَلَتْ مِنْ ناقةٍ فوق رحلِها ... اشدَّ على اعدائه من محمد

وأعطى اذا ما طالب العرف جاءه  وامضى بحد المشرفى المهند

قوله ذكرت رسول الله الخ الفحمة الظلمة التى بين صلاتى العشاء وفى الحديث اكفتوا صبيانكم حتى تذهب فحمة العشاء ويقال للظلمة التى بين العتمة والغداة العسعسة ورحرحان جبل قرب عكاظ غير مصروف ويوم رحرحان من ايام العرب كان لبنى عامر على تميم وصلدد كجعفر موضع باليمن اوقرب رحرحان قيل يؤيد الثانى هذا البيت قوله وهن بناخوص الخ الضمير للمطايا المفهومة من المقام وخوص جمع خوصاء يقال ناقة خوصاء اذا كانت غائرة العيون وابل خوص وناقة طليح اسفار وطليحة اسفار اذا جهدها السير وهزلها وابل طلائح ومن اختصار كلام العرب راكب الناقة ظليحان اى هو وناقته وتعتلى ترتفع والركبان جمع راكب والاحب الطريق الواضح قوله على كل فتلاء الذراعين الخ فى الاساس وناقة فتلاء الذراعين فى ذراعيها فتل وهو تباعدهما عن الجنبين كانهما فتلا انتهى اى لويا كلى الحبل والفتيلة والجسرة بالفتح الناقة القوية الجرية على السفر والهجف بكسر الهاء وفتح الجيم وتشديد الفاء الظليم وهو ذكر النعام والخفيدد السريع وقال السهيلى الهجف الضخم والخفيدد ولد النعام قوله حلفت برب الرقصات الى منى الخ الصوادر جمع صادرة بمعنى الراجعة والهضب جمع هضبة بمعنى الرابية وقردد اسم جبل قوله فما حملت من نافة الخ من استغراقية ومجرورها فى محل الرفع فاعل حملت يقول انه صلى الله عليه وسلم اشجع الناس كلهم اوالمراد انه صلى الله عليه وسلم اشد على حسّاده من كل محسود على حاسده لانه مجمع الكمالات البشرية وهذا المعنى وان كان ابلغ فى المدح الا ان الاول اوفق بقوله واعطى اذا ما طالب العرف جاءه الخ اعطى وامضى افعلا التفضيل من الاعطاء والامضاء وهو على القياس عند سيبويه وعلى الشذوذ عند الجمهور والعرف العطاء وهذه القصيدة لمالك بن نمط رضى الله عنه مسطورة فى سيرة ابن هشام ومنها كتبتها

## النمر بن تولب العكلى

## رضى الله عنه

يذكر بقاء قوته بعد ما كبر وشاخ

ابقى الحوادث والايام من نمر  اسئاد سيف كريم اثره بادى

تظل تحفر عنه الارض مندفعا  بعد الذراعين والقيدين والهادى

قوله اسئاد سيف كريم الخ الاسئاد الاغذاذ فى السير و الاسراع هذا اصله واراد ههنا سرعة مضاء السيف ونفوذه فى مضربه والاثر بفتح فسكون فرند السيف ورونقه وقوله تظل تحفر عنه الارض الخ ضمير عنه للسيف ومندفعا اى ماضيا فى الارض وهو حال من ضمير عنه او تحفر والقيدين تثنية قيد بالكسر وهو السوط المتخذ من الجلد والهادى العصا يقول انه قد بقى من قوته ما يؤثر به فى اعمال السيف سرعة بحيث تظل تحفر عنه الارض حال كونه او حال كونك مندفعا فى الارض مقدار بعد الذراعين والقيدين والهادى قال ابن قتيبة فى كتاب الشعر والشعراء فيه الافراط فى المدح وفى كتاب الاغانى فى ترجمة النمر بن تولب رضى الله عنه قصة طويلة غريبة فى مثل هذا السيف وقمت لبعض السادة العلويين فليطالع ثمة وهذا الشعر للنمر بن تولب رضى الله عنه مذكور فى كتاب الاغانى ومنه كتبته

## النمر بن تولب العكلى

### رضى الله عنه

فى ضعة الغريب وحقارته قال ابو العباس المبرد فى الكامل وقال النمر بن تولب رضى الله عنه

اذا كنت فى سعد وامك منهم  غريباً فلا يغررك خالك من سعد

فان ابن اخت القوم مصغى اناؤه  اذا لم يزاحم خاله باب جلد

سعد من القبائل المشتبهة ففى خندف سعد بن زيد مناة بن تميم وفى قيس سعد بن ذبيان وسعد بن بكر اخا رسول الله عليه السلام وفى ربيعة سعد فى عجل

ابن لجيم وسعد هذيم فى قضاعة، وسعد العشيرة فى مذحج قوله وامك منهم حال وقوله غريبا خبر كنت والغربة فى الاصل البعد والغريب بين قوم الذى ليس منهم قوله فان ابن اخت القوم مصغى اناؤه فى الاساس فلان يصغى اناء فلان اذا نقصه ووقع فيه واصغى حقه نقصه ثم انشد بيت النمر رضى الله عنه والمزاحمة المضايقة والجلد بفتح فسكون القوى يقول لاتغتر بخؤلتك فانك منقوص الحظ مالم تزاحم اخوالك بآباء شراف واعمام اعزة وفى امثال الميدانى فى مثل (اغدر من كناة الغدر) هم بنو سعد تميم وكانوا يسمون الغدر فيما بينهم اذا راموا استعماله بكنية وضعوها له وهى كيسان قال النمر بن تولب

اذا كنت فى سعد وامك منهم ... غريبا فلا يغررك خالك من سعد
اذا ما دعوا كيسان كانت كموالهم ... الى الغدر ادنى من شبابهم المرد

## حميد بن ثور الهلالى

### رضي الله عنه

فى وفادته على النبي صلى الله عليه وسلم وعلى آله

اصبح قلبى من سليمى مقصدا ... ان خطأ منها وان تعمدا
فحمل الهم كلازا جلعدا ... ترى العليفى عليها مؤكدا
كأن برجا فوقها مشيدا ... وبين نسعيه خدبا ملبدا
اذا السراب فى افلاة اطردا ... ونجد الماء الذى توردا
توردّ السيد اراد المرصدا ... حتى ارانا ربنا محمدا
يتلو من الله كتابا مرشدا ... فلم نكذب وخررنا سجدا

## نعطى الزكوة ونقيم المسجدا

قد مضت ترجمة حميد رضى الله عنه فى باب الباء و اسلفنا هنالك ان له شعرا انشده بحضرة النبي صلى الله عليه وسلم وانا لم نطلع منه الا على البيت الاول وبيتين آخرين مذكورين فى الاستيعاب وهما البيتان المذكوران ههنا فى آخر الشعر ورجونا من الله سبحانه ان يطلعنا عليه بفضله فحقق الله سبحانه املنا فاطلعنا على ما كتبناه فلم نربدا من انيانه وان كان فى غير موضعه بنا أ على ترتيبنا فى اسماء قائلى الشعر فلنشرحه على قدر الاستطاعة قوله اصبح قلبي الخ اصبح صار والمقصد على صيغة اسم المفعول المقتول مكانه وقدمر وقوله ان خطأ منها وان تعمدا بحذف كان مع اسمها وذلك جائز بعدلو وان اذا كان اسمها ضمير ماعلم من غائب اوحاضر نحو اطلبوا العلم ولو بالصين اي ولو كان العلم بالصين و ادفع الشر و لو اصبعا اي ولوكان الدفع اصبعا اي قليلا وقوله

قدقيل ذلك انحقا وان كذبا فما اعتذارك عن شيئ اذا قيلا

وتقول لارتحلنّ ان فارسا وان راجلا ولو فارسا ولو راجلا فالتقدير فى بيت حميد ان كان اقصادها خطأ و ان كان تعمدا قوله فحمل الهم الخ حمل على صيغة الماضى من التفعيل وفاعلها ضمير الافصاد والهم بالكسر الشيخ الفانى ومنه حديث عمر رضى الله عنه كان يأمر جيوشه ان لايقتلوا هماولا امرأة وقال الشاعر

وما انا بالهم الكبير ولاالطفل

وقوله كلازا ويروى كنازا الكلاز المجتمع الخَلْق الشديده واكلأ زاذا انقبض وتجمع والكناز المجتمع اللحم القويه وكل مجتمع مكتنز والجلعد الصُّلب الشديد يريد الناقة القوية والعليفى الرحل المنسوب الى علاف بكسر العين ابن حلوان بن عمران بن الحاف بن قضاعة لانه اول من عمله وصغر حميد علافا تصغير الترخيم بحذف الزوائد كما يقال فى تصغير حارث حريث والمؤكد الموثق الشديد الاسر يقال اوكدت الشيئ ووكدته وأكدته ايكادا وتوكيدا وتأكيدا اذا شددته ويروى موفدا اي مشرفا من اوفد اذا اشرف على الشيئ وقوله كأن برجا فوقها مشيدا البرج الحصن او ركنه والمشيّد المطوّل قوله وبين تسعيه خدبا ملبدا عطف على

معمولى ترى والنسع بكسر فسكون سير ينسج عريضا على هيئة اعنة النعال تشد به الرحال والقطعة منه نسعة والخدب بكسر المعجمة وفتح الدال وتشديد الباء العظيم الضخم يقال رجل خدب وامرأة خدبة ومنه قول ام عبدالله بن الحرث بن نوفل القرشى ترقصه فى صغره

والله رب الكعبة لَانكحنّ ببّه جارية خدبّه مكرمة محبّه

تجب اهل الكعبه

اى تغلبهن حسنا ولذلك لقب عبدالله ببه وفيه يقول الفرزدق وكان عبدالله واليا على البصرة لابن الزبير

وبايعت اقواما وفيت بعهدهم وببة قد بايعته غير نادم

وقوله ملبدا اى عليه لبدة من الوبر قوله اذا السراب الخ اذا ظرف لحمل اوترى والفلاة القفر او المفازة لاماء فيها واطّرد تبع بعضه بعضا فجرى قوله ونجد الماء الخ نجد الماء اى سال العرق يقال نجد البدن عرقا كنصر اذا عرق فهو منجود ونجيد ونجد ككتف اى عرق وتورده تلونه قوله تورد السيد الخ السيد بالكسر الاسد والذئب والمرصد الترصد اى الترقب ولذلك سمى الاسد راصدا لانه يرصد الوثوب اى يترقب ليثب قوله فلم نكذب اى لم نلبث ولم نبطئ فى الايمان به وخررنا سجدا اي سقطنا ووقعنا على الارض ساجدين لرب محمد صلى الله عليه وسلم اوهوعبارة عن الانقياد والاستسلام للنبي صلى الله عليه وسلم وهذا الرجز لحميد بن ثور رضى الله عنه بعضه من الاستيعاب وبعضه من النهاية لابن الاثير وبعضه من البصائر لصاحب القاموس وليكن هذا اخر الجزء الاول من كتاب حسن الصّحابة فى شرح اشعار الصحابة ويليه الجزء الثانى انشاء الله يبتدئ من قافية الراء والحمدلله على التمام وعلى رسوله افضل الصلاة واكمل السلام وعلى آله واصحابه اجمعين والحمدلله رب العالمين وقد وقع الفراغ من تأليفه فى شهر ربيع الاول سنة ستّ وعشرين و ثلثمائة و الف من هجرة من له العز والشرف

892.7108:F151hA:v.1:c.1
فهمي ،علي
حسن الصحابة في شرح اشعار الصحاب
AMERICAN UNIVERSITY OF BEIRUT LIBRARIES
01036795

American University of Beirut

AMERICAN UNIVERSITY OF BEIRUT
UT VITAM HABEANT ABUNDANTIUS HABEANT
1866

892.7108
F151hA
v.1

General Library